

हेन्दी भूषण प्रश्नपत्र-संग्रह
(उत्तर सहित)
१९३७

संपादक
रामप्रसाद मिश्र

हिन्दी भवन
लाहौर

*Printed and published by D C Narang
at the H B Press, Lahore*

हिन्दी भूषण १९३७

प्रश्नपत्र १

१ (क) वर्ण किसे कहते हैं ? हिन्दी भाषा में कितने वर्ण होते हैं ?

१ + १

(ख) आभ्यन्तर प्रयत्न किसे कहते हैं इसके अनुसार वर्णों के चार मुख्य भेद नीचे हैं ?

१ + ४

(क) वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खट न हो सकें। जैसे अ, क, म्, ।

हिन्दी (वर्णमाला) में कुल ४४ वर्ण हैं।

(ख) ध्वनि उत्पन्न होने के पड़ले वागिन्द्रिय की क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके अनुसार वर्णों के नीचे लिखें चार भेद हैं—

(१) विवृत—इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय खुली रहती है। स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत है।

(२) मृष्ट—इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय का द्वार बन्द रहता है। फ से म तक वर्णों का यही प्रयत्न है।

(३) ईषत विवृत—इसके उच्चारण में वागिन्द्रिय कुछ खुली रहती है। य, र, ल, स का यही प्रयत्न है।

(४) ईषत-मृष्ट—इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय कुछ बन्द रहती है। श, ष, झ, ट का यही प्रयत्न है।

२. (क) विनास । संरक्षण । सन्तान । संतान । संतान ।

अभिषेक । दुरुपयोग । यशोदा—इए शब्दों में सन्धिच्छेद करो
 जार इनके सन्धि करने वाले नियमों को लिखो । १६

(स) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करो—

उधू + उत्सव ।

सगी + उचित ।

सु + आगत ।

पट + आनन । ४

(रु) गिरीन्द्र—गिरि + इन्द्र । यदि दो सवर्ण सजातीय
 स्वर पास-पास आवें तो दोनों के स्थान पर सवर्ण दीर्घस्वर
 हो जाता है ।

महेश्वर्य —महा + ऐश्वर्य । अ या आ के आगे ए या ऐ
 आव तो दोनों को मिलकर 'ऐ' और ओ, औ, आवे तो 'औ'
 हो जाता है ।

मनु + अन्तर —ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के आगे कोई
 असमान (विजातीय) स्वर आवे तो इ, ई को य्, उ, ऊ
 को व् और ऋ को र् हो जाता है ।

पणमास—पट् + मास । किसी वर्ग के प्रथम अक्षर से
 पर यदि कोई अनुनासिक (ड, ब, ण, न, म) वर्ण हो तो
 पहले वर्ण को अपने वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है ।

सन्तोष—सम् + तोष । म् के आगे कोई स्पर्श (रु से म्
 तक) वर्ण हो तो म् को विकल्प से अनुस्वार या उसी वर्ग
 का अनुनासिक वर्ण हो जाता है । रु रुं, रुँ, रुँ, रुँ । रुं रुँ, रुँ, रुँ । रुं रुँ, रुँ, रुँ । रुं रुँ, रुँ, रुँ ।
 । अभिषेक-अभि + सेकः । यदि किसी सिद्ध (स्ते) इति

के स् मे पहले अ, आ को छोड़ कर कोई और स्वर आवे तो स् के स्थान में प होता है ।

दुरुपयोग—दु + उपयोग । यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़ कोई और स्वर हो और आगे कोई घोप वर्ण हो तो विसर्ग को र् हो जाता है ।

यशोदा—यश + दा । यदि विसर्ग म पहले अ हो और आगे कोई घोप व्यञ्जन हो तो अ के स्थान में ओ हो जाता है ।

(ख) वधू + उत्सव = वधूत्सव । सती + उचित = मरुचुचित ।
मु + आगत = स्वागत । पट् + आनन = पट्टानन ।

३ (क) निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखो—

घेटा । नाती । लाला ।

३

(ख) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन में रूप लिखो—

शक्ति, छुटिया, बहू ।

३

(ग) निम्नलिखित शब्दों के माग लगे हुए प्रत्येक उपसर्ग को पृथक् लिख कर उतका अर्थ कर्गो—

निराकरण, प्रत्युपकार, समालोचना, मुग्धरहित ।

४

(क) घेटा - घेटी । नाती—नातिन । लाला—लालाइन ।

(ख) शक्ति—शक्तियाँ । छुटिया—छुटियाँ । बहू—बहूँ ।

(ग) निराकरण=निर् + आकरण । निर्=नाहर, निषेध ।

प्रत्युपकार=प्रति + उपकार । प्रति=परना, विरुद्ध, एक-एक, सामने ।

समालोचना=सम् + आलोचना । सम्=अव्यय, साथ, पूर्ण ।

मुग्धरहित=मु + न्यारहित । मु=अव्यय, सहज अशिक ।

४ निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखो—

(क) चोर को रस्सी से बाँधता है ।

(ख) गङ्गा हिमालय से निकलती है ।

५

(क) चोर को=कर्तृ कारक । रस्सी से=करण कारक ।

(ख) गंगा=कर्ता कारक । हिमालय से =अपादान कारक ।

५ निम्नलिखित पदों में जो समास हैं, उनके नाम और लक्षण लिखो—

ऋणमुक्त । त्रिभुवन । जात-कुजात । कनफटा ।

८

ऋणमुक्त—अपादान तत्पुरुष । जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान हो और पहले शब्द में अपादान कारक की विभक्ति का लोप हुआ हो, वह अपादान तत्पुरुष कहाता है ।

त्रिभुवन—द्विगु (कमधारय) । जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो, विग्रह करने पर दोनों पदों में कर्ता कारक की विभक्ति लगे और पहला शब्द संख्या वाचक हो वह द्विगु है ।

जात कुजात—वैकल्पिक द्वन्द्व । जिस समास में दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करते समय जिसमें 'वा', 'अथवा' आदि विकल्पसूचक समुच्चयबोधक लगाने पड़े और बहुधा विरोधी शब्दों का मेल हो, उस समास को वैकल्पिक द्वन्द्व कहते हैं ।

कनफटा—सम्बन्ध बहुव्रीहि । जिस समास में कोई पद प्रधान न हो और जो अपने पदों से भिन्न किसी सज्ञा का विशेषण हो, जिसके विग्रह में सम्बन्ध कारक की विभक्ति लगे उसे सम्बन्ध बहुव्रीहि कहते हैं ।

६ (क) निम्नलिखित में रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से करो । एक रस्सा के स्थान में एक ही शब्द लिखो ।

प्राचीन भारत—इतिहास के साथ घोर अन्याय—है । हमारे

स्कूलों और कालेजों—इसका अत्यन्त घृणित—पढ़ाया—है ।
अध्यापक—भी मस्कृत—अनभिज्ञ होने के—यथार्थ घात नहीं
जानते । ४

(ग) निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखो—

विद्वान् । उत्साह । सुसिद्ध्यमित । अन्तरिङ्ग सभा । ४

(ग) निम्नलिखित वचनों को शुद्ध करके लिखो—

(१) हतभाग स्त्री चिह्लाड ।

(२) राम न कहा, हे सीता । २

(क) प्राचीन भारत के इतिहास के साथ घोर अन्याय
होता है । हमारे स्कूलों और कालेजों में इसका अत्यन्त
घृणित पाठ पढ़ाया जाता है । अध्यापक लोग भी मस्कृत से
अनभिज्ञ होने के कारण यथार्थ घात नहीं जानते ।

(ग) विद्वान्—विद्वान् । उत्साह—उत्साह । सुसिद्ध्यमित—
सुसिद्ध्यमित । अन्तरिङ्गसभा—अन्तरिङ्गसभा ।

(ग) (१) हतभागिनी स्त्री चिह्लाड ।

(२) राम ने कहा—हे सीते ।

'हे सीता' मस्कृत व्याकरण के अनुसार अशुद्ध है,
मस्कृत में 'हे सीते' रूप होता है, परन्तु हिन्दी में अधिक 'हे
सीता' का ही प्रयोग होता है इसलिए यह अशुद्ध नहीं ।

७ (क) निम्नलिखित पद्य में मौनता अन्वय दे । उगका
मधुण लिखो —

बहुरि मम मम विषयो सेही, मग्गु मुगगीक दिव सेही । २

(ग) प्रतीव के लिखने भर है । उनके मन्त्र लेखक
लिखो । १०

(ख) पाँच प्रकार की विभावना के पाँचो उदाहरण लिखो । ५

(क) स्थायी भाव दस हैं—प्रेम, हास, शोक, उत्साह, क्रोध, भय, घृणा, विस्मय, निर्वेद और स्नेह ।

विभाव—दो प्रकार का होता है, आलम्बन और उद्दीपन ।

जिसके कारण स्थायीभाव की उत्पत्ति होती है, उसे आलम्बन कहते हैं, जैसे, शृंगार रस में प्रेमपात्र, करुण में मृत व्यक्ति आदि ।

जिस से उत्पन्न हुए स्थायीभाव उद्दीपन या तीव्र हों उसे उद्दीपन कहते हैं, जैसे, शृङ्गार में सुंदर प्राकृतिक दृश्य, वसंत और सगीत, हास्य में हास्योत्पादक व्यक्ति की चेष्टाएँ आदि ।

(ख) पहली विभावना—

मुनि-नापस जिनते दु ल लहडि, ते नरेश बिनु पावक दहडि ।

दूसरी विभावना—

काम कुसुम-प्रनु-सायक जीन्हें, सकल भुवन अपने बस कीन्हें ।

तीसरी विभावना—

विपदा हूँ में होय के पर-दुख हरत महान ।

चतुर्थ विभावना—

निकसी नीरज नाल ते चपक कलिका पाँच ।

पंचम विभावना—

सखी ! करत सन्ताप मोहि सीतल किरन मयक ।

९ (क) उपमा और रूपक में, उत्प्रेक्षा और प्रतीप में तथा श्लेष और समासोक्ति में क्या क्या भेद है ?

(ग) व्यतिरेक, निरोधामास और काव्यलिङ्ग अलङ्कारों के लक्षण लिखो ।

(क) उपमा में उपमेय और उपमान अलग

समान धर्म एक कहा

उपमेय में अभेद कहा जाना है, यही दोनों में भेद है। जैसे—
उपमा में कहा जाता है, 'मुख चन्द्र सा सुन्दर है', किन्तु रूपक
में 'मुख चन्द्र है'—यह कहा जाता है।

उत्प्रेक्षा में उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है,
और प्रतीप में उपमेय को उपमान तथा उपमान को उपमेय माना
जाता है।

लता भवन ते प्रगट भ तिद्धि अवसर दोड भाइ ।

निरुसे जनु जुग विमल विधु सरद पदल धिलगाइ ॥

इसमें रामचन्द्र और लक्ष्मण (उपमेय) में दो चन्द्रमाओं
(उपमान) की संभावना की गई है, इसलिए यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार
है। और

विदा किये यदु विनय करि किये पाप मन राम ।

उतरि नहाये जमुन जल जो नरीर सम श्याम ॥)

श्रीराम का शरीर उपमेय और यमुना का जल उपमान है,
परन्तु यहाँ श्रीराम के शरीर को उपमान घनाया गया है और
यमुना के जल को उपमेय, और फिर यमुना के जल को श्रीराम के
शरीर से उपमा दी गई है। यहाँ प्रतीप अलंकार है।

अर्थ श्लेष और समासोक्ति अलंकार आगच्छ गूण्य परीक्षा
के कोर्स में नहीं है, इसलिए श्लेष और समासोक्ति का भी नहीं
घनाया गया।

(ग) व्यतिरेक—जब उपमेय को उपमान की अपेक्षा बढ़ाकर
घनाया जाय तब व्यतिरेक अलंकार होता है, यहाँ यह दृष्ट्यन
उपमेय में कोई विशेषता घनाकर हो, या उपमान में हीतना
घनाकर।

उपमेय में विशेषता घनाकर, जैसे—

मुन मनुक मा है मही, मनुक धन्य मविगेव ।

मुख उपमेय में चन्द्रमा उपमान से मीठे वचन बोलना विशेषता बताई गई है।

उपमान में हीनता बताकर, जैसे—

सीता का मुख शरद ऋतु के कमल के समान है, परन्तु कमल तो रात में कुम्हला जाता है, और यह दिन रात खिला रहता है।

इसमें पहले दोनो की समता करके कमल को इस बात में हीन बताया गया है कि वह रात को कुम्हला जाता है।

विरोधाभास और काव्यलिंग अलंकार आजकल भूषण परीक्षा की पाठविधि में नहीं हैं।

सरल अलंकार की सहायक पुस्तकें

१. रस और अलंकार

(ले०—प० रामबहोरी शुक्ल, ऐम ए, साहित्यरत्न, फीस कालेज, बनारस)
इस पुस्तक में रस और अलंकार का कठिन विषय बड़ी सरलता पूर्वक समझाया गया है। प्रत्येक अलंकार के लक्षण, उदाहरण तथा अलंकारों के पारस्परिक भेद विद्वान लेखक ने बड़ी खूबी से समझाये हैं। सभी उदाहरण आजकल की खड़ी बोली की कविता से दिये हैं, जिससे विद्यार्थी बड़ी आसानी से उन्हें समझ सकते हैं। इसको पढ़ कर हिन्दी भूषण के विद्यार्थियों को इस विषय की और कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती। मू० ॥॥=)

२. पिगल-परिचय

(ले०—रामबहोरी शुक्ल, ऐम० ए० साहित्य रत्न फीस कालेज, बनारस)
इसमें 'सरल अलंकार' के सब छन्दों के लक्षण उसी छंद में देकर उसके उदाहरण खूब समझा कर दिए गए हैं, जिससे विद्यार्थी बहुत आसानी से छन्द शास्त्र को समझ सकते हैं। मू०॥=)

प्रश्नपत्र २

१—सरल हिन्दी में अथ लिखो —

(अ) सूर्य हाड़ लेइ भाग सठ स्नात निरखि मृगराज ।

छीनि लेइ जनि जाणि जइ तिमि सुस्पतिहि न लाज ॥

(२) कहैया, तू नहिं मोहिं डरात ।

पट रम धरे उड़ि, कत पर घर चोरी करि करि गात ॥

प्रकति सकति तोसों पचिहागी, पैकटु लाज न आई ।

ब्रज परगन सरदार महर, तू ताकी करत न आई ॥

पूत सपूत भयो कुल मेरे, अब म जानी यात ।

सूर, स्याम अरली तोहि उखर्यो, जानी तेरी यात ॥ १२

(अ) भगवान् की भक्ति में तीन नारद जी से ईर्ष्या करने वाले इन्द्र के विषय में तुलसीदास जी कहते हैं —

मूर्ख कुत्ता सिंह को देख कर सूखी हड्डी लेकर भाग जाता है। वह समझना है कि कहीं सिंह मेरी इस सूखी हड्डी को छीन न ले। यही दशा इन्द्र की भी है। उस भी लज्जा नहीं है। सिंह को भला सूखी हड्डी की क्या खरखरत? भगवद्भक्तों के लिए इन्द्रपद का क्या मूल्य ?

(ब) यशोदा कृष्ण से कहती है—“कहैया। तू नुमस तकिक भी नहीं डरता। पर मैं नाना प्रकार के भोगन रक्खे हैं उन्हें छोड़कर तू पराये घर में चोरी करके क्यों गाना पिरता है ? मैं तो तुम्हें घबहते नकरों परेशान हो गई, पर तुम्हें ठीक भी लागजा नहीं आई। तुम्हें यह भी ध्यान नहीं कि मैं रघुप प्रजापति के अधिपति हूँ। तू चोरी कर करत धाकी गिना करता है।

मुझे तो अब पता लगा कि मेरे घर में तुम जैसा सपूत (अर्थात् कुपूत) पैदा हुआ है। पर देर ! अब तक तो मैं तुम्हें क्षमा करती आई हूँ, किन्तु अब क्षमा न करूँगी। तेरी शैतानी का मुझे पता लग गया है।

२—विस्तृत व्याख्या करो —

(अ) नीर-क्षीर विवेक न्याय था विश्रुत सत्र ससार
क्या मुँह लेकर अब यह जीवन रक्खू तुम्हें निहार।
निरपराध थे हृदय-खण्ड, तुम पितृ-भक्ति के दर्प
हुई पिशाची माता अब तो तव जीवन की सर्प ॥

(ब) सौँधे को अधार किसमिस जिनको अहार,
चारि को सो अक लक चद सरमाती हैं।
ऐसी अरि नारी सिवराज वीर तेरे आस,
पायन में जले परे कन्द मूल खाती हैं ॥
ग्रीषम तपनि ऐसी तपती न सुनी कान,
कञ्ज कैसी कली त्रिन पानी मुरझाती हैं।
तोरि तोरि आछे से पिछौरा सो निचोरि मुख
कह सत्र कहाँ पानी सुकतो मैं पाती हूँ ॥

(स) यह जिय जानि सँकोचु तजि करिय छोडु लखि नेहु।
हमहिं कृतारथ करन लगि फल त्रिन अकुर लेहु ॥ १५

(अ) अन्धा करके राज्य से निकाले गये कुनाल की दुर्दशा देखकर अशोक का कथन है—

(हे घेटा !) मैं सारे संसार में क्षीर-नीर विवेकी (पानी और दूध को पृथक्-पृथक् करने का ज्ञान रखने वाले) हैंस के तुल्य न्याय-परायण प्रसिद्ध था। अर्थात् सम्पूर्ण संसार यह भली भाँति जानता था कि मैं पानी और दूध को पृथक्-पृथक् करने

का ज्ञान रखने वाले हैंस की तरह कार्य-अकार्य, न्याय अन्याय और उचित-अनुचित का ध्यान रखकर उसके अनुसार न्याय किया करता था। तुम्हारी इस अन्याय पूर्ण दुर्दशा को देखकर अब मैं समार में किम मुँह से जीवन रखूँ ? हे मेरे हृदय के टुकटे ! तुम निर्दोष थे, पिता के प्रति श्रद्धाभक्ति के गव रूप थे। हाय, अब तो तुम्हारी राज्ञी माता तुम्हारे जीवन की सर्प हो गई (साँप की तरह तुम्हारे जीवन के लिए घातक सिद्ध हुई)।

(घ) शिवाजी के शौर्य और उनके भय से शत्रु स्त्रियों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए भूपण कहते हैं—जिनका जीवन सुगन्धि पर निर्भर था, जिनका भोजन किशमिरा आदि गोधे, चार के अंक (४) के (मध्य भाग के) समान जिनकी घृत पतली कमर थी, और जो (अपने सौंदर्य से) चन्द्रना की भी लज्जित करती थीं, ऐसी शत्रु-स्त्रियों के, ते वीर शिवाजी ! आपके भय के कारण भागते भागते, पैरों में टाले पड़ गये हैं, और वे अब कट-मूल खाकर गुजारा करती हैं। भोग शत्रु की ऐसी तेज गर्मी में, जैसी कभी सुनी भी न गटे थी, व स्त्रियाँ प्यास के कारण रज (फल) की दलियाँ का मोति कुटला रही हैं। वे सब यज्ञिया आदरों ने मानी तो भोजन पर मुँह में निचोड़ती हुई कहती हैं कि इनमें पानी कहाँ ? (आप का अर्थ पानी भी है और चमक भी, गोली में आप अर्थात् चमक होती है, परन्तु वेगमें पथराहट के कारण मोतियों का मुख में निचोड़ती हैं और कहती हैं कि इनमें पानी कहाँ ?

(ग) वनवासी लोग और, भीलों की, अप्रोप्यायिता से प्रार्थना है, जो वन में राम के दर्शनों को आप है—

यह समझ कर (कि राम ने निराद पर कृपा की थी) और

सफ़ोच छोड़कर तथा हम लोगों का प्रेम देखा कर हम पर कृपा कीजिए । हमको कृतार्थ करने के लिए यह फल, तृण और अकुर ग्रहण कीजिए । अर्थात् हमें नीच जान कर हमसे धृष्टान्त कीजिए ।

३—प्रसंग निर्देश करते हुए अर्थ लिखो —

(अ) तड़ित समान चट तेजस्वी, रत्नजटित नृप देखा

मानो रविमण्डल से उतरी दिव्य किरण की रेखा ।

गुणिजन सकुण नागराज कुञ्ज कलित बाहुबलि त्रैलोक्य

न्याय-नीति में, ज्ञान भीति में हो सदेह मनु पैठे ॥

(इ) भरे भुवन घोर कठोर रव रवि वाजि तजि मारग चले ।

चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि फौल कूरम कलमले ॥

सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल विकल विचारहीं ।

कोदण्ड सण्डेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥

(उ) पितु सुर पुर सिय राम बनु करन कहहु मोहि राजु ।

एहि ते जानहु मोर हित के आपन बड़ काहु ॥ १५

(अ) अयोध्यापति भरत का दूत जब उनके छोटे भाई

बाहुबली के दरवार में गया तो उसने वहाँ क्या देखा, यह इस

पद्य में वर्णित है —

उसने देखा कि विद्युत के समान तेजस्वी राजा बाहुबली रत्नों से सुशोभित हो रहे हैं, (उसे ऐसा प्रतीत हुआ) मानो सूर्य मण्डल से अलौकिक किरण की एक रेखा (पृथ्वी पर) उतर आई हो । नागराज (तक्षक) के कुञ्ज को सुशोभित करने वाले वे बाहुबली राजा गुणियों से धिरे इस प्रकार सुशोभित हो रहे थे मानो राजनीति, न्याय तथा ज्ञानपूर्ण बातें करने में (साक्षात्) मनु भगवान् देह धारण कर आ पहुँचे हों ।

(इ) स्वयंवर में राम के धनुष तोड़ने में जो भयकर ध्वनि हुई उसका वर्णन कवि इस पद्य में करता है —

धनुष का घोर और कठोर शब्द समार में भर गया ।
 (उसके भय से) सूर्य के रथ के घोड़े मार्ग छोड़ कर भाग निकले ।
 दिशाओं के हाथी चिंघाड़ने लगे, पृथिवी कँपन लगी,
 शेषनाग, वराह और कच्छप कलमलाने लगे ।
 देवता, असुर तथा मुनियों ने हाथों से कान ढक कर लिये और व्याकुल होकर सद्य विचारन लगे कि रामचन्द्र ने क्या शिवजी के धनुष को तोड़ डाला है ? और तुलसीदास जी जय जय कहते हैं ।

(उ) मन्त्रियों के समझाने पर कि तुम अधिराज्य परो भरत इस पद्य में उन्हें उत्तर देते हैं—

पिता देवलोक गये और सीता और राम वन में हैं ।
 येनी दश में आप लोग मुझे राज्य करने के लिए कहते हैं ?
 क्या हम में आप लोग मेरा कल्याण देखते हैं या अपनी भलाई ?

४ शब्दार्थ लिखो —

अघोटे, अरसेटे, पठनेटे, समदत, तिरछाप, कमान, भद्रशेट
 चिजी, दलकुट, तिकाइ, फलना, नेहना, सौता, लटता, जेरा
 तथा ग्येयाँ ।

अघकेटे—अधकटे, घायल ।

जरसेटे—शिथिल, अशक्त

पठनेटे—युष्क पठान

सगदन्त—धीर वा पञ्च (गौमी)

तिरछाप—मिरपैष

कमान—तीष

भटझोट—वीरों का समूह

चिंजी—चिरजीविनी (कन्या)

दलकुड—दक्षिण का एक देश

निकाई—सुन्दरता

काछनी—घुटनों तक पहनी हुई धोती

लेडुवा—लट्टू घुमाने की डोरी

छौना—पशु का बच्चा

लडैतो—दुलारा, लाडला, धृष्ट, जो लाड प्यार के कारण बहुत इतराया हो ।

ढोटा—पुत्र, बालक

ग्वैयों—सखा (ग्वाले)

५ इनका परिचय दो —

सम्प्रति, सुपिम, काञ्चनमाला, कमधुज, अली । १०

सम्प्रति—अशोक का पोता और कुणाल का पुत्र था । पितृ भक्ति के कारण जन कुणाल अन्धे हो गये तब अशोक ने इसे अपना उत्तराधिकारी बनाया ।

सुपिम—विन्दुसार का ज्येष्ठ पुत्र और अशोक का बड़ा भाई था । बौद्ध हो जाने के कारण वह तक्ष शिला का प्रबन्धन कर सका और भिक्षु बन कर देशाटन को चला गया ।

काञ्चनमाला—कुणाल की स्त्री थी । पति के अन्धे किये जाने और निकाले जाने पर यह सती उस का सहारा थी ।

कमधुज—कश्चनधज, जोधपुर के महाराजा को कहा जाता है, क्योंकि इन के पूर्वज कन्नौज नरेश का युद्ध में कवध उठा था ।

धली—यह शब्द मूरदास जी ने कृष्ण के सरग और दूत उद्धव के लिये प्रयुक्त किया है । बात यह थी कि एक बार जब ये कृष्ण के कहने से गोपियों को ममझाने गये तब इन पर एक भौरा आ बैठा । गोपियों ने उस भोर को संधोधित कर उद्धव जी को रूष ताने दिये । इसीलिण ये पद्य भ्रमर गीत के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

६ अयोध्याकाण्ड के आधार पर राम की जनयात्रा का बर्णन करो ।

१५

वनवासियों के वस्त्र धारण कर श्री रामचन्द्र जी माता, पिता और गुरु को प्रणाम कर सीता और लक्ष्मण समेत वन को चले । पहली रात उन्होंने तमसा नदी के किनारे बिताई । प्रातः अयोध्यावासियों को मोता छोड़ कर आगे चले । दोपहर के लगभग शृङ्गवेरपुर पहुँच गये । यहाँ उन्होंने गंगा की महिमा सब को सुनाई । यहीं राम की भक्त गुह निपाद से भट टुट । इसी स्थान पर राम ने सुमन्त्र को भी ममझा जुता कर छोटा दिया । यहीं मन्त्राह ने राम के चरण धोकर उन्हें गंगा पार किया । तब वे निपाद के साथ आगे बढ़े । चलते-चलते वे प्रयाग पहुँचे । यहाँ नदियों का मगम देव घट्ट प्रसन्न हुए । फिर यहाँ से चल कर भरद्वाज मुनि के आश्रम में आए । मुनि ने वनका रूष आदर सत्कार किया । यहाँ से वे आगे बढ़े । रामों के मामवासियों ने उनका पञ्चकूट तथा मोटे वपनों से सत्कार किया । यहाँ से वे वन की शोभा उग्रत दृष्ट भी वान्मोकि की के आश्रम में आए । मुनि से आदर सत्कार पाकर, एक दो दिन यहाँ रहकर, उन्होंने ही आशा से विप्रशुट पर से रदमे

के लिए आगे बढ़े । मुनि ने रास्ता दिखाने के लिए अपने कई शिष्य साथ दिये । चित्रकूट पहुँच लक्ष्मण ने एक उत्तम स्थान खोज कर नदी के किनारे एक पत्तों की कुटिया बनाई, जिसमें राम और सीता रहने लगे । लक्ष्मण सेवक को भौंति उनकी सेवा में तत्पर रहने लगे ।

७ कुणाल की कथा का सविस्तर वर्णन करो । १०

जब बिन्दुसार के मरने पर अशोक मगध के राजा हुए, तो उन्होंने अपने पितृ भक्ति पुत्र कुणाल को तक्षशिला का अधिपति बनाकर भेजा । दुर्दिमान् कुणाल ने वहाँ का शासन इतनी उत्तमता से सँभाला कि प्रजा उस पर मोहित हो गई । कुणाल की एक विमाता भी थी, जिसका नाम तिष्यरक्षिता था । एक बार अशोक को रोग की अवस्था में सेवा द्वारा उसने प्रसन्न कर लिया और अपनी सेवा के बदले में एकसप्ताह राज्य करने की आज्ञा माँग ली । वह कुणाल से जलती थी और अपने पुत्र को युवराज-पद दिलाना चाहती थी । अतः अवसर पाकर उसने राजा की मोहर लगा कर तक्षशिला के मन्त्री और सेनापति को एक पत्र लिखा, जिसमें कुणाल की दोनों आँग्रे निकाल कर उसे देश निकाले का दण्ड देने की आज्ञा दी और लिखा कि यह पितृद्रोही तथा देशद्रोही है । उस समय सारे सभासद मन्त्री तथा सेनापति कुणाल के साथ थे । कुणाल चाहते तो इस आज्ञा के विरुद्ध एक भयंकर विद्रोह खड़ा कर देते, किन्तु उन्होंने उलटा सब को शान्त किया । वे उस दण्ड को पाने के लिए तैयार हो गए । दण्ड पाकर अपनी स्त्री काचनमाल के साथ बनों में घूमते फिरते, भिक्षा और फल-फूलों

निर्वाह करते एक दिन अशोक की राजधानी में पहुँचे। इनके भक्ति के भजन सुन बहुत से लोग इनके पीछे हो लिये। इतने में अशोक ने भी इनका शब्द सुना और तुरन्त पहचान लिया। झट दोनों को बुलाकर गले लगाया। उसे कुणाल के लिए अत्यन्त दुःख हुआ। दूसरे दिन उसने दरबार में तिष्य रक्षिता का क्रूर कर्म सारे दरबारियों को कह सुनाया और उसे फड़ा दण्ड दिया। तक्षशिला का राज्य कुणाल के पुत्र सम्प्रति को दिया तथा अपना उत्तराधिकारी भी उसे ही बनाया।

८ वर, भूषण या दुल्सीदास इमें से किसी एक का परिचय दो।

१५

सुरदास—भक्त शिरोमणि मूरदाम का जन्म अनुमान में १५५० वि० तथा मृत्यु १६२० वि० में हुई। आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क के किनारे रुणकता नामक गाँव इनकी जन्म भूमि कही जाती है। ये भारतवर्ष का प्रथम थे। इनके माता पिता दरिद्र थे। पिता का नाम रामदास था। सुरदास अन्ध थे। इनके कई भक्त इन्हें जन्म में अंधा बताने हैं। यदि ऐसा होता तो ये प्राकृतिक-विचित्रताओं तथा गांधीय दाव-भावों का ऐसा उन्मत्त वर्णन कभी न कर सकते। कहा जाता है कि एक बार ये एक सुवती को देख कर उस पर मुग्ध हो गये। बड़ी देर तक टकटकी घोंघे बसकी धोर देखते रहे। अन्त में उस सुवती ने निरपट आकर पूछा—“महा-राज ! क्या आशा है ?” उस समय से मन ही मन में बड़े लज्जित हुए। इन्होंने यह होप अपनी आँसों का समझ कर रग सुवती से विनती की कि यह मुझे द्वारा उन दोनों होगी आँसों

को फोड़ डाले। वचन वद्ध युवती ने वैसा ही किया। तभी से ये अवे हो गये।

पीछे ये महात्मा बलभाचार्य के शिष्य हो गये और उनकी आज्ञा से नित्य प्रति अपने उपास्यदेव और सखा कृष्ण की स्मृति में नवीन भजन बनाने लगे। इनकी रचनाओं का वृहत् सग्रह 'सूर सागर' नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें लगभग सवा लाख पद कहे जाते हैं, पर आजकल पाँच छ हज़ार ही मिलते हैं। इसमें कृष्ण की बाललीला से लेकर उनके गोकुल-त्याग और गोपियों के विरह तर की कथा फुटकर पदों में रूही गई है। सभी पद गेय हैं। हिन्दुस्तान के गवैये इन पदों को बड़े चाव से गाते हैं।

इन्होंने एक ही प्रसंग पर अनेक पद लिखे हैं। भक्ति के आवेश में वीणा के साथ गाते हुए जो सरस पद इस अंध कवि के मुख से निस्तृत हुए हैं, उनमें पुनरुक्ति भले ही हो, पर वे इतने मर्मस्पर्शी तथा हृदयहारी हैं कि अरसिक को भी एक बार रसलीन कर देते हैं, विशेषतः बाललीला, गोपी-विरह तथा कृष्ण द्वारा भेजे गये उनके दूत उधो और गोपियों के सवाद के वर्णन में ये सरसता, स्वाभाविकता तथा उत्कृष्टता की चरम सीमा को लाँघ गये हैं। सूर सचमुच हिन्दी साहित्य के सूर्य हैं।

इन्होंने जो कुछ लिखा वह कृष्ण की भक्ति में ही निर्या और उसको अपना मित्र तथा सरा समझ कर। सूर का कृष्ण, महाभारत का कृष्ण नहीं अपितु ब्रज-निवासी, लीला-विहारी, प्रेमी कृष्ण है, और सूर की कविता की भाषा भी कृष्ण की लीलास्थली ब्रज भूमि की ही भाषा है।

भूपण—महाकवि भूपण का जन्म यमुना नदी के किनारे कानपुर जिले में तिकवापुर नामक गाँव में म्वत् १६७४ में तथा मृत्यु स० १७७२ में हुई। उनके अन्य सब भाई—चिन्तामणि मतिराम और नीलकण्ठ भी हिन्दी के वक्कुष्ट कवि थे।

भूपण बचपन में विलकुल निठल्ल थे। एक दिन भावज का ताता सुनकर वे घर से निकल पड़े। वोडे ही अभ्यास के बाद ये अन्त्री कविता करने लगे। तब ये कुछ दिन चित्रकूट अधिपति हृदयराम सोलकी के पुत्र रुद्रराय के पास रहे। वहाँ में ये औरगजेय के दरबार में गये, पर उस पराधीनता के वायुमण्डल में इस स्वाभिमानी जातीय कवि का गुञ्जारा न हो सका। तब ये दरपति शिवाजी के दरबार में पहुँचे। तदनन्तर शिवाजी की मृत्यु पर्यन्त वहीं रहे।

इनके घनाये हुए चार ग्रन्थ रहे जाते हैं—शिवराज भूपण, भूपण हजारा, भूपण उल्लास और हूपण उल्लास।

ये हिन्दू जाति के जातीय कवि थे। पराधीनता इनके हृदय में चुभती थी। मृत जाति में जीवन एवं जाति पृथक् करने के लिए इन्होंने वीर तथा शूद्र रस को अपनाया और इन रसों के ये सर्वोत्तम कवि हैं। इनकी कविता में नायक भी शिवाजी तथा छत्रसाल जैसे वीर हैं। कविता द्वारा भिन्नता सम्मान तथा धर इनको मिला, उनका हिन्दी के और किसी कवि को नहीं मिला।

गोस्वामी तुलसीदास—इसका जन्म स० १५६६ में यादव जिले के राजापुर परगने में हुआ। इनके पिता का नाम बामाराम दुब और माता का नाम तुलसी था। इसका पत्नी नाम रामशोभा था पर पैरामी होकर तुलसीदास उदया गया।

इसका विवाह सोठी जाति में ही हुआ था। कथा शाय

है कि इनका अपनी स्त्री पर बहुत अधिक प्रेम था । एक बार उसके मायके जाने पर ये भी उनके पीछे वहीं जा पहुँचे । इस पर इनकी स्त्री को लज्जा आई और उसने कहा ।

“लाज न लागत आपको, दौरे आयहु साथ ।
 विक् धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहौ मैं नाथ ॥
 अस्थि-चरममय दह मम, ताम जैसी प्रीति ।
 तैमी जो श्रीराम महँ, होति न तौ भय-भीति ॥

यह बात इन्हें ऐसी लगी कि उसी समय घर छोड़ कर चल दिए और काशी में आकर वैरागी हो गये । गोस्वामीजी के हृदय में प्रेम का प्रबल प्रवाह बह रहा था । अब तक उसका झुकाव स्त्री की ओर था, परन्तु इस जरा-सी बात से वह उधर से हट कर श्रीराम की ओर झुक गया और अन्त तक निरन्तर इसी दिशा में बहता रहा । इसी प्रेम प्रवाह ने इन्हें अनन्तकाल के लिए अजर अमर कर दिया । स० १६८० वि० में इन्होंने असी और गंगा के संगम पर ग्रह नश्वर शरीर छोड़ा ।

तुलसीदास जी ने अपने समय की सब बोलियों और सब भाषाओं में कविता की, पर इनकी सारी कविता लगभग राम पर ही आश्रित है । ये हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ और भारत जनता के प्रतिनिधि कवि थे । इनके ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—

१—रामचरित मानस, २—विनय-पत्रिका, ३—गीतावली, ४—दोहावली, ५—कवित्त रामायण, ६—रामाज्ञा, ७—राम-लता नहछू, ८—चरवै रामायण, ९—जानकी मंगल, १०—चैराम्य सदीपनी, ११—पार्वती-मंगल, १२—कृष्ण गीतावली १३—राम सतसई, १४—हनुमान बाहुक ।

इनमें से रामचरित मानस सबसे बड़ा और प्रसिद्ध है ।

जितना यह लोकप्रिय हुआ है उतना भारत में अन्य कोई ग्रन्थ नहीं हुआ है। राजा से लेकर रक तक प्रायः सबके घर में इसकी एक न एक प्रति मिल सकती है। जो स्थान संस्कृत में वेद और गीता का है, हिन्दी में वही स्थान इस रामचरितमानस का रहा जा सकता है।

प्रश्नपत्र ३

[प्रश्न १, २ और ३ आसक्तक ह। मेघ म मे तोइ चार कीलिए]

नीचे उद्धृत गद्यग्रन्थों के अध लिखिए —

(क) १२ मेघ के समाप्त होते गगनाले तुम्हें यहाँ बैठे देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो जाता है। इसलिए अब तुम मेरा के लिए आए हुए अनेक रूप सामान्य रूप नगरी में गूँड रहे, स्वप्न के परिजन-रूप पशुद्वियों से अलृप्त, लक्ष्मी के विनाश-मय मद्य सभामंडपमय तमल के काशतुल्य इस भिद्यमान पर बँडकर विष्णु भगवान के नाभि कमल में दिशानामा लला की गोभा हो पीया कर दो।

अथवा

अगे। समाप्त मे ही विदुः पुरुष हृदय इतना क्षम्य हो सकता है। मृतो तथा स्मृति नामों पर अंकित करो मर प्रमत्तते दर्शनों के प्रथम में 'स्वप्न में उमा महेश्वर "तैर श्रुति" पर भीतात्म का प्रेर भावना है' इस ओर वि का रूप देना भी आज मुक्त विरहविरिती की वह दुःख पर ही है।

प्राणनाथ ने पहले मेरा उतना आदर गटाकर एक गूठे अपवाद के कारण मुझे कोसो दूर पटक दिया । १०

(ग) चाणक्य—मैं अविश्वास, इटचक और उलनाओं का ककाल, कठोरताओं का केन्द्र ! आह ! तो इस विश्व में मेरा कोई सुहृद नही है, मेरा सकल्प । अब मेरा आत्माभिमान ही मेरा मित्र है । मैं अपनी प्रतिज्ञा पर आसक्त हूँ । बड़ी सुन्दरी है ! भयाङ्क रमणीयता है । आज उस प्रतिज्ञा में जन्मभूमि के प्रति कर्तव्य का भी धौनन चमक रहा है । जाधे पेट खाकर तृणशय्या पर सो रहने वाले के मिर पर दिव्य यज्ञ का स्पर्ण-मुकुट ! और सामने मफलता का सौध ।

अथवा

माम्राज्य चलाने की इच्छा न थी, चन्द्रगुप्त ! मैं ब्राह्मण हूँ, मेरा माम्राज्य करुणा का था, मेरा धर्म प्रेम का था । चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र मेरे दीप थे, अनन्त आकाश पितान था, शस्य-श्यामला कोमला विधम्भग मेरी शय्या थी, त्रैदिक विनोद कर्म था । उस अपना ब्राह्मण की जन्मभूमि को छोड़ कर कहाँ आ गया । सौहार्द के स्थान पर कुचक्र, फूलों के प्रतिनिधि काँटे, शानामृत के परिवर्तन में कुमन्त्रणा ! शान्ति खो गई, स्वरूप विस्मृत हो गया । अभिमान-वश दुस्तर कुहेलिका समुद्र के समान ससार का सतरण करना चाहता था । १०

(ग) राजा—यह कैसे आश्चर्य की बात है कि मैं उस लक्ष्मण को, जिसने भ्रातृप्रेम के कारण पितृप्रेम को तिलाजलि दे दी है, देखने के लिए उत्कण्ठित हो रहा हूँ । ॐ ॐ ॐ कहाँ है वह राज्यैश्वर्य को तृण समान समझने वाला ? गेटा राम ! मुझ बूढ़े को छोड़ कर झूठे मैं तुम्हारा इतना प्रेम ।

(क) विदूषक राम को एकान्त में उदासीन बैठा देख, उनसे सभा में चलकर सिंहासन को सुशोभित करने के लिए प्रार्थना करता है—(हे महाराज !) नये वादलों क समान नील रंग वाले आपको यहाँ (इस तरह एकान्त में) बैठा देख कर मेरा हृदय दुखी हो जाता है, इसलिए अब आप चलिए । यह सामने सभा मण्डप रूपी कमल सुशोभित हो रहा है, इसके चारों ओर आपकी सेवा क लिए आठ अनेकों राजा और सामन्त रूपी भ्रमर गूँज रह हैं, दरबारी लोग ही इस कमल की सुन्दर पखुडियाँ हैं, और यह कमल लक्ष्मी (विष्णु की स्त्री) के रहने के मन्दिर की तरह सुन्दर है, इस (सभामण्डप रूपी कमल) क कोश की तरह (वहाँ रखते) सिंहासन पर (आप) विराजिये, और अपनी शोभा से विष्णु भगवान के नाभि-कमल में बैठे ब्रह्मा की शोभा को भी फीरा कर दीजिए ।

अथवा

सीता क राम के प्रति ये विचार हैं —

(माना कि) मनुष्य का हृदय रश्माष ने कटोर है बि-नु आश्रय है कि वह इतना धोखा भी दे सकता है । अनुपम प्रेम के कारण जिनका नाम स्तूपों (मीनारों) तथा मूर्तियों स्तूपों पर लिखने योग्य है वेमे जोड़ों में दो ही आदमी हैं—'मृगों में पार्ष्वी और महादेव तथा इस पृथ्वी पर सीता और राम'— इस उक्ति को जन्म देकर भी अद्याप इस पृथ्वी पर आदरों प्रेमी कहलाकर भी मुझ निरपराधिनी की आज यह दुर्दशा कर दी है । (दा) मेरे स्वामी ने पहले मेरा इतना मान बढ़ाया, फिर एक शूरी निम्दा व धारण मुझे इतनी दूर गेह दिया ।

(ख) सुवामिनी के प्रेम से निराश चाणक्य अपने मन के भाव प्रकट करता है—

मैं अविश्वास, कूटनीति और धोखों का पजर (मूर्ति) और कठोरताओं का घर हूँ । ओह ! तो क्या इस ससार में मेरा कोई मित्र नहीं ? है, मेरे दृढ विचार और मेरा आत्माभिमान ही मेरा मित्र है । मैं अपनी प्रतिज्ञा पर ही मुग्ध (स्थिर) हूँ, वह बड़ी सुन्दरी है । इसमें डरावनी खूबसूरती है । आज मेरी उस प्रतिज्ञा में, मेरा अपनी मातृ भूमि के लिए क्या कर्तव्य है—इस बात का भी यौवन झलक रहा है । (आहा) उस ब्राह्मण (चाणक्य) के सिर पर, जो कभी आधे पेट खाकर तिनकों की शय्या पर सोजाता था, आज यश रूपी सोने का ताज शोभा पा रहा है और उसकी सफलता का महल सामने ही दिखाई दे रहा है (अर्थात् उसे शीघ्र ही सफलता मिलने वाली है) ।

अथवा

चन्द्रगुप्त जब अपने माता-पिता के नाराज होकर चले जाने पर क्रुद्ध होकर चाणक्य से उसका कारण पूछता है, तो चाणक्य कहता है—

चन्द्रगुप्त ! मैं तुम्हारा राज्य चलाना नहीं चाहता था । मैं ब्राह्मण हूँ । मेरा राज्य इस राज्य से बिलकुल अलग था । वह था दूसरों पर दया करना । मेरा धर्म था ससार भर के जीवों से प्रेम करना । चन्द्र, सूर्य और तारे ही मेरे दीपक थे, असीम आकाश ही मेरा तबू था, हरियाली से ढकी नर्म भूमि ही मेरी मेज थी, बुद्धि सम्बन्धी (ज्ञान की) बातों से मन को बहलाना

लिपि वैसे ही अपार प्रेम है, जैसे कठोर मृणाल (भसीडे) के भीतर कोमल तार होते हैं ।

(ग) हे मेरी कमजोर (दुग्ध भगी) आह ! तू बाहर न निकल ! (नहीं तो) तुझे लोगो की हँसी का जाड़ा लगेगा । (अब तो तू) शब्द ऋतु के जलहीन वादलों में भयभीत हुई बिजली की तरह अन्दर ही अन्दर छटपटाती रह ।

अथवा

राक्षस को सुवासिनी के रूप की याद दिला कर भडकाने के लिए नेपथ्य से यह पद्य रुद्धा गया है—

(स्त्री के) रूप की अग्नि बड़ी प्रबल है ? उसमें (कामियों का) मन मस्न होकर पतंगों की तरह जा पडता है । (यह स्त्री की सुन्दरता) सन्ध्या के आकाश की तरह लाल-जाल और बहुत ही तेज शराब है । क्या यह फूलों की माला (जैसी कोमल सुन्दरता) लोहे की जजीर से भी कठोर नहीं ? (अवश्य कठोर है) ।

३ (क) मगध में अपने पुगने घर का खंडहर देख चाणक्य के मुँह से ये शब्द निकले—

“मगध ! सावधान ! इतना अत्याचार ! तुझे उलट दूँगा, नया धराऊँगा । (ठहरकर) नहीं, वस मेरी भूमि, मेरी वृत्ति, वही मिल जाय । मुझे राष्ट्र की भलाई बुराई से क्या ?”

इन शब्दों से हृदय के क्या क्या भाव टपकते हैं ? ५

(ख) नीचे उद्धृत वाक्यों में से किन्हीं पाँच का तात्पर्य समझाइये —

(१) तामस त्याग से सात्त्विक ग्रहण उत्तम है ।

(२) ब्राह्मणत्व एक सार्वभौम शाश्वत बुद्धि वैभव है ।

- (३) स्मृति जीवन का पुरस्कार है ।
 (४) नियति सु-दरी के भना में तल पड़ने लगा है ।
 (५) महत्ताकाशा का गोनी निप्टुगता की नीपी में रहता है ।
 (६) जिसके लिए प्रेमी के हृदय में तड़प है, क्या वह भी शोक करने योग्य है ?

(६) सारे ससार के अभ्युदय और नि श्रेयस + कारणभूत आप-सरीये महाराज के लिए निमित्तारण्य में भक्ति होना उचित ही है ।

(८) रे पददलित ब्राह्मणत्व । अपनी जगल से जन् । उमकी चिनमारी से तेरे मेवक गूद और रक्षक भविय उत्तर होगे ।

(ग) राम का दुपट्टा ओढ़कर अट्टन गीता ने कहा था—

“मेरे सौभाग्य से इनके इस दुपट्टे में इतर फुलल या महक नहीं।” गीता ने ‘सौभाग्य’ शब्द जिस अभिप्राय से कहा है, उसे स्पष्ट कीजिए ।

(घ) प्राचीन नाटकों में ‘प्रयोग’ किम अभिप्राय में रखा जाता था ।

(क) चाणक्य अपने पिता का देश विवाग, अपनी शोषही का दूटना, अपनी प्रमिता सुवामिनी का नागने वाली पर जाना, जान कर मोघ में भर जाता है । पर धार तो पट बदला लेने का विचार कर हम अन्वयायीस शाय को ही न का विचार करता है । फिर शास्त्र ही के कारण है, और बदल इतना ही चाहता है कि हम जोबिदा मिल पाय, पर मेरी बरके

लिए वैसे ही अपार प्रेम है, जैसे कठोर मृणाल (भसीडे) के भीतर कोमल तार होते हैं।

(ग) हे मेरी कमजोर (दुख भरी) आह ! तू बाहर न निकल ! (नहीं तो) तुम्हें लोगो की हँसी का जाडा लगेगा। (अब तो तू) शरद ऋतु के जलहीन वादलो मे भयभीत हुई विजली की तरह अन्दर ही अन्दर छटपटाती रह।

अथवा

राक्षस को सुवासिनी के रूप की याद दिला कर भडकाने के लिए नेपथ्य से यह पद्य रुहा गया है—

(स्त्री के) रूप की अग्नि बड़ी प्रबल है ? उसमें (कामियो का) मन मग्न होकर पतंगे की तरह जा पडता है। (यह स्त्री की सुन्दरता) सन्ध्या के आकाश की तरह लाल-लाल और बहुत ही तेज शराब है। क्या यह फूलो की माला (जैसी कोमल सुन्दरता) लोहे की जजीर मे भी कठोर नहीं ? (अवश्य कठोर है)।

३ (क) मगध मे अपने पुगने घर का खंडहर देख चाणक्य के मुँह मे ये शब्द निकले—

“मगध ! सावधान ! इतना अत्याचार ! तुझे उलट दूँगा, नया बनाऊँगा। (ठहरकर) नहीं, बस मेरी भूमि, मेरी वृत्ति, वही मिल जाय। - मुझे राष्ट्र की भलाई बुराई से क्या ?”

इन शब्दों से हृदय के क्या क्या भाव टपकते हैं ? ५

(ए) नीचे उद्धृत वाक्यों में से किन्ही पाँच का तात्पर्य समझाइये —

(१) तामस त्याग से सात्विक ग्रहण उत्तम है।

(२) ब्राह्मणत्व एक सार्वभौम शाश्वत बुद्धि वैभन है।

५ चाणक्य चन्द्रगुप्त के इस कथन पर कि गुरुदेव 'इतनी क्रूरता' ! उसे उत्तर देता है—ससार में तबे बनने की—राजा बनने की—तथा नेसटके राज्य करने की कुची ही निर्दयता है । बिना कठोरता किये भला कभी तुम राजा बन सकते थे । अत इम निर्दयता की चिन्ता न करो ।

६ जब राम सीता को याद कर करके शोक सतप्त हो रहे हैं तो सीता कहती है—'मैं शोक करने योग्य नहीं हूँ । क्योंकि जब आप मेरे लिए इम प्रकार का प्रेम भाव रखते हैं तो मुझ जैसी तो कोई बड़भाविनी ही नहीं ।' ऐ भी सच, प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए यदि मन्त्रा प्रेम रखता है तो वह किसी भी अवस्था में शोक करने योग्य नहीं है ।

(७) कल्प राम की तपोवन में भक्ति देख कर कहता है कि महाराज ! आप राजा हैं, ससार की उन्नति और पत्याण का कारण आप हैं, फिर संसार की उन्नति और कल्याण के मूल कारण तपोवन में आपका प्रेम होना स्वाभाविक है ।

(८) पर्यनेश्वर से अपमानित पाण्डव रा कथन है—

हैं दूसरों के पैरों में पृथ्वी हुए मग्ननेन । नृ अपनी प्राणमिनी को जला, अपनी शक्ति को भ्रष्ट कर, फिर देव अनेकों शूद्र सैरी सेवा के लिए और अनेकों सप्रिय नेरी र-न के लिए उपस्थित हो जायेंगे ।

(९) राम ने दुपट्टे को मुग्ध शक्ति लक्ष्मण की शक्ति को निश्रय हो गया कि 'इस लक्ष्मण के भोगों में दूर हैं—वे रिगी और नो में मे

दि अन्तोप रा के

निर्वाह कर लेगा। एक प्रकार से उसे पढे लिखे समाज से घृणा हो जाती है। तभी तो वह अपने शास्त्रों के पठन पाठन को भी छोड़ खेती करना चाहता है। राष्ट्र की भलाई बुराई से अपना कोई सम्बन्ध नहीं बताता। अथवा वह मन में दुःखी होकर सोचता है कि जब मेरा कोई नहीं तो मैं किमी का क्यों बनूँ ?

(२) ? चाणक्य पर्वतेश्वर के इस कथन पर कि मैंने तो राज्य दान कर दिया है उमे समझाता है कि मोह और अभिमान तथा निराशा मे, या किसी दूसरे दुःख से किसी वस्तु वा राज्य को छोड़ देने की अपेक्षा शुभ कार्य क लिए उमे फिर स्वीकार कर लेना अच्छा है। अतः, तुम राज्य को स्वीकार करो।

२ चाणक्य पर्वतेश्वर को ब्राह्मण की शक्ति बताता है कि ब्राह्मण वह शक्ति है, जो सारी पृथ्वी को सदा ज्ञान का भण्डार देती है। अतः वह जो चाह कर सकती है। फलतः मुझ में भी वही शक्ति है, और मैं चन्द्रगुप्त को क्षत्रिय-पद दे सकता हूँ।

३ चन्द्रगुप्त कार्नेलिया से कहते हैं—

हे सुन्दरी ! तुम मुझे नहीं भूली, बस मुझे इसी में प्रसन्नता है। क्योंकि प्रेमी के जीवन का यही एक अमूल्य सुख है कि उसकी प्रेमिका उसे न भुलावे।

४ नन्द से तिरस्कृत चाणक्य का कथन है कि नन्द—
अब तेरे बुरे दिन आ गए हैं। अब शीघ्र ही तेरे जैसे शूद्रों को गद्दी से उतार कर सबे क्षत्रिय गद्दी पर बैठेगे।

कुन्दमाला के लेखक रूमी को अन्धकार होने के दो प्रधान कारण हैं।

(१) सीता को राम के हृदय के भावों से परिचित कराना कि वह उसे कितना चाहता है। सीता अपने स्वामी के इस व्यवहार से कि उसने एक तुच्छ और भूठी निन्दा के कारण उसे निर्जन वन में अकेला छोड़ दिया, बड़ी दुःखी है। वह अपने स्वामी को कठोर तथा अन्यायी समझती है। उसके इन भावों को दूर कर फिर स्वामी के प्रति प्रेम-भाव उत्पन्न करने का काम कवि ने इसी उपाय से किया है। यदि सीता की तरह राम उस देख पाते तो उनके हृदय के भाव सीता पर स्पष्ट न हो पाते। सीता सम्भवतः यही समझती कि प्रेम भाव केवल निन्दा के हैं। पर अन्धकार होने के कारण सीता राम के मनोभावों की ठीक ठीक जान जाती है, उसे मालूम हो जाता है कि उसे स्मरण कर स्वान स्थान पर राम उसके लिए कितना दुःखी हो रहे हैं, अपने को कितना खोम रहे हैं, इसी क्षण में सीता का दुःख घट जाता है।

(२) सीता को अन्धकार दूर कर वह अन्त में पूर्ण सति सीता का राम से अपूर्ण मिलन कराना चाहता है। यदि राम सीता को पहले ही देख ले तो नाटक के अन्तिम और आवश्यक अंक की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। अपूर्ण मिलन ही दर्शकों और पाठकों का मोहना है। इस प्रकार पूर्ण द्वारा राम अपने जीवन का सुखान्त मुक्त मनुष्य बन कर निकलते हैं और अन्त में दोनों का सुख मिलन होता है। अतः सीता को अन्धकार दूर करने में ये ही कारण हैं।

लिए कही राम ने दूसरा विवाह न कर लिया हो। पर दुपट्टे को सुगन्धि शून्य देखकर उसका सन्देह दूर हो जाता है। इसीलिए वह "मेरे सौभाग्य" इत्यादि वाक्य में 'सौभाग्य' शब्द कहती है।

(घ) प्रवेशक रसने का अभिप्राय यही था कि जो घटनाएँ नाटक क रगमच पर न दिखाई गईं हो, या न दिखाई जा सकती उन्हें प्रवेशक में (किसी नीच पात्र) द्वारा दर्शकों को सुना कर नाटक का सिलसिला समझा दिया जाय।

४ कल्याणी ने दो परस्पर विरोधी भावों के द्वन्द्व में पड़कर आत्महत्या की, इसे सिद्ध कीजिए।

कल्याणी कहती है 'मेरे जीवन के दो स्वप्न थे—दुर्दिन के बाद आकाश के नक्षत्र विलास-सी चन्द्रगुप्त की छवि, और पर्वतेश्वर से प्रतिशोध'। पर्वतेश्वर से प्रतिशोध तो उस उसी दिन मिल चुका था जिस दिन पर्वतेश्वर और सिकन्दर की सधि हुई थी। और फिर उक्त कथन के थोड़ी देर बाद ही पर्वतेश्वर का वध करके वह उससे निश्चित हो चुकी थी। चन्द्रगुप्त को वह हृदय से चाहती थी। वह स्वयं कहती है—'कल्याणी ने वरण किया था कवल ए पुरुष को—वह था चन्द्रगुप्त।' परन्तु जब वही चन्द्रगुप्त उस पिता के विरुद्ध खड़ा हुआ तो उसके हृदय में चन्द्रगुप्त के प्रति विरोधी भाव उत्पन्न हुए। आत्महत्या से पूर्व उसके मन में चन्द्रगुप्त के प्रति आकर्षण और पिता के विरुद्ध खड़े होने के कारण उस विमुखता, इन दोनों विरोधी भावों का द्वन्द्व हो रहा था। इस द्वन्द्व में पड़कर उसने आत्महत्या की।

५ सीता को अहृदय रसने में 'कुन्दमाला' के रचयिता जो उद्देश्य हो उसे प्रकट कीजिए।

राक्षस के पूछने पर वे अपने आप को चाणक्य द्वारा नियुक्त राजस के शरीर-रक्षक बताते हैं। इस प्रकार चाणक्य राजस पर अपना पूरा विश्वास बैठा लेता है।

सिकन्दर के भारत त्याग के बाद चाणक्य राजस और कल्याणा को मगध जाने की अनुमति देता है। साथ ही राजस से कहता है 'मैं सुवासिनी से तुम्हारी भेट भी करा देता, परन्तु वह मुझ पर विश्वास नहीं करती।' प्रेमान्ध राजस तुरन्त अपनी अँगूठी उतार कर दे देता है और कहता है—'यह तो मेरी अँगुलीय मुद्रा। चाणक्य! सुवासिनी को कारागार से मुक्त करा कर मुझ से भेट करा दो।' इस प्रकार चाणक्य ने राजस में अँगूठी ली।

शकटार पहले ही बदीगृह में था। उसके बाद चाणक्य ने किसी तरह नन्द को यह कहना दिया कि सेनापति मौर्य अपने विद्रोही पुत्र चन्द्रगुप्त को सहायता देता है। तब नन्द ने मौर्य को भी अन्ध-कूप में डलवा दिया। फिर सेनापति की पत्नी वररुचि को साथ लेकर नन्द से अपने पति की मुक्ति की प्रार्थना करने गई, और वे दोनों अन्धकूप में भेजे गए। चाणक्य नन्द के मन्त्रियों और सेनापति आदि को जेल में डलवा कर प्रजा को यह कह कर विद्रोह के लिए उभाड़ना चाहता था, कि जो राजा सेनापति और मन्त्रियों को जेल में डालता है, वह राज्य का अधिकारी नहीं, वह अत्याचारी है। इसीलिए यह राजस से उसकी अँगूठी लेता है। राजस और सुवासिनी के विवाह के कुछ ही समय पहले एक पिट्टी अश्वघाट्टर नाम पर राजस की मोहर करके यह पिट्टी चाणक्य मातृपिता को दे देता है। मातृपिता यह पिट्टी लेकर नन्द के महल में जाकर

६ चाणक्य ने राक्षस से मुद्रा किस उपाय से ली और अपनी नीति सफल करने में उसका क्या उपयोग किया ? संक्षेप में लिखिए । ९

जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया, तो चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने उस पद पद पर बाधा दी। इधर कल्याणी ने भी पर्वतेश्वर से बदला लेने के लिए उत्तगपथ की यात्रा की। पर्वतेश्वर से सिकन्दर की संधि हो जाने पर चन्द्रगुप्त, चाणक्य और कल्याणी मगध की सेना के साथ रावी नदी के इस पार आ गए। इतने में राक्षस कल्याणी को लेने वहाँ पहुँचा। कल्याणी राक्षस के साथ मगध लौटना चाहती थी, परन्तु चाणक्य ने यह कहकर कि मगध पर सिकन्दर का आक्रमण रोकने के लिए, मगध की सेना का वहाँ रहना आवश्यक है, राक्षस और कल्याणी को वहीं रोक रखा। चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने मालवों, जुट्टनों और मगध की सेना की सहायता से सिकन्दर को भारत से निकाल बाहर किया। यवनो पर विजय पाने के बाद चाणक्य ने मगध की ओर ध्यान दिया। उसने पहले राक्षस से यह कहा कि नन्द को राक्षस और सुवासिनी के प्रेम का पता लग गया है, इसलिए अभी राक्षस का मगध लौटना ठीक नहीं। फिर उसने राजम के चर द्वारा उसे सूचना दी कि सुवासिनी पर राक्षस से मिलकर कुचक्र करने का अभियोग है, और वह कारगर में है। और ग्रान्त दुर्ग पर अधि कार करके विद्रोह करने के अपराध में उसे बंदी करके ले जान के लिए पुरस्कार की घोषणा की गई है। उसके बाद ही चाणक्य के सिंग्राथे हुए चार व्यक्ति मगध-सैनिकों के वेश में आकर राक्षस को नन्द की आज्ञा से बंदी करते हैं और तुरन्त और आठ सैनिक आकर उन चार सैनिकों को बंदी करके राक्षस को मुक्त करते हैं।

से अतिशोध लेना ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। उसके साथ ही वह अपने देशवासियों की अधीनता स्वीकार करने में अपनी हठी समझता है, भले ही उन यत्नों में अधीन होकर रहना पड़े। चाणक्य और अलका के सतत प्रयत्न से अन्त में वह विदेशियों की अधीनता स्वीकार करने की अपेक्षा आर्यावर्त के साम्राज्य में सम्मिलित होना पसन्द करता है और लम्बे-लम्बे वीरगति को पा जाता है।

सिंहरण वीर है, कर्तव्यनिष्ठ है, साहसी है। तक्षशिला गुप्तकाल में शिक्षा समाप्त करते समय चंद्रगुप्त और सिंहरण के विचार थे—'हम मागध हैं और यह मालव। समाज भर में नाति और शिक्षा का अर्थ मने यही समझता है कि आत्म-सम्मान के लिए मर मिटना ही दिव्य जीवन है। सिंहरण मेरा आत्मीय है, मित्र है, उसका मान मेरा ही है।' इस पर चाणक्य उन्हें शिक्षा देता है—'तुम मातव हो और यह मागध, यही तुम्हारे मान का अरमान है न? परन्तु आत्म सम्मान इतने ही में मनुष्य नहीं होगा। मालव और मागध को भूल कर जब तुम आर्यावर्त का मान लोगे, तभी घट मिलेगा। क्या तुम नहीं देखते हो कि आर्यावर्त जिसमें मैं, आर्यावर्त के सब स्वतन्त्र राष्ट्र एक के अतिरिक्त दूसरे विदेशी विजेता से पक्षक्षित होंगे।' धर्म उर्मा मरय के सिंहरण अपने आप को और मालव को भूल जाता है, उस दिन मैं वह जानता है एक आर्यावर्त को। उसके लिए वह अपने आप को हथेली पर रखे फिरता है। से-यूद्ध में स्व-सम्मान में नाशित होना चाहता है, तो सिंहरण आकर अन्त में पड़ता है—'राजकुमारी! यह मातृपित्र मुझे देखकर आप निराश हो जायें, फिर मैं धूम रहेगा।' और से-यूद्ध का समाप्त होना।

हुए भी केवल आर्यावर्त की एकता और स्वाधीनता के लिए गण-राष्ट्र को भी साम्राज्य में सम्मिलित कर देता है। आभीरु और सिंहरण में एक और भेद है। आभीरु मिव्या गर्व के कारण हिमी की अधीनता स्वीकार नहीं करना चाहता तो सिंहरण मालवों का सेनापति होते हुए भी चन्द्रगुप्त के सेनापतित्व का इसलिए समर्थन करता है, कि वह जानता है कि चन्द्रगुप्त उस पद के लिए उससे अधिक उपयुक्त है और आर्यावर्त की स्वाधीनता के लिए चन्द्रगुप्त का सेनापतित्व अभिप्रेत है।

अथवा

कल्याणी को पर्वतेश्वर ने शूद्र कन्या कहा था, इस पर नाराज होकर वह पर्वतेश्वर से प्रतिशोध लेने को न्यत होती है। उसके अपने शब्दों में उसके जीवन के दो स्वप थे—दुर्दिन के बाद आकाश के नक्षत्र विलास सी चन्द्रगुप्त की छवि, और पर्वतेश्वर ने प्रतिशोध। वस इसके अतिरिक्त उसके जीवन का और कोई लक्ष्य न था। पर्वतेश्वर से प्रतिशोध लेने के लिए उसने आभीरु के समान मिफन्दर से मिलकर पर्वतेश्वर में युद्ध करने की अपेक्षा, मिफन्दर द्वारा पराजित पर्वतेश्वर का मागध सेना द्वारा नष्टा कर मान मर्दन का जो निधय विचा था, उस का कारण चन्द्रगुप्त ही कहा जा सकता है। यह चन्द्रगुप्त को पाक्षी थी, और जय पाणक्य और चन्द्रगुप्त नन्द से पर्वतेश्वर के लिए सहायता माँगां गये और नन्द ने सहायता देने से इन्कार कर दिया तो कल्याणी कहती है—'विनागी, चन्द्रगुप्त पर ही दया कीजिये। एक बात उसकी भी मार लीजिये।' वस चन्द्रगुप्त के कारण ही उसने पर्वतेश्वर से प्रतिशोध लेने के

लिए इस उपाय का अवलम्बन किया। और अन्त में जब चन्द्रगुप्त उसके पिता के विरुद्ध खड़ा हुआ तो चन्द्रगुप्त और पिता दोनों की तरफ आकृष्ट होने के कारण उसने आत्महत्या कर ली।

अलका का जीवन आदर्श स्वार्थ-त्याग, वीरता और आर्य-साम्राज्य के एक कुशल सैनिक का जीवन है। चाणक्य की नीति की सफलता चन्द्रगुप्त के शौर्य और सिंहरण तथा अलका की अथक लगन का परिणाम है। पिता और भाई को देशद्रोह करते देख वह गांधार के राज-प्रामाद को छोड़ कर चल देती है। देश की स्वाधीनता के लिए वह पथ की भिखारिणी बनती है। सौभाग्य से उसे जीवन सगी भी सिंहरण-सा मनस्वी वीर और देश-भक्त मिल जाता है। वह देश की स्वाधीनता के लिए सब कुछ कर सकती है तो दापत्य-प्रेम से भी अद्वितीय है। जब पर्वतेश्वर कहता है कि 'अलका के दो प्रेमी नहीं जी सकते', तो वह कैसा निर्भीक उत्तर देती है—'यदि भूपालों का सा व्यवहार न माँग कर आप सिकन्दर से द्वन्द्व-युद्ध माँगते तो अलका को विचार करने का अवसर मिलता।' वह देश के लिए आवश्यकता होने पर घड़ी होती है, नटी बनती और धनुष भी हाथ में लेती है और अद्वितीय वीर मलता-
पूर्वक युद्ध करती है। देश की स्वाधीनता १७२
इतने कष्ट सहन भी उसकी
कभी नहीं म स्वा
जय चाणक्य १११
सौपता है तो 'भाई'।

नहीं गया ! राज्य किसी का नहीं, सुग्रासन का है ! जन्मभूमि के भक्तों में आज जागरण है। देखते नहीं, प्राच्य में आज सूर्योदय हुआ है ! स्वयं सम्राट् चन्द्रगुप्त तक इस महान् आर्य साम्राज्य के सेवक हैं। स्वतन्त्रता के युद्ध में सैनिक और सेनापति का भेद नहीं। जिसकी रङ्ग प्रभा में विजय का आलोक चमकेगा वही वरेण्य है ! दमो की पूजा होगी। भाई ! तक्षशिला मेरी नहीं और तुम्हारी भी नहीं, तक्षशिला आर्यावर्त का एक भूभाग है, वह आर्यावर्त की होकर ही रहे, इसके लिए मर मिटो ! फिर उसके कर्णों में तुम्हारा ही नाम अंकित होगा। मेरे पिता स्वर्ग में इन्द्र में प्रतिस्पर्धा करेगा। वहाँ की अप्सराएँ विजय-माला लेकर खड़ी होंगी, सूर्यमण्डल मार्ग चलेगा और उज्ज्वल आलोक से मण्डित होकर गांधार का राजकुल अमर हो जायगा।'

८ राम ने अपने पिता के सुगन्धुन का कुछ भी ध्यान न करके राजधर्म का कठोर पालन किया, यह प्रदर्शित कीजिए। ९

अष्टावक्र मुनि ने राम को उपदेश दिया था—“प्रजाजन ही मूल राजधर्म हैं, वही राज्य की जड़ हैं। राजा का धर्म है कि वह प्रजा के सुख और भलाई के लिए अपने सब सुखों को तिलाञ्जलि दे दे। अगर पुरुष पड़े तो बन्धु, भाई, माता और पत्नी तक का त्याग करदे।” राम ने अक्षरानु अक्षर उपदेश का पालन किया। उन्होंने बेधल प्रजाजन को ही अपने जीवन की साधना और ध्येय बनाया। प्रजा की संतुष्टि के लिए उन्होंने मीठा हो—उसी मीठा हो जो उन्हें प्राणी में भी प्यारी थी, जिसे वे हृदय में सती, माषी और पुण्यनारी समझते थे—

सदा के लिए निर्वासित कर दिया और निर्वासित भी किया था गर्भिणी अवस्था में जिस समय उन्हें सब से अधिक आराम की आवश्यकता थी। क्रूर से क्रूर मनुष्य भी इतना कठोर हृदय नहीं हो सकता जितने कठोर हृदय राम अपने कर्तव्य—राजधर्म—के पालन के लिए हुए थे। और सीता को निर्वासित कर राम की अपनी दशा क्या हुई उसका आभास हमें मिलता है द्विजेन्द्र लाल राय के उन शब्दों में जो उन्होंने सीता नाटक में राम के मुख से कहलाये हैं। वे कहते हैं—“सोने के लिए लेटता हूँ, लेकिन अकस्मात् हृदय के भीतर धकधक करके आग जल उठती है, मर्मस्थल में जैसे कोई तीक्ष्ण छुरियाँ भोंकने लगता है, हज़ारों विच्छुओं के काटने की ऐसी यन्त्रणा से छटपटा उठता हूँ। मैं अकेला उन्मत्त की तरह महल के भीतर, ऊपर, छतों पर इधर उधर टहलता रहता हूँ। इन बारह वर्षों में मुझ शान्ति नहीं मिली, तीव्र यन्त्रणा के मारे नींद नहीं आई।” राम ने यह अपनी दुर्दशा की थी स्वयं अपने आप, और की थी केवल प्रजारजन के लिए—राजधर्म पालन के लिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि राम ने निज सुख दुःख का कुछ भी ध्यान न करके कठोर राजधर्म का ही पालन किया।

९ 'प्रतिमा' नाटक में अकिन भरत के चरित्र की उज्ज्वलता दिग्ग्राह्य।

प्रतिमा नाटक में भरत का चरित्र बिल्कुल वैसा ही अकित किया गया है जैसा रामायण में है या रामायण के आधार पर बने अन्य नाटकों आदि में है। भरत भ्रातृ प्रेम तथा त्याग का अवतार है। उसे जब यह मालूम होता है राम

के वनवास का कारण उसकी माँ है तो वह उसे प्रणाम तक नहीं करती। कौशल्या के पृष्ठने पर कि 'शिष्टाचार जानते हुए भी तुम अपनी माता को प्रणाम क्यों नहीं करते' भरत कहता है 'मेरी माँ आप हैं।' भ्रातृ प्रेम के कारण ही वह राज्य छोड़ वन में जाता है, भाई को मनाने का यत्न करता है, उसके न मानने पर उसी की सहायता लेकर वह राज्य चलाता है। भ्रातृ-प्रेम वश ही वह जन्म दातृ माता को कई बार बटु वचन कहता है। किन्तु जब उसे यह ज्ञात होता है कि मेरे पिता को अन्धमुनि का शाप था, तब इस सारी घटना को देवी समझ वह माता को प्रणाम कर उसने अपने अपराध की क्षमा माँगता है। अन्त में राम के लौटने पर वह मारा राज्य धरोहर की तरह लौटाकर, आप सेवक बन कर आजन्म सेवा करता है और आदर्श भ्रातृ-प्रेम का उदाहरण स्थापित करता है। भरत के त्याग को देख कर राम तक उस पर मुग्ध हैं। राम स्वयं एक स्थान पर कहते हैं—

“मैंने अति चिरकाल में पाई थी जो कीर्ति।

इसने अति लघु काल में हर ली है यह कीर्ति ॥”

१० अन्धमुनि ने दशरथ को ज्ञात शाप दिया था, उसका रक्षक मृत्यु पर वैशेषिक के प्रति भरत का भाव नहीं अच्छा हो गया, इच्छा विचार कीजिए।

जब से भरत ने यह सुना था कि राम के वनवास और पिता की मृत्यु का कारण उसकी माता वैशेषिकी है तब से वह उस से बटु बटु था। इसी लिए वह अपनी माता को स्थापित स्थापित पर व्यापपूर्ण और बटु बटु कहता है तथा राम

अपनी माता कहने में भी लज्जित होता है। पर जब उसे यह विश्वास हो गया कि मेरे पिता को श्रवण के पिता अन्धमुनि का शाप था कि 'दशरथ तू मेरी तरह पुत्र-वियोग में मरे', तब उसने समझ लिया कि राम का वन-गमन और राजा की मृत्यु यह सब विधि का विधान था। जो किसी के रोके नहीं रुक सकता था। इसमें मेरी माता का कोई अपराध नहीं। इस समय भरत के हृदय में स्वाभाविक मातृ-भक्ति जागरित हुई। उसका मस्तक माँ के चरणों में झुक गया, और उसने अपने पहले कहे कुत्रचनों के लिए उससे क्षमा माँगी और फिर उसकी निन्दा नहीं की।

प्रश्नपत्र ४

१ महावीरचरित कथा और आदर्श महिला में दी गई सीता की कथा में कितनी साम्यता है और कितनी विपमता? महावीरचरित के लेखक भवभूति ने क्या क्या परिवर्तन किये हैं और क्यों?

अथवा

कुन्दमाला और उत्तररामचरित की कथाओं में साम्यता कितनी है और विपमता कितनी? दोनों में से कौनसी रचा श्रेष्ठ है? १३

(१) आदर्श महिला पुस्तक अब परीक्षा में नहीं, अतः उसकी कथा से तुलना भी अनावश्यक है।

अथवा

इसमें शक नहीं कि 'कुन्दमाला' तथा उत्तररामचरित की

कथा वस्तु का आधार एक है और दोनों की मुख्य कहानी भी एक है। दोनों में राम लोक-निन्त्या से डर कर सीता को वनवास देते हैं। लक्ष्मण अयोध्या सीता जी को वन में छोड़ आते हैं। वाल्मीकि मुनि सीताजी को शरण देते हैं, उनके पुत्रों की शिक्षा का भार सिर पर लेते हैं। अश्वमेध यज्ञ होता है, सीता की मोने की मूर्ति उतारवाड़ी जाती है। राम वन में जाते हैं। उन प्राचीन परिचित स्थानों को देखकर सीता की याद उन्हें और भी दुःखित करती है वहाँ चारह वर्ष के बाद उनकी सीता से भेट भी करायी जाती है, पर दोनों कथानकों में सीता को यरदान के प्रभाव से अदृश्य कर दिया जाता है। वियोग-सतप्त रामचन्द्र को सीता मूर्छित होते देखती है। अपने स्पर्श से उनकी मूर्छा को दूर करती है, पर राम उसे देख नहीं सकते उसकी बाणों को सुन नहीं सकते। लवकुश का दर्शन होता है उनकी देखते ही रामचन्द्रजी तथा अन्य समाधियों में स्वभारत पुत्र बुद्धि उत्पन्न होती है। ये दोनों वाल्मीकि प्रणीत रामायण की सुनाने के अन्त में राम का सीता के साथ सुखद मिलन होता है।

कथा एक होने पर भी दोनों में वर्णन करने का ढंग पृथक्-पृथक् है। कुन्दमाला में राम ही राजा हैं। राज्य का सारा प्रबंध उनके हाथों में है। ये ही सीता को विर्यासित भी करते हैं। कुन्दमाला की कथा यहाँ से प्रारम्भ होती है, यहाँ लक्ष्मण सीता को छोड़ने के लिए वन ले जा रहा है। वनमें पहले अश्व में अधिकतर रथ के प्रयाण का ही वर्णन है, और यहाँ लक्ष्मण सीता को रामचन्द्र जी की आज्ञा सुनाता है। पर उत्तरराम चरित की कथा यहाँ से प्रारम्भ होती है, यहाँ रामचन्द्र का

अपनी माता कहने में भी लज्जित होता है। पर जब उसे यह विश्वास हो गया कि मेरे पिता को श्रवण के पिता अन्धमुनि का शाप था कि 'दशरथ तू मेरी तरह पुत्र-वियोग में मरे', तब उसने समझ लिया कि राम का वन-गमन और राजा की मृत्यु यह सत्र विधि का विधान था। जो किसी के रोके नहीं रुक सकता था। इसमें मेरी माता का कोई अपराध नहीं। इस समय भरत के हृदय में स्वभाविक मातृ-भक्ति जागरित हुई। उसका मस्तक माँ के चरणों में झुक गया, और उसने अपने पहले कहे कुत्रचनों के लिए उससे क्षमा माँगी और फिर उसकी निन्दा नहीं की।

ग्रन्थपत्र ४

१ महावीरचरित कथा और आदर्श महिला में दी गई सीता की कथा में कितनी साम्यता है और कितनी विपमता? महावीरचरित के लेखक भगभूति ने क्या क्या परिवर्तन किये हैं और क्यों?

अथवा

कुन्दमाला और उत्तररामचरित की कथाओं में साम्यता कितनी है और विपमता कितनी? दोनों में से कौनसी रचना श्रेष्ठ है?

(१) आदर्श-महिला पुस्तक अब परीक्षा में नहीं, अतः उसकी कथा से तुलना भी अनावश्यक है।

अथवा

इसमें शक नहीं कि 'कुन्दमाला' तथा उत्तररामचरित की

राम के साथ उनका प्रथम मिलन बड़ा मनोहर है। राम प्रजाहित के लिए ही तपोवन में जाते हैं, वैसे नहीं। अश्वमेध में अश्व छोड़ना भी बहुत स्वाभाविक है। राम का सीता को स्वीकार करना भी एक अद्भुत ढंग का है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दानों की कथा एक होने पर भी कहने का ढंग अलग अलग है। उत्तररामचरित की कथा में स्वाभाविकता के अधिक होने के कारण तथा मानव रामचंद्र नहीं अपितु राजा राम के चरित्र के मानसिक अतद्बद्ध का अधिक विश्लेषण होने के कारण हम उत्तररामचरित की कथा को अधिक प्रशंसनीय समझते हैं।

२ “उस दुरात्मा चन्द्रगुप्त का भाग्य देखो। मरी नीतियाँ चन्द्रगुप्त के विविध कल्याण कर रही हैं।” इस कथन पर अपना विचार प्रकट करो। १०

राक्षस और चाणक्य दो नीतिकुशल व्यक्ति अपना अपना जाल फैलाते हैं, शतरंज का खेल सा खेलते हैं। पर हम देखते हैं कि चाणक्य उस खेल को किस तरह चालता है मौड़ देता है। वह राक्षस क प्रयत्नों को श्रेष्ठ विकट ही नहीं कर देता बल्कि बलदा उनसे अपने राजा चन्द्रगुप्त को लाभ पहुँचाता है। राक्षस चन्द्रगुप्त के गार के लिए विष-द्वन्द्या भेजता है। चाणक्य समरुं द्वारा मज्जराज पर्यतक को मरवा डालता है। पर्यतक यदि जीता रहता तो प्रमिशा के अनुसार चन्द्रगुप्त के गांधि राज्य का स्वामी होता। इसी घटना में दरबार उगका पुत्र मलयकेतु भी भाग जाता है जिसमें चन्द्रगुप्त को अदृष्ट राम मिल जाता है।

अभिप्रेक हो चुका होता है। रा
सदा प्रस्तुत हैं। राजधर्म के पा
त्याग कर सकते हैं, और ऐमा
व्यक्तिगत रूप से उचित नहीं स
रामचन्द्र के मनुष्य रूप का अदि
में राजा रूप में। इसी कारण
अतर आगया है, कहने के ढर
में अतर आ गया है।

कुन्दमाला में राम का त
किन्तु उत्तररामचरित में प्रज
हुए शूद्र के वध के लिए है।

कुन्दमाला में राम को न
प्राप्त होती है, वह झट पहच
द्वारा गुँथी है, अतः वह वर
लिए आगे बढ़ते हैं। तब तप
लना, जल में परछाई देखना
में राजधर्म पालन करते हुए सी
जाती है और वह भी उसी पच
सीता ने वनवास में एक साथ

कुन्दमाला के लवकुश साधारण
यण गाना जानते हैं। उत्तररामचरित
अपने पिता के समान ही वीर हैं। उन्
महस्रों के साथ युद्ध करते हैं। लक्ष्मण-पु
के साथ अकेले लव का अलौकिक युद्ध पि

है और उस अवोध बालिका को अपने प्रेम जाल में फँसा कर उससे गन्धर्व विवाह कर लेता है। विवाह से पूर्व वह उसे न अपने गुरुजनों से अनुमति लेने का अवसर देता है न इस बात का विचार करता है कि मेरे अनेक विवाह पहले हो चुके हैं, इससे विवाह करना न्याय सगत होगा या नहीं। इस प्रकार उम अवोध बालिका को प्रेम बन्धन में बाँध कर वह प्रेम को निभाता नहीं। वहाँ से जाते ही वह शकुन्तला को भूल जाता है। यहाँ तक कि जब गर्भिणी शकुन्तला ऋषि-कुमारों के माय दरवार में उपस्थित होती है। तब वह लोक निन्दा के भय से उसे कुलटा कह कर अपमानित करता है। यह उमके पतन की अन्तिम सीमा है और यही शकुन्तला की कथा का प्रथम भाग है।

शकुन्तला के चले जाने पर उम अपने कर्णों पर पश्चात्ताप होने लगता है। वह उमके स्वोजने का प्रयत्न करता है सुहृन्मन्त्रों अपने अपराध को स्वीकार कर विलाप करता है। सुहृन्विलाप का त्याग कर मित्र के सामने शकुन्तला का गुण-मान करता है। इन्हीं बीच में एक निस्सन्तान धनी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति का क्या किया जाय मन्त्री इस विचार को उपस्थित करता है। उम समग्र राजा नियमासुमार स्वधन को अपने कोष में नहीं ले लेता अपितु यह आदेश देता है कि यदि उसकी कोई भी पत्नी गर्भवती हो तो उसका गर्भस्थित बालक पितृपन का अधिपारी घोषित किया जाय। माय ही यह घटना उमके इस घोष से टाल देती है कि उमकी मृत्यु के बाद पुरुषन की क्या स्थिति होगी। दुष्प्रसूत शकुन्तला के द्विगुण और सोचने लगता है। उमकी यह अवस्था उमके कोष को उत्तर उठाने की चेष्टा करती है। यही इस कथा का द्वितीय भाग है।

राक्षस ने एक बढई को द्वार सजाकर महल में प्रवेश करते हुए चन्द्रगुप्त को मारने की आज्ञा दी थी। पर उसमें पर्वतरु का भाई वैरोधक मारा गया। इस युक्ति से भी चन्द्रगुप्त का ही कल्याण हुआ। राक्षस ने एक वैद्य को औषध में विष मिलाकर चन्द्रगुप्त को देने को कहा था, किन्तु चाणक्य ने उस वैद्य को ही वह औषध पिलाकर मार डाला। इस प्रकार चन्द्रगुप्त का शत्रु भी मरा और मारने का कलक भी न लगा। राक्षस ने कई विश्वासी मनुष्यों को सुरग खोद कर चन्द्रगुप्त का नाश करने की आज्ञा दी थी, किन्तु चाणक्य ने चिड़कटियों को नीचे से अन्न लेकर आते देख यह समझ लिया कि नीचे कहीं मनुष्य छिपे हैं। अतः उसने महल ही जलवा डाला, जिससे वे लोग जल मरे। राक्षस ने चाणक्य और चन्द्रगुप्त में फूट डलवाई कि इस तरह वह चन्द्रगुप्त का नाश करेगा, किन्तु इसी चाल से उस में और मलयकेतु में फूट हो गई और वह आप ही पकड़ा गया। अतः दुखी राक्षस सच कहता है कि उस की कई प्रकार की नीति की चालें भाग्यशाली चन्द्रगुप्त के लिए ही हर प्रकार से लाभकारी हुईं।

३ शकुन्तला की कथा के असल में तीन भाग हैं। "प्रथम भाग में राजा का पतन, द्वितीय भाग में उठने की चेष्टा और तृतीय भाग में उत्थान दिखाया गया है। दुष्यन्त के चरित्र का महत्त्व इसी उत्थान और पतन में है।" इस कथन पर अपना विचार युक्ति सहित प्रकट करो।

१२

शकुन्तला की कथा में जब दुष्यन्त तपोवन में जाकर शकुन्तला को देखता है, तब वह उसके रूप पर मुग्ध हो जाता

है और उस अवोध बालिका को अपने प्रेम जाल में फँसा कर उससे गन्धर्व विवाह कर लेता है। विवाह से पूर्व वह उसे न अपने गुरुजनों से अनुमति लेने का अवसर देता है न इस बात का विचार करता है कि मेरे अनेक विवाह पहले हो चुके हैं, इससे विवाह करना न्याय सगत होगा या नहीं। इस प्रकार उस अवोध बालिका को प्रेम बन्धन में बाँध कर वह प्रेम को निभाता नहीं। वहाँ से जाते ही वह शकुन्तला को भूल जाता है। यहाँ तक कि जब गर्भिणी शकुन्तला ऋषि-सुमारो के माथ दरवार में उपस्थित होती है। तब वह लोक निन्दा के भय से उसे चुलटा कह कर अपमानित करता है। यह उसके पाप की अन्तिम सीमा है और यही शकुन्तला की कथा का प्रथम भाग है।

शकुन्तला के चले जाने पर उसे अपने कर्मों पर पश्चात्ताप होने लगता है। वह उसे रोजने का प्रयत्न करता है। मुलमन्त्रुला अपने अपराध को स्वीकार कर विलाप करता है। सृष्टि विलास का त्याग कर मित्र के सामने शकुन्तला का गुण-भाषण करता है। इसी बीच में एक निश्मन्तान धनी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति का क्या किया जाय मन्त्री इस विचार को उपस्थित करता है। उस समय राजा नियमानुसार उस धन को अपन कोष में नहीं ले लेता अपितु यह आदेश देता है कि यदि उसकी छोई भी पत्नी गर्भवती हो तो उसका गर्भस्थित बालक पिछपन का अधिपारी घोषित किया जाय। साथ ही यह घटना उसे इस सोच में डाल देती है कि उसकी मृत्यु के बाद पुद्गल की क्या स्थिति होगी। दुःखन्त शकुन्तला के लिए अथ और सोचने लगता है। जगदी यह अवस्था उसके जीवन को उपा उठाने की पड़ा करती है। यही इस कथा का द्वितीय भाग है।

अन्न में तडक-भटक से रहित, तप के कारण कृप, एक बेणी धरा किन्तु पुत्रवती शकुन्तला को वह मानपूर्वक ग्रहण करता है। अपने अपराध की उससे क्षमा माँगता है। अपने पुत्र को राज्य का स्वामी वा उत्तराधिकारी कह कर छाती से लगाता है। उसका यह विषयवामना से शून्य भाव ही उसके उन्नत जीवन को मूल काता है। यही इस कथा का प्रधान तथा तीसरा भाग है।

दुष्यन्त का प्रारम्भिक पतन साधारण मनुष्य-चरित्र का वास्तविक चित्र है। और इस पतन के बाद उत्थान में ही दुष्यन्त के चरित्र का वास्तविक महत्त्व है। यदि पतन न दिखाया जाता तो दुष्यन्त का चरित्र उतना महत्त्वपूर्ण न होता। पतन के बाद भी मनुष्य अपने प्रयत्न और सच्चे पश्चात्ताप से किनना उच्च और पवित्र बन सकता है, यही आदर्श उपस्थित करने में ही दुष्यन्त के चरित्र की विशेषता है और कधि इममे सोलह आने सफन हुआ है।

४ “जो प्रेममयी रमणी ससार के कार्य में आत्म समर्पण करके कर्त्तव्य और स्नेह के भीतर अपने को विलीन कर दे सकती है, वही आदर्श रमणी है।” इस कथन पर अपना विचार प्रकट करो। उत्तर में किसी आदर्श रमणी का उल्लेख हो। १३

५ शनि और लक्ष्मी में कौन बलवान् है ? उत्तर में किसी कथा का प्रमाण हो।

अथवा

शैव्या और चि ता की तुलना करो। दोनों में कान बड़ी है। १२

६ “सभी कर्म सुख दुःख मय तापर करो न ध्यान।

फल ईश्वर के हाथ है यह निश्चय जिय जान ॥

एहि असार ससार में कारज करि निष्काम।

आत्मशान उपजै जवहिं जीव होहिं सुखधाम ॥ १०

उपरोक्त कथन पर अपना विचार प्रकट करो। इस कथन का प्रसंग क्या है।

४, ५, ६, ये तीनों प्रश्न 'अदृश महिला' से हैं, जो 'अथ कोर्स' में नहीं है। अतः उत्तर नहीं दिया गया।

७ (क) निम्न लिखित का भाव स्पष्ट करो —

(१) सिंहासन के ये सिद्ध, अधिक भार उठाने से परिश्रान्त हुए के समान, मुख द्वार से निकले मोतियों की माला के व्याज से ज्ञान निकाल रहे हैं। मैं समझता हूँ कि मुजाओ से पृथ्वी की और, हृदय से पृथ्वी की पुत्री सीता को उठाये रहने से आप अधिक भारी हो गये हैं।

(२) ययाति को शर्मिष्ठा के समान नृ स्वामी को प्रिया हो।

(३) मुझे कामरूपधारिणी तिलोत्तमा ने पूर्णतया टग लिया। १०

(४) निम्नलिखित प्रसंग को दिताकर भाव स्पष्ट करो —

(१) चमेली को उष्ण जल से सींचने का आह्वय फीत कर सकता है।

(२) सारथी को घोड़ों की पीठ ठण्डी करने की आज्ञा दी।

(३) उलने यह नहीं समझा कि काली नागिन के इलाहा में मेरे वश भर का नाश होगा।

(४) राम राम ! निरको का अग्नि से साथ विरोध !

(५) साग तो तिर पर है और पूटी पर्यंत पर। १०

(क) (१) कौशिक राम का प्यारा मित्र है। वह जानना चाहता

है कि राम का सीता के प्रति क्या भाव है। यह कहता है कि महाराज ! आप बहुत भार उठा रहे हैं, क्योंकि आप ने मुजाओ से समस्त पृथ्वी को संभाला हुआ है और आपसे मन में महा दुःख

पुनी सीता समाई हुई है अर्थात् रात दिन आप को उसका ध्यान रहता है तभी तो ये सिंहासन को उठाने वाले शेर थक कर लटकती हुई मोतियों की मालाओं के बहाने से भाग उगल रहे हैं। दूसरे शब्दों में आप दिन रात सीता की ही चिन्ता किया करते हैं।

(२) राजा ययाति राजा नहुष के पुत्र थे और शर्मिष्ठा दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या थी। दुर्भाग्यवश शर्मिष्ठा को दैत्य-राजगुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का दासीपन स्वीकार करना पडा। जब देवयानी का विवाह ययाति से हुआ तब शर्मिष्ठा भी दासी रूप में राजा ययाति के यहाँ गईं। वहाँ राजा ययाति और शर्मिष्ठा का गुप्त विवाह हो गया। दोनों का आपस में बहुत प्रेम था। इधर शकुन्तला और ययाति के वंशज राजा दुष्यन्त का विवाह भी गुप्तरूप से हुआ था और ययाति की अनेक रानी थीं पर उसने राज्य शर्मिष्ठा के पुत्र पुरु को दिया था, दुष्यन्त की कई रानी होते हुए भी महर्षि कण्व राज्य का अधिकारी शकुन्तला के पुत्र को देखना चाहते हैं, अतः वे शकुन्तला को शर्मिष्ठा की तरह ही पति की प्रीति का भाजन होने का आशीर्वाद देते हैं।

(३) राम को जब कौशिक ने बताया कि तिलोत्तमा आदि सीता की मरियाँ सीता बनकर उन्हें बोरना देने की सलाह कर रही थी, तब राम बोलने मन्त्रमुच ही इच्छानुसार रूप धारण करने वाली—जैसा चाहे वैसा रूप धरने वाली—तिलोत्तमा ने मुझे खूब ठगा है, अथवा यह कैसे संभव था कि प्रिया का टुपट्टा दिखाई दे, पर प्रिया स्वयं न दिखाई दे। इस प्रकार राम वास्तविक रहस्य को न समझकर सीता के मिलन को एक धोखा समझ बैठते हैं और लज्जित होते हैं।

(स) (१) दुर्वासा ऋषि मुनि कण्व के आश्रम में उस समय

पहुँचे, जब महर्षि कण्व वहाँ नहीं थे। दुष्यन्त के ध्यान में मग्न शकुन्तला उनका आना न जान सकी, अतएव उनका अनिधि मत्कार न कर सकी। इस पर दुर्वासा ने उस शाप दिया कि जिसके ध्यान में मग्न होने के कारण नूने मेरा मत्कार नहीं किया, वह समय आने पर तुझे भूल जायगा और स्मरण कराने पर भी उसे तेरी सुध न आयगी। यह कठोर शाप सुनकर प्रियवदा की सलाह से अनुमूया ने दुर्वासा से शकुन्तला की ओर से अनुनय-विनय कर शाप में कुछ परिवर्तन तो करा लिया, पर शकुन्तला को इस का कुछ भी पता न दिया। प्रियवदा न भी अनुमूया को सलाह दी कि शकुन्तला को इस शाप का पता न देना चाहिये, नहीं तो उसकी आशाजता मुरझा जायगी। तब अनुमूया बोली—सगि ! मैं ऐसा कठोर काम भला क्यों करूँगी, मैं उस फून सी शकुन्तला को शापरूप गरग जल में क्यों भुलसाऊँगी। जिस प्रकार चमेली के फूल को गर्म जल से सूचना उस जलाना है यैमे ही शकुन्तला को यह सूचना देना उस के जीवन का अन्त करवा है।

(२) शिकार को निकले हुए राजा दुष्यन्त जब कण्व मुनि के आश्रम के पास पहुँचे, तब आश्रम की मर्यादा की रक्षा के लिए रच्यं रथ पर से उतर पड़े और पैदल ही आश्रम यात्रियों में मिलने चल पड़े तथा उन्होंने मारधी को घोड़ों को ध्यान भिटाने और उनकी पीठ सहलाने की आज्ञा दी।

(३) यह प्रश्न आदर्श महिला से है, अतः स्मरण नहीं किया गया।

(४) चन्दनदाम के घर में राजसूय का परिवार है, यह पाण्डव्य को पता लग चुका था। पाण्डव्य ने यह पृथ्वी के निष्पन्न अन्दादास को बुलाया, पर चन्दनदाम उस बात को दिसा रहा था। इसी बात की वजह से पाण्डव्य ने अन्दादास से कहा कि तबसे पहले राजसूय

साथ ही कंपनी के प्रबन्ध में भी हस्तक्षेप किया। सन् १७७४ में पार्लियामेंट ने एक कानून पास किया, जिसे रेगुलेटिंग ऐक्ट कहते हैं। इस ऐक्ट के अनुसार वगाल के गवर्नर को वरिष्ठ, मद्रास और वगाल का गवर्नर-जनरल बना दिया गया। उसकी सहायता के लिए चार सदस्यों की एक कौंसिल बनाई गई। उसे कौंसिल के बहुमत को मान कर चलना पड़ता था। इसके अतिरिक्त मुकदमों के फैसले के लिए कलकत्ता में बड़ा न्यायालय स्थापित किया गया, जिसमें चीफ जस्टिस (मुख्य न्यायाधीश) तीन अन्य जजों की सहायता से मुकदमों सुनता और न्याय करता था।

बेलोर का गदर—यह गदर सर जार्ज वोलो के शासन काल में सन् १८०६ में हुआ। इसका प्रधान कारण यह था कि कर्नाटक के बेलोर स्थान में टीपू सुलतान के दो बेटे तथा चोई चार हजार के लगभग दूसरे सहायक नजरबन्द थे। उनके भड़काने से सैनिक पहले ही भड़के हुए थे, इतने में सरकार ने सेना के प्रबन्ध में कई परिवर्तन किये। उन्होंने सिपाहियों को दाढ़ी मूँछ कटाने तथा एक सी वर्दी पहनने की आज्ञा दी, जिससे सिपाही समझे कि अब उनका धर्म ही बिगाड़ा जा रहा है। इस विचार से वे अंग्रेजों के शत्रु बन गये और उन्होंने विद्रोह कर दिया। विद्रोह दबा दिया गया, और टीपू के लडकों को कलकत्ते भेज दिया गया।

३ यन्दावू की सन्धि—सन् १८२४ में अंग्रेजों को बर्मा के राजा के साथ पहली लड़ाई हुई। उसमें अंग्रेजों को सफलता मिली। बर्मा का सेनापति मारा गया। सन् १८२६ में यन्दावू के शान पर सन्धि होगई जिसके अनुसार अंग्रेजों की आसाम, अराकान तथा तनासरम का इलाका तथा एक करोड़

रूपया युद्ध का दर्जाना मिला। इसके अतिरिक्त आचा में एक अंग्रेज रेजिडेंट के रूप में रहने लगा। कचार और जैन्तिया अंग्रेजों की रक्षा में आ गए।

स्थानीय स्वराज्य—शहर या जिले में शिक्षा प्रचार, स्वास्थ्य की देख रेख, पानी, रोशनी के प्रबन्ध तथा अन्य स्थानीय ग्नति के साधारण कार्यों का जनता क निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा पर्याप्त स्वतन्त्रता से स्वयं प्रबन्ध किये जाने के लिए लार्ड रिपन आदि क समय और १९१९ क भारतीय ग्रासन ऐक्ट के द्वारा भारतीयों को कुछ अधिक अधिकार दिये गये जो स्थानीय स्वराज्य के नाम से पुकारे जाते हैं। इन अधिकारों से स्थानीय जनता अपने प्रतिनिधि चुन कर म्युनिसिपल तथा ट्रिस्ट्रिस्ट बोर्ड आदि सभाओं बनाती है। क्रमशः नगर और जिले क उपर्युक्त कार्य इन मरथाओं द्वारा संपन्न होते हैं और इन कार्यों के लिए रकम का प्रबन्ध ये मरथाएँ चुंगी या अन्य कर लगा कर करती हैं। कई जगह इनके कई सभासद सरकार से नानज्ज भी होते हैं।

५ महायुक्त नीति से क्या अभिप्रेत है ? इसका जनसम्बन्ध निम्नो किये और उसका क्या परिणाम पित्त ? १२

महायुक्त नीति अंग्रेजों की यह नीति थी जिसके अनुसार वे भारतीय नरेशों को आंतरिक अज्ञान्ति तथा पड़ोसी राजाओं के आक्रमण के समय रक्षा का आश्वासन देकर उन्हें यूरोपाय ईश से शिक्षा प्राप्त महायुक्त सेवा निम्नलिखित शर्तों पर देते थे—

(क) इन सेवाओं के रखने वाले नरेश अपने ही पों मार्भद्वीय और अपने को उनकी गाइडिंग राजा मानें।

(ख) इस सधि को मानने वाले नरेश पड़ोसी अथवा बाहरी

राजाओं से मनमाने ढंग से न तो युद्ध करें और न सधि ही। उन के आपसी झगड़ों का जो फैसला अंग्रेज करें वही वे मानें।

(ग) अंग्रेजों के यूरोपीय शत्रुओं को कोई ऐसा राजा अपने राज्य में नौकर न रखे और न उनके साथ किसी प्रकार का संबंध ही रखे।

(घ) सहायक सेना का वेतन समय पर बाँटने के लिए, तथा उसके खर्च को पूरा करने के लिए उतनी ही आमदनी का भू-भाग ये राजे अपने राज्य में से अंग्रेजों को दे।

(ङ) अंग्रेजों को खरूरत पड़ने पर जहाँ और जिस समय वे चाहें, सहायक सेना दी जाय।

इस सहायक नीति का अवलम्बन पहले पहल वेलजली ने किया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में अंग्रेजों का सार्वभौम राज्य स्थापित हो गया। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद से भारत में अनेक स्वतन्त्र राजा पैदा होगये थे। देश में एक सार्वभौम ताकत न रही थी। ये राजा समय समय पर आपस में लड़ते रहते थे। उनकी लड़ाइयों में दरल देकर अंग्रेज और फ्रांसीसी अपना-अपना साम्राज्य बढ़ा रहे थे। जब वेलजली भारत में आया तब यूरोप में अंग्रेज और फ्रांसीसियों में परस्पर युद्ध हो रहा था। नेपोलियन बोनापार्ट ने भारत में पहुँचने के इरादे से मिश्र पर आक्रमण कर दिया था। टीपू आदि कई देशी नरेश उससे बातचीत कर रहे थे, और भारत के अधिकांश देशी नरेशों के पास फ्रांसीसी मेना थी।

वेलजली ने इस नीति का अवलम्बन कर एक ओर तो इस सधि को मानने वाले राजाओं के यहाँ से फ्रांसीसियों को निकाल दिया। दूसरी ओर देशी राज्य अंग्रेजों को सार्वभौम मान

कर और अपनी रक्षा का भार उन पर डालकर निश्चिन्त हो गये, और भोग विलास में लिप्त रहने लगे और धीरे धीरे अपना अस्तित्व खो बैठे। सबसे पहले निजाम ने टीपू आदि से डरकर इम संधि को माना। वीरे धीरे अन्य राजाओं ने भी इस मान लिया। टीपू आदि जिन राजाओं ने इसे न माना वनमें लड़ाई ठान कर उनसे जबरदस्ती इम संधि को मनवाया गया।

इस नीति का सबसे बड़ा फायदा यह था कि इम प्रकार से अंग्रेजों को अपनी सार्वभौम सत्ता स्थापित करने के लिए बिना किसी प्रकार के भारी खर्च के ही एक बड़ी भारी सैन्य तैयार मिल गई।

६ "१८५७ का गदर लार्ड डलहौजी के समय के पड़े हुए अमन्तोप का फल था।"

इस कथन को कहीं तक ठीक समझत हो और क्यों ?

अथवा

पिट के इण्डिया बिल में भारत के शासनाप्रबन्ध में क्या परिवर्तन हुआ ?

१०

यह कथन सब तरह से ठीक कहा जा सकता है कि १८५७ का गदर लार्ड डलहौजी के समय के पड़े हुए अमन्तोप का फल था। उसके तत्कालिक कारण चाहे कुछ हों, पर उसका वास्तविक कारण डलहौजी के समय का फैला हुआ अमन्तोप था। राजाओं या गवार्णों में यह अमन्तोप राजनीतिक कारणों से, तथा सिपाहियों और माधारण जनता में यह अमन्तोप आर्थिक तथा धार्मिक कारणों से हुआ था। लार्ड डलहौजी आदि ने महायज्ञ नीति का आलोक बिना कर देशी उद्योगों को अपने घरा में कर लिया था, और उन्हें जगह पर होने अपने सहायकों की कुछ भूमि-भाग देकर उन्हें रियासतें

बना दी थी। डलहौजी ने अब जाल में फँसे हुए उन सब राजाओं की रियासतों को हड़पना शुरू किया।

उसके शासन-काल में भारत में दो तरह की देशी रियासतें थी—एक वे जिनको अंग्रेजों ने ही बनाया था, जैसे सतारा, नागपुर, झाँसी आदि, और दूसरी वे जो अंग्रेजों के आने से पहले मौजूद थी, जैसे अवध, निजाम, ग्वालियर, इन्दौर आदि। लार्ड डलहौजी ने अंग्रेजों की बनाई हुई रियासतों के लिए यह नियम पास किया कि यदि उनमें से किसी राजा का पुत्र न हो तो उसे अंग्रेजी सरकार की आज्ञा बिना किसी को गोद लेने का अधिकार न होगा, और उसकी मृत्यु के बाद उसका राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला लिया जायगा। इस नीति के अनुसार उसने झाँसी, नागपुर, सतारा आदि रियासतें अंग्रेजी राज्य में मिला लीं, तथा बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र धोंडूपथ अथवा नाना साहब को पेशवा की पेशन देनी बंद कर दी। इधर अवध जैसे स्वतन्त्र राज्य को जो पहले से चला आता था, दुर्बलवस्था का बहाना कर हड़प लिया। निजाम का बरार प्रांत सेना का खर्च न मिलने का बहाना करके ले लिया। शाहआलम के उत्तराधिकारी जवाँबख्त को उत्तराधिकारी स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। शिकिम आदि अन्य कई राज्य भी अंग्रेजी राज्य में मिला लिए। उनकी हड़पने की इस नीति को देखकर देशी नरेश डर गये कि कहीं किसी बहाने से उनका राज्य भी न छिन जाय। अतः उनमें असन्तोष फैलने लगा। चिन राजाओं का राज्य खूबत किया था वे न के के अनुसार विद्रोह का आग साहब, गोंमानी

साधारण जनता के मन में पादरियों के अमेजी स्तूलों को देखकर मन्द्देह होता था, कि वह उनको ईसाइ बनाने के लिए खोले जा रहे हैं। रेल और तार का देख कर भी लोग यह शक कर रहे थे कि ये सब उनको जकड़ने तथा बधन में बाँधने के तरीके हैं। लाड डलहौजी के समय अनेक युद्धों के कारण सिपाहियों को भी बहुत काम करना पड़ा, पर उनके वेतन आदि की ठीक व्यवस्था नहीं थी, अतः उनमें भी असन्तोष था। इस प्रकार राजाओं, नवाबों, जनता, तथा सिपाहियों, सबमें डलहौजी के समय में असन्तोष फैल रहा था। विद्रोह की आग भीतर ही भीतर सुनग रही थी। इसी समय फौज को जो नये प्रकार के कारतूत मिले, उन्हें मुँह से चिकना करना पड़ता था। उन्होंने इस आग को भड़काने में चिनगारी का काम किया और शीघ्र ही पंजाब को छोड़कर सम्पूर्ण उत्तर भारत में गहर फैल गया। पर उसका वास्तविक कारण डलहौजी के समय का पैला हुआ असन्तोष था।

अथवा

पिट के इंडिया बिल से भारत के शासन में बड़ा परिवर्तन हो गया। यद्यपि इसके बाद भी इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डिया की स्थापना नहीं हुई पर इस बिल से भारत का वास्तविक नियंत्रण प्रिटिश पार्लियामेंट के हाथ में चला गया। अमेजो का भारत के उत्तर भारत भाग पर अधिकार था, इस कानून के अनुसार उस समय के प्रशासन और निरीक्षण के लिए प्रबन्धकारिणी सभा बनाई गई, जिसे 'बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल' कहा जाता था। इसके पुनः १८५७ में जो प्रिटिश सरकार द्वारा इंग्लैंड में नियुक्त किए जाते थे। प्रिटिश सरकार का प्रधान मन्त्री इस सभामें से ही निर्वाचित होकर उस प्रबन्धकारिणी सभा का अध्यक्ष नियुक्त होता था।

किया गया। पर इमने जनता में राजभय उतना ही हट गया। इधर महायुद्ध में टर्की के हार जाने से मुसलमान खिलाफत के प्रश्न पर असन्तुष्ट थे। म० गाँधी ने जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड और खिलाफत के प्रश्न को सम्मिलित कर मारे भारत में असहयोग आन्दोलन तथा अहिंसात्मक सत्याग्रह की नींव डाली। सरकारी स्कूल, सरकारी कचहरी, सरकारी खिताब, विदेशी कपडा और कौंसिल, सबका बहिष्कार प्रारम्भ हुआ और जेले भरी जाने लगी। इस तरह जहाँ चेम्सफोर्ड के शासनकाल में एक ओर कुछ सुधार देकर इने गिने माडरेटो का सहयोग सरकार ने प्राप्त किया वहाँ जलियावाला बाग में दमन का चक्र चला कर साधारण जनता को भडका दिया। इस कारण देश के राष्ट्रीय आंदोलन ने एक नया और भयंकर रूप पकडा।

चेम्सफोर्ड के शासनकाल में अफगानिस्तान के साथ भी एक लडाई हुई, जिसमें विवश हो अफगानों को सधि करनी पड़ी। सन् १९२१ में लार्ड चेम्सफोर्ड असहयोग आंदोलन को पूर्ण जोश में छोड कर वापिस चला गया।

अथवा

अफगानिस्तान की दूसरी लडाई का मुख्य कारण भारतीय पर-राष्ट्रनीति की अनिश्चितता थी। जब इंग्लैंड में लिबरल मन्त्रि-मण्डल होता, तब वे अफगानिस्तान के अदरुनी मामलों में दखल न देने की नीति का अनुकरण करते और जब कन्सर्वेटिव (अनुदार) दल का मन्त्रि मण्डल होता तब वे रूस के डर से अपने पश्चिमोत्तर सीमाप्रात की सुरक्षितता का ध्यान करते, फलत अफगानिस्तान को अपने साथ मिलाना चाहते और उस पर निरीक्षण रखना चाहते।

जग लार्ड नार्थमुक भारत का वायसराय था, तब अफगानिस्तान का विकट प्रश्न उमके सामने आया। उस समय रूस अफगानिस्तान की ओर बढ़ रहा था। रूस ने अफगानिस्तान के खीवा पर आक्रमण कर दिया था। अफगानिस्तान के अमीर शेर अली ने अंग्रेजों से सहायता माँगी। पर लार्ड नार्थमुक ने लिबरल दल के नीति के अनुसार सहायता देना अस्वीकार कर दिया। इतने में मिन १८७४ में इंग्लैंड में लिबरल पार्टी हार गई और मन्त्रिमण्डल कन्सर्वेटिव दल के हाथ में आ गया। ये रूस के डर में अफगानिस्तान में कोई समझौता करना चाहते थे। इस पर इंग्लैंड के नये भारत मन्त्री लार्ड सैलिसबरी ने वायसराय को लिखा कि अफगानिस्तान का रक्षा का भार अंग्रेजों को अपने हाथ में ले लेना चाहिए और वहाँ एक रेजिडेंट रखना चाहिए। पर दो वर्ष पहले नार्थमुक अमीर से समझौता करने को इनकार कर चुका था, अतः वह अब इस नीति का पालन न कर सकता था। वह पद त्याग करके इंग्लैंड चला गया और लार्ड लिटन भारत का वायसराय हुआ। लिटन ने अफगानिस्तान के अमीर से काबुल में अंग्रेजी रेजिडेंट रखने को कहा। पर शेरअली अब यह मानता न था। वह मधि करने को तैयार था पर निरीक्षण की अपमानजनक शर्तें उसके स्वीकृत न थीं। तबसे इनकार करने पर उसे शत्रु करार दिया गया। अंग्रेजों ने फयेटा पर अधिकार कर लिया और वहाँ एक बड़ी छावनी बनायी। फयेटा ले जाने पर अंग्रेजों के निर्यात मोल्तान के दर के द्वारा कन्धार पर आक्रमण करना मंजूर होगया। अमीर शेरअली इसमें विद्रोह गया। उसने मर में मिश्रण

करनी शुरू कर दी। रूस के राज-दूत को अपने यहाँ बुला लिया, और उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। यह देस लार्ड लिटन ने भी अपना राजदूत उसके दरवार में भेजा। पर ब्रिटिश राजदूत को अफगानों ने खैबर दर्रे से आगे बढ़ने ही न दिया। इधर रूस और अफगानिस्तान के मिल जाने से अंग्रेजों को पश्चिमोत्तर सीमा से खूब डर हो गया। इसलिए लार्ड लिटन ने लडाई की घोषणा कर दी। अफगानिस्तान की दूसरी लडाई का यही मुख्य कारण कहा जा सकता है। लडाई छिड़ते ही शेर अली रूस की सीमा में भाग गया, और उसकी मृत्यु शीघ्र ही अफगानिस्तान में बाहर हो गई। उसके लडके याकूब खाँ ने अंग्रेजों से सधि कर ली, और अंग्रेजों का रेजीडेंट अपने यहाँ रखना स्वीकृत कर लिया। पर शीघ्र ही अफगानों ने अंग्रेज रेजीडेंट को मार डाला, अत युद्ध को लड़ा करने में यह भी एक कारण हुआ।

८ भारत सरकार का देशी रियासतों से क्या सम्बन्ध है ?
सक्षेपत लिखो। ११

देशी रियासतों का सम्बन्ध ब्रिटिश भारत से वायसराय के द्वारा है, अर्थात् यदि रियासतों के राजा या नवाब कोई ऐसा कार्य करें जिसका असर ब्रिटिश भारत की जनता पर पड़े तो उन्हें वायसराय की अनुमति लेनी पड़ती है। देशी रियासतों की तीन श्रेणियाँ हैं। प्रथम श्रेणी में बड़ी बड़ी रियासते हैं। इन रियासतों का भारत सरकार से सीधा सम्बन्ध है। इनमें से प्रत्येक में एक रेजीडेंट रहता है। दूसरी श्रेणी में रियासतों के समूह हैं जिनको एजेन्सी कहते हैं, इनमें से प्रत्येक में वायस-

राय का एक एजेंट रहता है। तीसरी श्रेणी में सैकड़ों छोटी छोटी रियासतें हैं। ये अधिकतर प्रान्तीय सरकारों के अधीन हैं। इनमें से कुछ में पोलिटिकल एजेंट रहते हैं और शेष की देख-भाल जिले का कलेक्टर या कमिश्नरी का कमिश्नर ही कर लेता है।

ये देशी रियासतें अपने अदरुनी मामले में स्वतन्त्र हैं। उनके अपने ही न्यायालय और फौज आदि हैं। कहीं कहीं पर राजाओं के अपने सिक्के और डाकगाने के टिकट भी चलते हैं। परन्तु वे सिर्फ रियासत की दृष्ट में ही चलते हैं। परन्तु इन राजाओं के प्रजा पर अत्याचार तथा ब्रिटिश स्वार्थों के विरुद्ध कार्य हेतुकर इन को गद्दी से उतारा भी जा सकता है। किसी राजा को बचिन फौज व धन से सहायता भी की जा सकती है। पर साधारण-तया देशी रियासतों के प्रति सरकार की यह नीति है कि जब तक वे ब्रिटिश सरकार के प्रति राजभक्त बनी रहें और पुरानी मरियों का पूर्णतया पालन करती रहें तब तक सरकार उनकी रक्षा करेगी और उनके कार्य में अधिक हस्तक्षेप न करेगी। प्रत्येक राजा को वायसराय की अनुमति एवं बचिन परामर्श लेना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य है। वे सरकार की अनुमति के बिना एक दूसरे से राजनैतिक व्यवहार नहीं कर सकते एवं रियासतों के बीच से व्यापार नहीं रम सकते।

जब कभी दो रियासतों अथवा रियासत और प्रान्त या सरकार या भारत सरकार में कोई समझौता होता है तो उसकी शर्तों के लिए वायसराय की अनुमति आवश्यक है जो उस समझौते की शर्तों पर करता है।

सन् १९२१ से एक नरेन्द्रमण्डल की स्थापना हो गई है। जो विषय सब रियासतों से सम्बन्ध रखते हैं उन पर इस सस्था की सम्मति माँगी जाती है। यह एक प्रकार की सभा है, जो वायसराय को देशी रियासतों के बारे में सलाह देती है।

प्रश्नपत्र ६

१ (अ) नीचे लिखी लोकोक्तियों में से चार का सरल अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो.—

(क) गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है।

(ख) एक मछली सारे तालाब को गदा कर देती है।

(ग) धोत्री का कुत्ता न घर का न घाट का।

(घ) शौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा।

(ङ) सूरदास यह कारी कामरि चढै न दूजो रग।

(आ) नीचे लिखे भागों में से चार के अर्थों को प्रकट करने वाली लोकोक्ति लिखो —

(क) उल जौर धन नष्ट होगया पर घमण्ड न गया।

(ख) जिसके पास फुड न हो वह निश्चिन्त रहता है।

(ग) अपनी चीज की कोई बुराई नहीं करता।

(घ) किसी काम के करने से हानि और न करने से भी हानि।

(ङ) एक ही यत्न से दो कार्य मिद्ध होना।

(अ)—(क) गेहूँ के साथ घुन पिस जाता है—अपराधी के साथ निरपराध भी दण्ड पा जाते हैं। उस दिन मैं तुम्हारे साथ डेपुटेशन में चला भर गया। वस उन्होंने समझ लिया

कि मैं भी स्ट्राइक कराने वालों में से हूँ। मुझे भी एकदम नोटिस मिल गया—सच है आटे के साथ घुन भी पिम जाता है।

(ख) एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है—एक की बुराई से सारा समूह बदनाम हो जाता है। जापान की किसी लायब्रेरी से एक भारतीय विद्यार्थी ने एक किताब चुरा ली। अंत में वह पकड़ा गया। तब से सभी भारतीय विद्यार्थियों का वहाँ जाना निषिद्ध हो गया। सच है एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

(ग) धोत्री का कुत्ता घर का न घाट का—जिम पुन्प का कोई स्थायी निवास न हो या जो मनुष्य दोनों तरफ की चानचले पर न इधर का रहे न उधर का, उसे कहा जाता है। यह शोक में आकर हड़तालियों में शामिल होगया, पर इन्द्र में साहस और धैर्य था नहीं, दूसरे ही दिन जाकर गिरगिटाने लगा। मैनेजर के पास गया तो वह बोला—अब तो गयी भरती हो गयी है, अब जाओ घर बैठो। इधर माथियों को पता लगा तो उन्होंने भी उसको चुरा भला कहा। अब उसकी यही दशा हो गई कि धोत्री का कुत्ता घर का न घाट का।

(घ) शीकीन बुढ़िया चटाई का लट्टेगा—बमल बाग परना। बाह जी नए शीकीन। नीचे घोती और गिर पर टोप। गुम्दारी भी यही बात है, शीकीन बुढ़िया चटाई का लट्टेगा।

(ङ) सूदाम यह बारी कामरि चढ़े न दूजो रग—दुष्ट ध्यक्ति पर किसी उपदेश का असर नहीं होता। मुम समगते हो यह कदने मुनने मे ठोक रान पर आ जायगा पर मैं तो इमे नहीं मानता। मैं तो जानता हूँ 'सूदाम यह बारी कामरि चढ़े न दूजो रग'।

(आ — (क) बल और धन नष्ट हो गया पर घमण्ड न गया—‘रस्सी जल गई पर बल न गया।’

(ख) जिसके पास कुठ न हो वह निश्चिन्त रहता है—
‘कंगला सोवे पाँव पसार।’

(ग) अपनी चीज की कोई बुराई नहीं करता—
‘अपने पूत को कोई काना नहीं कहता’

(घ) किसी काम के करने से हानि न करने से भी हानि—
‘भई गति साँप छुँदर केरी’

(ङ) एक ही यत्न में दो कार्य सिद्ध होना—
‘एक पन्थ दो काज।’

२ (अ) नीचे लिखे मुहाविरों में से चार का सरल अर्थ लिख कर वाक्यों में प्रयोग करो —

(क) आँखें खुलना । (ख) आँख लगाना । (ग) आँखें दिखाना ।
(घ) हाथ ग्रीच लेना । (ङ) हाथ कटाना ।

(आ) नीचे लिखे भागों में से चार के अर्थों को प्रकट करो वाले मुहाविरों लिखो —

(क) अभिमान रखना । (ख) कठिन उद्योग करना ।
(ग) तैयार होना । (घ) पछताना । (ङ) मरने की परवा न करना ।

(इ) नीचे लिखे जीवों और वस्तुओं में से चार की ध्वनियों को प्रकट करने वाली क्रियाओं का वाक्यों में प्रयोग करो —

हाथी, रकरी, चिड़िया, दात, चारपाई, पल ।

(क) आँखें खुलना—होश आना, नींद टूटना । जब वह तुम्हारा सर्वनाश कर देगा तब तुम्हारी आँखें खुलेंगी ।

(ख) आँख लगाना—टक्कटकी बाँध कर देखना, प्रीति

करना। जत्र तक वे गड्डी रहीं तुम उधर ही आस लगाये गे।
परदेशी से आँस लगा कर दुख ही मिलता है।

(ग) आँसे दिग्गाना—क्रोध से घूरना। चल वे! आँसे
किसी और को दिग्गाना।

(घ) हाथ र्पीच लेना—महायता रन्द कर देना। रमरों
श्रेणी तक तो रायसाहब मेरी पूरी महायता करने रहे, पर
अध न जाने उन्होंने क्यों हाथ र्पीच लिया है।

(घ) हाथ कटाना—प्रतिज्ञा आदि स बद्ध हो जाना। रम
राज्जीनामे पर दक्षतगत करके हम तो हाथ कटा बैठे, अध तो
चो कुठ कहना है, तुम्हीं जाकर कहो।

आ—(क) अभिमान रग्गना—रिग्गाना चढ़ना।

(र) कठिन उग्गोग करना—रग्न रमीना रर करना।

(ग) तैयार होना—रसर रमना।

(घ) पटताना—हाथ मलना।

(ङ) मरने की परवाह न करना—रिर पर ररन रों रगा।

मुहावरों और लोकोक्तियों के ठीक-ठीक अर्थ और उनका
प्रयोग समझने के लिए डा० बहादुरचंद शास्त्री की 'लोको-
क्तियाँ और मुहावरे' नामक पुस्तक पढ़िये। हम पुस्तक में
हिन्दी में प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरों के भिन्न भिन्न
अर्थ, तथा अपनी भाषा में उनका प्रयोग किस तरह किया जाता
है, यह सब गृह अन्त्री तरह समझाया गया है। हिन्दी-
भूषण के ग्रन्थेक विद्यार्थी के पास यह पुस्तक होनी
चाहिए। मृत्य ॥)

(इ) हाथी चिघाडते हैं ।

बकरी मिमियाती है ।

चिड़ियाँ चहकती हैं ।

माघ का महीना था, जोर की ठड पड रही थी, दाँत कटकटा रहे थे ।

यह नई चारपाई बहुत चर्राती है ।

पक्षी जल में नहा कर अपने पर फटफटाता है ।

३ (अ) विदेश में विद्याध्ययन के लिये गये हुए पुत्र को पिता की ओर से पत्र लिखो जिसमें पढाई में दत्तचित्त रहने, कुसगत से प्रचने और मितव्ययिता से व्यवहार करने का उपदेश हो । १५

(आ) नीचे लिखे भागों में से एक पर अपने विचार लिखो —

(क) पर्वतयात्रा में मोटरकार या लारी द्वारा सफर करना पैदल या सक्कर-टट्टुओं पर सफर करना—दोनों में से तुम किसे अच्छा समझते हो

(ख) “परदेश की सारी से घर की आधी अच्छी” और “घर रहा सो आधा मानुष परदेस गया सो पूरा”—दोनों में से तुम्हारे मत में कौन सी उक्ति ठीक है ? ७

सुशीलनिवास

बेबरलेन रोड, लाहौर

५ दिसबर १९३७

प्यारे शिष्य,

टोकियो पहुँचने के बाद तुम्हारा पत्र कल मिला । इस युद्ध के समय तुम सकुशल वहाँ पहुँच गये, और तुम्हें समुद्र-यात्रा में कोई कष्ट न हुआ, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई । मैं आशा करता हूँ कि इस पत्र के पहुँचने तक तुम कालिज में

दाखिल हो गये होंगे और तुमने जापानी भाषा सीखनी शुरू कर दी होगी।

बेटा, अभी तुम्हारी आयु कुल १९ वर्ष की है और तुम पहली बार ही देश से बाहर गये हो। तुम पहली बार माता-पिता से अलग रहने लगे हो। इस समय तुम्हारी देखभाल करने वाला तथा तुम्हें ठीक रास्ता बताने वाला तुम्हारे पास कोई नहीं है। तुम माता पिता और छोटे भाई रहन को छोड़कर वहाँ इतनी दूर पढ़ने के लिए गये हो। अतः मैं तुम्हें यही सीख दूँगा कि वहाँ तुम जितने दिन रहो, दक्षिण होकर पढ़ो। इस समय तुम पढ़ने में जितना ध्यान लगाओगे, अपने विषय में जितने प्रवीण होकर आओगे, उतना ही तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल होगा। जो माघन, जो शिक्षा तुम्हें यहाँ उपलब्ध नहीं थी उसी को प्राप्त करने तुम वहाँ गये हो। यदि तुम वहाँ से उन माघनों को उस शिक्षा को ठीक तरह प्राप्त करके न आये तो तुम्हारा इतनी दूर जाना, इतने पैसे खर्च करना और इतना रुपया खर्च करना व्यर्थ होगा। अतः जहाँ तक हो सके पढ़ने में ध्यान लगाओ। तुम्हारी माता को और मुझे इसमें अधिक और किसी बात की चिन्ता नहीं होगी, जितनी यह सुन कर होगी कि तुम अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान लगा रहे हो और तुम अपनी श्रेणी में अच्छे नंबर प्राप्त कर रहे हो।

बेटा, पढ़ाई का सबसे बड़ा शत्रु सुभ्रमण्डल है। सुभ्रमण्डल का सबसे बड़ा भयावह होता है। यह बसल नीति और सुदृढ़ता का ही नाश नहीं करता, बल्कि सुदृढ़ता को भी खटित कर देता है। निम्नी नवभ्रमण्डल की संगति अगर सही होती तो यह बसल

पैरों में बँधी चक्की के समान होगी जो उमे दिन दिन अवनति के गढ़ में गिराती जायगी। अत किसी से बहुत मेल-जोल करने से पहले यह देख लेना कि उसका चरित्र कैसा है। उसका रहन-सहन कैसा है। प्राय स्कूलों कालिजों में बहुत से ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो भोले भाले अनजान लड़कों को व्यसनों के जाल में फँपाते रहते हैं, और इस तरह उन्हें धीरे धीरे अधःपतन की ओर ढकेलते हैं। ये स्वभाव के बड़े मीठे और अपने हित चिंतक दिखाई देते हैं, पर इनकी आन्तरिक इच्छा बड़ी निन्दनीय होती है। अत किसी को मित्र बनाने या उस की सगति में आने से पहले यह देख लेना कि उस व्यक्ति में कौन-सा ऐसा सद्गुण है, जिसमें तुम्हें उसे अपना मित्र बनाना चाहिये।

एक बात का उल्लेख मुझे यहाँ और कर देना चाहिए। जहाँ तक हो सके तुम मितव्ययता से रहो। मितव्ययता से मेरा तात्पर्य कजूमी में नहीं, न मैं यह चाहता हूँ कि तुम रुपया बचाने के लिए कोई ऐसा काम करो जिससे तुम्हारी पढाई की हानि हो, पर व्यर्थ की शान शौकत में पैसे खराब करना भी अच्छा नहीं। तुम्हें पता है कि मैं कितने कष्ट से रुपया

हर प्रकार के पत्रों को लिखने की विधि की ठीक जानकारी के लिए श्री केशवप्रसाद शुक्ल विशारद लिखित 'सरल पत्र लेखन' की एक प्रति खरीदिए। इसमें घरेलू पत्र, व्यावहारिक पत्र, निमन्त्रण पत्र और अर्जा आदि लिखने का ढग बड़ी सरल भाषा में समझाया गया है। पत्र लिखना सीखने के लिए यह सर्वोत्तम पुस्तक है। मूल्य १।)

मा कर तुम्हें पढा रहा हू । इस लिए तुम्हें रुपया खर्चते समय देख लेना चाहिये कि क्या यह खर्च मरे लिए आवश्यक । और जहाँ तक हो सक वहाँ तक कम खर्च करो ।

तुम्हारी माता तुम्हें रोज़ याद करती है । शशि कहता कि बड़ा होकर मैं भी भैया के पास जापान जाऊँगा । खूब प्यार ।

तुम्हारा शुभचिन्तक
मोहनलाल

पुत्रश्च — प्रति सप्ताह पत्र अवश्य भेजते रहना । चाहे कतना भी काम हो पर इसमें न चूकना ।

(आ) (क) पर्वत यात्रा में मुझे तो मोटर या लारी पर बटना बिल्कुल नहीं भाता । माना, कि पैदल जाने में, या खतर-खतरों पर जाने में चढ़ाई में कुछ थकावट अवश्य आती है—जैसे दुखने और दम फूलने लगता है और एक दिन का सफर दो-तीन दिनों में होता है, किन्तु पहाड़ पर जाने का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि वहाँ जाकर सैर की जाय, सुन्दर दृश्य देखकर मन बहलाया जाय । पहाड़ की हरियाली में टकी गाड़ियों की दिक्षण भर न देखा, यदि उसके ऊँचे टटे-मेड़ गार्नों पर चल कर ठडी वायु का सुख न लूटा, यदि स्थान स्थान पर जाने वाले कई तरह के खाद वाले निर्मल जल के स्रोतों का सुख न लिया तो पहाड़ जान का क्या लाभ हुआ । मोटर या लारी पर बैठे और खट से पर्वत के ऊपर पहुँच गये, या टेढ़े-ढाले रास्ते में चक्कर काटते समय भयभीत होकर खपड़े में टिपका कर यात्रा की तो क्या किया । यह सब तो माता का

पैरों में बँधी चक्री के समान होगी जो उमे दिन दिन अवनति के गढ़ में गिराती जायगी। अत किसी से बहुत मेल-जोल करने से पहले यह देख लेना कि उसका चरित्र कैसा है। उसका रहन-सहन कैसा है। प्राय स्कूलों कालिजों में बहुत से ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो भोले-भाले अनजान लड़कों को व्यसनों के जाल में फँपाते रहते हैं, और इस तरह उन्हें धीरे धीरे अध-पतन की ओर ढकेलते हैं। ये स्वभाव के बड़े मीठे और अपने हित चिन्तक दिखाई देते हैं, पर इनकी आन्तरिक इच्छा बड़ी निन्दनीय होती है। अत किसी को मित्र बनाने या उस की सगति में आने से पहले यह देख लेना कि उस व्यक्ति में कौन सा ऐसा सद्वगुण है, जिमसे तुम्हें उसे अपना मित्र बनाना चाहिये।

एक बात का उल्लेख मुझे यहाँ और कर देना चाहिए। जहाँ तक हो सके तुम मितव्ययता से रहो। मितव्ययता से मेरा तात्पर्य कजूमी में नहीं, न मैं यह चाहता हूँ कि तुम रुपया बचाने के लिए कोई ऐसा काम करो जिससे तुम्हारी पढाई की हानि हो, पर व्यर्थ की शान शौकत में पैसे खराब करना भी अच्छा नहीं। तुम्हें पता है कि मैं कितने कष्ट से रुपया

हर प्रकार के पत्रों को लिखने की विधि की ठीक जानकारी के लिए श्री केशवप्रसाद शुक्ल विशारद लिखत 'सरल पत्र लेखन' की एक प्रति खरीदिए। इसमें घरेलू पत्र, व्यापहारिक पत्र, निमन्त्रण पत्र और अर्जी आदि लिखने का ढंग बड़ी सरल भाषा में समझाया गया है। पत्र लिखना सीखने के लिए यह सर्वोत्तम पुस्तक है। मूल्य 1)

प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त नहीं किया वह पुरुष चाहे कितना भी शिक्षित हो पर उसका ज्ञान एकांगी होगा, वह केवल पुस्तकों पर निर्भर होगा, उसे पूरा नहीं कहा जा सकता।

यही कारण है कि चाहे हम भारतीय अपने घर से बाहर निकलना अच्छा न समझे, परन्तु अधिकांश विदेशी विद्यार्थी शिक्षाकाल में ही नाना देशों की सैर करते दिखाई देते हैं। प्रत्येक देश के रहन-सहन तथा वहाँ की वास्तविक स्थिति को देखकर प्रत्यक्ष ज्ञान को प्राप्त कर वे अपने ज्ञान की वृद्धि करते हैं। अपने अधूरे पुस्तक-ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान से पूरा करते हैं।

हम भारतीयों के लिए कुछ समय पहले विदेश-यात्रा निषिद्ध थी। तत्कालीन समाज के अग्रणी विदेश यात्रा को पाप करार देते थे, अतएव आज भारत इस अवनति की अवस्था को पहुँचा है। अगर हमारी तरह ही विदेशी साहित्यिक विदेश-यात्रा को पाप समझते, अगर कोलयस, पारसोदिगामा तथा अन्य प्रारम्भिक प्रामाणिकी तथा अग्रज यात्रियों ने 'परदेश की मारी से घर की आधी अच्छी' इस उक्ति के अनुसार कार्य किया होता तो आज उन देशों का साम्राज्य इतना विस्तृत और उन्नत न दिखाई देता। इन यात्रों को देखते हुए हमें जो "घर रहा सो आधा मातृप परदेश गया सो पूरा" इस उक्ति को ठीक मानते हैं।

४ नीचे लिखे विषयों में से एक पर कुछ सुमन्यत्र भाग भाग-पूर्ण निबन्ध लिखो —

- (क) दानधीर कृष्ण, (ख) कामगुप्त,
(ग) मेधावति, (घ) आर्यभट्ट,

समतल भूमि में करते ही हैं। फिर धन खर्च करने का लाल्म ही क्या? दूमरे, मोटर या लारी की यात्रा पर्वत के रास्तों पर खतरनाक भी है। उनके उलट जाने का भी डर होता है। साथ ही जल्दी-जल्दी चक्कर काटने से मिर में चक्कर आने लगते हैं, कई बार उल्टी आदि भी आने लगती है। इस यात्रा से शरीर में इतनी थकान आ जाती है कि फिर कई दिनों तक मन खराब रहता है। भला ऐसी यात्रा जिसमें धन नष्ट हो स्वास्थ्य बिगड़े, जान का खतरा हो, सुन्दर सुन्दर दृश्य भी देखने को न मिले, कौन बुद्धिमान करेगा? इसलिए मैं सदा भरसक यही प्रयत्न करता हूँ कि पर्वत पर पैदल या खच्चर-टट्टू पर सफर करूँ, जिससे पर्वत-यात्रा का पूरा फल प्राप्त हो।

(स) जो आलसी हैं, जो जीवन सग्राम से घबराते हैं, वे तो 'अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम, दास मल्लू का कह गये सब ठे दाता राम' अथवा 'परदेस की सारी से घर की आधी अच्छी' आदि उक्तियों का ही समर्थन करेंगे। पर जो उद्योगी हैं, जो दाम क साथ अपना नाम भी कमाना चाहते हैं, जिन्हें साहसिक कार्यों में ही आनन्द आता है तथा जिन पर 'य देश श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्' आदि उक्तियाँ चरितार्थ होती हैं, वे तो 'घर रहा सो आधा मानुष परदेस गया सो पूरा' इस उक्ति का ही समर्थन करेंगे। जो आदमी कभी घर से बाहर नहीं निकला, जिस आदमी ने परदेश के चप्पे चप्पे भूमि की रसक नहीं छानी, उन्नत देशों के रहन-सहन को स्वयं अपनी पैनी आँखों से नहीं देखा, उनकी राजनीतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक अवस्थाओं का

निष्पाप—नि + पाप । यदि विमर्ग के पूर्व इ या उ हो और पीछे क्, ख्, प् या फ् हो तो विमर्ग को प् हो जाता है । इस नियम से 'नि' के विमर्ग को 'प्' होगया ।

दुरुपयोग—दु + उपयोग । यदि विमर्ग से पूर्व अ या आ को छोड़कर कोई और स्वर हो और पीछे कोई स्वर हो तो विमर्ग को र् हो जाता है । इस नियम से 'दु' के विमर्ग को 'र्' हो गया ।

(ग) सुर + ईश्वर = सुरेश्वर । तथा + ण्य = तथैव ।

सत् + गति = सद्गति । नि + तार = निस्तार ।

III (क) निम्नलिखित शब्दों के सौष्ठव रूप लिखो—

साधु । चमार । बाउर ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों के कर्ता में यद्बचन स्वर लिखो—

घटिन । चिड़िया । गो ।

(ग) निम्नलिखित शब्दों के माथ एगे एण प्रत्येक उपसर्ग को प्रथक् पृथक् लिखकर उसका अर्थ बरो—

अवरोध । विलाप । आजीवन । दुर्गम ।

(क) साधु—साध्वी । चमार—चमारिन । बालक—बालिक ।

(ख) घटिन—घटिनों, घटिनो ने । चिड़िया—चिड़ियों, चिड़िया

ने । गो—गौँ, गौओं ने ।

(ग) अवरोध—इसमें 'अव' उपसर्ग है । यह अनादर, होना

आदि का शोक है ।

विलाप—यहाँ 'वि' उपसर्ग है । यह होना, विभिन्नता, विरोधता अममानता आदि अर्थों का शोक है ।

आजीवन—यहाँ 'आ' उपसर्ग है । यह भोग, विरोध, सदण, पशय, उलटाय, विपरीत आदि के अर्थों को प्रदर्शित करता है ।

यहाँ भोग के अर्थ में आया है, अर्थात् जीवन-व्ययन ।

दत्त-ओष्ठ से—व ।

नासिका से—ड, व्य, ण, न, म और अनुस्वार ।

II (क) मुनीश्वर, इत्यादि, अन्वेपण, मात्रानन्द, वाङ्मय, सज्जन, निष्पाप, दुरुपयोग—इन शब्दों में सन्धिच्छेद करो और इनके सन्धि करनेवाले नियमों को लिखो ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करो —

सुर + ईश्वर । तथा + एव । सत् + गति । नि + तार । ४

(क) मुनीश्वर—मुनि + ईश्वर । जब दो समान स्वर (ह्रस्व अथवा दीर्घ) पास पास आते हैं तब दोनों के बदले एक समान दीर्घ स्वर होता है । इस नियम से मुनि की 'इ' और ईश्वर की 'ई' को मिल कर 'ई' होगया ।

इत्यादि—इति + आदि । अन्वेपण—अनु + एपण । मात्रानन्द—मातृ + आनन्द । यदि ह्रस्व अथवा दीर्घ इकार, उकार या ऋकार के परे कोई भिन्न स्वर रहे तो ह्रस्व अथवा दीर्घ इकार, उकार और ऋकार के बदले क्रम से य्, व् और र् होता है । इस नियम से इति की 'इ' को 'य्', अनु के 'उ' को 'व्' और मातृ के 'ऋ' को 'र्' होकर 'इत्यादि', 'अन्वेपण' और 'मात्रानन्द' रूप बने हैं ।

वाङ्मय—वाक् + मय । यदि किसी वर्ण के प्रथम वर्ण से परे कोई अनुनासिक वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के स्थान में उसी वर्ण का अनुनासिक वर्ण हो जाता है । इस नियम से वाक् के 'क्' को 'ङ्' हो गया है ।

सज्जन—सत् + जन । यदि त् वा द् के परे च् या छ् हो तो त् या द् को च्, ज् या म् हो तो ज्, ट् या ठ् हो तो ट्, और ड् या ढ् हो तो ढ् हो जाता है । इस नियम से सत् के 'त्' को 'ज्' हो गया ।

है। जैसे 'मुख चन्द्रमा है', यहाँ मुख (उपमेय) को चन्द्रमा (उपमान) बना दिया गया है, अतः रूपक अलंकार है।

रूपक के भेद—'मुख चन्द्रमा है' इसमें उपमेय को उपमान बना दिया गया है, दोनों में कोई भेद नहीं रखा गया। 'मुख दूसरा चन्द्रमा है' इसमें भी उपमेय को उपमान बनाया गया है, परन्तु इसमें मुख और चन्द्रमा में कुछ कुछ भेद प्रतीत होना है। पहले को अभेदरूपक और दूसरे को तद् रूप रूपक कहते हैं। अब अभेद रूपक और तद् रूप रूपक के भी सम, अधिक और न्यून, तीन भेद हैं—

(१) सम अभेद रूपक—इसमें उपमेय और उपमान में कुछ अधिकता या न्यूनता नहीं रखी जाती। जैसे—मुख चन्द्रमा है।

(२) अधिक अभेदरूपक—इसमें उपमेय में उपमान से कुछ अधिकता बताते हुए अभेद प्रकट किया जाता है। जैसे—मुख निष्कटाक चन्द्रमा है। यहाँ मुख (उपमेय) में चन्द्रमा (उपमान) की अपेक्षा निष्कलकता अधिक है।

(३) न्यून अभेद रूपक—इसमें उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ न्यूनता बताते हुए अभेद प्रकट किया जाता है। जैसे—मुख पृथ्वी पर चमकने वाला चन्द्रमा है।

चन्द्रमा आकाश और पृथ्वी दोनों पर चमकता है, पर मुख पृथ्वी पर। चन्द्रमा (उपमान) की अपेक्षा मुख (उपमेय) में कुछ न्यूनता बताई गई है।

(४) सम तद् रूप रूपक—जब उपमेय और उपमान में कुछ भेद हो, पर समी प्रतीत न हो। जैसे—मुख दूसरा चन्द्रमा है।

(५) अधिक तद् रूप रूपक—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ अधिकता बताई जाय। जैसे—मुख दूसरा निष्कटाक चन्द्रमा है।

(ख) जब ऐसे शब्द या शब्दों का प्रयोग किया जाय जिसका या जिनका एक से अधिक अर्थ लिया जाय तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

कमला थिर न रहीम रुह यह जानत सब कोय।

पुरुष पुरातन की वधू क्यों न चचला होय ॥

इसमें पुरातन शब्द के दो अर्थ हैं। आदि और बूढा। इस दोहे का अर्थ है—

कमला (लक्ष्मी, धन) स्थिर नहीं होती, यह सब जानते हैं। पुरातन पुरुष (आदि पुरुष, विष्णु या बूढे मनुष्य) की वधू (युवती स्त्री) क्यों चचला न हो।

लक्ष्मी विष्णु भगवान् की अर्धांगिनी है। पुरातन पुरुष के विष्णु और बूढा आदमी दोनों अर्थ लिये गए हैं, इसलिए यहाँ श्लेष अलंकार है।

VIII (क) अनुप्रास और लाटानुप्रास में क्या भेद है ?

(ख) रूपक का लक्षण, उसके भेद और भेदों के लक्षण सोदाहरण लिखो।

(क) एक वर्ण या अनेक वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं। अनुप्रास में केवल व्यंजनों की आवृत्ति होती है, स्वरों का मिलना आवश्यक नहीं।

लाटानुप्रास में शब्द की आवृत्ति होती है, अर्थात् एक ही शब्द एक से अधिक बार आता है। प्रत्येक बार अर्थ वही रहता है, भिन्न नहीं होता, किंतु प्रत्येक आवृत्ति में उसका अन्वय भिन्न होने से तात्पर्य भिन्न हो जाता है।

(ख) जब उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाय अर्थात् जब उपमेय को उपमान बना दिया जाय तब रूपक अलंकार होता

जद्यपि नीति निपुण नरनाह ।

नारि-चरित जलनिधि अत्रगाह ॥

यहाँ केवल नारीचरित को जलनिधि बनाया गया है, उमके श्रमों का वर्णन नहीं किया गया ।

(३) परपरित—जत्र प्रधान रूपक का कारण पहले किया हुआ एक दूसरा रूपक ही अर्थात् परपरित रूपक में दो रूपक होते हैं, एक प्रधान, दूसरा अप्रधान । प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होता है । तात्पर्य यह है कि यदि अप्रधान रूपक न लिया जाय तो प्रधान रूपक भी नहीं होगा । जैसे—

राम कथा सुन्दर करतारी

सशय विहग चड़ावन हारी ।

यहाँ दो रूपक हैं—

(क) राम कथा सुन्दर करतारी (ताली)—प्रधान

(ग) सशय रूपी विहग (पक्षी)—अप्रधान

यहाँ राम कथा को करतारी (हाथ की ताली) इन लिए बनाया है कि सशय को विहग (पक्षी) बनाया गया है । यदि सशय को विहग न बनाया जाता तो रामकथा को ताली कहने का कुछ मतलब न होता । इसलिए 'रामकथा करतारी' यह प्रधान रूपक 'सशय विहग' इन अप्रधान रूपक के आधि है अतः यहाँ परंपरित रूपक है ।

IX (क) सारे "रम" और उनके "स्वाधीभावों" के अन्तर्गत ।

प्राथम्य रम के मात्रो उमका सारोमाय विराम आदिप । ९

(ग) वनक, पयोनि और स्वाध्यायि भद्रातों के अन्तर्गत । ९

(घ) रम

स्वाध्यायि-भाव

प्रेम

(६) न्यून तद्रूप रूपक—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ कमी बताई जाय। जैसे—मुल दूसरा चन्द्रमा है, जो पृथ्वी पर ही चमकता है।

तद्रूप रूपक में दूसरा, अन्य, और, अपर आदि अन्यार्थ-वाचक शब्द आते हैं।

सम अभेद रूपक के तीन भेद और होते हैं—

(१) साग या सावयव—जब उपमेय में उपमान का आरोप हो और उपमेय के अंगों में उपमान के अंगों का आरोप भी साथ ही साथ हो। जैसे—

‘ऊधो मेरा हृदय तल था एक उद्यान न्यारा
शोभा देती अमित उसमें कल्पना क्यारियाँ थीं
प्यारे प्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेकों
उत्साहों के विपुल विटपी मुग्धकारी महा थे
लोनी-लोनी नवल लतिका थीं अनेकों उमंगों
सद्वाँछा के विहग उसमें मजुभापी बड़े थे
प्यारी आशा पवन जब थी डोलती स्निग्ध होके
तो होती थी अनुपम छटा बाग के पादपों की

यहाँ हृदय को बाग बनाया गया है और बाग के समस्त अंग—क्यारियों, कुसुमों, पेड़ों, लताओं, पक्षियों और पवन का हृदय के सब अंगों—कल्पनाओं, भावों, उत्साह, उमंगों, सदिच्छाओं और आशा पर क्रमशः आरोप किया गया है।

(२) निरग या निरवयव—जब केवल उपमेय में उपमान का आरोप हो, उपमेय के अंगों में उपमान के अंगों का आरोप न हो। जैसे—

जद्यपि नीति निपुन नरनाट् ।

नारि चरित जलनिधि अत्रगाट् ॥

यहाँ केवल नारीचरित को जलनिधि बनाया गया है, उसके श्रमों का वर्णन नहीं किया गया ।

(३) परपरित—जत्र प्रधान रूपक का कारण पहले किया हुआ एक दूसरा रूपक ही अर्थात् परपरित रूपक में दो रूपक होते हैं एक प्रधान, दूसरा अप्रधान । प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होता है । तात्पर्य यह है कि यदि अप्रधान रूपक न रिया जाय तो प्रधान रूपक भी नहीं होगा । जैसे—

राम कथा सुन्दर करतारी

सशय विहग उडावन हारी ।

यहाँ दो रूपक हैं—

(क) राम कथा सुन्दर करतारी (ताली)—प्रधान

(ख) सशय रूपी विहग (पक्षी)—अप्रधान

यहाँ राम कथा को करतारी (हाथ की ताली) इस विषय बनाया है कि सशय को विहग (पक्षी) बनाया गया है । यदि सशय को विहग न बनाया जाता तो रामकथा को ताली कहने का कुछ मतलब न होना । इसलिये 'रामकथा करतारी' यह प्रधान रूपक 'सशय विहग' इस अप्रधान रूपक के आश्रित है अतः यहाँ परपरित रूपक है ।

IX (क) शब्द "रम" और उनके "व्यापीभावों" के नाम लिखो ।

प्रत्येक रम के सातों उत्पन्न व्यापीभाव लिखना चाहिए । ६

(ख) रामक, पक्षीग और व्याप्युति शब्दों के अर्थ लिखो । २

(घ) रम व्यापीभाव

शृंगार

प्रेम

(६) न्यून तद्रूप रूपक—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ कमी बताई जाय। जैसे—मुख दूसरा चन्द्रमा है, जो पृथ्वी पर ही चमकता है।

तद्रूप रूपक में दूमरा, अन्य, और, अपर आदि अन्यार्थ-वाचक शब्द आते हैं।

सम अभेद रूपक के तीन भेद और होते हैं—

(१) साग या सावयव—जब उपमेय में उपमान का आरोप हो और उपमेय के अंगों में उपमान के अंगों का आरोप भी साथ ही साथ हो। जैसे—

ऊधो मेरा हृदय-तल था एक उद्यान न्यारा
शोभा देती अमित उसमें कल्पना क्यारियाँ थीं
प्यारे प्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेकों
उत्साहों के विपुल विटपी मुग्धकारी महा थे
लोनी-लोनी नवल लतिका थीं अनेको उमगें
सद्ब्राह्मण के विहग उसमें मजुभापी बडे थे
प्यारी आशा पवन जब थी डोलती स्निग्ध होके
तो होती थी अनुपम छटा बाग के पापों की

यहाँ हृदय को बाग बनाया गया है और बाग के समस्त अंग—क्यारियों, कुसुमों, पेड़ों, लताओं, पक्षियों और पवन का हृदय के सब अंगों—कल्पनाओं, भावों, उत्साह, उमगों, सदिच्छाओं और आशा पर क्रमशः आरोप किया गया है।

(२) निरग या निरवयव—जब केवल उपमेय में उपमान का आरोप हो, उपमेय के अंगों में उपमान के अंगों का आरोप न हो। जैसे—

रस और अलंकार

[—पं० रामधोरी शुक्ल, ऐम ए, साहित्यरत्न, काम कालेज, बनारस।
 इस पुस्तक में रस और अलंकार का कठिन विषय पटी सरलतापूर्वक समझाया गया है। प्रत्येक अलंकार के उदाहरण, उदाहरण तथा अलंकारों के पारस्परिक भेद विद्वान् लेखक ने पटी सूची से समझाये हैं। सभी उदाहरण आजरात की पटी प्रोजी की कविता से दिये गये हैं, जिससे विद्यार्थी अलंकार का कठिन विषय पटी आसानी से समझ सकते हैं। इसको पढ़कर हिन्दी भूषण के विद्यार्थियों को इस विषय की और कोई पुस्तक पढने की आवश्यकता नहीं रहती। मूल्य ॥३=)

व्याकरण की प्रश्नोत्तरी

ले०—श्री भीष्मप्रताप शास्त्री, पी ए और कविता रामानन्द भद्रबाण,
 हिन्दी प्रभाकर, विहारद

संपादक—श्री धर्मचन्द्र विशारद

इस पुस्तक में हिन्दी का नारा व्याकरण बहुत आसान भाषा में प्रश्न और उत्तर के रूप में समझाया गया है। विद्वान् संपादक ने इसे हर तरह से विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बना दिया है। पुस्तक लेते समय संपादक का नाम अवश्य लेवें। मूल्य १=

व्याकरण का चार्ट

इस चार्ट की सहायता में हिन्दी का नारा व्याकरण १० मिनिट में दोहराया जा सकता है। ठीक परीक्षा के समय काम आने वाली चीज है। मूल्य २=)

हास्य	हास
करुण	शोक
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
वीभत्स	घृणा
अद्भुत	विस्मय
शान्त	निर्वेद
वात्सल्य	स्नेह

(ख) यमक—जब शब्द या शब्दाश की आवृत्ति हो तब यमक अलकार होता है। शब्द की आवृत्ति होने पर उसका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न होता है। शब्दाश की आवृत्ति में कोई अर्थ नहीं होता।

वक्रोक्ति—जब वक्ता के शब्दों का श्रोता द्वारा वक्ता के अर्थ से भिन्न कोई और अर्थ लगाया जाता है, तब वक्रोक्ति अलकार होता है।

व्याजस्तुति—जब निन्दा के बहाने स्तुति की जाय अर्थात् शब्दों से निन्दा जान पड़े पर हो स्तुति या स्तुति के बहाने निन्दा की जाय अर्थात् शब्दों से स्तुति जान पड़े पर हो निन्दा, तब व्याजस्तुति अलकार होता है।

पिगल 'परिचय

उसमें 'सरल अलकार' के सत्र छन्दों के लक्षण उसी छन्द में देकर उसके उदाहरण खूब समझाकर दिये गये हैं। जिससे विशार्थी बहुत आसानी से छन्दशास्त्र को समझ सकते हैं।

(क) शिवाजी ने चन्द्रराव मोरे को मार कर जावला प्रान्त जीत लिया। तब बीजापुर दरबार ने अफजलखानों को शिवाजी को पकड़ने को भेजा। शिवाजी ने उसे भी मार दिया और फिर पन्हाले पर धावा बोल दिया। भूषण कहते हैं, उस समय बीजापुर के बादशाह आदिलशाह से उसकी वेगमें कहती हैं—

चन्द्रावल चूर करि जावली जपत कीन्ही,
मारे सब भूप औ मँहारे पुर धाय कै।

भूषण भनत तुरकान दल-थभ-कादि,
अफजल मारि टारे तवल बनाय कै॥

एदिल सों वेदिल हरम कहैं प्रार वार,
अब कहा सोनो सुख निहहिं गगय कै।

भेजना है भेजो सो रिसालें सिवराज जू की
याजी फरनालें परनालें पर आय कै॥

अर्थात् सिंह (शिवाजी) को जगाकर (छेड़ पर) अब सुख से क्या सोते हैं? पन्हाले के बिले पर हमकी तोपें गरज रही हैं अगर उसे तिराज भेजना है तो शीघ्र भेजिए।

४ मूरदाम और गुल्मीदाम की बकिा में ममता अथवा रिक्तता सिगाकर कहे कि मुझे जिसकी बकिा अधिक उत्तम प्रतीत होती है और क्यों? १३

यह प्रश्न मूर सूक्ति गुधा और रागायण से संबंधित है। दोनों पुस्तकें अब कोर्म में नहीं हैं, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

५ "रागायण की कथा से चरित्र में साधुता आजाती है" इस युक्ति को स्वीकार करो और अपने मत को युक्ति द्वारा प्रमाणित करो। १३
रागायण पोस्त में नहीं है, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

(क) यह तक्षशिला काव्य से है, जो अब कोर्स में नहीं है, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

(ख) भूषण कवि कहते हैं कि हे वीरवर शिवाजी! आपके भय में जो शत्रु स्त्रियाँ पहले ऊँचे और बड़े बड़े महलों में रहती थीं, वे अब ऊँचे ऊँचे भयानक पर्वतों में छिपी रहती हैं। जो पहले बढिया मिठाई खाती थीं, वे अब कद और मूल खाती हैं। जो पहले तीन तीन बार खाती थीं, वे अब तीन बेर खाती हैं। गहनों के भार के कारण जिनके अंग शिथिल थे अब वे भूख के मारे दुर्बल हो रही हैं। जो सदा पंखा झूलवाया करती थीं वे अब निर्जन जगल में मारी मारी फिरती हैं और जो रत्नजडित गहने पहनती थीं वे अब (नग्न) त्रिना वस्त्र के जाड़े में मरती हैं।

(ग) यह रामायण से है, जो अब कोर्स में नहीं है, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

३ प्रसङ्ग निर्देशकर अर्थ लिखो —

- (क) वासुदेव नृप पिता-परायण प्रजा सखा, विद्वान् ।
- (ख) पापके पाकिल सने ।
- (ग) विजली जैसी स्फूर्तिमयी सेना उन्मादिनि कडकी ।
- (घ) जनु जलचर-गन सुखत पानी ।
- (ङ) चिनु जल जारि करइ सोइ छारा ।
- (च) धर्म पराव विपतें विषभारी ।
- (छ) मनु अहि काँचुली उत्तारी ।
- (ज) जाकौ जासों हित, सोइ ताहि सुहात ।
- (झ) अब कहा सोवो मुख सिंहाई जगायकै ।

१५

(क) से (ज) तक तक्षशिला, रामायण, और सूरसूक्ति सुधा में से हैं, जो अब कोर्स में नहीं हैं, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

धार कहता है—“शिवाजी न होतो ना मुनक्ति होनी सरती”
 “रागी हिन्दुवानी हिन्दुवान फो तिलाह राग्यो, अम्मति
 पुरान राग्ये वेद-विधि सुनी में।” इस प्रकार इन दोहों में निम्न भावों
 को दृष्टि में भूषण बहुत ऊँचा पहुँच जाता है और अमरा हिन्दी
 साहित्य में निराला ही स्थान है।

भूषण वीर रस का कवि था। उसकी कविता में वीर रस तथा
 उसके सहायक, भयानक, गीद्र तथा पीभक्त रस का अनूठा
 परिपाक हुआ है। निम्नलिखित पद में शिवाजी के वीर सैनिकों
 का क्या ही अनूठा वर्णन है।

छटत कमान अरु गोली तांग जानने के
 मुसकिला होत मुरचानूँ की जोर में।
 ताहि समै मियरान हुकुम के हस्त निशे
 दाया नौधि परा हस्त धोरधर जाट में।
 भूषण भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं रागे
 किम्मति इहाँ रागि है जाकी भट मोट में।
 ताव केँ दै मूछन कंगूरन पे पाँर दै दै
 अरि मुग्य घाय नै नै, धूनि परेँ कोट में।

शिवाजी के आतंक का वर्णन करते हुए भूषण ने भयानक
 रस को कैसा अच्छा प्रदर्शित किया है, शत्रु-निषेध और शत्रु
 राजाओं को क्या मुर्झसा दिया है।

साजि तागाज मियरान नैन सागा ही
 शिरी निगाँर ममा दीरप दुल्हा ही।
 तनियोँ न तिनर सुयगियोँ पगलियोँ ७
 पागें मुमरागी लोदि मजियोँ मूषा की।

६ भूषण को उच्चकोटि का कवि क्यों समझते हैं ? इसकी कविता के भाव, रस, अलंकार तथा उत्कर्षाघायक अन्यान्य गुणों के विषय में तुम्हारा क्या मत है ? १४

जिस कवि की कविता में रस का परिपाक हो, भाषा रस के अनुरूप तथा परिपक्व हो, तथा भाव उच्च और उदार हों, वह कवि उच्च कोटि का कवि समझा जा सकता है । भूषण की कविता में ये सब गुण हैं । वीर रौद्र, भयानक तथा वीभत्स रस का ऐसा परिपाक हिन्दी के अन्य किसी कवि की कविता में कठिनता से पाया जाता है और भाषा भी इन रसों के अनुसार ही ओजपूर्ण है जिसके पढ़ते ही मन वीरदर्प से भर जाता है, या नायक के आतंक से धैर्य शत्रु का साथ छोड़ता प्रतीत होता है । इनके अतिरिक्त उच्च जातीय भावों की प्रधानता तो भूषण की रस विशेषता है, जो उससे पहले के किसी कवि की कविता में नहीं पाई जाती, अतएव भूषण को उच्च कोटि का कवि समझा जाता है ।

भावों की दृष्टि से हम कह चुके हैं कि भूषण का स्थान हिन्दी साहित्य में अनूठा है, उससे पहले वीर रस के जितने कवि हुए उन्होंने अपने नायक के यश, उसकी वीरता उसके युद्ध कौशल उसके प्रेम तथा अन्य वैयक्तिक घटनाओं का ही उल्लेख किया है, उन्होंने यह नहीं दिखाया कि नायक के विजय से जाति या देश को कुछ लाभ हुआ या नहीं । जहाँ पृथ्वीराज जैसे वीरों ने राजनीतिक कारणों से युद्ध किया वहाँ भी उनके यश गान करने वाले कवियों ने लड़ाई का कारण किसी सुन्दर औरत को ही बताया । भूषण ही ऐसा महाकवि था जिसकी कविता में सबसे पहले हिन्दू जाति का नाम सुना गया और शिवा जी के यश का वर्णन जिसने इसी कारण किया क्योंकि वे हिन्दू जाति के रक्षक थे । वह बार

इन रसों के अतिरिक्त रित्रयो के शोक-वर्णन में वरुण रस का आभास भी मिलता है, और 'पानी में जहाज रहे नाज क जहाज महाराज सिवराज तेरे पानिप पयोध है" आदि म अद्भुत रस भी खूब प्रदर्शित किया गया है। माराश यह है कि भूषण की कविता में रसों का खूब परिपाक हुआ है।

भूषण की रचना में अलंकार-योजना भी उच्च कोटि की हुई है। अन्य कवियों की तरह उसमें विष्ट-पेपग नहीं है। पर शुभ ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करते हुए उन्होंने नरान और मौलिक ढंग की अलंकार योजना की है। औरगजेव न ओर सय हिन्दू राजाओं को वश में कर लिया था पर एक शिवाजी हां पमे थे, जिनमें वह कर वसूल न कर सका, इस ऐतिहासिक तथ्य को चमत्कार मिश्रित रूप में द्वारा जैसे प्रकट किया है।

कूरम कमता कमधुज है करम फूल

गौर है गुताव गाता वंतभी विराच है।

पॉडर पवारि जूही मोहन है चराप

सरम बुंदेगा मो चमेला गाच पाच है।

भूषण भगत गुणशुद्ध बदनूर है

बपेते बमत मय पुसुम समाज है।

लेड रस एतेन को वैठि न सका अहै

अलि नपरंगजेव चंवा सिवराज है।

बीजापुर के सुलतान ऐतिहासिक मोताबिका के मुताबिक इपूव शाह तथा मुगल सम्राट औरगजेव जैसे नीच बसु ५४ दुश्मनी को शिवाजी न अकेले जीवा विराया था। इस ऐतिहासिक तथ्य की पौराणिक कथा में चमत्कार प्रकट कर कवि ने इतिहास को कथा की आस्था बसाहरण किया है—

वालियों विधुर जिमि आलियों नलिन पर
लालियों मलिन मुगलानियों मुपन की ।

तथा—

चकित चकता चौकि-चौंकि उठै वार वार ।
दिल्ली दहसति चितै-चाह करपति है ।
विलसि बदन विलसति विजैपूरपति
फिरति फिरगनि की नारि फरकति है ।
धर-धर कौपत कुतुबशाह गोलकुडा
हहरि हवस भूप भीर भरकति है ।
राजा भिवराज के नगारन की धाक सुनि
केते पातसाहन की छाति दरकति है ।
भूषण के रौद्र तथा वीभत्स रस के अनूठे उदाहरण
दिये जाते हैं ।

सनन के ऊपर ही ठाढो रहियो के जोग
ताहि खरो कियो छ हजारिन के नियरे ।
जानि गैरमिसिल गुमैल गुसा धारि उर
कीन्हो न सलाम न वचन बोले सियरे ।
भूषण भनत महावीर बलरुन लाग्यो
सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे ।
तमक ते लालमुप मिवा को निरखि भये
स्याह मुप नौरग सियाह मुख पियरे ।
पारापार ताहि को न पावत है पार कोऊ
सोनित ममुद्र यहि भाँति रह्यो बढि कै ।
नाँदिया के पूँछ गहि परि कै कपाली वचे
फालि बची मौस के पहार पर चढि कै ।

घनसार = कपूर ।

ठौर = स्थान ।

मत्रास = शरणस्थान, किला ।

सौह = शपथ, कसम ।

लंगराई = शरारत, डिठाई ।

सल्लूपल = ओपली ।

गारो = बडाई, अभिमान, गर्व ।

ऐनु = अयन, मकान, घर ।

सोरि = गली ।

उडपति = चन्द्रमा ।

c. प्रश्न परिचय दो —

जालोह, दात्तामित्रि, मिलिन्द, गणजीव, कनिष्क तथा मालविका १०

c यह प्रश्न संक्षिप्तशिलाकाव्य से है, जो अत्र चर्च में नहीं है, अतः उत्तर नहीं दिया गया ।

भक्त-पचरत की कुंजी

(टीकाकार—श्री रामदयाल सकुमार मालिन् (२०)

इसमें भक्त-पचरत के मय पत्रा व धर्म पत्रों के मय भाषा में विस्तार पूर्वक दिये गये हैं । पठित शास्त्रों के अर्थ तथा प्रसंगगत आने वाली मय कदाचारों को भी श्री गुरु दे । मूल पुस्तक में पत्र की मितनी भूल है जो मय का कुंजी में मूल पाठ किया गया है । पत्र की मशयता से विचारों मय इस पुस्तक का पत्र मय है । मय ॥३३)

गंदिल कुतुबशाह औरंग को मारिबे को
 भूषण भनत को है सरजा सुमान सों ।
 तीन पुर त्रिपुर को मारे सित्र तीन वान
 तीन पातसाही हर्ना एक किरवान सों ।

ऐसे ही औरंगजेब के सरदार दिल्ली से शिवाजी पर आक्रमण करने आते हैं, पर वे हार कर लौट जाते हैं, तो उनकी सेना, सपत्ति, आदि सब शिवाजी को प्राप्त हो जाती है, जिससे शिवाजी का यश और गौरव अधिक बढ़ जाता है । भूषण इस बात को कितनी सरल उपमा से प्रकट करते हैं—

रहँट की घरी जैसे औरंग के उमराव
 पानिप दिली ते ल्याइ डारि डारि जात हैं ।

भूषण की भाषा यद्यपि रिचडी है, उसमें ब्रज-भाषा तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का मेल है, पर वह भी ओजपूर्ण है, तथा रस के अनुकूल हुई है । इस प्रकार हम देखते हैं कि भाव, रस, अलंकार सब की दृष्टि से भूषण खूब सफल हुए हैं, उनमें नवीनता है, मरलता है और है उच्चता तथा उदारता ।

७ शब्दार्थ लिखो —

करारे, विहराने, कत्ता, विललानियॉ, नीवी, धनसार, डौर, मवास, सौह, लँगारई, उल्लापश, गारो, गुनु, खोरि तथा उडपति ।

(७) करारे = कठोर ।

विहराने = फट गये ।

कत्ता = तलवार जैसा एक शस्त्र ।

विललानियॉ = घबरा गई, व्याकुल हो गई ।

नीवी = सांडी का वह भाग जिसे चुन कर खियाँ नाभि के नीचे खोसती हैं

भाग भी नहीं जीता, फिर भी वह 'जगत को जीतने वाला' की उपाधि धारण कर ससार भर को धोखा देता है। मैं लान्छन से या आदर पाने की इच्छा से या डर से किसी के पास नहीं जा सकता।

(ए) जो देवी की आज्ञा। राजकुमार, सुनिष्ठ, एक बार ऐसा हुआ कि महाराज दशरथ किसी जंगल में शिकार खेलने के लिए गए। नयौग से उसी समय एक अन्धे तपस्वी माता पिता का इकलौता घेडा सिर पर घड़ा रख कर तालाब से पानी भरता आया। घड़ा भरते हुए जो गडगडाहट हुई, शिकार के शौकीन राजा ने उसे जंगली हाथी के जल पीने की आज्ञा समझा और जिनर से आवाज आई थी, उधर ही शत्रुवैरी प्राण खला दिया। वह प्राण उस मुनि-पुत्र को जाकर लगा, जो उन अन्धे तपस्वी माता पिता की आँखों के समान था और उसी तरफाल मर चुका था।

२ (क) एकबार किसी युग में एक मरु का शतमृत के दिन किसी घट्टे घड़े आठमों की ठीक मूर्तों के उपर उड़कर गिर पड़ा था, उसका कारण सुष्ट के मत का पुण्य एक माता माता नाम का शरीर का कम हो गया था इसी कारण उसी समय उस घड़े ने मरु का शरीर को जल दे दिया। १०

(ग) सात। क्या आपने कौन दिग्गज भर्तृ निम्नलिखित के नाम किये हैं? क्या द्वितीय रूप में विराजमान भगवती महेश्वरी के भक्तों की शक्ति को देखा है? क्या आपने विष्णुदेवता की शक्तियों का अर्थ समझ करने वाले लोकोपर धारण के पुराण वर्णन किये हैं? ३

(घ) एक बार कितना अज्ञान में पड़ाने दिन मरु का शतमृत का एक शतमृत एक घड़े की शक्ति पर मरु का शरीर गिर पड़ा। विष्णु नाम मरु का शतमृत अज्ञान और मरु का शतमृत के पुण्य का

प्रश्नपत्र ३

१ नीचे लिखे गद्यभागों के अर्थ लिखो —

(क) भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभासमात्र हो जाता है उसको नश्वर चमकीले प्रदर्शन अभिभूत नहीं कर सकते। दूत! वह किसी की इच्छा का क्रीड़ा-वन्दुक नहीं बन सकता। तुम्हारा राजा अभी झेलम नहीं पार कर सका, फिर भी जगद्विजेता की उपाधि लेकर जगत को वञ्चित करता है। मैं लोभ से सम्मान से भय से किसी के पास नहीं जा सकता।

अथवा

(ख) जो आर्या की आज्ञा। कुँवर जी! सुनिये, एक बार ऐसा हुआ कि महाराज किसी वन में आखेट के लिये गए। भाग्य वश उसी समय एक अन्धे तपस्वि युगल का एकमात्र सहारा, उनका लडका स्तिर पर घड़ा रखे सरोवर में पानी भरने आया। उस भरते घड़े की गडगड़ाहट सुन आखेट प्रिय महाराज ने उसे जङ्गली हाथी के जल पीने का शब्द जान शब्दवेधी बाण चला दिया, जिससे उस अन्धे तपस्वि युगल का नयन रूप वह सुनि पुत्र विन्ध गया और स्वर्ग सिंघार गया।

१०

(क) भूमा (ऐश्वर्यशाली प्रभु) का सुख और उसके बड़प्पन का जिसको थोड़ा सा भी ज्ञान हो जाता है, अर्थात् जिसका ध्यान वास्तविक ऐश्वर्यशाली प्रभु की ओर लग जाता है और जिसे उसकी महत्ता का थोड़ा सा भी पता लग जाता है उसको ये ससार के नष्ट होने वाले चमकीले प्रदर्शन, रुपया पैसा आदि प्रिचलित नहीं कर सकते, वे उसे अपने पय से नहीं हटा सकते। वह प्रभु-भक्त किमी की इच्छा का खेलने का गेंद नहीं होता, अर्थात् किसी की इच्छा के अनुसार काम नहीं करता। हे दूत, तुम्हारा राजा सिंक दर अभी झेलम पार नहीं कर सका, अभी उमने भारत का कुछ

(ख) वन रही वशी आओं याम की—

अब तक गँज रही हे बोली प्यार मुँह अभिराम रा
हुए चपल मृगनेन मोह-वश बनी रिपची याम की,
रूप सुधा के दो दग प्यालों ने ही मति ने म म ।

अथवा

करणा कादम्बिनी परसे—

दुख से जली हुई यह धरणी प्रमुदित हो नरसे ।

प्रेम प्रचार रहे जगनी तल दया तान दरसे,

मिट कलह शुभ शानि प्रकट हो अचर और चर मे ॥ ५

(ग) प्रतिनिधि यज्ञ रचाने स हे रहते इन्द्र यहाँ पर,

सुर तराओं के बदले इनम अम बंधने हे कतिर ।

ये द्रुम ऊँची अति उठाकर तैय जिन्स मय पाते,

पेरायत की बण्ड-रज्जु के चिदा से बानात ॥

सुरपति के आवाहन-मन्त्रों का सुन सुन निर्मिषाणि ।

माला छोड़ बचो रगती हे बेनी विरह निगाणी ॥ ०

(क) सूर्य के समान रामचंद्र जगत् को गए हैं, और जिन

तरह सूर्य के साथ साथ दिन चला जाता है वैसे ही लक्ष्मण

भी उसके साथ वन को चले गये हैं । जब सूर्य ही चला जाय

आन हो जाय, तब अगल दिन वैसे रह सकता है, सीता को भी

उाके पीछे-पीछे वन को चली गई, ये भी उमा प्रभार निगाएँ

नहीं देना, जैसे सूर्य के अम्ल होने पर और दिन ५ बीन तारे पर

छाया गिराई नहीं पड़ती ।

गुहें प्रमत्त वान शिष्य वसुधों के धार क दृष्टा के राम की

सुगन्धि को और हृदयों के नपुत्र संगीत को साथ । पर मया मंदरा

में नठे रूप निर्गत और जीवत जल क कणों को विरह से हुए मया

की वापु आ रही है ।

जो फल होना था उस फल के साठ-हजारवें भाग का सौवाँ हिस्सा उस मसूर की दाल के दाने के मुँह में लग जाने के कारण कम होगया। यह देख उसी समय उस बूढ़े ने एडे होकर काँपते-काँपते ससार भर में जितने भी मसूर के खेत थे उन्हें शाप दे दिया कि जा मसूर के बोयेगा या जो मसूर खायेगा वह अछूत हो जायगा। इस घटना को देने का आशय यह है कि सकुचित विचार के लोगों ने बिना किसी कारण ही छोटी छोटी बात पर पाप और प्रायश्चित्त के ढोंग बनाये हुए हैं।

(ख) पूज्य, क्या अपने ससार भर में प्रसिद्ध अनूठे पितृ-भक्त (पिता की आज्ञा पर सब कुछ छोड़ देने वाले) रामचन्द्र के दर्शन किये हैं? क्या वसिष्ठ की पत्नी अरुवती के समान आदर्श-चरित्र सीता को देखा है। क्या आपने बिना किसी कारण, बिना किसी अपराध के, वनवास को स्वीकार करने वाले लक्ष्मण के पवित्र दर्शन किये हैं, जो लोकोत्तर भाव स्नेही हैं, जिनके भाई से प्रेम का उदाहरण लोक में नहीं मिल सकता।

३ नीचे लिखे पद्यों के स्पष्ट अर्थ लिखो —

(क) वन में गये राम रवि-सम, दिवस-सम लक्ष्मण गए,
कैसे रहे दिन भी कहे, दिनराज ही जब चल दिए।
पीछे उन्हीं के गत हुई, सीता नहीं है दीगती,
दिनपति दिवस-अवसान में, छाया नहीं है दीगती ॥

अथवा

ले लेकर मकरन्द गन्ध धरनिन्द वनों का,
सह लिये सगीत मञ्जु कलहस-गणों का।
शीत तरङ्गोच्छलित स्वच्छ छीटे छितराती,
करने तुम्हें प्रसन्न पवन गङ्गा की आती ॥

४ लव कुश के आने की सूचना मिलान पर क्या उक्त सम्मुख देव
कर राम के मन में किन किन भावों का उदय हुआ ? ६

तापस-कुमार-वेशधारी लव कुश के प्राण ही सूचना देने
हुए विद्वेष ने जब रामचन्द्र को बताया कि वे नाना तुम्हारे ए
अशावतार हैं और तेज तथा रूप सादृश्य में वे मेम मालूम पड़ते
हैं कि जैसे महाराज दशरथ के मामने राम लक्ष्मण आया करन
थे तथा वृद्ध कचुकी भी आश्चर्य में उनमें पूछनाछ कर रहे हैं,
तब रामचन्द्र के मन में गहरी भावना उपन्न हो गई कि यहीं
वे परित्यक्ता गर्भवती सीता के पुत्र न हों । अतः उनके देवने में
क्षण का भी विचार उसे अमल हो गया । तब रामचन्द्र न उठे
देवा तब सहज स्नेह में उमका हृदय द्रवित हो उठा । वह सोचने
लगा कि यदि प्रसन्न सकुशल हुआ हो और वह सता आत
जीवित हो तो अवश्य इन जैसी ही होगी । अतएव उनके देवने में
सीता की याद आजाने में कहीं सीता मर न गई हो यह भय,
यदि ये सीता के पुत्र हों तो पुत्र-प्राप्तिका भाव गर्भवती सीता का
इस प्रकार निःशुभता में छोड़ दिया इमका शोक तथा उनकी दृष्टीय
दशा पर करुणा इस प्रकार अनेक भाव एव साथ राम के हृदय में
उदय हुए, और यह मेमा अनुभव करन लगा कि जिस तरह
परवेश में गया हुआ व्यक्ति अपने मा में अपने पुत्र की प्रीति
आदि जिस जिस दशा की जैसी पैसा करुणा करती है फिर शीघ्र
ही वस वस दशा में अपना पुत्र की देवनेर पैसा करुणा उदय
पगौर उठता है जैसे ही वसता मा भी निःशुभता है । यद्यपि फिर
एक क्षण या सोचना है कि लोका-निर्गामी शरीर के भाव लेना
माय में पैसा शीघ्र मरता है, पर दूरने ही एव अवसर करण है—

(र) आठो पहर की, हर समय मन में 'डोलने वाली, बंसी बज रही है। सुन्दर मुख वाले उस प्यारे की बोली अब तक कानों में गूँज रही है, जिसे देखकर नयनरूपी हिरण मोह वश चंचल हो उठे थे और कामदेव की वीणा बज उठी थी अर्थात् जिसे देख कर मन में प्रेम-विचार पैदा हो गया था। रूप सौन्दर्य के नेत्ररूपी दो प्यालों ने ही बुद्धि को व्यर्थ कर दिया अर्थात् ज्ञान और विचार को नष्ट कर दिया।

करुणारूपी मेघमाला अब बरसे, जिससे दुःखरूपी आग से झुलसी हुई यह पृथ्वी हरी-भरी हो जाय, फले फूले। पृथ्वी तल पर प्रेम का प्रचार हो जाय। सब ओर दया तथा दान दिखाई दे। कलह (लड़ाई-झगडा) मिट जाय तथा जड और चेतन से कल्याणकारी शांति प्रकट हो।

(ग) यहाँ नैमिपारण्य में प्रतिदिन यज्ञों के होने से इन्द्र अब यहीं रहते हैं, देवताओं के वृक्षों (नदन कानन के वृक्षों) के स्थान पर अब इस जगल के वृक्षों में ही इन्द्र का हाथी ऐरावत बाँधा जाता है, और ये ऊँचे ऊँचे वृक्ष जिन्हें लोग ऊँची आँख उठाकर ही देख पाते हैं, ऐरावत के गले की रस्सी के चिह्न बतला रहे हैं, अर्थात् इन ऊँचे ऊँचे वृक्षों में ऐरावत के बाँधे जाने के निशान दिखाई देते हैं। (इस नैमिपारण्य में) इन्द्र को बुलाने के लिए पढ़े जाते वेद-मंत्रों को सुन सुनकर सिमयानो-म्भी (ऋद्ध सी) इन्द्राणी माला को त्याग कर वियोग की निशानी बेणी को बाँधती है। प्राचीन समय में मित्रियाँ पति के परदेश जाने पर जूड़ा आदि न बाँधती थी, उसी का यहाँ उल्टा है, कि इन्द्र के नित्य प्रति के वियोग के कारण इन्द्राणी फूँों की माला आदि से सजाकर जूड़ा नहीं बाँधती, अपितु एक बेणी ही रखती है।

को लेने के लिए दस्युओं का दल माधुओं का रूप धारण कर लेना पहुँचा, और एकत्र होकर उलटा ने राजा और महाशयग के विरुद्ध पडयंत्र रचने लगे।

(३) जोश और कर्तव्य में बहुत भेद है। अ-याचार क्षयकर मनुष्य भडक तो उठते हैं, परन्तु ऐसे समय क्या करना चाहिए, क्या कर्तव्य है इस विचार में तथा उस समय के मर्यादा जोश में बहुत अन्तर है।

(४) अज्ञान ज्ञान से अधिक प्रबल होता है, जल्दी फैलता है, और सत्य की अपेक्षा अमत्य की ओर लोग अधिक झुकते हैं। अर्थात् साधारण जन ज्ञान और सत्य की अपेक्षा असत्य और अज्ञान को अधिक अपनाते हैं।

(५) मनुष्य वेमौके कितना ही प्रयत्न करता रहे, पर सफल नहीं होता। पर कभी ऐसा समय होता है जब प्रिय प्रयत्न कहीं या थोड़े से ही यत्न से वह सफल हो जाता है, अतः यह धरा जाता है कि सफलता का भी एक क्षण होता है।

(६) फौजदार की जमानती, जयमन की भुरगम बीरता, फतह-सिंह और उसके इनेगिन माधो राजपूतों की अठ्ठी बहादुरी तथा भित्तौड़ के राती के अदम्य साहस की कहानी सुनकर शाहशाह अकबर का ही मन कहने लगा—या मुग, तुमने मुसलमानों को कोई ऐसा हीरा, कोई ऐसा बहादुर नहीं दिया जो ऐसा शूर हो तथा देश के मान के लिए अपना प्राणों की मजिद भी पर्याप्त न करे। मचतुच, राजपूतों की बीरता प्रशंसनीय है।

(७) कार्तिया पन्द्रुन ने करी है कि मैं दूर दूर भी रहने वाली हूँ भले मुझे किसी की भी याद दूँ हो पाये है, कोई प्यारी है, दूर दूर में होने पर भी। जो मुझसे नहीं होगा, दूर

इन आँसुओं में खींच रहे हैं स सुत-प्रिया की ये तस्वीर
तेज देर कर जिसे हो रहा, मेरा हृदय अधीर अधीर ।

५ नाचे तिरये किन्हीं पाँच वाक्यों के अर्थ स्पष्ट लिखो जिसमें

बन्धन भाग स्फुट हो जाय —

(१) पराधीनता से बढ़कर और विडम्बना क्या है ?

(२) होम करते हाथ जले ।

(३) आवेश से ओर कर्तव्य से बहुत अन्तर है ।

(४) अज्ञान प्राय प्रगल्भ हो जाता है और असत्य अधिक आकर्षक होता है ।

(५) सफलता का भी एक क्षण होता है ।

(६) बादशाह—(स्वगत) या खुदा, मुसलमानों को ऐसा एक भी
हीरा अता न किया । बाहरी जवा मर्दी !

(७) चन्द्र०—ऐसा हे तो भूल जाओ शुभे ! इस केन्द्रच्युत जलते
दुष्ट उल्कापिण्ड की कोई रक्षा नहीं । निर्वासित, अपमानित प्राणों की
चिन्ता क्या ।

(१) पर्वतेश्वर ने अलका से प्रण किया था कि मालव युद्ध में
वह भाग न लेगा, पर साथ ही उसे डर था कि यूनान के अधिपति
सिकंदर के कहने पर यदि वह उसे युद्ध में सहायता नहीं देगा तो
उसका राज्य चला जायगा, क्योंकि संधि के अनंतर वह स्वतंत्र
राजा न था, अपितु यूनानियों का क्षत्रप (गवर्नर) था, अतः वह
अलका से कहता है कि यह बड़ी आफत है । अलका कहती है कि
गुलामी से बढकर दुनियाँ में और क्या विडम्बना (मजाक, आफत)
हो सकती है, अर्थात् गुलामी सब से बड़ी आफत है ।

(२) होम करते हाथ जले का अर्थ है अच्छा काम करते हुए
अनिष्ट हुआ । राजा हर्ष और राज्यश्री अपूर्व दान दे रहे थे, उस

‘अनुकूल थीं, तुम सब तरह कुल म मन्त्र, गुणशालिनी ।
सुख दुःख सपद् विपद् में सत्र काल था महकारिणी ।
यह जान कर भी छोड़ता हूँ लोह-निन्दा प्राप्त म ।
प्यारी समझना मत कि तुमको प्रेम-रस क ताम म ।

इससे स्पष्ट है कि रामचन्द्र ने सीता को लोह-निन्दा क मय
से छोड़ा था । वे जानते थे कि सीता प्रत्येक तरह म सुद्ध है, रावण
उम ज्यर्षनी पकड़ ले गया था, उसमे सीता का रूप नष्ट था ।
उसके बाद उसको अग्नि-परीक्षा भी हो चुकी थी फिर भी लोह
निन्दा तो चल ही रही थी, लागो के मुँह को कौन लगाम लगा सकता
था । लोगों का कहना था कि यदि राम व रावण गृह निवासतो
सीता को स्वीकार कर लिया तो हमारा स्त्रियों भी यदि दूमरो के
यहाँ चली जाया करेंगी तो हमे अपनी छान्नी पर पत्थर रख कर
वह मय महना पडेगा, क्योंकि जब स्वयं रागा के घर म या
अधेर है तो वह दूमरो को कैसे रोह नरेगा । इन शब्दों म भावा
अनाचार के भयकर दृश्य को राम क हृदय ने देखा तो वह फौर
पठा । उसके नाम से प्रजा में अराजक का प्रचार न हो इसके
लिये एक आदर्श राजा के समान रामचन्द्र ने द्रो में धन श्याग
किया । रामचन्द्र जानते थे ये लोह निन्दक आचार के नाम पर
जनता को तथा धर्म परायण प्रजा को भङ्ग कर रावण म क ह
मया मफे थे । ऐसे समय राम ने सीता का परिणाम कर,
स्वयं अपने जीवत क आत्मा पर कुन्डारापाव कर, रावण वी वधावा
तथा रावणों को यह कहन क भरसर न दिया ‘सपरथ वानरि
‘नेथ गुमार्ह ।’ यह सीता के साथ वैशिश्व अनाचार कर, ता
सहना है । फलतः रामचन्द्र के वैशिश्व जीवत पर भी यह अनाचार
था जो उमय प्रजा को, जाना जान का प्रसन्न

समय स्मृति उलटा तडपाती है। तब चन्द्रगुप्त कहता है कि हे देवा, यदि ऐसा है, यदि स्मृतियाँ तुम्हें दुःख पहुँचाती हैं तो मुझे भूल जाओ, अपने स्थान से गिरते हुए-तारे की क्या गिनती, अर्थात् एक प्रकार के चमकीले पिंड जो कभी कभी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी ओर को जाते हुए अथवा पृथ्वी पर गिरते हुए एक स्मृति को रखा मात्र छोड़ देते हैं, जैसे उनकी गिनती नहीं हो सकती, ऐसे हाँ मेरे क्षणिक परिचय की क्या गिनती करता हो? अपने राज्य मगध से निकाले गये और अपमानित किये गये इस जीवन की चिन्ता भी क्या करना है।

६ सीता का परित्याग अकारण था अथवा उसका कोई उचित कारण था हमका विचार करो।

जिम सीता का परित्याग करके रामचन्द्र ने अयोध्या के निज जीवन को वनवास के जीवन के समान बना लिया था, जिसके वियोग में वे चिरदुखी रहे, उसका परित्याग अकारण तो हो ही नहीं सकता। क्योंकि बिना कारण किसी का परित्याग किया जा सकता है, परन्तु बिना कारण अपने जीवन को दुःखमय नहीं बनाया जाता। जब हम देखते हैं कि सीता के परित्याग से राम ने अपने जीवन को दुःखमय बना लिया, और देश से निकाल देने पर भी सीता को कभी हृदय से नहीं निकाला, अपने हृदयस्थान पर सीता की सपत्नी को नहीं बैठाया, तब यह तो मानना पड़ता है कि सीता के परित्याग का कारण अजस्य था, पर क्या वह उचित या अव्यव अनुचित यह विचारणीय है। रामचन्द्र के सीता के परित्याग के कारण को नाटककार ने लक्ष्मण के मुख से इस प्रकार कहलाया है —

किसी वस्तु की आवश्यकता है, वह उसे आवश्यकता पूरी करने का आश्रय देती है, परन्तु भिक्षु अपने कल्पित विचार को फट करने में असमर्थ है अतः वह माँगने से इन्कार कर देता है। राज्यश्री को इसका दुःख है।

अब तक राज्यश्री रानी थी, पर अब उसके दिन फिरते हैं। उनका पति मारा जाता है, राज्य छिन जाता है वह बची होती है, धन गन्तव्युओं द्वारा भगाई जाती है, दरगु उससे धन माँगते हैं, राज्यश्री धन में असमर्थ है। दम्पुओं के हाथ से दिवाकरमित्र उसे छुड़ाते हैं पर वह सती होना चाहती है इतने में उसका भाई हर्षवर्द्धन आता है। वह उसे चितारोहण से रोकता है और कहता है कि मैंने तुम्हारे लोण कितना रक्तपात किया, मैंने तुम्हारे शत्रुओं का नाश कर दिया। पर उम करुणा की देवी को इसमें हर्ष नहीं होगा वह कहती है कि मुझे एक मेरी शान्ति के लिए अनेक बहनों को मेरे जैसी दुःखिनी बनाकर कितना पाप किया है। हर्ष के स्नेह-वश अतः वह जीवित रहना मान लेती है पर उसके जीवन का एक ही उद्देश्य रह गया है—लोकसेवा। यह अपने भाई सम्राट् हर्षवर्द्धन के साथ रौद्र जाती है, उसके दिन पतादते हैं और उमका दानाज फिर भारम हो जाता है। वह अपना सर्वोपर दान कर एक वस्त्र महल करती है। साथ ही यह क्षमा की अवतार भाई राज्यश्री के शत्रु परने वाले गौड़राज नरेन्द्र, दम्पुराज शान्तिभिन्नु तथा अश्वकी मगिनी सुरमा को जीवनदान देती है। उम तरह अनेक धार्मिक त्याग से उन्हें वश में कर लेती है।

जयमल की रानी अपने पति के अदुःख ही बीगाना राज
दूनी : अपने परिवार वाग्यिक विरहपत्र कर अपने हाथों
: क्षुण्ण प्रति है और अ

स्वयं अपने ऊपर किया। उस प्रकार रामचंद्र ने सीता का परि त्याग कर यह दिखा दिया कि प्रजा के सामने राजा और रानी का व्यक्तित्व कृठ नहीं। इसी कारण तो आज तक वे आदर्श प्रजापालक बड़े जाते हैं।

(७) चालुक्य पुलकेशिन् ने चन्द्रगुप्त का युद्ध होता होता क्यों रूक गया ?

चालुक्य पुलकेशिन् से चन्द्रगुप्त का युद्ध कभी नहीं हुआ, और न हाता होता रुका। हाँ, चालुक्य पुलकेशिन् और हर्षवर्द्धन का युद्ध होना होता रुक गया था, जिसका वर्णन राज्यश्री नाटक में आता है। जब दोनों का युद्ध प्रारंभ होने वाला था तब हर्षवर्द्धन को पता लगता है कि उसकी अनाथा विधवा बहिन राज्यश्री वहाँ उसी स्थान के आसपास मौजूद है, अतः उसका मन उसे दूढ़ने के लिए प्रिवल हो उठता है और वह युद्ध को रोक देता है।

(८) राज्यश्री और जयमल की रानी के चरित्रों का विश्लेषण करा।

अथवा

हर्षवर्द्धन और चन्द्रगुप्त के चरित्रों में किन किन अंशों में समानता है निवार कर लियो।

राज्यश्री युद्ध की सच्ची अनुयायिनी, करुणा की देवी और क्षमा का अवतार है। नाटक में जब हम पहले पहल उसका दर्शन करते हैं तब हम उसे दान में व्यस्त पाते हैं। दान के उपकरण और भिक्षु ही वहाँ उपस्थित हैं। दूर दूर से लोग उसके दान की प्रमिद्धि को सुनकर आते हैं। भिक्षुरूपधारी दस्यु शान्तिभिक्षु इसी कारण वहाँ पहुँचा था, पर क्लृपित मन के कारण राज्यश्री के रूप सौंदर्य को देखकर उसके मन में वह विकार पैदा होता है, जिसे वह प्रकट नहीं कर सकता, पर राज्यश्री यह समझती है कि उसे

का मुख उज्ज्वल किया। हर्ष को हूणों से युद्ध करना पड़ा था और चन्द्रगुप्त को प्रोक्तों (यवनों) से। दोनों इस कार्य में सफल हुए। ये दो दोनों के चरित्र में समानताएँ हैं।

(९) दौलतराम बिहारी। महापद्म-यूनाकरण। परसिंह दोहरमल। सुरमा देवगुप्त। कमला कुमारासिंह। इन पात्रों का परिचय दो धीरे धीरे भी लिखो कि ये किस किस नाटक में आते हैं।

दौलतराम-बिहारी—दौलतराम महाकजूस सेठ है, जो न रत्न पता पौना है और न अपनी पत्नी और सतान को पिलाता है। उसकी सूद की दर बहुत अधिक है। गरीब अनामियों का घर बिसबा लेना, उन्हें राह का भित्तारी बना देना आदि उसके साधारण काम है, अतएव उसके मुँह देखने को ही अपशकुन समझा जाता है।

बिहारी सेठ दौलतराम का बहनोई है, जिसकी भौत नर पुरी है। वह दौलतराम को शिक्षा देने के लिए एक नाटक रचता है। एक बड़ा भारी पड्यत्र रच कर वह दौलतराम को विश्वास दिला देता है कि दौलतराम मर गया। उसके मरने के बाद लोग रिता रुस होंगे, फजुमी से इकट्ठा हुआ उसका रुपया बिक कर वह उसके बेटे तथा दूसरे रिश्तेदार उद्धारंगे इसका नाटक घट दौलतराम को जीते जी दिखा देता है, जिससे दौलतराम की शिवा मिल जाती है। ये दोनों पात्र 'सूम के घर पूरा' नाटक में आते हैं।

महापद्मक—यूनन गण—

अधलायत नामक एक बहुत संकीर्ण विचारवाणी गगार है, जहाँ नई हवा या नये विचारों को रोपने के लिए बड़ी बड़ी दीवारें गड़बी बी गई हैं, और जहाँ लोगों की जी वाप में पाए हो जाता है और फिर उस पाप के लिए यज्ञोपवीत मन्त्रों का

हमारा पिता । वसुधरा हमारी माँ है । आन हमारा जीवन है, पवित्रता हमारा पुण्य, बलिदान हमारा कृत्य है, और दृढता हमारा धर्म है ।" क्षत्रियाणी की तरह उमे युद्ध की प्यास है । जननी जन्म भूमि की रक्षा के लिए वह पति को निछावर कर देती है, जन्म-भूमि की आन की रक्षा के लिए वह अपनी राजप्रतिष्ठा को विसार कर गायिका का रूप धारण करती है । जो गायन उसने अपन पति को मुग्ध करने के लिए सीखे थे, उन्हीं में वह मुगल-सम्राट् को रिक्ता कर उसका अत करना चाहती है, पर वह उम प्रयत्न में विफल होती है । तब वह नायक रहित सेना का स्वयं नेतृत्व करती है, और साक्षात् चडिका की तरह शत्रु-दल का सहार करती है, पर पकड़ी जाती है । इस ओर से भी विफल होने पर वह राजपूत-रमणियों के सतीधर्म की स्वीकार करने को उद्यत होती है, धीन में उसकी भावी दामाद, क्षणिक कमजोरी प्रकट करता हुआ कहता है कि समय के लिए बचा रहना राजनीति है और इस तरह चिनारोहण करने से उसे रोकता है । पर यह अपमान जनक वात सुनते ही रानी आग बबूला हो जाती है । अत में वह अग्नि पुत्री अनेक वीरागनाओं के साथ अग्नि की ही गोद में समा जाती है ।

हर्षवर्द्धन और चन्द्रगुप्त दोनों दो भिन्न भिन्न युगों को प्रतिनिधि हैं । समय-भेद के कारण दोनों के चरित्रों में पर्याप्त विभिन्नताएँ पाई जाती हैं । हर्ष बौद्ध है, चन्द्रगुप्त हिन्दू है अतएव दोनों के आदर्श विभिन्न हैं । यदि दोनों के चरित्र में कोई समानता कही जा सकती है तो वह यही कि दोनों वीर हैं । अनेक युद्धों में जयी हो कर दोनों ने बड़े-बड़े साम्राज्य बनाये । इसके अतिरिक्त दोनों ने ही विदेशी आक्रान्ताओं को नीचा दिखाकर भारत

(ग) अकबर के दरबार में कई मन्त्री तथा रत्न थे। परन्तु अकबर को इनमें सब से अधिक वीरवल पर स्नेह था। साधारण तथा वीरवल अकबर की बहुत सी गाथाएँ प्रसिद्ध हैं। उसर्ग नाटक में भी वीरवल की अन्य मन्त्रियों से उत्तमता दिखाई गई है। अपने सब सेनापतियों तथा मन्त्रियों के होत हुए भी अकबर वीरवल पर ही चित्तौड़ के घेरे का उत्तरदायित्व सौंपता है तथा हाथ जोड़कर और मित्रता के नाम पर अपील कर उसे रवीन्दार करने को कहता है। आगे भी जयमल की रानी को वादपन्न पर पहुँचाने का काम अकबर वीरवल को ही सौंपता है यही उसकी अन्य मन्त्रियों से उत्तमता का सब से बड़ा प्रमाण है।

प्रश्नपत्र ४

१ स्वयं-वासवदत्ता और विक्रमोर्गी—इन नाटकों में नाटक भाषाशास्त्र के चरित्र की गुणता पर हाके फरिषों का संक्षिप्त पालन्य था।

भयवा

पेगीसद्वार नाटक और मुद्राराक्षस इनके नाटकों में क्या था है ? हाके नायक और प्रतिनायकों के चरित्र की गुणता करो। १०

२—यह प्रश्न नाट्यशास्त्र में से है, जो अब पाठ विधि से नहीं है, अतः इसका उत्तर नहीं दिया गया।

३ (क) नायक ने र्क्ष कृष्ण को क्या शाय दिया और क्यों दिया ?

(ख) अद्विष्टावाद के वैधर्म्य शेष का विशेष विशेष ध्यान लियो। १०

४—नायक ने श्रीकृष्ण को विष्णुविष्णु शाय दिया था—कृष्ण, सुमने परस्पर राक्षसों को शैवार शैवों और ५।

(ग) अन्य मन्त्रियों से वीरवल को उत्तमता सप्रमाण सिद्ध करो । ५

(क) कवि वाल्मीकि ने लव और कुश को सीता के परित्याग से आगे की कथा दो कारणों से नहीं बताई । एक तो वे उनको उनके जन्म का घृत्तान्त न बतलाना चाहते थे । यदि वे सीता-परित्याग के आगे की कथा बता देते, तो लव-कुश को पता लग जाता कि वे ही उस निष्ठुर को सन्तान हैं । वे शायद अपने पिता पर क्रोध करते, वे जानते थे कि सूर्यवशी रामचन्द्र जैसा भ्रतापशाली और प्रजावत्सल राजा त्रैलोक्य में नहीं है । अतएव वास्तविकता का ज्ञान होने पर राम की निष्ठुरता के कारण उनकी भक्ति में शायद कमी आ जाती । दूसरा बड़ा कारण यह था कि वाल्मीकि का उद्देश्य किसी प्रकार कुश और लव को रामचन्द्र द्वारा स्वीकृत कराना और उन्हें उनका अधिकार दिलाना तथा सीता का पति से पुनर्मिलन कराना था । ऐसे समय यदि वे कुश लव के मुँह से ही यह कहलाते कि वे ही सीता के पुत्र हैं, तब यह विश्वमनीय न होता, और न उसमें नाटकीय गौरव ही होता । अतएव वाल्मीकि ने कुश लव को सीता के परित्याग के आगे की कथा न बताई, बल्कि ऋषि द्वारा उस समय कहलाई, जस पर उसको सुनने के लिए उत्सुक थे ।

(ख) मगध-निवासी ब्राह्मण चणक प्रसिद्ध मौर्य-साम्राज्य के वास्तविक सत्थापक तथा अर्थशास्त्री चाणक्य का पिता था । मगध-नरेश नन्द ने अपने ब्राह्मण मंत्री शम्भार को पदच्युत करके वदीगृह में डाल दिया था । अब ब्राह्मण चणक ने उस अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई । नन्द ने उसे शम्भार का सहकारी जानकर राज्य से निर्वासित कर दिया, तथा उसका ब्रह्मस्व गौड़-विहार को दे दिया ।

उसकी भी एक वर्ष के भीतर मृत्यु हो गई। पति, समुद्र और पुत्र की मृत्यु ने अहिल्याबाई का हृदय छलनी हो गया था, पर फिर भी राज्य कार्य की उसने उपेक्षा न की। इसी समय उसका वृद्ध मंत्री गंगाधरराव अपने किसी निकट सखी को गोद लेने के लिए उसे विवश करने लगा। जब अहिल्याबाई तं न माना, तब वह राघोबा से जा मिला। दोनों ने मिलकर इन्तौर की आर प्रयाण किया। अहिल्याबाई ने भौमिला से सहायता प्राप्त की तथा स्वयं रण-वेप धारण कर सेना के साथ आगे बढ़ी। उसको युद्ध के लिए तैयार देखकर राघोबा डर गया और उसने मन्थि कर ली।

अकेली अहिल्याबाई को राज्य पर देख कर चोर और डाकूओं ने प्रजा को सताना प्रारम्भ किया। तब अहिल्याबाई ने घोषणा की कि जो कोई नवयुवक चोर-डाकूओं को भगा कर राज्य में शान्ति स्थापित कर देगा, उससे मैं अपनी एक मात्र कन्या का विवाह कर दूंगी। यह सुन यशवन्त राव फाणसे नामक मराठा नरयुद्ध ने इस काम का बीजा डठाया और दो वर्ष के भीतर ही उसने चोर कुटेरों को इन्तौर में जड़ ही काट दी। प्रतिज्ञानुसार अहिल्याबाई ने उसे अपनी कन्या भोंप दी। इसके अनिश्चित बंगी भीनों के रदन मदन तथा आजीविका का प्रबन्ध कर देवी अहिल्या ने भीतों की उद्वेगता और उनके अत्याचार का समाप्त कर दिया।

राघोबा ने मंथि की दासता में एक बार इन्तौर पर फिर आक्रमण किया। इस बार अहिल्या ने महिलाओं का सेना तैयार कर उसका सामना किया। राघोबा के मरदरों ने म्थि पर आक्रमण किया, परन्तु राघोबा का अस्त्रिण शौर्य लौटता पड़ा।

राज्य की इन दयपर्यायों के अनिश्चित देवी अहिल्या ने

रोका, और इस तरह उनका सर्वनाश होने दिया, इसलिए हे-गोविन्द, तुम भी इसी प्रकार अपने वधु-वाधवों का नाश देखोगे। आज से छत्तीसवें वर्ष, तुम्हारे वधु, तुम्हारे अमात्य, तुम्हारे भृत्य मत्र परस्पर लड़कर नष्ट हो जाँयगे, और तुम अनाथ की तरह त्रिकुल एकान्त में बिना किसी से देखे गए मरोगे, तथा तुम्हारी स्त्रियाँ भी भरत-कुल को इन स्त्रियों के समान पुत्रों और वधु-वाधवों के नाश से व्याकुल हो भूमि पर गिरेंगी।

ग धारी ने यह शाप कृष्ण को इसलिए दिया था क्योंकि वह रामकृष्ण थी कि क्रोध में आकर जब कौरव और पांडव एक दूसरे का विनाश कर रहे थे, तब कृष्ण ही ऐसे व्यक्ति थे, जो शक्त थे, समर्थ थे, और चलपूर्वक दोनों पक्षों को युद्ध से रोक सकते थे। इनके पर भी कृष्ण ने युद्ध को नहीं रोका और कौरवों का सर्वनाश होने दिया, यह उसका बड़ा भारी अपराध था।

(ख) पति की मृत्यु के बाद विधवा अहिल्या पति के शव के साथ ही सती होना चाहती थी, परन्तु उसके वृद्ध ससुर मल्हारराव ने विलस-विलख कर उसे रोका और विधवा अहिल्यावाई के कंधों पर राज्य के आंतरिक कार्यों का भार डाल उसने स्वयं सेना के साथ बाहर ही रहना प्रारंभ किया। घर में रह कर अहिल्यावाई ही वार्षिक कर लेती, आय-व्यय का लेखा देखती और उसे जाँचती थी। थोड़े दिन बाद मल्हारराव ने राजकीय कार्य के संपूर्ण कागज पत्र देवी अहिल्या के नाम कर दिये और पेशवा को भी सूचित कर दिया।

उत्तरी भारत की ओर आक्रमण के लिए प्रस्थान करते हुए मल्हारराव का दुर्भाग्य से रास्ते में ही देहान्त हो गया। अब अहिल्यावाई के पुत्र मालोराव को गद्दी पर बैठाया गया, पर

जो धुलोक से ऊपर है, जो पृथिवी से नीचे है, जो इस धुलोक और पृथिवी के बीच में है जिसको भूत, वर्तमान और भविष्यन् रहते हैं, वह किस में ओतप्रोत हैं। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—आकाश में। गार्गी ने फिर पूछा आकाश किस में ओतप्रोत है? याज्ञवल्क्य बोले—आकाश उस अक्षर में ओतप्रोत है, जिसका न आकार है, न रूप है, न रंग है, न गंध है, न इंद्रिय है। जो अनादि है, अविनाशी है, जिसकी आज्ञा में सूर्य और चंद्र नियमित रूप से चलते हैं। जिसकी आज्ञा में दिन, रात महीना, ऋतु आदि होती हैं। जो स्वयं दिखाई नहीं देता पर जो सारे ससार को देखता है। जो जाना नहीं जाता पर जो सारे ससार को जानता है, उसी अक्षर में यह आकाश कपडे में सूत की तरह ओतप्रोत है।

गार्गी के पिता का नाम वचकतु था, था वह याज्ञवल्क्य को कहलाती थी।

५ निम्नलिखित पद्यों के आधार पर दुर्गावती और चण्डीकी की तुलनात्मक घटनाएँ लिखो —

(क) धन्य सती दुर्गावती गरुगण्ड की भाव ।

रगा गोंदयाने तुर्गे नदग घर्मे की भाव ॥

(ख) मुगलन पं शरटी मनो रणसिद्धि तपि गीद ।

अरुपर मर मर्दा त्रियो धनि मुल्लाना चांदि ॥

दुर्गावती और चण्डीकी दोनों ही भारतीय इतिहास के उदात्त नक्षत्र हैं। दोनों को ही अपने अपने पति की मृत्यु के बदला के लिए राम का शासन-भंग रूपों द्वारा में लेना पड़ा। दोनों ही ने इस शासन भार को कुशलता तथा सफलता से निभाया। दोनों ही ने पराधीनता स्वीकार करने या दगते करते मृत्यु को पसन्द किया

तीर्थ स्थानों पर मन्दिर, घाट, धर्मशालाएँ बनवाईं। परन्तु विधाता उम पर चोट पर चोट कर उसकी परीक्षा ले रहा था। उसके नाती तथा दामाद की मृत्यु हो गई, उसकी इकलौती बेटी अपने पति के शव के साथ सती हो गई। इस तरह दुःखों से जर्जर होते हुए भी ३० वर्ष तक शान्ति से शासन कर सन् १७५५ में वह स्वर्ग सिधार गई।

३. चाणक्य ने राक्षस को वश में करने के लिये क्या क्या प्रयत्न किये, और वह कैसे सफल हुआ ? क्या राक्षस ने भी उनका कोई उचित प्रतिकार किया था, फिर विफल क्यों रहा ?

यह प्रश्न नाट्यसुधा में से है, जो अब कोर्स में नहीं है, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

४. गार्गी ने याज्ञवल्क्य से क्या प्रश्न किये और महर्षि ने उनका क्या उत्तर दिया ? गार्गी को "वाचकवी" क्यों कहते थे अपनी भाषा में विस्तार से घणन करो।

गार्गी ने याज्ञवल्क्य से पूछा था—“भिन्न-भिन्न लोक क्रमशः किस किस लोक में ओतप्रोत हैं” महर्षि ने उत्तर दिया था कि ससार के सब पदार्थ जल में ओतप्रोत हैं, जल वायु में, वायु अंतरिक्ष लोक में, अंतरिक्ष लोक गर्भव लोक में, गर्भव लोक आदित्य लोक में, आदित्य लोक चद्र लोक में, चद्र लोक नक्षत्र-लोक में, नक्षत्र लोक देवलोक में, देवलोक इन्द्रलोक में, इन्द्रलोक प्रजापति लोक में और प्रजापति लोक ब्रह्मलोक में ओतप्रोत है। तब गार्गी ने प्रश्न किया कि ब्रह्मलोक किस लोक में ओतप्रोत है। इस पर महर्षि बोले—गार्गी ब्रह्म देवता में अधिक प्रश्न नहीं हो सकता, यह समाधि से जाना जाता है। यह सुन गार्गी गभीर विचार में डूब गई। पर कुछ देर के बाद गार्गी ने फिर दो प्रश्न किये।

कर उसने उसी समय वहाँ दीवार चिनवा ली। इस बीच में उसने किले की सब तोपों को उतार कर दिया जिससे असन्ध मुगल-सेना मारी गयी, मुराद यह समझ गया कि अहमदनगर को जीतना लोहे का चना चवाना है। वह जुरी तरह अपमानित हुआ। एक स्त्री ने उसे हरा दिया।

अकबर ने अपने दूसरे पुत्र दानियल को दुबारा अहमदनगर को जीतने का प्रयत्न करने को भेजा। सुलताना के पास सेना कम थी, पर उसने निश्चय किया था कि वह लड़ते-लड़ते प्राण दे देगी पर अहमदनगर को न छोड़ेगी और न आत्मसमर्पण करेगी। मुगल-सेना घटती चली आ रही थी। उसने अपने तोपखाने के अध्यक्ष हामिदगो को मलाह के लिए बुलाया। बातचीत करते करते उस विश्वासघाती न सुलताना की छाती में कटारी भोक ली। बदादुर सुलताना वहाँ गिर पड़ी। उसके न रहने पर अहमदनगर अकबर के हाथ आया, पर जहाँ जहाँ उस मिहनी ने अकबर के मूँह को मर्दन कर अहमदनगर से मुगलों को मार भगाया था, उन्हें अहमदनगर की दह न पुनर्भोजन दिया था। सचमुच ही यह धन्य थी।

दुर्गावती और शौदवीयों इन दोनों धीमांगनाओं की पीरता की फहानियों सदा अजर अमर रहेंगी।

६ (क) जीमूतपादा ने क्या भौतिक बर्ष किया, निम्न कि वह दयावीर विख्यात हुआ ?

अपना

धीमांगना की "धादश गंगा" थी, राज के अहमदनगर में फिर दमन निर्यात क्यों किया, हम विषय पर दोनो ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

शामन की देल-रेल कर रही थी। इतने में उसे पता लगा कि उसके पिता के राज्य में गृह-रुनह मचा हुआ है और मुगल-सम्राट् अक्रर उसे अपनी साम्राज्य-लिप्सा का शिकार बनाने की सोच रहा है तथा स्वयं शाहजादा मुराद विशाल सेना के साथ अहमदनगर को पराधीन बनाने आया है। यह सुन वह रण सिंहनी अपनी बीजापुर की माँद से निकल कर अहमदनगर जा पहुँची और उसने मुराद को कहला भेजा कि यदि हमें पराधीन बनाने की इच्छा से आओगे तो जन तक हमारे सैनिकों में रक्त की बूँद रहेगी, तब तक हम तुम्हें अहमदनगर पर अधिकार न करने देंगे। उस सिंहनी के गर्जन को सुन कर मुराद ने असख्य मुगल सेना के साथ अहमदनगर को चारों ओर से घेर लिया। मुराद किले की बारूद से उडा कर भीतर घुसना चाहता था, पर कहीं से यदि किले की दीवार टूट जाती तो सुलताना स्वयं अपने मामने उसकी मरम्मत करा देती। मुराद घबरा गया। उसने नीचे ही नीचे किले के फाटक तक सुरग खुदवा कर बारूद भरवा दी और सुलताना को पुकार कर कहा कि या तो आत्म समर्पण कर दो नहीं तो कल सवेरे तक किला मिट्टी में मिल जायगा। परन्तु वह दृढ़ थी। कुशल हाथ में लेकर रानी ने स्वयं अपने दल को साथ ले रात भर खोद कर बारूद को नष्ट कर दिया। अपने महीने भर का काम इस तरह बरबाद होते देख मुराद बड़ा निराश हुआ। एक और ऐसा स्थान था जहाँ बारूद भरी गई थी, पर सुलताना को जिसका पता न लगा था। शाहजादा ने तत्क्षण उसमें आग लगाने की आज्ञा दी। बारूद के फटने से एक स्थान पर दीवार फट गई। किंतु चाँदबीबी चेहरे पर नकाब डाले हाथ में नगी तलवार ले खुद वहाँ पहुँची, और सिपाहियों को प्रोत्साहन दे

(५) प्रभो ! किस चिन्ता ने आपकी शांति का अपहरण कर लिया है ?

(६) तात ! असहिष्णुता भी हमी वीर को शोभा देती है ।

(७) उसी पूर्णचन्द्र से यह वज्राघात हुआ । १४

(१) गाधारी कृष्ण से कहती है—हे कृष्ण, समय की उलट पुलट बड़ी तलवान है, उसके पारे में कुछ नहा कहा जा सकता । मेरा नेटा दुर्योधन चार दिन पहले चक्रवर्ती समाट् था और आज क्षमीन पर गिरा पड़ा है ।

(२), (३), (६) तथा (७) नाट्यसुधा में स है अतः उदाहरण उचित नहीं दिया गया ।

(४) वीर माता विदुला युद्ध से हार कर तथा भागकर आते हुए अपने पुत्र सजय से कह रही है—अरे कुलघानक, गुन की कौर्त्ति को नष्ट करने वाले, माप के मुँह में हाथ डाल कर उमरु टाल निकालने की कोशिश करते हुए प्राण देना अच्छा है अर्थात् युद्ध में लड़ते-लड़ते मर जाना अच्छा है, पर कायर की तरह बिलसने पर पड़े-पड़े मरना अच्छा नहीं ।

(५) सीता के प्रति जनता में जो लोभायणा पैला था, उसे सुनकर रामचन्द्र जी मोच रहे थे कि क्या किया जाय ? प्रजा की प्रमत्तता के निष्ठ सीता का परिहास करना अपरिचित था, दूसरी ओर उन्हें सीता से प्रेम था । ऐसे अस्तित्व पर रामचन्द्र जी ने सलाह के लिए अपने भाइयों को पुत्रपदा । भाई भाई, पर रामचन्द्र जी तीषा मुँह करके बैठे रहे वह लक्ष्मण ने अन्तमें पूछा—राजन किस चिन्ता ने आपकी शांतिहीन कर दिया है, अर्थात् आप किस सोच में दूधे हैं ?

(ख) शकुन्तला “सर्वोत्तम नाटक” क्यों गिना जाता है? महर्षि “कण्व” ने शकुन्तला की त्रिदाई के समय उसे क्या उपदेश दिया? *

(क) नाट्यसुधा में से है जो अब पाठविधि में नहीं है अतः उत्तर नहीं दिया गया।

(अथवा)

श्री सीता जी ‘आदर्श रमणी’ थीं फिर भी राम ने लोकापवाद से उनका निर्वासन कर दिया, क्योंकि वे राजा थे, वे प्रजारजन के लिए बाध्य थे, लोकमत की अवहेलना न कर सकते थे। वे जानते थे कि जनता जिस राजा की अपकीर्ति करती है, उसका अवश्य अध पात होता है। प्रजारजन का कार्य इक्ष्वाकु-वंशियों की पैतृक सम्पत्ति थी और प्रजा की अप्रसन्नता में ही रघुवंश की अपकीर्ति थी। जिस रघुवंश की कीर्ति के लिए महाराज दशरथ ने अपने प्राण होम दिये थे, फिर उनके पुत्र उसी रघुवंश की विमल कीर्ति पर लाञ्छन किस प्रकार सह सकते। प्रजारजन के कठिन व्रत को पूर्ण करने के लिए ही रामचन्द्र ने निरपराधिनी आदर्श रमणी को अपने राज्य से निर्वासित किया था, फलतः अपने जीवन को भी चिरदुखी बना लिया था।

(ख) यह प्रश्न नाट्यसुधा में से है अतः उत्तर नहीं दिया गया।

* नीचे लिखे गद्यांशों का प्रकरण दिखाकर भाव-अर्थ स्पष्ट करो—

(१) हे मधुसूदन ! काल का विपर्यय बढ़ा बलवान है।

(२) प्रजारजन का कार्य इक्ष्वाकु-वंशियों की पैतृक सम्पत्ति है।

(३) हे सर्वदमन ! शकुन्त-लावण्य देखो।

(४) अरे कुटघातक ! सर्प के मुख में हाथ डालकर उसके दाँत निकालने के प्रयत्न में प्राण देना ध्येयस्कर है।

राजपूत वीर मारे गये, तब यह अपनी अनेक मायिनो के साथ जौहर की ज्वाला में जल गई थी। उसके बारे में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। इतिहासकार टाड पश्चिमी को सिंदलद्वीप के राजा हम्मीरसिंह चौहान की घेटी तथा चित्तौड़ के राजा भीमसिंह की पत्नी मानते हैं। कहा जाता है कि वह अत्यंत सुन्दरी थी। दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने उसकी सुदरता की कहानी सुनकर उसे पाने के लिए चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। भयकर युद्ध के बाद जब अलाउद्दीन उसे पाने में असमर्थ देखकर उसने दर्पण में उसका प्रतिबिम्ब देखकर वापिस लौट जाने का वचन दिया। राजपूतों ने यह बात मान ली। अलाउद्दीन दर्पण में पश्चिमी का प्रतिबिम्ब देखकर वापिस लौट रहा था, तब भीमसिंह उसे पहुँचाने के लिए किले के बाहर तक आए। अलाउद्दीन ने उन्हें कैद कर लिया। यह देख पश्चिमी ने भी चालाकी का उत्तर चालाकी से देना चाहा। वह सात सौ पातकियों को सजाकर सुलतान के दरबार में पहुँची, वहाँ उसने कहला भेजा कि अंतिम बार आध घंटे के लिए वह अपने पति से मिलकर उनके पास आजायगी। सुलतान ने यह मजूर कर दिया। जब भीमसिंह पश्चिमी से मिलने आए तब पातकियों में से बार राजपूत निकल आये और उनमें से कुछ भीमसिंह को तारत भाग गये, शेष वहाँ युद्ध करते हुए मारे गये। इस तरह अलाउद्दीन की हार हुई, और यह दिल्ली को लौट गया। कुछ दिन बाद उसने फिर चित्तौड़ पर आक्रमण कर हमलों स्वाहा कर दिया, तब पश्चिमी ने अपनी सगियों के साथ जौहर पा ठाठा। इस तरह विधवा सुलतान से हमने अपनी इच्छा की रक्षा की।

विदुला भी गिर गयेस की गयी थी। उसके पति की मृत्यु के
ने भीवीर मान्य पर आक्रमण कर दिया।

८ निम्नलिखित पद्यों का प्रसंग दिखाकर सरल अर्थ करो —

(क) सकल-मधुप रस-पान करि, मधुप-रसिक सिरताज ।

जो मधु त्यागत ताहिलै, होत सबै जग काज ॥

(ख) क्यों न धारिये सीस पे, वह जौहर की राख ।

भव-तनु-भूपन-भस्म ते जो पुनीत लखवार ॥

(ग) जयति जयति गिरिराज किशोरी ?

विकसित-अमल-कमल-केसर के सुचिपराग की डोरी,

है प्रसन्न मन वाञ्छित फल वेगाहि सिद्ध करोरी ।

(घ) और (ग) नाट्यसुधा में से हैं, जो अब पाठ विधि में नहीं है अत उत्तर नहीं दिया गया ।

(ख) जय चित्तौड़ पर आक्रमण कर अलाउद्दीन ने उसका सर्वनाश कर दिया था, उसके सब वीर युद्ध भूमि में लड़ते लड़ते मारे गये थे, तब अनिन्द्य सुदरी पद्मिनी तथा उसकी अनेक साथिनों ने विधर्मी शत्रुओं के हाथ से अपमानित होने से बचने के लिए जौहर की ज्वाला में अपने प्राण स्वाहा कर दिये थे। कवि उनके उस त्याग की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि जिस आग में पद्मिनी आदि वीरागनाओं ने अपने प्राण होम दिये थे जौहर की उस राख को सिर पर क्यों न धारा जाय, सिर पर क्यों न लगाया जाय, क्योंकि वह राख शिव के शरीर पर मली गई भस्म से भी लाखों गुणा अधिक पवित्र है ।

९ निम्नलिखित व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय दो —

पद्मिनी, विट्ठला, अश्वत्थामा, चन्दनदास और कण्व ।

पद्मिनी चित्तौड़ के राजा रत्नसेन की रानी थी । दिल्ली के सुतावान अलाउद्दीन ने जब चित्तौड़ को ध्वंस कर दिया और सब

योग्य सेनापति है। उसे युद्ध-शला से किमी तरफ का परिचय न था, पर अरकाट की लड़ाई में उसने जो डग अपनाये, युद्ध विगा के आचार्यों को भी शायद वही डग अपनाने पड़ते। उस युद्ध में अगरेजों का उद्देश्य पूरा हो गया, और फ्रांसीसियों के हाथ में जो कूट था, वह भी निकल गया। इसके बाद छात्रवृत्त उगल्लेट वापस चला गया था। १७५६ में जब वह फिर वापस आया तब बगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अगरेजों की लड़ाई चल रही थी। आते ही उसने अपने साथी ज़ादमन को मिलाकर थोड़ी सी सेना के साथ कलकत्ते की ओर कूच कर दिया, और बहुत मांगूली युद्ध के बाद कलकत्ते पर अधिकार कर लिया और हफ्त भर बाद हुगली भी ले लिया। इस पर सिराजुद्दौला का अगरेजों के साथ संधि करने की पट्टी, पर उसी घड़ी वह संधि टूट गई। फलस्वरूप प्लासी के मैदान में फिर युद्ध हुआ। इस युद्ध में भी छात्रवृत्त ने विजय पाई। इसमें उसकी प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई। उगल्लेट के महामंत्री पिट ने उसे देवी सेनापति की उपाधि दी। सिराजुद्दौला को उतार कर मार जाफर को बगाल का नवाब बनाया गया, पर मारी शक्ति छात्रवृत्त के हाथ में आ गई। अगरेजों को २४ परगना नाम के क्षेत्र में इलाके पर जमींदारी का अधिकार मिला गया। इस प्रकार इन विजयों से भारत में अगरेजी राज्य की नींव पड़ गई।

इसके बाद छात्रवृत्त के समय में ही ब्राह्मणों के मैदान में अगरेजों और फ्रांसीसियों की ताकत का फैलाव होगा और फ्रांसीसियों की शक्ति प्रायः समाप्त हो गई। अगरेजों के हाथ में होने के कारण छात्रवृत्त फिर उगल्लेट लौट गया। इस समय नवाबों का ताकत तो मारी गई था, पर फ्रांस के जमींदारी शासन की नींव में भाग न ले सके थे। इस प्रकार फ्रांस और अगरेजों के बीच

विदुला का पुत्र सजय युद्ध में पीठ दिखाकर लौट आया। इस पर उस वीर माता ने अपने पुत्र की बहुत भर्त्सना की। उसे बहुत बुरा भला कहा, तथा युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया। माता के तीव्र वाक्य वाणों से उत्साहित हो सजय ने फिर युद्ध किया, और विजयी हुआ।

अश्वत्थामा, चन्दनदास और कण्व का वर्णन नाट्यसुधा में है, जो अब कोर्स में नहीं है, अतः इनका परिचय नहीं दिया गया। भारतीय महिला में एक स्थान पर अश्वत्थामा का नाम आया है। वहाँ केवल इतना लिखा है कि महाभारत युद्ध में वचे हुए तीन कौरव वीरों में वह एक था।

प्रश्नपत्र ५वाँ

१. डाइव की जीवनी पर एक नोट लिखो और यह बताओ कि अमीचंद का उसके साथ क्या सम्बन्ध था? १२

डाइव भारत में अगरेजी राज्य का संस्थापक कहा जाता है वह सन् १७४४ में ईस्टइंडिया कंपनी के लेखक के रूप में आया था। पर शीघ्र ही उसने कलाम रचकर

में जब अगरेज और फ्रांसीसी पड़कर अपना अपना स्वार्थ सिद्ध कर जड़ काट रहे थे, उस समय अंग्रेजों की डाइव को दिया जाता है जिसने को जीत में तथा फ्रांसीसियों को जीत ।। कर्नाटक की दूसरी लड़ाई में यह

निया गया। चेतनिह एक रिड़की के रास्ते अपन महल से बाहर निकल भागा और ग्वालियर की ओर चला गया। चेतनिह का राज्य छीन लिया गया और उसको जगह उसका भतीजा राजा बनाया गया।

राजा राममोहन राय—ये बंगाल के रहने वाले थे। बीसवीं शताब्दी के ये बड़े प्रसिद्ध समाज-सुधारक माने जाते हैं। इन्होंने इंग्लैंड में जाकर उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की। पाश्चात्य सभ्यता के ये बड़े प्रेमी थे। इन्होंने ब्रह्म समाज की नींव डाली। बंगाल में स्त्री पुरुषों में पाश्चात्य शिक्षा फैलाने मती प्रथा बन्द करान तथा और अनेक सुधारों में इन्होंने बड़ा भाग लिया।

रौलट ऐक्ट—यूरोपीय महाभारत के समय भारत का अधिकार देन की बड़ी बड़ी घोषणाएँ की गई थी। पर युद्ध की समाप्ति पर भी भारतीय शासन में कोई बड़ा परिवर्तन होने न देखकर स्वतंत्रता प्रेमी भारतीय उद्विग्न हो उठे। कई स्थानों में स्वतंत्रता प्रेमी नवयुवकों ने हिंसात्मक पथ को भी अपनाया। इन आक्रमणों को रोकने के लिए भारत सरकार ने मि० रौलट की अधीनता में एक कमिटी बैठाई और इसकी गिवांरिशात प्राधार पर सरकार ने रौलट ऐक्ट नामक कानून पारित किया, जिस के द्वारा सरकार को इन पंडितों को दखान के लिए अमीरिता शक्ति प्राप्त हो गई। समस्त भारतीय साक्षमता के विरोध करत और नेताओं की मन्त्र आलोचनाओं पर भी यह कानून धारित करी लिया गया। इस रौलट ऐक्ट का विरोध करने के लिए महात्मा गांधी ने सान्निमय और अहिंसात्मक मार्ग अपनाया और भारत में १३ अप्रैल १९३१ का स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस दिन देश भर में पूर्ण हड़ताल होती थी।

को केवल अपने धर्म, जन्मस्थान, वर्ण या जाति के कारण कम्पनी के किसी भी पद से वंचित नहीं रखा जायगा यह विधान बनाया गया ।

सती—बहुत दिन से यह प्रथा चली आ रही थी कि हिन्दू विधवाएँ अपने मृत पति के शव के साथ चिता में जल मरती थीं । अधिकांश अवसरों पर वे खुद प्राण त्यागने को तत्पर नहीं होती थीं, परन्तु उनके कुटुम्बों उन्हें पति के शव के साथ जल मरने को बाधित करते थे । लार्ड विलियम बैंटिक ने सन् १८२९ में एक कानून बनाया जिसके अनुसार इस सती प्रथा को गैर कानूनी ठहराया गया और घोषणा कर दी गई कि जो पुरुष इसमें सहायता देंगे, वे कानून की निगाह में हत्या के अपराधी समझे जायेंगे ।

चेतसिंह—चेतसिंह बनारस का राजा था । वह पहले अवध के अधीन था, किन्तु सन् १७७५ में उसने कम्पनी की प्रभुता स्वीकार कर ली थी । वह कम्पनी को साठे बाईस लाख रुपया सालाना कर दिया करता था । सन् १७७८ ई० में जब अंगरेजों और फ्रांसीसियों में लड़ाई हुई तब हेस्टिंग्स ने उस से कर के अलावा ५ लाख रुपया और २ हजार सवार माँगे । चेतसिंह ने रुपया दे दिया । सन् १७८० ई० में फिर उससे रुपया माँगा गया । तब उसने २ लाख रुपया हेस्टिंग्स को भेंट किया । तीसरी बार चेतसिंह से फिर रुपया माँगा गया, किन्तु इस बार उसने देने में आनाकानी की और उसे देने में देर हुई । इस पर हेस्टिंग्स ने उस पर ५० लाख रुपया जुर्माना किया और उसे वसूल करने के लिये स्वयं बनारस गया । वहाँ जाकर उसने राजा को पकड़ने की चेष्टा की, जिससे मारे नगर में विद्रोह फैल गया । गवर्नर जनरल को भागकर चुनार में शरण लेनी पड़ी । पर शीघ्र ही विद्रोह दबा

तो राज्य में शीघ्रता आने लगी। इसके विपरीत मराठा साम्राज्य का जिन अंगरेज प्रतिद्वन्द्वियों से पाता पड़ा वे राजनीतिक जोड़ तोड़ में सिद्ध हस्त थे और उनकी नीति तथा उनका साम्राज्य व्यक्तियों पर आश्रित न था।

४ रथायी इन्दोयर्स पर एक नोट लिखो और यह बताओ कि इससे प्रजा को क्या लाभ और हानि हुई ? 12

भारत के शासकों की आय का मुख्य भाग सदा से रगता पर रहा है। जब अंगरेजों को पहले पहल रगता, बिहार और मीना की दीवानी मिली तो लगान उसी तरह वसूला किया जाता था जैसे कि मुगलों के जमाने में। हर साल दरबार कर के लगान का निश्चय किया जाता था। परन्तु हर साल लगान का निश्चय करना बड़ा कठिन था। अतएव जब वारेनहेस्टिंग ने शासन भार अपने ऊपर लिया तब उसने पाँच साल के लिए रगता निश्चित करना शुरू किया। परन्तु उसमें यह होता था कि लोगों के वक्त लोग बढ़ बढ़कर बोली दे देते थे और पीछे दे न मरते थे।

अत यह प्रथा बढ़ाकर फिर साताना लगान निश्चित करने की प्रथा चली। परन्तु कंपनी इस प्रथा को पसन्द न करती थी, क्योंकि इस में आप में कोई निश्चितता न रहती थी। अत जब लार्ड कार्नवालिस गवर्नर बनला हुआ, तब उसे कंपनी की ओर से लगान को हमेशा के लिए निश्चित करने के लिये कहा गया। उसने कई सालों की लगान की रकम देखी और एक मात्र एक भौगत विज्ञानी। यही औसत रकम अब ग्यायों और पर रगता की रकम निश्चित कर ली गई और मुगलों के जमाने में जो शक्ति रगान समूह करते थे, उन्हें ही जमींदारों का जमीन का रकम पर वामें रगान का बढ़ रकम होने का कारण निश्चित

यह थी कि उमने पेशवा का पद बाजीराव के वंश को दे दिया। इससे वशानुगत क्रम से अबोध शिशु भी पेशवा या प्रधान मंत्री होने लगे।

राज्य के विस्तार के साथ साथ केन्द्रीय शक्ति को अधिक प्रबल होना चाहिए था। उसके विपरीत महाराष्ट्र-सरदारों पर नियंत्रण करने वाली केन्द्रीय शक्ति तो कमजोर होती गई और सरदारों की ताकत बढ़ती गई। होलकर, सिंधिया, गायकवाड आदि सरदारों ने अपने बड़े बड़े राज्य बना लिये। ये सरदार आपस में प्रतिस्पर्धा कर जहाँ एक दूसरे से लड़ने लगे, वहाँ अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए तथा धन पाने के लिए आस पाम छूट मार भी करते थे, जिससे उनकी अप्रियता बढ़ती जा रही थी।

इधर पेशवापद के वशानुगत हो जाने के कारण उसके लिए भी वैसी ही लड़ाई होने लगी जैसी राज्य-पद के लिए होती थी। पेशवा बनने के उम्मेदवार कभी कभी ऐसी सधियाँ करते थे जो साम्राज्य के लिए घातक होती थीं। शिवाजी ने जो जहाजी बेड़ा बनवाया उसका विक्राम न हुआ, चलटा अगरेजों की सहायता लेकर उसका नाश किया गया। अतः समुद्र तट का शासन अगरेजों के हाथ में चला गया। राघोबा और बाजीराव ने इसके अतिरिक्त अगरेजों को अपने गृह कलह में घसीटा। इस गृह कलह में व्यस्त रहने के कारण उनके राज्य के बाहर क्या हो रहा है, इस ओर भी वे ध्यान न दे सके।

दूसरा कारण मरहटा राज्य का व्यक्तियों पर आश्रित होना था। जब कभी नाना फडनवीस जैसे राजनीतिज्ञ अथवा महादजी सिंधिया जैसे कुशल सेनापति के हाथ में राज्यभार आया तब तो चमकी ताकत बढ़ती गई, पर जब उत्तरदायी पुरुष निकम्मा हुआ

प्रथमा

हाट करजन के शासन काल का वृत्तान्त लिखो ।

१२

महाराजा रणजीतसिंह का जन्म सन् १७८० में हुआ । ये शारद वर्ष की उम्र में ही अपने पिता की छोटी-सी जागीर के माणिक बनाये गये । अब्दाली के पुत्र जमानशाह का ध्यान इनकी ओर खिंचा । उसने सोलह वर्ष की आयु में इन्हें लाहौर का सूबेदार बना दिया । तीन वर्ष के भीतर ही ये आजाद हो गये । उधर अफगानों में घरेलू युद्ध हो रहे थे, उन्हें इनकी ओर ध्यान देने का ज़रूरत न था । रणजीतसिंह ने ३०,००० सिपाहियों की एक पटियासी सेना यूरोपियन ढंग पर तैयार की और उसकी सदायता से अपना राज्य सतलुज तक बढ़ा लिया ।

शुद्ध समय तक सतलुज इनके राज्य की सीमा रही । कुछ मिक्षर सरदारों में, जिन्हें सतलुज और चमुना के बीच में जागिरें मिली हुई थीं, आपस में झगड़ा हो गया और उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह में फैमला करने की पट्टा । इस पर इनके विरोधियों ने ब्रिटिश सरकार से सहायता की । सन् १८०६ में अंग्रेजों ने पंजाब में भेजा गया । बहुत कुछ धार विचारों के बाद १८०६ में अंग्रेजों ने एक मुन्हाणागा तैयार किया गया, जिसमें अंग्रेजों ने सतलुज नदी की निचली के राज्य की सीमा मान लिया गया ।

महाराजा रणजीतसिंह एक विलक्षण पुरुष थे, वे अपने सिने न पर राज्य का कार्य करने में बड़े हुशार थे । इन्होंने अपने दरणशक्ति केमो की थी कि ये किसी बात को करने में न

रणजीतसिंह ने पेशावर शरणागति के लिए पर भी स्वयं सतलुज नदी और काश्मिर के पेशावर की भी जीता दिखाने लिए

हुआ। जमींदारों को किसानों से कर वसूल कर उतनी निश्चित रकम कंपनी को अवश्य भेजनी होती थी।

इस नये बन्दोबस्त के अनुसार यह निश्चित किया गया कि चाहे फसल हो या न हो, तूफान आये या सारे वर्ष वर्षा न हो गवर्नमेन्ट प्रत्येक दशा में उन जमींदारों से उतनी रकम लगान की वसूल कर लेगी। क्योंकि बंगाल के लिए यह बन्दोबस्त हमेशा के लिए हो गया अतएव इसे इस्तमरारी (स्थायी) बन्दोबस्त कहते हैं।

इससे जमींदारों को यह लाभ हुआ कि भविष्य के लिए चाहे वह जमीन की उपज की कितनी भी वृद्धि करें पर उन्हें वही रकम सरकार को देनी पड़ेगी, जो एक बार निश्चित हो गई है। इससे वे हमेशा की अनिश्चितता से बच गये और जमीन पर अपनत्व अनुभव करने लगे।

परन्तु जमीन के काश्त करने वाले जमीन के असली मालिकों को इससे सब से अधिक हानि हुई। एक कलम के प्रहार से वे जमीन के मालिक से किरायेदार या काश्तकार हो गये और जो कुछ काम न करने वाले थे वे जमीन के मालिक बन बैठे। पीछे इन जमींदारों ने काश्तकारों पर बहुत अत्याचार करना प्रारम्भ किया। उनको रोकने के लिए यद्यपि पीछे कई कानून बनाये गये पर वे अत्याचार रुक न सके।

इसके अतिरिक्त सन् १७९३ के बाद सरकार का खर्च तो बहुत बढ़ गया है, पर जमींदारों का लगान बढ़ नहीं सकता फलतः खर्च पूरा करने के लिए प्रजा पर अन्य टैक्स लगाए गए।

५ महाराजा रणजीतसिंह का जीवन लिखो और उनके शासनकाल में सिक्खों की शक्ति वर्णन करो।

अथवा

काट करजन के शामन काल का वृत्तान्त लिखो ।

१२

महाराजा रणजीतसिंह का जन्म सन् १७८० में हुआ। ये बारह वर्ष की उम्र में ही अपने पिता की छोटी-सी जागीर के मालिक बनाये गये। अन्दाली के पुत्र जमानशाह का ध्यान इनकी ओर खिंचा। उसने सोलह वर्ष की आयु में इन्हें लाहौर का सूबेदार बना दिया। तीन वर्ष के भीतर ही ये आजाद हो गये। उधर अरुगानों में घरेलू युद्ध हो रहे थे, उन्हें इनकी ओर ध्यान देने का जवसर न था। रणजीतसिंह ने ३०,००० सिपाहियों की एक बटिया सी सेना यूरोपियन ढंग पर तैयार की और उसकी सहायता से अपना राज्य सतलुज तक बढ़ा लिया।

बहुत समय तक सतलुज इनके राज्य की सीमा रही। कुछ सिक्ख सरदारों में, जिन्हें सतलुज और यमुना के बीच में जागिरें मिली हुई थीं, आपस में झगडा हो गया और उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह से फैसला करने को कहा। इस पर इन्होंने ब्रिटीश सरकार से अपील की। समझौते के लिए मैटकाफ को पजाय में भेजा गया। बहुत कुछ याद-दिया के पाए सन् १८०६ में अमृतसर में एक सुलहनामा तैयार किया गया, जिसके अनुसार सतलुज नदी को सिक्खों के राज्य की सीमा मान लिया गया।

महाराजा रणजीतसिंह एक विनम्र पुत्र थे, वे पढ़े-लिखे न थे, पर राज्य का कार्य करने में बड़े रुचान थे। ईश्वर ने उन्हें स्मरणशक्ति ऐसी दी थी कि वे किसी बात को भूलने न थे।

रणजीतसिंह ने पेशावर कारगोर आदि पर भी स्वयं हाथ मारया और पायुन के बान्शाह को भी जीता दिलाया।

से उनको कोहनूर हीरा प्राप्त हुआ । रणजीतसिंह के व्यक्तित्व के कारण सिक्खों की शक्ति बहुत बढ़ गई । पंजाब, काश्मीर, हजारा, पेशावर, डेराजात सब सिक्खों के राज्य में सम्मिलित थे ।

महाराज रणजीतसिंह बड़े प्रबल और कूटनीतिज्ञ शासक थे । जब तक वे जीवित रहे, तब तक उनके विरुद्ध सिर उठाने का किसी को साहस न हुआ था । सन् १८३६ के जून मास में उनकी मृत्यु हुई ।

अथवा

लार्ड कर्जन सन् १८५९ में भारत का वायसराय बन कर आया । उसने सीमान्तप्रदेश विषयक नीति में पर्याप्त सलभता दिखाई । सारे सीमान्तप्रदेशों से ब्रिटिश सेना हटा कर उसकी जगह उन्हीं प्रदेशों के निवासियों को ब्रिटिश अफसरों के नीचे नियुक्त किया । सिंध नदी के आस-पास के पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेश को एक नया सूबा बनाया और उसे पंजाब से अलग कर दिया । उसके शासन की जिम्मेवारी एक चीफ कमिश्नर पर रख दी । इस प्रकार इस पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त का भारत सरकार से सीधा सम्बन्ध हो गया ।

सन् १६०१ में अफगानिस्तान का अमीर अब्दुरहमान मर गया । उसकी जगह उसका बड़ा बेटा हवीबुल्ला नया शासक हुआ । इस नये शासक के साथ भी अंग्रेजी साम्राज्य की मैत्री स्थापित की गई ।

उन दिनों तिब्बत और रूस में मित्रता स्थापित हो रही थी जिस से अंगरेजों को डर था । अतएव तिब्बत में फौज भेजकर वहाँ के राजा को रूस से संधि तोड़ने के लिए बाध्य किया गया ।

कर्जन के शासन काल में सन् १६०० में भयानक अकाल पड़ा और १९०४ में जनमहारी प्लेग भी फैला ।

२२ जनवरी १९०१ में महागनी रिक्टागिया की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड सप्तम गद्दी पर बैठा। उसके उपलक्ष्य में दिल्ली में एक महान दर्शन किया गया।

लार्ड कर्जन ने कई शासन सुधार किये, जिनमें पंजाब का भूमि रक्षा कानून विशेष उल्लेखनीय है। इस नियम के अनुसार कंटे भी मातृकार कर्ज में किसी किसान की भूमि नहीं ले सकता। इसके अनिश्चित उमरने खेती की उन्नति के लिए महारथ पूँजी समितियों स्थापित कीं और भूमि कर सवारी बहुत से सुधार किये। यूनाइटेड शिक्षा में भी लार्ड कर्जन ने पर्याप्त सुधार किये तथा प्राचीन स्मारक रक्षा कानून पास किया, जिसमें प्राचीन इमारतों और शिलालेखों की रक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाना लगा। माधुसूदन सेना और पुनर्निर्माण में भी सुधार किया। व्यापार और कला संरक्षण की रणनीति भी लार्ड कर्जन का ध्यान था, और उनकी उन्नति के लिए नया विचार प्रयोग किया गया। इनके अनिश्चित नमक पर आधा कर दिया गया।

लार्ड कर्जन का अवधि मन् १६०१ का अप्रैल में समाप्त होती थी। परन्तु उसकी अवधि का कार्य के लिए और बढाये गये। इस अवधि में सबसे मुख्य घटना बंग-विद्रोह की है। लार्ड कर्जन ने १६०५ में बंगाल के टुकड़े कर दिये। पूर्वीय बंगाल तथा असम को मिलाकर एक नया प्रान्त बनाया। इसकी राजधानी कोलकाता थी। इस में प्रबल राजनीतिक आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। बंगालियों में एक नया राष्ट्रीय जागरण पैदा हो गई। बर्दा कान्निशाम शर्मा की स्थापना का यही प्रमुख कारण था।

वत्सालीन बंगाली इन्धुसाल लार्ड रिक्टाग से सैनिक प्रथम के संघर्ष में मृतभेद होने के कारण दूसरी अवधि पूरी होने में परते हैं। लार्ड कर्जन इसी कारण भारत में विख्यात हुए।

वर्तमान काल में इस भाषा में किसी दो एक सुकवियों के सक्षिप्त वृत्तान्त लिखो ।

दिल्ली तथा मेरठ के आस पास जो भाषा या बोली बोली जाती है, वह खड़ी बोली कहलाती है । इसके प्रमुख कवियों में मैथिलीशरण गुप्त तथा सुमित्रानन्दन पंत का नाम उल्लेखनीय है । उनका सक्षिप्त वृत्तान्त आगे दिया जाता है ।

मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म स० १६४३ में चिरगाँव, झाँसी में हुआ । उनके पिता मेठ श्रीरामचरण जी कविता के बड़े प्रेमी थे और स्वयं भी अच्छे कवि थे । ये पाँच भाई हैं, जिनमें सियाराम-शरण गुप्त भी प्रतिभाशाली कवि हैं ।

वर्तमान हिन्दी के कवियों में इनका नाम सब से अधिक प्रसिद्ध है । खड़ी बोली में जितना इनकी कविता का आदर हुआ है, जितनी इनकी रचनाएँ सर्व-प्रिय हुई हैं, उतनी अन्य किसी कवि की नहीं हुई । इनकी कविता सरस तथा मनोहारी होती है और दिन-प्रति-दिन वह और अधिक उत्कृष्ट होती जाती है । उसमें कूट कूट कर देश प्रेम भरा रहता है । कविता की भाषा सरल, व्याकरण-सम्मत और विशुद्ध होती है । इनकी लिखी पुस्तकों के नाम ये हैं—

भारत भारती, जयद्रथ-वध, रंग में भग, किसान, शकुन्तला, विरहिणी-त्रजाङ्गना, चन्द्रहास, तिलोत्तमा, पलासी का युद्ध, पचवटी, मेघनाद-वध, स्वदेश सगीत, त्रिपथगा, वीराङ्गना, शक्ति, गुरुकुल, हिन्दू, यशोधरा, साकेत, द्वापर, सिद्धराज ।

साकेत पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' भी मिला है ।

सुमित्रानन्दन पंत—पंत जी का जन्म संवत् १९५७ में कैसाजी जिला अल्मोड़ा में हुआ । अभी दस-पंद्रह वर्ष से ही इन्होंने कविता लिखनी प्रारम्भ की है । पर इतने काल में ही इनकी गणना

हिन्दी कविता के नये युग-प्रवर्तक कवियों में की जाने लगी है। छायावादी कवियों में ये प्रमुख हैं। इनकी कविता भावपूर्ण और रहस्यमयी होती है। युवक-समाज में इनका बड़ा आदर है। ये कविता के विषय प्रायः प्रकृति में ही पाते हैं। उनकी पहचान यौगल, सुखन, प्रणय, इत्यादि कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

८ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का गृहान्तर्गत और यह पाठोक्ति उसने हिन्दी साहित्य में क्या परिवर्तन किया? 12

भारतेन्दु का जन्म ७ सितम्बर सन् १८५० को काशी के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोपालचन्द्र था, वे भी हिन्दी के अच्छे कवि थे।

भारतेन्दु अभी नौ वर्ष के ही थे कि इनके पिता का वसान्त हो गया। इसलिए ये बचपन में ही लातों की सम्पत्ति का अधिकारी हो गये। इन्होंने उस धन को लोह-सेवा और माहित्य-सेवा के कार्य में ही खर्च किया है। चौगुला में इन्होंने एक 'प्रगरेडी' शुरू करवाया था। १२ वर्ष तक उसका खर्च वे ही बटाते रहे। यह भाग्य भी 'हरिश्चन्द्र हार्डवूट' के नाम से इनका बर्तन बटा रहा है। इसके विषय इन्होंने 'कवि बचन सुधा' और 'हरिश्चन्द्र मैगशीन नाम से दो पत्रिकाएँ भी निकाली थीं। हिन्दी और उर्दू के तुर्भाष्य से ६ जनवरी १८८५ को यह भारतेन्दु सारा के लिए अलग हो गया।

कुल २५ वर्ष के छोटे से जीवन में इन्होंने छह बड़े बड़े पत्रिकाएँ चलायीं। इनमें से अधिकांश नाटक और काव्य-ग्रन्थ हैं। इनकी इस माहिती से सबकी देखा-देखी हिन्दी समाज ने इन्हें 'भारतेन्दु' की पदवी देकर श्रद्धा-विन्दन किया, तथा

प्राप्त किए यो ही रह जाना । हम मवेरे रोज़ हवा खाने जाते हैं । वक्त पर तो आये नहीं, अब जाओ हवा खाओ ।

सिर घाना—घातें पूछ पूछ कर तग कर देना । क्यों फिजूल सिर खा रहा है, जाकर अपना काम कर ।

धक्के खाना—मारा मारा फिरना । जब अवस्था थी तो पढा नहीं, माँ बाप चीखते रहे, पर उनकी कुछ सुनी नहीं, अब बच्चा दर दर धक्के खाता फिरता है ।

अँगूठा दिखाना—कोई चीज़ देने से तिररकार के साथ इन्कार करना । अजीब आदमी हो, कल कहते थे किताय ले जाना, आज अँगूठा दिखाते हो ।

नीचा दिखाना—हराना, घमड तोड़ना । क्यों बच्चा, कैसा नीचा दिखाया, चले थे हम से ही ऐंठने ।

पीठ दिखाना—लडाई में भाग जाना । राजपूत रणभूमि में पीठ नहीं दिग्वाते, जान भले ही चली जाय ।

आँपें दिखाना—क्रोध से घूरना । जात्रो जात्रो, किसी और को आँपें दिखाना, यहाँ ऐसे कोई डरने वाला नहीं है ।

भख मारना—व्यर्थ समय गँवाना, विवश होना । आप सवेरे से यहाँ बैठे क्यों भख मार रहे हैं । वह करेगा क्यों नहीं, अपने आप भख मारकर करेगा ।

गोली मारना—तुच्छ समझकर छोड़ देना । गोली मारें ऐसी नौकरी पर, जिसमें हर एक के जूते चाटने पडे ।

छान मारना—अच्छो तग्ह ढूँढना । मैं ने सारा शहर छान मारा, पर इस नाम की कोई कंपनी नहीं मिली ।

पलक मारना—इशारा करना, लाला जी तो रुपये दे रहे थे, पर मुनीम ने पलक मार दी ।

२ नीचे लिखे मुहावरों का भावार्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो —

जूता चाटना, ईट से ईट घनाना, हथेली पर सरसों जमाना, नाक रख लेना, लुटिया डुबाना ।

जूता चाटना—चापलूसी करना । जाओ अपहरों के जूता चाटो, यहाँ तुम्हारा क्या काम ?

ईट से ईट बजाना—विध्वंस करना । महमूद जहाँ गया वहाँ उसने ईट से ईट बजा दी ।

हथेली पर सरसों जमाना—घात बहते ही तुरन्त काम हो जाना, या असम्भव घात कर दिखाना । मैं कोई जादूगर तो नहीं जो तुम्हारे मुँह से बात निकलते ही यहाँ मंत्र चीज जुटा दें, धारों इच्छा करने से कम से कम एक या दो दिन तो लोगों की भाँट हथेली पर सरसों नहा जमती ।

नाक रख लेना—इच्छा रख लेना । आपने १०-१०) उपहार देकर मेरी नाक रख ली, नहीं तो आज मेरा दिशावा बॉल जाता ।

लुटिया डुबाना—काम बिलकुल बिगाड़ देना । जमाने का मन्ना उस पारह रुपये का ही नुकसान दिया था, तुमने तो लुटिया का उधा दो ।

लोकोपियों और मुहावरों का टॉर ठीक प्रयोग करना व लिखे वा० बहादुरचंद्र द्वारा "लोकोपियों और मुहावरों" नामक पुस्तक प्रकाशित । इसमें लोकोपियों और मुहावरों के अर्थ तथा वाक्यों में अपने वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है यह सब भाँट भौति लिखाया गया है । मू० ॥ ।

३ अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखो जिसमें व्यायाम की उप-
योगिता बताई गई हो ।

१५

२५-६, निम्नत रोड,
लाहौर ८-१०-२८

प्यारं शशि,

तुम्हारा पत्र मिला । पिछले पत्र में मैंने तुम्हें यह बताया था कि सवेरे जल्दी उठने के क्या लाभ हैं । मुझे यह पढ़ कर प्रसन्नता हुई कि तुमने अब रोज सवेरे ५ बजे उठने का निश्चय कर लिया है । आज तुम्हें मैं व्यायाम की उपयोगिता बताना चाहता हूँ, तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि यदि तुम सवेरे उठकर शौच आदि से निवृत्त होकर प्रतिदिन व्यायाम करो तो तुम कभी बीमार नहीं पड़ सकते, और तुम अपने शरीर को, अपने मन को और फलतः आत्मा को बलवान बना सकते हो ।

तुम्हें पता है कि स्वास्थ्य दुनिया में सब से अनमोल वस्तु है । तुम कपड़े खरीद सकते हो, ज़मीन जायदाद खरीद सकते हो, पर स्वास्थ्य नहीं खरीद सकते । जो आदमी स्वस्थ नहीं है, उसका जीवन अपने लिए भी और उसके परिवार के अन्य व्यक्तियों के लिए भी भार और दुःखप्रद हो जाता है । अतः स्वास्थ्य दुनिया की सभ से बड़ी नियामत है और स्वास्थ्य की तुलना व्यायाम है । इसीसे तुम व्यायाम की उपयोगिता समझ सकते हो ।

शरीर को स्वस्थ तथा बलवान रखने, बीमारियों से बचाने और भोजन को ठीक ठीक पचाने के लिए व्यायाम करना अत्यन्त आवश्यक है । व्यायाम से हृत्प तथा शरीर के अंग पुष्ट होते हैं और रक्त में गति पैदा होती है । जो लोग नियम पूर्वक व्यायाम

करते हैं, उन्हें भूख खूब लगती है और नींद भी गूढ़ आती है। व्यायाम से भोजन अच्छी तरह पच जाता है और उससे रक्त सृजन बढ़ता है। जब आइसोमी का शरीर नीरोग होता है तब वह प्रसन्न भी रहता है और वह काम भी अधिक कर सकता है।

जो आइसोमी दिन रात पढ़ने में लगे रहते हैं या दिन भर दुर्मा पर बैठे बैठे काम करते हैं, और कभी शारीरिक व्यायाम नही करते, उनका शरीर शीघ्र ही बीमारिया का घर हो जाता है। छोटी उम्र में चाहे मनुष्य को व्यायाम न करने की भूल न मायूम हो पर कुछ बड़ा होकर उस अवश्य पहचानना पड़ता है।

तुम देखते हो कि मेहनत करके रक्ता सृजा होने वाला एक शरीर मजदूर एक दफ्तर के वायू में या एक करोड़पति मेट में अधिक हृष्ट पुष्ट और मजबूत होता है। तुम समझते हो उसका कारण क्या है? देखो, भार ढाने में और मेटना मजदूरी करने में उस शरीर का काफी शारीरिक व्यायाम हो जाता है पर वह माटी तौड़ वाले लालाजी या चरमाधारी दफ्तर के वायू में ही हाथ-पैर नहीं हिलाते। वे समझते हैं कि व्यायाम में व्यर्थ समय गैरान के बजाय वे अपनी देर में और बहुत से काम कर सकते हैं। पर बाद रखा कि व्यायाम में स्पर्ध क्रिया पर समय कभी व्यर्थ नहीं जाना। यदि वे रोज व्यायाम करते रहते तो जगती शक्ति (विद्युत्) होनी और वे अधिक काम कर सकते।

प्यारे शशि, तुम अब व्यायाम की उपरोक्ता सारक बात होग, अब रोज अपने उठने शीघ्र में शिथिल होकर मुली हवा में थोड़ा आधा घंटा रोज व्यायाम किया करो।

यदि तुम इस प्रकार पर सतत भी व्यायाम करोगे तो तुम समझोगे कि तुम द्वारा दिन भर आराम में रहना है तुम दिन-रात सुख

रहते हो और खूब काम कर सकते हो। यदि तुमने अभी बचपन में व्यायाम न किया, तो तुम अपने शरीर को रोग का घर बना लोगे। फिर बड़े होने पर लाख परिश्रम करने पर और दिन रात दवाइयाँ खाने पर भी वह स्वास्थ्य न पा सकोगे।

मैं समझता हूँ कि तुम मेरे पहले आदेशों की तरह इसे भी मानोगे और शीघ्र ही इसकी सूचना मुझे दोगे।

तुम्हारा शुभचिंतक
देवचन्द्र

पत्रों के लिए श्री केशव प्रसाद शुक्ल लिखित 'सरल-पत्र लेखन' देखिए, जिसमें निज्जु कारोबारी तथा निमंत्रण पत्र आदि सब तरह के पत्रों के लिखने का आधुनिक और नवीन ढंग बताया गया है।
मूल्य १।)

४ अपने पढ़े हुए काल्यों में से किसी पद्य काव्य की संक्षेप में आलोचना करो।

अथवा

क्या पञ्जाब में हिन्दीभाषा राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता रखती है ? इस प्रश्न पर अपने विचार प्रकट करो। १४

शिवाबावनी—इस काव्य में महाकवि भूषण के बनाए हुए शिवाजी सवधी ५२ स्फुट पद्यों का संग्रह है। ऐसी किंवदन्ती है कि जब भूषण और शिवाजी की प्रथम भेंट हुई थी, तब भूषण ने छद्मवेशी शिवाजी को ५२ भिन्न भिन्न कवित्त सुनाये थे, वे ही शिवाबावनी में मगृहीत हैं। पर यह किंवदन्ती सर्वथा निराधार

है । क्योंकि इस काव्य के कई पगों में ऐसी घटनाओं का वर्णन है, जो इस मेल के दिन तक घटी भी नहीं ।

शिवायावनी में अधिकतर पद्य शिवाजी की सेवा के प्रयाण का शत्रुओं पर प्रभाव शिवाजी के आतंक से शत्रु क्रिगों की दुर्दशा, शिवाजी का पराक्रम तथा शिवाजी को विजय करने में औरगजेर की असफलता और यदि शिवाजी न होते तो हिन्दुओं की क्या दशा होती आदि विषयों पर हैं ।

जिस काव्य में रस का परिपाक हो, भाषा उसके अनुरूप हो, अलंकार योजना मनोरम और निर्दोष हो, भाव उच्च और उत्तम हों वह काव्य उच्च कोटि का काव्य समझा जाता है । इस काव्य में हीर रस का अनुकूल परिपाक है । उसके सहायक भयानक, गैर तथा शीघ्र रसों के भी उचित उदाहरण मिलते हैं । अलंकार योजना उच्च कोटि की है और शुष्क ऐतिहासिक घटनाओं का कवि ने बड़े आकर्षक ढंग में वर्णन किया है । भाषा यद्यपि सिकन्दरी है, पर वह श्लेषपूर्ण तथा रस के अनुकूल हुई है । इन सब से अतिरिक्त सारा काव्य उच्च जातीय भावों से परिपूर्ण है । इन सब दृष्टियों से विचार करने से यही कहना पड़ता है कि यह श्रेष्ठ सा काव्य मन्य या थोड़े से पगों का सपह खूबसा भी भोज्य है ।

(विम्वृत आलोचना के लिये दूसरे प्रश्नपत्र व छठे प्रश्न का उत्तर पृ० १६ से २ तक देखिए)

अथवा

जो भी श्रेष्ठ भाषा राष्ट्र-भाषा पद पर चर्चा होगी, वह समूचे राष्ट्र के लिए होगी । समूचे राष्ट्र में राष्ट्रिय कार्यों के लिये भाषा अन्तर्प्रान्तीय कार्यों के लिये इसका प्रयोग होगा । हिन्दी हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा है और यथाप हिन्दुस्तान या भारतीय राष्ट्र का एक

- (३) डोल गैंगार-शूद्र-पशु-नारी । ये सब ताडन के अतिकारी ।
- (४) ५० जवाहर लाल ।
- (५) प्रतिमानाटक की कैदेथी ।
- (६) रात
- (७) विद्यालय से चरित्रयल श्रेष्ठ है ।

निम्नो के लिए श्री शम्भुदयाल सकसेना द्वारा लिा
 “हिन्दी-भूषण निबन्धमाला” देखिए । जिसमे हिन्दी भूषण पर
 मे आये हुए विगत कई मालों के निबन्ध दिए गये है । मूल्य

भारतवर्ष का इतिहास (दूसरा भाग) की प्रश्नोत्तर

[ले०—डा० सोमदत्त सूद, अध्यापक, कन्या-महाविद्यालय जालंधर]

इस पुस्तक में प्रो० वेदव्यास के भारतवर्ष के इतिहास
 आधार पर चाम्कोडिगामा के भारत-प्रवेश से लेकर आज
 का भारतवर्ष का इतिहास प्रश्न और उत्तर के रूप में
 दिया है ।

मूल्य

हिन्दी-साहित्य के इतिहास की प्रश्नोत्तरी

[लेखक—जनमजय शास्त्री]

इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रश्न और उत्तर
 में दिया गया है ।

मूल्य

हिन्दी भूषण प्रश्नपत्र-संग्रह (उत्तर सहित)

१९३६

संपादक
रामप्रसाद मिश्र

प्रकाशक
हिन्दी भवन, लाहौर

*Printed and published by D C Narang at the
H B Press, Lahore*

हिन्दी भूषण १६३६

प्रश्नपत्र १

१. अल्प प्राण और मदाप्राण किन किन अक्षरों की सहा है ? घोष और अघोष किन किन वर्णों का नाम है ?

४ + ३

प्रत्येक वर्ण का दूसरा तथा चाथा अक्षर (अर्थात् रा, घ, छ, झ, ट, ढ, ध, ध्र, फ म) और न, प, म, ह ये अक्षर मदाप्राण हैं। शेष सब व्यंजन तथा सब स्वर अल्प प्राण हैं।

*Printed and published by D C Narang at the
H B Press, Lahore*

हिन्दी भूपण १६३६

प्रश्नपत्र ?

अप प्राण और महाप्राण किन किन अक्षरों का सन्नाह है ? प्राण
गोप किन किन वर्णों का नाम है ? ४-२

येक वर्ण का दूसरा तथा चौथा अक्षर (अर्थात्
छ, झ, ट, ढ, थ, ध, फ, भ) जोर श प म, ह ये
महाप्राण हैं। श्रेय मत्र व्यञ्जन तथा मत्र मत्र अप
।

येक वर्ण का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ अक्षर (अर्थात्
ड, ज, झ, ञ, ट, उ ण, ढ, ध, न, थ, भ, म), मारे
र य, र, ल, व, ह ये घोष हैं। वर्ण का पाँचा, दूसरा
तीर श, प, म, ये अघोष हैं।

(क) नीचे लिखे शब्दों की सन्धि करा और लिपि बनाओ—
सत् + आचार, मत् + मय, मत् + दिग, राम + भयन । ६

(ख) नीचे लिखे शब्दों का सन्धि लिपि बनाओ—

रकार, क्याण, मयन, पाण्डव, शत्रु, मयाकार, पाण्डव,
मनोरथ प्रगदान । १-

सत् + आचार = सदाचार । श् + च पाद चार अक्षर
, य, जकार, य, र, व म म घोष अक्षर की जो श् का
ता है ।

तत् + मय = तन्मय । किसी वर्ग के पहले चार अक्षरों के बाद यदि किसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो तो पहले चार अक्षरों के स्थान में उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है ।

नत् + हित् = तद्धित । त् या द् के बाद ह हो तो त् या द् के स्थान में द् और ह् के स्थान में ध् हो जाता है ।

राम + अयन = रामायण । दो सवर्ण स्वर पास पास आते तो दोनों के बदले सवर्णदीर्घ स्वर हो जाता है । इस नियम से राम के 'म' का 'अ' और अयन का 'अ' मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया । ऋ, ए, ए के बाद न् को ण् हो जाता है चाहे उनके बीच में कोई स्वर, कवर्ग या पवर्ग का कोई वर्ण अथवा य, व, ह और अनुस्वार में से कोई वर्ण क्यों न हो । इस नियम से न को ण हो गया है ।

(ख) प्रत्युपकार = प्रति + उपकार । नमस्कार = नम + कार ।

स्वागत = सु + आगत ।

नयन = ने + अन ।

वाङ्मय = वाक् + मय ।

सपूर्ण = सम् + पूर्ण ।

जगन्नाथ = जगत् + नाथ ।

निरर्थक = नि. + अर्थक ।

मनोरथ = मन + रथ ।

जगदीश = जगत् + ईश ।

३ तुलना कितने कहते हैं ? और उनकी कौन-कौन अवस्था होती है ? उदाहरण सहित लिखो ।

वस्तुओं के गुणों के मिलान को तुलना कहते हैं । तुलना के विचार से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ हैं—मूल उत्तर और उत्तम ।

मूलावस्था में तुलना नहीं होती, जैसे—मोहन परिश्रमी लडका है । उत्तरावस्था में दो की तुलना करके एक की अधि-कता या न्यूनता दिखाई जाती है, जैसे—मोहन श्याम से छोटा

मोहन श्याम से अधिक चालाक ह । उत्तरावस्था में दो अधिक वस्तुओं की तुलना करके एक को मर से बढ़ कर टि कर बनाया जाता है । जैसे—विष्णु अपनी श्रेणी में से छोटा है । विष्णु उन मर में चालाक ह । सम्भूत । में उत्तरावस्था के लिए 'तर' और उत्तमावस्था के लिए प्रत्यय लगाते ह । जैसे—श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठाम, प्रियतर, प्रियतम ।

(क) वाच्य द्विज प्रवार का होता है ? डा भेनों क सोंगाएण पताओ । १

(ग) उपसर्ग और प्रथम विभे कइत हैं ? गों म परवर नया ? उदाहरण देकर समझाओ । ४

(ग) निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखो—

मुन्य, प्रमाणा, रव्य, भाषण । २

(द) वाच्य तीन प्रकार का होता है—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा वाच्य । कर्तृवाच्य में क्रिया द्वारा विभे गये विधान गई बात) का मुख्य विषय कर्ता होता है, कर्मवाच्य का विधान का मुख्य उद्देश्य कर्म तथा भावगान्य में ग जर्थ ही मुख्य होता है । जैसे— राम विट्ठी लिखता वाच्य में लिखता है क्रिया का उद्देश्य 'राम' कर्ता है । लिखता है' यही मुख्यवाच्य है, लिट्ठी (कर्म) का उद्देश्य । 'राम ने लिट्ठी लिखी जाती है' इसमें लिखता लिखता, ग के विधान का विषय लिट्ठी (कर्म) है । लिट्ठी लिखी ' या मुख्य अर्थ है 'राम से' (कर्ता) ही है । 'मुन्य लिखी जाता' इसमें 'लिखता लिखता' मुख्य है । कर्म का

इसमें है ही नहीं और कर्त्ता (मुझ से) गौण है । अतः पहले वाक्य में 'लिखता है' क्रिया कर्तृवाच्य, दूसरे में 'लिखी जाती है' क्रिया कर्मवाच्य और तीसरे में 'सोया नहीं जाता' क्रिया भाववाच्य है ।

(२) उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द के आदि में आकर उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, या उसके अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं । और वे अक्षर या अक्षर-समूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं । उपसर्ग सदा शब्द के आदि में जुड़ते हैं और जिन शब्दों के प्रारंभ में वे आते हैं, कई बार उनके अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं, और प्रत्यय सदा शब्दों के अंत में जुड़ते हैं, तथा वे अर्थ में विशेषता तो उत्पन्न करते हैं, पर बदलते नहीं । जैसे— 'बल' शब्द से पहले 'प्र' लगा दें तो 'प्रबल' शब्द का अर्थ हो जाता है अधिक बल वाला, ऐसे ही 'निर्' लगा दिया जाय तो 'निर्बल' शब्द का अर्थ होता है बल रहित । 'प्र' और 'निर्' 'बल' शब्द के पहले लगते हैं, और उसके अर्थ में विशेषता पैदा करते हैं या उसके अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं, अतः ये उपसर्ग हैं । 'वान्' या 'ई' के 'बल' शब्द के अंत में जुड़ने से 'बलवान्' या 'बली' रूप बनते हैं, और इन नये बने शब्दों का अर्थ हो जाता है, बलवाला । 'ई' और 'वान्' शब्द के अंत में जुड़ते हैं, और नये बने शब्दों के अर्थ में मूल शब्द से कुछ विशेषता पैदा कर देते हैं, पर सर्वथा बदलते नहीं, अतः प्रत्यय हैं ।

(ग) शुन्व—शून्य । प्रमात्मा—परमात्मा । लुप्य—दृश्य ।
आचरन—आचरण ।

५ निम्नलिखित वाक्यों के कारक लिखो—

(क) भूये को भोजन और प्यासे को जल ।

(ख) मोहन मुझे गीता पढ़ता है ।

भूये को—संप्रदान कारक । भोजन—कर्मकारक । प्यास को—संप्रदान । जल—कर्मकारक ।

मोहन—कर्त्ता कारक । मुझे—कर्म । गीता—कर्म ।

६ निम्नलिखित पदों में जा समास । उनके नाम और लिंग बताओ—

धर्मच्युत, गगाजल, गीतगाय, चींराहा, टोंगपैठी ।

धर्मच्युत—अपादान तत्पुरुष । गगाजल—सम्बन्ध-तत्पुरुष ।

जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं, इस समास के दूसरे पद में जिस कारक की विभक्ति का लोप होता है, उसी कारक के अनुसार इस समास का नाम होता है । धर्मच्युत (धर्म से च्युत) में सन्ध पद में अपादान कारक है, यहाँ अपादान-तत्पुरुष और गगाजल (गगा का जल) में पहले पद में सम्बन्ध कारक है, यहाँ सम्बन्ध-तत्पुरुष है ।

गीतगाय—कर्मधारय ।

जिस तत्पुरुष समास के विभक्ति में दोनों पदों के साथ एक ही कर्त्ताकारक की विभक्ति जाती है उस समास को सम्बन्ध-तत्पुरुष अथवा कर्मधारय कहते हैं । गीतगाय (गीत गाय)

मे दोनों पद एक ही कर्ता विभक्ति में हैं और उत्तर पद 'गाय' प्रधान है अतः समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय है।

चौराहा—द्विगु

जिस कर्म धारय समास में पहला शब्द सख्या वाचक विशेषण हो जिस से किसी समुदाय का बोध हो उसे द्विगु समास कहते हैं। चौराहा का अर्थ है चौ + राह अर्थात् चार राह (रास्तों) का समूह। इसलिए यह द्विगु समास है।

लोटाडोरी—द्वन्द्व

जिस समास में सब खंड प्रधान होते हैं और विग्रह करने पर जिसमें 'और' 'या' 'अथवा' आदि योजक लगते हैं उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। लोटाडोरी (लोटा और डोरी) में दोनों पद प्रधान हैं और विग्रह में 'और' योजक जुड़ता है। अतः द्वन्द्व समास है।

७ और रस का लक्षण बताओ। उसके भेदों के नाम लिखो। और उनके लक्षण भी दो। इस रस में संचारी और उद्दीपनभाव, वीर कौन हैं? शान्त रस का और वास्तव्य रस का उदाहरण दो।

शत्रु का उत्कर्ष, उसकी ललकार, दीनों की दशा आदि से जो उत्साह उत्पन्न होता है, उसकी परिपुष्टि जिस रस में होती है, वह वीर रस कहाता है। वह मुख्यतया तीन प्रकार का माना जाता है—

(क) युद्धवीर—जब लड़ने का उत्साह हो।

जय के दृढ़ विश्वासयुक्त, धैर्य दीप्तिमान जिनके मुखमंडल पर पर्वत की भी खंड खंड कर रज-कण कर देने की चंचल।

फटक रहे थे अति प्रचंड भुजबुद्ध शत्रुमर्दन को चिदल ।
ग्राम ग्राम से निकल निकल कर एसे युवक चने उल के बल ।

(ख) दानवीर—जय याचक आदि का दान देने का उत्साह हो ।

हाथ गहवो प्रभु को कमला कर नाथ कहा तुमने चित धारी ।
तटुल गाय मुठी दुइ दीन स्त्रिया तुमने दुइ होथ चिटारी ॥
खाय मुठी तिसरी अथ नाथ, कहा निज राम की आम प्रियाणी ।
रकहि आप समान क्रियो, अथ चाहत आपहि होत भित्ताणी ॥

(ग) दयावीर—जय दीनों पर दया करने का उत्साह हो ।

स्वजाति की देर अतीव दुर्दशा,
विमर्हणा दर मनुष्य मान फी ।

चिचार के प्राणिसमूह कए फी
हुए समुत्तजित वीर-वंशरी ।

वीर रस के आवेग, गर्व, अगूया, अमर्ष और उग्रता आदि संचारी भाव होते हैं । इसमें उदीर्य भाव शत्रु का उचर्य, उसकी लराकार, मारू राजा, घोरता की हुकार, पीन का दुःख या वृत्रिघ्न, याचक की प्रशमा आदि हैं ।

शातरस का उदाहरण—

मानस ही नो धही समसान रसा प्रपे गोपल गाँव के ग्याग्य ।
जो पसु ही नो कहा रसु मरो, चरौ निगद की धनु मँशान ॥
पाहन ही नो धही गिरि का जो बियो हरि एष पुग्दर धारन ।
औ स्वग ही नो बसैग शरौ मिलि काशिदा कृत् बरष की डारन ।

पावसद्वयम का उदाहरण—

नेया क्यहि पदनी पोट्टी ।

बहुत बार मोहि मृष गिया भइ रह अहँ है छोट्टी ॥

काचो दूध पिवावत पचि-पचि देत न माखन-रोटी ।
 'सूरस्याम' चिर जिवौ दौड भैया हरि-हलधर की जोटी ॥

८ (क) भ्रान्तिमान् और सन्देह अलंकार में क्या भेद है ? २

(ख) लुप्तोपमा किले कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाओ । ४

(क) कभी कभी किसी वस्तु को देख कर उसमें कुछ सादृश्य के कारण हम, उसे अन्य वस्तु समझ बैठते हैं, ऐसी भूल को 'भ्रम' कहते हैं। पर जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है वा नहीं, दुविधा बनी रहती है, तब 'संदेह' अलंकार होता है—“फूल समझ कर शकुंतला मुख भन मन उस पर भ्रमर करे” में मुख को कमल समझ लिया गया है। अतः भ्रम अलंकार है। पर यह “मुख हे या चंद्रमा ?” इसमें दुविधा बनी रहती है अतः संदेह अलंकार है।

(ख) उपमा में उपमान, उपमेय, वाचक और धर्म ये चार अंग होते हैं, पर उपमा के इन चारों अंगों में से किसी एक या दो या तीन को लोप हो गया हो (अर्थात् वे शब्दों द्वारा न प्रतलाये गये हों) तो लुप्तोपमा होती है। जैसे 'मुख चंद्रमा के समान है,' यहाँ साधारण धर्म 'मुंदर' का लोप कर दिया गया है। ऐसे ही 'मॉगन मरन समान है, मत कोई मॉगो भीख,' यहाँ मॉगन (उपमेय) मरन (उपमान) समान (वाचक शब्द) है पर धर्म (उपमेय) लोप दिया गया है, अतः धर्म लोप है।

९ विभावनाफल

१० विभावना

बात कही जाय, तब विभावना अल्फार होता है । यह उ प्रकार का है—

- (i) जब कारण बिना कार्य हो जाय । जैसे—
 विनु पद चले सुनै विनु काना,
 कर विनु करे करम वित्रि नाग ।

यहाँ चलने, सुनने, काम करने आदि कार्यों के कारण पैर, कान, हाथ आदि नहा हैं, फिर भी इन कार्यों का होना दिखाया गया है ।

- (ii) जब अधूरे या अपर्याप्त कारण से कार्य हो जाय—
 तो सो सो सिवाजी जेहि दो सौ आठमो माँ चोर्या,
 जग मरदार सो हजार असवार की ।

यहाँ सो हजार आठमिया की जीतने का कार्य करल दो सौ आठमिया द्वारा किया गया है । यहाँ कारण है पर वह अपर्याप्त और अधूरा है ।

- (iii) जब रूकावट होने पर भी कार्य हो जाय ।
 तेज छत्रभारीन ह तब अति ताप करना ।

तेज से ताप होता है पर छत्र (छात्री) होने पर तब ताप नहीं कर सकता । पर यहाँ रूकावट (छत्र) के होने पर भी ताप करना रूपी कार्य हो जाता है ।

- (iv) जब कार्य के कारण से ही आशातप में समझा करण न हो ।

वीणानाद तु शप्य मो होत सुनी है शर

वीणा पर मीठा शर का कारण वीणा ही हो सकती है । पर—यहाँ कपुवटी वामिनी के शप्याशर होने से वीणा का

काचो दूध पिवावत पचि-पचि देत न माखन-रोटी ।
 'सूरस्याम' चिर जिवौ दोउ भैया हरि-हलधर की जोटी ॥

८ (क) भ्रान्तिमान् और सन्देह अलंकार में क्या भेद है ? ३

(ख) लुप्तोपमा किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाओ । ४

(क) कभी कभी किसी वस्तु को देख कर उसमें कुछ सादृश्य के कारण हम उसे अन्य वस्तु समझ बैठते हैं, ऐसी भूल को 'भ्रम' कहते हैं। पर जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं, दुविधा बनी रहती है, तब 'संदेह' अलंकार होता है—“कल समझ कर शकुतला-मुख भन मन उस पर भ्रमर करें” में मुख को कमल समझ लिया गया है। अतः भ्रम अलंकार है। पर यह “मुख है या चंद्रमा ?” इसमें दुविधा बनी रहती है अतः संदेह अलंकार है।

(ख) उपमा में उपमान, उपमेय, वाचक और धर्म ये चार अंग होते हैं, पर उपमा के इन चारों अंगों में से किसी एक या दो या तीन को लोप हो गया हो (अर्थात् वे शब्दों द्वारा न बतलाये गये हों) तो लुप्तोपमा होती है। जैसे 'मुख चंद्रमा के समान है,' यहाँ साधारण धर्म 'सुंदर' का लोप कर दिया गया है। ऐसे ही 'मॉगन मरन समान है, मत कोई मॉगो भीख,' यहाँ मॉगन (उपमेय) मरन (उपमान) और समान (वाचक शब्द) है पर साधारण धर्म (बुरा) का लोप कर दिया गया है, अतः वहाँ भी लुप्तोपमा है।

९ विभावना अलंकार के भेद लक्षण और उदाहरण सहित लिखो। १२
 जब किसी कार्य के कारण के संबंध में कोई विलक्षण

बात कही जाय, तब विभावना अलंकार होता है। यह छ प्रकार का है—

- (i) जब कारण विना कार्य हो जाय। उदा—
विनु पद चले सुनें विनु काना,
कर विनु करे करम विधि नागा।

यहाँ चलने, सुनने, काम करने आदि कार्यों के कारण पैर, कान, हाथ आदि नहीं हैं, फिर भी इन कार्यों का होना दिखाया गया है।

- (ii) जब अधूरे या अपर्याप्त कारण से कार्य हो जाय—
तो सो को मित्राजी जेहि टों सौ जाउमी सौ जायो
जग सरदार सौ हज्जार अस्वार को।

यहाँ सौ हज्जार आदमियों को जीतने का कार्य केवल दो सौ आदमियों द्वारा दिखाया गया है। यहाँ कारण है पर यह अपर्याप्त और अधूरा है।

- (iii) जब रूपावृत्त होने पर भी कार्य हो जाय।
तेज उग्रधारीन ह तब अति ताप कान।

तेज से ताप होता है पर छत्र (छतरी) होने पर तेज ताप नहीं कर सकता। पर यहाँ रूपावृत्त (छत्र) के होने पर भी ताप करना रूपी कार्य हो जाता है।

- (iv) जब कार्य वस्तु कारण से ही आसन्नत्व से उत्पन्न करण न हो।

घाणानाट तु शय सो होत मुनी नै वाय

घाणा के मीठा स्वर का कारण घाणा ही हो सकती है। पर—यहाँ वसुवृत्ती कारिनी के शयनाकार रूप से घाणा का

नात्र निरुलना वताया गया है। शख वीणानाद का कारण नहीं है पर कार्य उससे होता है।

(१) जब विपरीत कारण से कार्य हो जाय—
कारे कारे घन आकर अगारे वरसाते है।

फाले वादल पानी वरसाते है न कि अगारे। अगारे जल उरमाने वाले वादलों से कैसे निरुल सकते है। इस प्रकार विपरीत कारण से यहाँ कार्य का होना दिखाया गया है।

(११) जब कार्य से कारण उत्पन्न हो—

तव कृपान ध्रुव धूम ते भयो प्रताप कृसानु।

यहाँ कृपाण रूपी ध्रुपे से प्रताप रूपी अग्नि की उत्पत्ति हुई है। वास्तव मे आग से ध्रुओं उत्पन्न होता है, ध्रुपे से आग नहीं। इस प्रकार यहाँ कार्य से कारण की उत्पत्ति दिखाई गई है।

१० (क) यति और गति किते कहते हैं ?

(ख) शिपरिणी, वपजाति, तोटक छदों के उदाहरण लिखो।

(ग) उल्लेख, स्मरण, ध्याजस्तुति, दृष्टान्त अलंकारों के लक्षण बताओ।

(घ) कुडलिया कैसे बनती है ? और इसके कितने चरण होते हैं ?

(ङ) 'छद' को पढते समय बीच-बीच में ठहरना पडता है, इस ठहरने को यति कहते हैं, ओर छद के पढने की लय को गति कहते हैं।

प्रियपति वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है।

यहाँ मेरा के बाद और पढ के अत में ठहरना होता है, इन दोनों स्थानों पर यति है। ऐसे ही—

‘जत्रते गम ज्याहि घर आये’
 में एक लय है, यदि इसको उम प्रकार बदल दिया जाय—
 राम जत्र तें ज्याहि घर आये
 तो मात्राएँ पूरी होत पर भी गति नहीं रहती।
 (ख) शिखरिणी—अनूठी आभा से नरम सुपना में मग्न से।
 उपजाति—ससार है एक अरुण्य भारी,
 हुए जहाँ है हम कर्मचारी।

तोडरू—

नर हो न निराश धरो मन की

(ग) जत्र एक वस्तु का जनक प्रकार से वर्णन (उल्लेख)
 किया जाय तत्र उल्लेख अलंकार होता है।

जब पहले देखी हुई या सुनी हुई किसी वस्तु या स्मरण
 उसके समान या उससे मग्न रहना वाली किसी वस्तु को
 देखन या सुनने से हो जाय, तत्र स्मरण अलंकार होता है।

जब देखने या सुनने में निंदा जान पड़ पर जो प्रशंसा
 अथवा प्रशंसा जान पड़े पर जो निंदा तत्र व्याजस्मृति अलंकार
 होता है।

जब पहले एक बात कह कर उसको मर्याद करके फिर
 उससे मिलती जुलती दूसरी बात कहो जाय तत्र व्याज
 अलंकार होता है।

(घ) शोदा और रोता के मिश्रण से तुल्यिषा समझी है।
 शोदा या अतिम नरण रोमा के आदि म रमा जाता है। शोदा
 के शो पर और रोता के चार पद के मग से हम में ए पर
 या नरण होते हैं।

व्याकरण-प्रदीप

[रामदेव एम ए]

“यह हिन्दी का पहला व्याकरण है, जिसमें व्याकरण विषय का प्रिचेन पर्याप्त विस्तार से और शास्त्रीय ढंग से किया गया है जिसमें हिन्दी-भाषा-विज्ञान पर भी सत्प्रति विचार प्रकट किये गये हैं और राजस्थानी, अवधी तथा ब्रजभाषा के व्याकरण पर भी प्रकाश डाला गया है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषताएँ हैं, और यही उन विद्यार्थियों की सबसे बड़ी माँग हैं जिन्हें प्राचीन काव्य-साहित्य का भी अध्ययन करना होता है।”

इसकी इस उत्तमता को देखकर पंजाब यूनीवर्सिटी ने १९४१ से इसे भूषण के पाठ्य क्रम में नियत किया है। विद्यार्थियों को यही व्याकरण पढ़ना चाहिये। मूल्य १)

रस और अलंकार

[ले०—प० रामबहोरी शुक्ल, एम ए, साहित्य-रत्न, फीस कालेज, बनारस]
इस पुस्तक में रस और अलंकार का कठिन विषय बड़ी सरलता-पूर्वक समझाया गया है। प्रत्येक अलंकार के लक्षण, उदाहरण तथा अलंकारों के पारस्परिक भेद विद्वान् लेखक ने बड़ी सूझी से समझाये हैं। सभी उदाहरण आज्ञा की सही बोली की कविता से दिये गये हैं, जिससे विद्यार्थी बड़ी आसानी से उन्हें समझ सकते हैं। इसको पढ़कर हिन्दी भूषण के विद्यार्थियों को इस विषय की और कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती। मू० ॥३=)

पिगल परिचय

[ले०—प० रामबहोरी शुक्ल, एम ए, साहित्य-रत्न, फीस कालेज, बनारस]
इसमें सरल अलंकार और अलंकार प्रवेशिका के सब छन्दों के लक्षण उसी छन्द में दकर उसके उदाहरण खूब समझाकर दिये हैं, जिससे विद्यार्थी बहुत आसानी से छन्दशास्त्र को समझ सकते हैं। मू० ॥२=)

प्रश्नपत्र २

नोट—परीक्ष्य को स्मरण रहे वह केवल पांच प्रश्न ही उत्तर देने का प्रयत्न करे। प्रथम और द्वितीय प्रश्न आवश्यक हैं। अन्य कोई भी तीसरे प्रश्नक है। प्रत्येक प्रश्न के अंक दास होंगे।

१ शुद्ध हिन्दी में अर्थ लिखिए—

(क) अदर से निकली न मन्दि का देखा हार
दिन रथ पथ से उचार पाइ जाती है।

हवा हू न लगता से हवा त गिना भई
लगन का नार म सङ्गारता ग हाता है।

'भूषण' भवन गिराता तरी थक मुनि
हवागारि और पारि मन सुनकारी है न

पेसी परी नरम हरम पारमाता का
गामकारी स्वामी न बनानेवा है ॥

(ख) पेसी वलत भूक जग हा, मन मगोय न भावा।

दिन दिन अधिक दुःखता, लगी मरुत भूक मरगावा म
मुनि मुनि गगन रमाता भूक, गरी लही उरि भायो।

पयम मोय मर मोय, भक्ति म का म गगन कुलाय क
वाक पान मनिता विन, द मुन, मर लर ररक विन्दा।

मे भगत भवुगारि भक्ति है जग की दूत भावा क
भक्ति भक्ति ही हातो दिव ३ उवे देवे भक्ति मरुत का।

गुलास प्रभु मुगारि कुला विभु विभु जग मरुत की क

(ग) जुपरि उबटि अन्हवाइकै नयन भौंक्षे,
 घिर रचि तिलक गोरोचन को कियो है ।
 भ्रुपर भनूप ममिविन्दु धारे धारे धार,
 विलसत सीस पर हेरि हरे दियो ह ।
 मोद-भरी मोद लिये लालति मुमित्रा देखि,
 देव कहे सबको सुकृति उपवियो है ।
 मानु, पितु, प्रिय, परिजन, पुरजन धन्य,
 पुन्यपुज पेलि पेलि प्रेमरस पियो है ॥

(घ) सिर राखे सिर जात हे, सिर काटे सिर सोय ।
 जैसी वांती दीप की कटि उजियारा होय ॥ २०

(क) भाग शिवावावनी मे से है जो अब पाठविधि में नहीं है, अतः इसका उत्तर नहीं दिया गया ।

(ख) ऐसे ही भटकते-भटकते अनेक जन्म गुजर गए पर कभी मन में सन्तोष नहीं आया । दिन दिन अधिक दुराशा के कारण तमाम लोकों में घूमा । स्वर्ग, पाताल और मृत्युलोक जहाँ जहाँ सुना वहाँ वहाँ उठ कर दौड़ पड़ा पर काम, क्रोध, मद और लोभ-रूपी अग्नि की जलन कहीं शान्त नहीं हुई । चन्दन की माला और खी-विनोटादि के झूठे सुख-रूपी जल से मैंने इस अग्नि की जलन को शान्त करना चाहा परन्तु अज्ञान-वश अत्यधिक अकुला करके मैंने माना इस जलती हुई अग्नि में घी की आहुति दे दी । भटकते-भटकते में दिल हार घैटा पर ससार को मैंने काम, क्रोध, मद और लोभ की अग्नि में वैसा ही जलते हुए पाया । सूरदास जी कहते हैं कि हे प्रभो, आपकी दया के बिना वह अग्नि कैसे शान्त हो सकती

है। आपके कृपा-जल से ही वह मुझ मरती है नहीं तो उसके शान्त होने का कोई उपाय नहीं है।

(ग) माता सुमित्रा ने रामचन्द्र जी के उद्वहन तथा घर स्नान करवाया, नेत्रों में अजन लगाया सुन्दर गोरोचन का तिलक दिया, माथे पर नजर न लगाने के लिए अनूठी पाली बिन्दी लगाई, इससे उनकी शोभा और अधिक बढ़ गई। श्री रामचन्द्र के सिर पर छोटे छोटे बाल शोभित हो गए थे जिनके देखने से ही मन हरा हो जाता है। सुमित्रा को आनन्द पूर्वक बालकों को गोद में लेकर दुलार करते देख देयता लोग कहते हैं कि आज सबका पुण्य उदय हुआ है। माता पिता, प्यारे कुटुम्बी लोग और नगर के लोग पुण्यों के समूह धारण को देख कर प्रेम रस का पान करते हैं।

(घ) देह का मोह करने से मान-मर्यादा नष्ट हो जाती है। सिर काटने से ही सिर की शोभा जाती है। जैसे शीपक की घसी का सिर कट जाने पर ही अधिक प्रकाश होता है। कबीर दास जी का कहना है कि जीना है तो मरना सीना। जो जीति या राष्ट्र मरने से नहीं चपड़ाता यही जीवित रह सकता है। अन्यथा मान मर्यादा की रक्षा पठिन ही नहीं जायभव है।

२ सप्तमम व्याख्या करा—

(क) मित्र जगो बहु स्वात रहरो ई अर मस्ता।

(ख) जगत प्रदमपी निमि जानिए।

(ग) जहहू है भोजन मभी, हीन कर्मीन स्वल्प।

(घ) जनोपना मादपन, मरामरणा।

(ङ) एत ही निमम परस्पर - ११ है।

(च) कितना अस्थिर है लीलामय पलकों का उस्थान पतन ।

(छ) प्रबल है प्रबल काल की चाल ।

२०

(क) यह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के एक पद्य का टुकड़ा है, जो उनके 'नील देवी' नाटक में से लिया गया है। राजपूत सेना को मुसलमानों को कुचलने के लिए प्रेरित करते हुए तथा उनकी सत्या में न घबराने का आदेश देते हुए राजकुमार सोमदत्त कहते हैं - "सिंह के जागने पर कहीं कुत्ते भी युद्ध में उठरते हैं" अर्थात् यदि तुम युद्ध के लिए कटिबद्ध हो जाओ तो क्या यह बड़ी भारी यवन सेना तुम्हारे सामने उठर सकती है।

(ख) जगत् के मिथ्यात्व और ब्रह्म और जगत् की एकता बताते हुए कवि कहता है, कि जैसे समुद्र और समुद्र की लहर दोनों ही जल हैं दोनों में कोई भेद नहीं वैसे ही जगत् और ब्रह्म दोनों एक ही हैं, और इस जगत् को ब्रह्ममय ही मानना चाहिए। माया का परदा हटते ही दोनों एक ही दिखाई देते हैं।

(ग) सखियाँ ऊँधो से कह रही हैं कि एक कृष्ण के विरह में पलाश, अशोक, आम, माधवीलता आदि ने अपना अपना प्रफुल्लित होना छोड़ दिया है। सो ऐसा प्रतीत होता है मानों ये जड़ वृक्ष चेतन होकर दीन-मलीन दिखाई देते हैं।

(घ) वसन्त-ऋतु में वनस्थली की शोभा का वर्णन करते हुए कवि कहता है, कि प्रकृति ने, पुष्पित आम ने और पराग ने क्रमशः पृथ्वी को मनोश्रिता (सुदरता), कोयल को मादकता (नशीलापन) और मारे को मदांधता (मदमस्ती) दी थी।

(ङ) उर्मिला और लक्ष्मण के परस्पर खेल और प्रणया-

लाप का वर्णन करता हुआ कवि कहता है कि प्रामथ्य व प्रेम का वर्णन यही हो सकता जिस में धारणा ही एक दूसरे से जीतना है। अर्थात् प्रेम की पेशी लीला है इसमें जो धारणा है वही जीतता है।

(च) प्रभु की विचित्र लीला का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि तुम्हारी एक आँख को पलक मात्र में रात समाप्त हो जाती है, एक निमेष मात्र में दिन हो जाता है, हम प्रकार यह अस्थिर दिन रात का खेल है और लीलामय प्रभु के पलकों का खुलना और गिरना कितना अस्थिर है, हम जग में क्षण क्षण में कितने परिवर्तन होते रहते हैं।

(छ) नूरजहाँ की बर पर आँसू गहना हुआ कवि कहता है एक दिन मुगल साम्राज्य तुम्हारी अँगुली पर नानता था, जाप तुम्हारी कहानी मात्र रह गई है, हमने यह मालूम पड़ता है कि बलवान् फाता की गति बड़ी प्रबल है। वह सब को गगना जाता है।

२ 'कविता दृश्य का अनुभूति है' - हम कथन का समाया था। २०

पूर्व और पश्चिम दोनों प्रदेशों के साहित्यशास्त्रों अनेक प्रयोगों से कविता की विभिन्न परिभाषायें कृत जाय हैं। पर अभी नये फोर्ड सतोष नाथ परिभाषा का है। स्वर्ण। फोर्ड कहता है कि 'वाच्य समाजिक वाच्य अर्थात् समाज वाच्य ही वाच्य है' तो फोर्ड कहता है कि 'कविता वाच्य पर विकास पर रक्त दिये जाये वाचे व्यक्ति द्वारा का है दुगरा नाम है' और फोर्ड 'कविता की दृश्य की अनुभूति मानता है। पर ही अन्य अनेक परिभाषाओं की तरह। प्रत्येक साहित्यशास्त्री अपा-अपन मत के योग्य में परिभाषा

देता है, अतः यह कहना कि यह लक्षण सब पक्षों को मान्य होगा, बड़ा कठिन है। पर कविता की जितनी परिभाषा की जाती है उनका यदि विश्लेषण करें तो हम यह पायेंगे कि उन में से अधिकांश कविता का हृदय के साथ ही सबंध जोड़ती है। और अधिकांश परिभाषाओं का लक्ष्य या अन्तर्गत भाग एक ही है।

काव्य वास्तव में मानव जीवन का चित्र है, उसमें भाषा के द्वारा मानवजीवन की अभिव्यक्ति होती है। रागों या वेग-स्वरूप वृत्तियों का सृष्टि के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करके कविता मानव जीवन के व्यापकत्व की अनुभूति उत्पन्न करने का प्रयास करती है। यदि इन वृत्तियों को समेट कर मनुष्य अपने अंतःकरण के मूल रागात्मक अंश की सृष्टि से किनारा कर ले तो फिर उसके जड़ हो जाने में क्या संदेह रहा। शरद काल की चाँदनी रात में या वसन्त ऋतु में कुसुमित पुष्पोद्यान में प्रिय व्यक्ति के पास होने पर प्रत्येक चेतन मानव के मन में वासना उत्पन्न हो उठती है। वर्षा ऋतु में उमड़ते बाटलों के समय प्रिय वियोग से वह व्याकुल हो उठता है। आँगन में खेलते बालकों की लीला को देख कर पुलकित हो जाता है। हास्य की अनूठी, उक्ति सुनने या विनोद पूर्ण दृश्य को देख कर वह कहकहा उठता है, प्रिय की मृत्यु पर किर्करा विमूढ हो जाता है, शत्रु या विपक्षी की अविनीत चेष्टाओं को देखकर वह क्रोध से तिलमिला उठता है, दीनों पर अत्याचार देख उत्साह से क्रियाशील हो जाता है, जंगल में एकान्त में सिंह या हिंस्र जंतु को देख भय से आतुर हो जाता है, श्मशान को या अन्य घृणित स्थान को देखकर उसके मन में

जलानि पैदा होती है, किसी अलाचारण प्रभु को दरदर पर
 आश्चर्य-चकित हो जाता है, और ससार ही अस्मारा को
 देख परमपिता का आश्रय ढूँढता है। लहताहाने हुए गतों
 और जगलों की हरी घास के बीच रहने वाले नाला पानी
 चटानों पर चोंद की तरह झरते हुए झरनों, मचरी से लड़ी
 अमराइयों और फलत्र करने हुए पक्षियों को देर मानव
 आनंद में लीन हो जाता है। किसी यशस्वी को पुण्यगाथा सुन
 उमका सिर श्रद्धा से उमके चरणों पर झुक जाता है और मर्ति
 भूमि पर आपत्ति देख वह उल्लिखान होने को कटिप्रज्ञ होजाता।
 ६। इस प्रकार प्रत्येक चिंतन मानव का मन इन भावों से जागा-
 देत होता रहता है। प्रत्येक मानव के मन में उदना और आनंद
 अनुभूति होती है, भावुक कवि अपनी कविताओं में उन्हीं
 भावनाओं, अनुभूतियों, का चित्रण इतना तीव्र करता है कि
 उसे पढ़ कर दूसरे के हृदय में उबल पुथल मय जाती है। इसी
 भावनाओं उस दूसरे के हृदय में भी आविर्भूत हो जाती है।
 मका सुम अतरलम जाग उठता है और वह उन्हें अपनी ही
 अनुभूति समझने लगता है। कालिदास द्वारा कविता सतृप्तता
 पिता हमें अपनी घटना सेट्टी की विशा मादम पद ही है।
 पिताभ्य की मृत्यु पर शोकविलाप हम अपना जीवन
 घटना प्रतीत होती है। इसी प्रकार हम कविता में कविता
 तरलम का, हृदय के गुणमन स्थान पर, हृदय के लिए स
 न भावों का मया वर्णन है। कविता की लक्ष्य "मनु
 वि। फलत कविता हृदय की अनुभूति है।

'स्मानक वाक्य का वाक्य कहत है' और कविता हृदय
 अनुभूति है। इन दोनों का अन्तर्गत भाव भी एक ही है।

स्वात्मक वाक्य वही है जिसमें प्रबल मनोवेग हृदय में सदा रहने वाले भावाँ—प्रेम, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय-चूणा, विन्मय और वैराग्य—की व्यजना हो। परन्तु हृदय को कई अनुभूतियाँ साहित्य में माने हुए नो रसों में नहीं आतीं अतः इस लक्षण में अव्याप्ति दोष कहा जाता है। साथ ही यह इतना स्पष्ट नहीं जितना “कविता हृदय की अनुभूति है।” अतः हम इसी लक्षण को अधिक पसन्द करते हैं।

१. ‘कवि ब्रह्मा है’—यह उक्ति कहा तक सत्य है ? युक्तिपूर्वक विवेचना करो।

पुराणों में ब्रह्मा को सृष्टि का कर्त्ता कहा गया है, और यह दृश्यमान जगत् ब्रह्मा की रचना माना गया है। कवि भी सृष्टि रचता है, कवि का भावात्मक जगत् ब्रह्मा के वाह्य जगत् से अधिक निराला सुंदर और अमर है। कवि के भावात्मक जगत् में वाह्य इंद्रियों—आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा—से गोचर वाह्य जगत् के रंग ही नहीं होते, अपितु उनके साथ हमारे वे भाव, हमारा भय विस्मय हमारा सुख-दुख भी मिले रहते हैं। इस भावात्मक जगत् को अपनी कल्पना कूँची से रँगकर कवि असुंदर को भी सुंदर बना देता है, वह सड़क पर पड़े हुए कोठी में, बेवस गिरे हुएों में ‘सुंदर’ की—‘अनंत’ की स्थापना करता है। ओस में रात के आँसुओं को ढँढ़ता है। साधारण व्यक्ति इस वाह्य जगत् में प्रिय की मृत्यु पर रोता है। पर कवि की कूँची से चित्रित विरह और मृत्यु का वर्णन अत्यंत सुंदर और भव्य हो जाता है। कवि के दुख-भरे उच्छ्वास और सुख-भरे गीत दोनों ही ससार का मनोरजन करते आए हैं—अर्थात् आनंद देते आए हैं।

और देते रहेंगे। कवि कुलगुरु कालिदास का अन्वयिताप भवभूति के विरही राम के प्रलाप और भारतेन्दु के शैल्या-विलाप को पढ़कर पत्थर भी पिघल जाते हैं पर फिर भी उसमें आनन्द पाते हैं उसे बार बार पढ़ना चाहते हैं। लता आश्रम-कन्याएँ हुईं जोर मर गईं पर कालिदास की तपोव्रत विहारिणी शकुन्तला सदा के लिए अजर अमर हैं। शीघ्र फरहाद, लतामजनों और हीर रंजना कहीं नहीं हों पर कवियों द्वारा रचित यह प्रेमिया का समार नव तक जमर रहेगा जब तक इस प्रभा की सृष्टि है।

जिस तरह ब्रह्मा दिन रात सृष्टि रचना को करता रहता है, नित नई रचना में प्रवृत्त रहता है, कवि का हृदय में भी रचना के लिए वैसे ही घेंचैनी होती है। जब वह किसी अनुरूपी घन्तु को देखता है तो रचना के लिए उत्सुक हो उठता है। उस समय प्रसव वेदना उसे घेराल कर देती है। जब वह एक नई घन्तु की सृष्टि कर देता है, तभी उसकी घेंचैनी की आग शान्त होती है। यह जगत् के मंगलदायक रत्न, तारक, हीरे मोती और कमलों को अपने अजर क रत्न से सिन्धु, मधुर, उज्ज्वल और आकर्षक बना कर समार के सामने लाता है, यही उसकी कला है, यही उसकी सृष्टि है।

कवि के कृत ब्रह्मा के कृत्वा से अथिक् मुदर और मयंथि कने और कवि के रत्न इत यात्त जगत् क रहें म जतिक् यनमोम होने ह। इस नवीन सृष्टि की रचना के कारण ही कवि का ब्रह्मा कहा जाता है। और 'कवि ब्रह्मा है' यह उक्ति मयंथि मर १।

१ भाग्येंदु हीरक और कविता मयंथि मर १। कृत्वा के विचार में अने विचार मयंथि मर १।

भारतेन्दु एक निपुण लेखक तथा कुशल कवि थे। वर्त्तमान काल में हिन्दी भाषा की इतनी उन्नति अन्य किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं हुई जितनी भारतेन्दु द्वारा। इस प्रतिभाशाली व्यक्ति ने हिन्दी गद्य को अनिश्चितता के कीचड़ से निश्चल कर एक निश्चित रूप दिया। हिन्दी भाषा को स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार आदि विविध विषयो तथा नये भावों से अलंकृत किया, नाट्य-साहित्य की नींव डाली, तथा हास्यरस की जड़ जमा दी।

उनकी कृतियों की सबसे मुख्य विशेषता उसमें देश तथा जातीय प्रेम का कूट कूटकर भरा होना है। चाहे कैसा अवसर हो और चाहे किसी प्रकार की रचना की आवश्यकता हो, भारतेन्दु अपने देश को नहीं भूलते, घूम फिर कर उन्हें उसके पूर्ण गौरव, वर्त्तमान दीनावस्था और भविष्य का ध्यान आ ही जाता था। भारतेन्दु के समान हिन्दुस्तान के दोषों पर आँसू बहाने वाला, उसके पूर्व गौरव पर अभिमान करने वाला कोई भी अन्य कवि उस समय तक हिन्दी साहित्य में न हुआ था। उनकी सारी कविता हिन्दी हिन्दुस्तान के लिए थी।

वीर-कविता की कुजी

[ले०—श्री जमुदयाल सकसेना, साहित्यरत्न]

हममें वीर कविता के सब पदों के अर्थ-बढ़ी सरल भाषा में दिए गए हैं। कठिन शब्दों के अर्थ और प्रयोग आने वाली सब कहानियाँ भी दी गई हैं। इस कुजी की सहायता से विद्यार्थी स्वयं इस पुस्तक को पढ़ सकते हैं। श्री जमुदयाल सकसेना और हिन्दी भवन का नाम इसकी शुद्धता और सर्वोत्तमता का सबसे बड़ा प्रमाण है। मूल्य ॥१॥

उनकी दूसरी विशेषता विविध विषय प्रतिपादना में अन्य हिन्दी कवियों की तरह उन्होंने केवल भक्ति या भक्त्या को ही नहीं अपनाया, अपितु प्रेम, भक्ति प्रकृति वर्णन स्वदेश प्रेम, इतिहास आदि सभी विषयों पर आर हास्य योग, श्रीभक्त तथा करुण आदि सभी रसों में अनूठी कविता की। उन जसा प्रकृति वर्णन तो अत्र तक बहुत कम ने किया है। इतना परन्तु हास्यरस पर बहुत कम रचना का गई, और भारत-नु जैसा सभ्यजनोचित हास्य और गच्छोयता के रस में रंगा चुटीला व्यंग्य बहुत कम की कृतिया में मिलता है।

उनकी तीसरी विशेषता उनके द्वारा किया गया भाषा का परिष्कार था। भारत-नु ने जो नये विषयों पर अपनी कृति उठाई तो उन्हें नये भाषों को प्रकट करने के लिए भाषा की नयी शब्दों नये शब्दों और नये मुद्राओं का आविष्कारना पड़ी। प्राचीन राज भाषा में एक तो इन भाषा का प्रकट करना कठिन था, दूसरा उनके पूर्वजों कवियों ने शब्दों का नोड मोड कर इन भाषा को वह रूप दे दिया था, जो आमनाम की भाषा से बहुत दूर था गया था। यह दूसरा भारत-नु ने

भक्त पंचरत्न की कुर्जी

(टीकाकार—श्री गुरुदास सराव, साँझावर)

हमारे भक्त पंचरत्न के सव पदा के अर्थ वही मूल भाषा में विचार पूर्वक दिखे जाते हैं। कवि-कवियों के अर्थ तथा प्रकृतियों के अर्थ का मूल कदाचित् ही मूल है। मूल पुस्तक का उद्देश्य ही तो यह है, उद्योग करने दे, कृपा से उद्योग भी निकल कर दिया गया है। कृपा का उद्योग से विचारों का उद्योग ही मूल है। मूल है।

अनुवाद हे जो उच्च शक्ति के ह पर कहीं कहीं जहाँ इन्सान श्लोकों का पूरा भाव लाने का प्रयत्न किया है, वहाँ भाषा कठिन और अव्यवस्थित हो गई है। जो सफलता भार्गवेंद्रु को मुद्राराक्षस आदि नाटकों के अनुवादा में मिली है, वह सफलता इन्हें न मिल सकी, साथ ही इनकी शक्तियों ने हिन्दी साहित्य में कुछ नवीनता न दी।

६. छायावाद तथा रहस्यवाद पर प्रकाश डालन हुए निम्नो कि कबीर, मीरा, सत्यनाथयण और हरिश्चन्द्र ने किस प्रकार का भावना प्रकिया है ?

प्रकृति में जो कुछ दिखाई देता है उसकी सीमा वहाँ तक न समझ कर उसमें आत्मीयता स्थापन करने तथा कोन सी वस्तु कितनी उपयोगी है, कबल इतना विचार न कर उस वस्तु को भावुकता की कसौटी पर कसन की प्रकृति छायावाद कहलाती है। यह प्रकृति विस्मयानुगी है। यह प्रकृति प्रकृति के प्रधानों से आत्मा व मुक्त होने की घोषणा है। इस प्रकार छायावाद एक न्यति है जिसमें हृदय की अनंत के साथ अपने संबंध की अनुभूति प्राप्त है। भावुक हृदय को शान्ति की कर-कर में एक गीत सुनाई देता है, गुणान के फल में मानव सौख्य का विकास दिग्गार देता है। पूर्ण की मुनहनी फिरणें, उससे लिए आशा का संदेश गतनी है। कल्पितों गित कर प्रकृति के हृदय के उल्लास की प्रकट करती है, दिग्गारण उसकी चेष्टा के साथ रोते दिग्गार गत है, समस्त प्रकृति उस भावुक हृदय के साथ संबंध आत्म की भावुक निगाई देती है, प्रकृति की कटी उटी सांसारिकी को पार कर यह प्रकृति में एकमात्रता का दर्शन करके लगता है।

बोलचाल की ही भाषा को अपनाया। गद्य तो उन्होंने त्रिलकुल खड़ी बोली में लिखा। उनका पद्य ब्रजभाषा में था, पर वह भी गली बोली का रंग लिये था, तथा पूर्ववर्ती कवियों की भाषा में अधिक सरल और ओजपूर्ण था। इस प्रकार उन्होंने जनता के जीवन और साहित्य में भिन्नता दूर कर साम्प्रदायिक स्थापित किया।

कविरत्न सत्यनारायण सचमुच ब्रजवासी थे, ब्रजनायक कृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के माधुर्य पर मिटने वाले। नन्ददास आदि ब्रज के कवियों के ढंग पर उन्होंने भ्रमर-गीत इत्यादि रचनाएँ की हैं। पर समय के फेर ने और उनके देश प्रेम ने उनकी इन रचनाओं में राष्ट्रीयता का रंग डाल दिया था। उसमें नये विचार सम्मिलित हो गये थे, कृष्ण को सदेशा भेजते हुए भी वे ऊह बैठते हैं—

नहिं देशीय भेष भावुन को आशा कोऊ
लखियत जो ब्रजभाषा जाति हिरानी सोऊ
आन्तिक बुधि बधनन से, विगरी सर्व मरजाद
सब काऊ के मन बसैं, न्यारे न्यारे स्वाद
अनोखे ढंग के।

उनके दुखी जीवन ने उनकी कविता में करुणरस का प्रवाह बहा दिया था। उनकी कविता अत्यन्त श्रवण सुखद और मर्मस्पर्शनी है। भाषा भी मीठी और सरस है, पर ठेठ है, और उसमें साहित्यिक शब्दों के साथ कई ऐसे शब्दों का भी प्रयोग हुआ है जिनका प्रयोग साहित्यिक ब्रजभाषा में नहीं होता था और जो ब्रजमंडल में ही सीमित हैं। उनके विशेष उल्लेखनीय ग्रंथ भवभूति के उत्तररामचरित और मालती मात्रव के

अनुवाद है जो उच्च शक्ति के ह पर कहीं कहीं जहाँ इन्होंने श्लोकों का पूरा भाव लाने का प्रयत्न किया है, वहाँ भाग कठिन और अव्यवस्थित हो गई है। जो सफलता भारतेन्दु को मुद्राराक्षस आदि नाटकों के अनुवाद में मिली है, वह सफलता इन्होंने न मिल सकी, साथ ही इनकी कृतियों ने हिन्दी साहित्य में कुछ नवीनता न दी।

६ छायावाद तथा रहस्यवाद पर प्रकाश डालने हुए लियो कि कवीर, मीरा, सत्यनाथयण और हरिभद्र ने किस शैली का अनुकरण किया है ?

प्रकृति में जो कुछ दिखाई देता है उसकी सीमा यही तक न समझ कर उसमें जातमीयता स्थापन करने तथा कान-सी वस्तु कितनी उपयोगी है, केवल इसका विचार न कर उस वस्तु को भावुकता की फसौटी पर बसने की प्रकृति छायावाद कहलाती है। यह प्रकृति विस्तारोन्मुखी है। यह प्रकृति प्रकृति के वर्णों में आभा के मुक्त होने की प्रेरणा है। इस प्रकार छायावाद एक स्थिति है जिसमें हृदय का अन्त के साथ अपने मगध की अनुभूति होती है। भावुक हृदय को ज्ञाने की फर-फर में एक गीत उगाई देता है गुनाय में फूल में मानव शौर्य का विकास दिखाई देता है। पूर्ण की गुनहली विरणों, उसके लिए आशा का सौदा गली है। कृतियों स्थित कर प्रकृति के हृदय न उल्लस की प्रकृति परती है, दिनकण उसकी घेदा के साथ रोते दिखाई देते हैं, सगुण प्रकृति उस भावुक हृदय के साथ मगध उठने का प्रकृति दिखाई देता है, प्रकृति की कटी उठी मीमात्रों का पार कर वह प्रकृति में एकमात्रता का पूर्ण करन लगता है।

प्रकृति के साथ सामञ्जस्य स्थापित करने के साथ साथ वह प्रकृति और मनुष्य दोनों का ही एक इन्द्रियातीत सत्ता में समन्वय—संयोग—करना चाहता है, वह फल में अपने यौवन का ही प्रतिबिम्ब नहीं देखता वरन् वह विन्व और प्रतिबिम्ब के मूल स्रोत तक पहुँच कर उससे संबध स्थापित करने का इच्छा करता है।

जिस प्रकार प्रकृति की गोचर (इन्द्रियों द्वारा दिखाई देने वाली) सीमाओं को पार कर—उसमें दिखाई देने वाले इतिवृत्तात्मक भौतिकता की अपेक्षा एक अलौकिक अगोचर (इन्द्रियों से न दिखाई देने वाली) भावुकता के दर्शन करने की प्रवृत्ति को छायावाद कहते हैं, उसी प्रकार दृश्य-संबध के अतिरिक्त एक लोकोत्तर सत्ता के साथ संबध स्थापना की प्रवृत्ति को रहस्यवाद कहते हैं। छायावाद जिस प्रकार प्रकृति को मनुष्य के संबध में लाता है रहस्यवाद उसी प्रकार मनुष्य तथा मनुष्यों के अतिरिक्त शेष जगत् को उससे अतीत करने वाली श्रेष्ठतम सत्ता के साथ संबधित करता है। वसीम और असीम का एक प्रकार से समन्वय करता है छायावाद और रहस्यवाद दोनों ही दृश्य की सकुचित सीमाओं को पार करने को अग्रसर होते हैं। वर्तमान की अपूर्णता अस्थायित्व उसका मूनापन, मनुष्य को वर्तमान को अतीत करने वाली सत्ता की ओर ले जाता है। वह सत्ता चाहे अप ही आध्यात्मिक आनन्द में मिल जाय, चाहे वह अपने पृथक ईश्वर की हो। रहस्यवाद छायावाद के बाद की स्थिति है और अधिक मंगलमयी है। छायावाद में कवि सीमि चम्तुओं में असीम या आत्मा के दर्शन करता है, और रहस्य

बाद में असीम के साथ अपने सग्न की अनुभूति करता है। यह सम्मिलन तभी हो सकता है, जब आत्मा उसी मादक प्रेम का राग आलापने लग जिस से हृदय में एक बार हल-चल मच जाये और वह आराध्य में मिलने के लिए ऐसा विह्वल हो उठे जैसे—प्रियतमा अपने प्रेमी के लिए होती है। इसी कारण बड़े से बड़े रहस्यवादियों ने मान्य और अनन्य के संबन्ध को पति-पत्नी के संबन्ध द्वारा व्यक्त किया है जब तक संयोग नहीं होता तब तक आत्मा चिरहिणी बनकर परमात्मा के वियोग में तड़पा करती है। इस चिरहि में घामना का चित्र होते हुए भी प्रेम की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति होती है। चिरह वर्णन की अधिकता के कारण रहस्यवादी यंत्रणा अधिकतर बेदनापूर्ण होती है। इसमें वियोग अन्य चिह्नता के जितने दर्शन होते हैं उतने संयोग अन्य आह्लाद के नहीं। छायावादी और रहस्यवादी यदि अगत और अमान्य का चित्रण करने का प्रयत्न करते हैं, अतः उनकी यंत्रणा में अन्य प्रकाश का आधिक्य होता है।

कबीर हिन्दी के सर्वप्रथम रहस्यवादी कवि हैं। भारतीय अद्वैतवाद के मतानुसार वे मान्य को अनन्य का ही, जोय को परमात्मा का ही रूप मानते हैं। यह मान्य ही चिरहि रूप में स्वयं जगत् विद्यमान है। माया का परमात्मा में प्रकृत रूप उनको विद्यमान करना है, जब वह हट जाता है तो प्रकृत माया ही रहता है—

मैं स्वयं और तब मैं ही स्वयं

मेरी विलसि विरक्ति विरगाई है।

x

x

x

जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी
फटा कुंभ जल जलहि समाना, वह तत कथो गियानी ।

आत्मा को स्त्री और परमात्मा को पुरुष मानने की रहस्य-
वादी रूपना को व्यक्त करने वाली अनेक उक्तियाँ उनकी
कविता में मिलती हैं। जैसे—

“हरि मोर पीव म राम की बहुरिया”

“दुलहिन गावो मगलचार

हम घर आये हो राजा राम भरतार ।”

कहहि कपीर सब नारी राम की,

अविचल पुरुष भतार”

जब उपासक का लक्ष्य साकार होता है, तब उसकी उपा-
सना भी स्पष्ट होती है, पर जब उपासक आकार का परित्याग
कर अगोचर की ओर अग्रसर होता है, तब उसे रहस्यात्मक
शैली को ग्रहण करना पड़ता है। अतएव निर्गुण पथी कवियों
के काव्य में ही रहस्यवाद दिखाई देता है। सगुणोपासक
कवियों की कविता में रहस्यमय उक्ति नहीं होती। मीरा,
भारतेंदु हरिश्चन्द्र और सत्यनारायण तीनों ही साकारोपासक
हैं, अतः उनकी कविता में न छायावाद है और न रहस्यवाद।
पर इन में से मीरा की कविता में कुछ रहस्यवाद की उक्तियाँ
अवश्य मिलती हैं। जैसे—

त्रिकुटी महल में घना हे झरोखा, तहाँ से झाँकी लगाऊँ री
सुन्न महल में सुरति जगाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री ।

x

x

x

ऊँची अटरिया लाल किचड़ियाँ निरगुण सेज बिछी
पँचरंगी झालर सुभ सोहँ, फूलन फूल कली

x

x

x

सेज सुरमणा मीरा सोने सुभ हे आन चरो ।

पर ये उक्तियाँ मीरा में स्वाभाविक नहा, अपितु निर्गुण-सत कवियों की प्रचलित परंपरा का सन्कार मात्र है ।

० 'भारतेंदु ने हिन्दी कविता को बधा मुक्त किया'—इस कथन की विवेचना करो । २०

जिस हिन्दी कविता की श्रीगुंडि चन्द्र आदि वीर कवियों ने अपने मारु राग द्वारा, कबीर जैसे सन कवियों ने अपनी शान मयी और जीवन-दृष्टि वाणी द्वारा, जायसी जैसे प्रेम मार्गी कवियों ने अलौकिक की लक्ष्य करने वाले तौकिक काव्यनिय आर्याना द्वारा तथा मूर और तुलसी ने भावमयी भक्ति धारा द्वारा की थी, उसी हिन्दी-कविता की निर्मल या अंशमयी धारा को केशव, मतिराम, देव, आदि गीतिकाल के कवियों ने रीतिग्रन्थों के अधन में जकड़ दिया ।

यह अधन इतना मजबूत था कि बिना लक्षण भंग सिंगे कवि-कर्म अधूरा समझे जाने लगा । रीतिग्रन्थों को इतना महत्व दिया जाने लगा कि कवि कहलाने के लिए उमी परिपाटी पर ग्रथ रचना करना प्रायः अनिवार्य हो गया । इसमें शृंगाररस को ही प्रधानता मिली । भक्त कवियों का कृष्ण तथा शक्ति का ये लीला वर्णन में वामना क हीट्ट र प्रवेश किया । शृंगार के आलस्य नायक-नायिकाओं के अनक भेद जिनेद भिनेद का रसग्रन्थ प्रायः नायिका भेद के ही साथ थे । उदाहरण के लिए पद शृंगु वर्णन की प्रथा चली । मूर और तुलसीदास जैसे महाकवियों ने काव्य-कला का माधुर्य लम्बकर आर्यानों की सहायक समझ कर उपाय उपयोग किया था, पर रीतिग्रन्थ

के कवियों ने काव्य कला को ही साध्य समझा, और अलकारों को ही कविता का सांदर्य। उन्होंने काव्यकला को ही प्रधान मान कर शेष सब बातों की उपेक्षा की और मुक्तकों द्वारा एक एक अलकार, एक-एक नायिका अथवा एक-एक ऋतु का वर्णन किया। यहाँ तक कि भूषण जैसा निर्वृत्त और ओजस्वी कवि भी इस बंधन की उपेक्षा न कर सका उसे भी अलकारों के लक्षण देने पड़े जो अव्यरे और भद्दे होने के कारण उसकी कीर्ति चद्रमा में कलक के समान है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक इन्हीं रीतिग्रथों का तौता चलता रहा। सैंकड़ों बरसों से नायक-नायिकाओं के नखशिख वर्णन पर फिदा होने वाले कवियों को अपनी देश प्रेममयी कविता द्वारा मुक्तकेशिनी, शुभ्रवसना पर वशागता भारत माता की आधुनिक करुणोज्वल छवि के दर्शन करा कर तथा उसके पूर्व गोरव का स्मरण कराकर भारतेन्दु ने उन्हें नये पथ पर चलने का आदेश दिया। साथ ही प्रकृति-वर्णन, स्वदेश-प्रेम तथा हान्य, वीर, वीभत्स और करुण आदि अनेक रसों में अनूठी कविता कर दूसरे कवियों को भी नये भावों और नये विषयों पर कविता लिखने को प्रवृत्त किया। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी साहित्य को शताब्दियों से सड़ी हुई रीतिकाल की गद्दी गली से निकाल कर शुद्ध तथा जीवन-प्रद वायु में विचरण करने का पथ प्रदर्शन करा कर हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विच्छेद पड़ रहा था, उसे दूर किया। फलतः हम यह कह सकते हैं कि प्राचीन परिपाटियों की जजीरों को तोड़ कर भारतेन्दु ने हिन्दी कविता को बंधन-मुक्त किया।

८. मैथिलीशरण गुप्त और उदयशंकर भट्ट की कविता में समता

अथवा विषमता की बातें उठाकर अपना समर्थन या कि इनमें म
 क्रिपको नुम अधिक प्य र करते हैं और क्यों ?

मैथिलीशरण जी गुप्त युग-निर्माण वाले कवि हैं, उन्होंने
 हिन्दी काव्य ज्ञान में आमूलचल युगान्तर उपस्थित कर
 दिया है, उन्होंने हिन्दी को उस समय से सजाना प्रारम्भ किया
 जिस समय ब्रजभाषा और राजी बोली में पिरों उचल रहा था।
 श्रीवर पाठक और नाथूराम शर्मा शंकर जैसे प्रतिभाशाली कवि
 भी कभी ब्रजभाषा के ओर झुकते थे तो कभी राजी बोली की
 ओर। उस समय से गुप्त जी न राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत हो
 राष्ट्रवाणी को राष्ट्र की बोली - राजी बोली - में व्यक्त करना
 प्रारम्भ किया। वर्षों के अव्यवसाय और अनवरत लक्ष्म्या व
 बाद वे युगनिर्माण कर सके हैं और राष्ट्र-कवि के पद को पुरो
 भित कर पाये हैं। गुप्त जी की कविता में उपदेश का लक्ष्य
 मर्म-स्पर्शिता, तल्लीनता आदि अनेक गुण विद्यमान रहते हैं।
 इनकी रचनाओं में सर्व साधारण में राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत
 होती हैं, प्राचीन सभ्यता के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है धार्मिक
 प्रवृत्ति विकसित होती है और अत्यधिक दार्शनिक मिश्रण।
 प्रसाद गुण का उनमें सदा एक सा प्रवाह रहा है। इस परि
 पाक उनकी काव्य शैली का प्रधान गुण है। समय के साथ
 साथ उनकी रचनाओं में सरसता और मासिकता की भाषा
 बढ़ती गई है। वे लोग भा. जी द्वारा भारत भरती की
 साधारण जनता की राष्ट्रीय भाषा की जागरित करने वाले
 एकमात्र कवि हैं, 'माधन' और 'सदाशिव' आदि
 उनकी नयी रचनाओं की सरसता और भाषा की रचना की
 संरक्षण उमर रहे हैं। गुप्त जी की कविता की

व्याकरण-समत और विशुद्ध होती हैं और शब्द-योजना सुग-
 ङित तथा परिमार्जित। उन्में प्रयास नाम-मात्र का नहीं मालूम
 होता। स्पष्ट अभिव्यजना में तो उनका कोई सानी नहीं है।
 इन्हीं कारणों से उनकी कविताएँ सपूर्ण भारत में आदर के
 नाय पढी जाती हैं, और खडी बोली में जितनी उनकी कविता-
 ओं का आदर हुआ है, जितनी उनकी रचनाएँ सर्वप्रिय हुई हैं
 उतनी अन्य किसी की नहीं हुई। वे इस समय के सब से
 अधिक यशस्वी एवं लोक-प्रिय कवि हैं।

श्री उदयशंकर जी भट्ट ने कुछ थोड़े वर्षों से ही हिन्दी
 में लिखना प्रारंभ किया है। वे हिन्दी और संस्कृत के
 विद्वान हैं। उनकी तक्षशिला आदि प्रारंभिक रचनाओं
 में कवित्व के स्थान पर पांडित्य ही अधिक दिखाई
 देता था। उसकी भाषा इतनी जटिल और संस्कृतमयी
 थी कि कई स्थानों में वह केशव की कठिनता से टक्कर
 खाती थी। परन्तु युगप्रवाह के अनुसार उनकी कविता ने
 भी रूप बदला है, संस्कृत के कठिन शब्दों के स्थान पर जहाँ
 उसमें अब सहल उर्दू शब्दों का प्रयोग सफलता के साथ होने
 लगा है वहाँ सर्वसाधारण के हृदय को व्याकुल रखने वाला
 असतोष अब उनकी कविताओं में हाहाकार करने लगा है।
 आजकल के छायावादी कहलाने वाले कवियों की तरह
 उसमें भी उलझी हुई पीडा है, कसक और वेदना है, जो
 पढने वाले को शान्ति देने के बजाय और अशान्त कर देती
 है। साथ ही सकेतों में अस्पष्टता है, और भाव भी उलझे हुए
 हैं। भट्ट जी की वही पुस्तकें अधिक प्रचलित हुई हैं, जो पाठ
 विधि में स्थान पा सकी हैं।

गुप्त जी और भट्टजी म डानो त्रिपमताआ के होने हुए भी अगर कोई समता कही जा सकती है तो वह यही कि दोनों एक ही पथ के पथिक हैं, एक ही गगन को प्रकाशित करते हैं। अगर गुप्त जी आधुनिक काव्य गगन के पूर्णोदित शत्रु हैं तो भट्ट जी अभी क्षीण ज्योति से टिमटिमाने वाले नितारे हैं। गुप्तजी जिस काव्य-प्रासाद की अन्तिम सीढ़ी पर पहुँच चुके हैं भट्ट जी ने अभी उस की सीढ़ी पर पग रखा है।

समाज चढ़े हुआँ को ही पूजता है, अतः हम भी गुप्त जी को ही अधिक पसन्द करते हैं।

० निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो—

हिमचूड़ा, सोपान, प्राण, परिधि, विजन, अनुसंधान, भाषा, विभाग, घनसार, पारावार, मन्दन, रश्मि, भाँति, आवृत्त, प्रभूत, कृष्ण, अदम्य, द्रितित्त, मेहर, मिस, गोटी, कात और गोन। ३०

हिमचूड़ा = रफाली चोटो। सोपान = सोढ़ो। प्राण = रक्षा। परिधि = घेरा। विजन = जनरहित गकान्त। अनुसंधान = गोन। आलोक = प्रकाश। निर्वाण = मुक्ति। घनसार = कपूर। पारावार = समुद्र। मन्दन = गेना विलाप। रश्मि = किरण। अनिल = वायु। अनुसंधान = निदाव। प्रभूत = गृह। कृष्ण = कस्तूर, दुपट्टा। अदम्य = महार अक्षयि। भाँति = रश्मि की पहुँच पर वह गृत्ताकार ग्यान जाँ आकाश ओर प्रथी टोरा मिलने जान पडत हैं। मेहर = हवा, दया। मिस = रहाना। गोटी = पुरी। कौन = गृह मार। गोन = हवा, समुद्र।

प्रश्नपत्र ३

१ नीचे लिखे प्रथम प्रश्न के क-ख भागों का और द्वितीय प्रश्न के च उ ज भागों का सरल हिन्दी में अर्थ लिखो —

(क) काँ०-नहीं चन्द्रगुप्त, मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है। यहाँ के दयामल कुक्ष, घने जंगल, सरिताओं की माला पहने हुए शैलश्रेणी, हरी-भरी वर्षा, गर्मी की चान्दनी शीत काल की धूप, औ भोले कृपक तथा सरल कृपक 'बालिकायें', बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों की जीवित प्रतिमायें हैं। यह स्वर्ग का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रगभूमि भारतभूमि क्या मुलाई जा सकती है? कदापि नहीं। अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि हैं, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है। १२

(ख) वेदवती—सुनो—आज सात दिन हुए कि इकट्ठी हुई सब तपोवन-वासिनियों ने भगवान् वाल्मीकि से प्रार्थना की कि "आज-कल महाराज रामचन्द्र जी के यहाँ जाये रहने के कारण आश्रम की इस पुष्करिणी पर सदा ही सत्र तरह के लोगों की दृष्टि पड़ती रहती है इस लिये कमल फूल तोटने तथा स्नानादि कार्य के लिये यह हमारे योग्य नहीं रही" तब ध्यान से निश्चल नेत्रवाले महर्षि ने थोड़ी देर तक कुछ सोचकर कहा "इस पुष्करिणी पर आई स्त्रियों पुरुषों के लिये अदृश्य रहेंगे" तब श्रीराम की दृष्टि से बची हुई सीता सारा दिन इस पुष्करिणी के तट पर ही व्यतीत करती है। १३

२ (घ) निकल मत वाहर टुर्ल आठ

लगेगा तुझे हसा का दांत ।

शारद नीरद माला के बीच

तडप ले चपला सी भय भीत ॥

६

(३) भक्ति कीतिशाली राम यह जा सत्य की हा मूर्ति है,

सीता सती यह शीलता का पुण्य मानो स्मृति है ।

निज पूज्य-जन सदा परायण तो निरन्तर सिद्ध है,

यह भक्त लक्ष्मण भक्ति का मानो स्वल्प प्रतिद है ॥ ९

(ज) सजल दगों स मुचका प्राणों का पा जो दान,

उसकी भक्ति और धरा का स्वता है मैं मा ।

जिमकी दया-पूर्ण सेवा में हाता नही विशार

विश्वर प्रेम उगकर उमका लेता है मैं भार ॥ ९

पहले प्रश्न के (क) और (ख) भाग तथा दूसरे प्रश्न का

(च) भाग चन्द्रगुप्त और सुन्दमाला नामक नाटकों में से है जो अब पाठविधि में नहीं हैं, इन उत्तर नहीं दिया गया ।

(३) राम जो अत्यधिक यश वाले हैं और जो सत्य की मूर्ति हैं, सती सीता जो शील की माताँ परिष्व स्मृति हैं - जो मानों उत्तम आचरण की प्रेरणा हैं, तथा लक्ष्मण जो अपने पुण्य (भाई और भाभी) की स्वया म लगा हुआ हैं, जो सिद्ध (यति) हैं और भक्ति का मानो स्वल्प है, य सीता इस आश्रम में रहते हैं ।

(ज) जो अधपूर्ण नेत्रों में सुन्द घाणों का दात देता है उसकी भक्ति और धरा का मैं मदा मात स्वता है । । उनकी दयापूर्ण सेवा में काह जातया नहीं हीनो । उमक हाटल सेम की देसकर में उमक बाध का नाह अगरे अगरे में सेव है ।

३ नीचे लिखे चार वाक्यों का ही तात्पर्य स्फुट करो और प्रत्येक वाक्य का कौन वक्ता और कौन श्रोता है लिखो —

(१) पित्रियों की सीमा है परन्तु अभिलाषाओं को नहीं ।

(२) उसका पथ कुटिल है, गन्धर्व नगर की-सी सफलता उसे अपने पीछे दौड़ा रही है ।

(३) मेरा भाग्य ही छोटा है जो सहस्राजुन के समान मेरी हजार भुजाएँ न हूँ ।

(४) इन कुमारों का सारा वृत्तान्त क्या हमारे कुल की घटनाओं से मेल नहीं खाता ।

(५) उसके अधिकारी का निर्वाचन खड़ा करेगा ।

(६), (७), (८), (९) भाग चन्द्रगुप्त और कुन्दमाला नामक नाटकों में से हैं, अतः उनका उत्तर नहीं दिया गया ।

(६) मूर्ति-मंदिर का सेवक सुधाकार अपना काम समाप्त कर सो रहा था, इतने में एक सिपाही आकर उसे मारने लगता है । तब सुधाकार कहता है मेरा भाग्य ही खराब है जो सहस्राजुन कार्तिकेय के समान मेरी हजार भुजाएँ नहीं हैं । (यदि हजार भुजाएँ होती तो मैं इस मारने वाले सिपाही को मृद पीट सकता) ।

४ अलका और कार्नेलिया के चरित्रों अथवा सोमदेव और जयमल के चरित्रों की तुलनात्मक विवेचना करो ।

अलका और कार्नेलिया सर्वधी प्रश्न चन्द्रगुप्त नाटक में से है, जो अत्र पाठविधि में नहीं है अतः उत्तर नहीं दिया गया ।

सोमदेव, पञ्जाब के एक छोटे में राजा का पुत्र है, उसका पिता मुसलमान अमीर के साथ युद्ध करते हुए मारा जाता है । पिता के बाद सोमदेव को उस अमीर से मुकाबला करना

पडता है। सोमदेव और उसके साथी प्रीत रात्रि अमा से सामने फिर झुकाना स्वीकृत नहीं करत, और युद्ध जारी रखना चाहते हैं। पर सोमदेव की मांग गनी गलत्यों शत्रु को सामने की लड़ाई में जीतना असम्भव समझती है। वह कॉटे को कॉटे से निकालना चाहती है। उनी ने मांग उन करना चाहती है। अनएव वह सोमदेव को सामने की लड़ाई से रोक देती है, आर स्वयं गायिका का रूप धार कर शत्रु के गोमे में उस समय पहुँचती है, जय कि यहाँ प्रिय की मृत्तों में जन्म हो रहा था। अमीर उसके रूप को देख, उसके गाने को सुन तथा मदिरा के पीने में मद भरा हो जाता है। उस समय मौका पाकर रानी उसकी छाती में पट्टा बाँध कर उसका अंत कर देती है। इस समय सोमदेव मुखमंत्रियों के गोमों को घेर कर कश्यपों का मार डालने के, करमों को बाँध लेते हैं। इस तरह शत्रु का नाश कर विजय प्राप्त करते हैं।

जयमता त्रिभूट दुर्ग का अधिपति है। त्रिभूट का शासन अकर ने गढ़ी भारी सेवा के साथ त्रिभूट का धर्म हुआ था। विजय की कोई आशा न थी। उस के साथ त्रिभूट का महागंगा दुर्ग छोड़ कर अर्चना की दुर्ग में गंगा गये थे। दुर्ग की रक्षा का भार जयमल पर था पडा। अकर ने सधि का पैगाम भेजा पर आज पर मिट्टा वाले शत्रुओं और न उने दुहरा दिया। अकर वीरगत मागिह दारि अनेक शत्रु शत्रु सेनापतियों और अकर पर माग दुर्ग का पने पडा था। मोर मुत्त का प्रारंभ हुए था म नाह हो कर से।

जयमल दिन के ... दुर्ग की रक्षा ... दुर्ग कर

रक्षा। इतने में उसकी पत्नी उमसे मुगलों के डेरे में जाने की अनुमति लेन आई। देश के हित में उसने इसकी भी स्वीकृति दे दी। रानी उधर जा न पाई थी कि इसी बीच युद्ध-भूमि में अकबर की गोली से जयमल का अंत हो जाता है। पर मरने समय भी उसे देश की रक्षा का ध्यान है।

सोमदेवसिंह छोटा सा जागीरदार है, उसका मुकाबिला एक साधारण मुसलमान अमीर से है। पिता के मरने तक उसे युद्ध का भार उठाना नहीं पडा। पिता की मृत्यु पर वह शोक से विह्वल हो जाता है, उसे कुछ सूझना नहीं। वह युद्ध का निश्चय करता है। पर माता की युक्ति से उसे युद्ध में भाग नहीं लेना पडता। उसकी धीरता का परिचय इस छोटे से नाटक में नहीं मिलता। नायक हीन असावधान मुगल-सेना पर ही उसे आक्रमण करना होता है और उस वह भाग देता है। पर जयमल पर सर्व-श्रेष्ठ दुर्ग चित्तौडगढ़ का भार है। मुकाबिला भी भारत-सम्राट् अकबर से है। राणा युद्ध-क्षेत्र छोड़ चुके थे, वह भी छोड़ सकता था या अकबर से सधि कर सकता था, पर वह सच्चा राजपूत था। आगे पर मर मिटने वाला था। छ हफ्ते तक उसने विशाल मुगल सेना को रोक कर अपनी वीरता और अपनी रण-कुशलता का परिचय दिया। अंत में लड़ते-लड़ते वह धीर गति को प्राप्त हुआ। इस प्रकार जयमल का चरित्र सोमदेव से कहीं अधिक उज्ज्वल है।

• (त) सीता-हरण के लिए रावण का संन्यासी वेप में आना किप अभिप्राय से था ?

(घ) चाणक्य की सुवासिनी ने अति प्रीति होने पर भी वस्त्र व्याह क्यों नहीं हुआ ?

(द) वाटमाकि के आश्रम में पुष्करिणी में गम को सीता का छाया मात्र नीलता ही भीता नहीं दीयता इसका क्या कारण है ?

(ध) राज्यवर्धन की हत्या किसने की और उस दण्डित नष्ट क्या नहीं दिया गया ? विचार कर लो ।

(न) रावण जानता था कि रामचंद्र से प्रत्यक्ष युद्ध में विजय पाना कठिन था । साथ ही उसे यह भी पता था कि इस निर्जन वन में राम सीता को कभी अकेला छोड़ कर नहीं जायेंगे, फिर साखी सीता के पास जोर किमी वर में वह पहुँच भी न सकता था । ऐसी अवस्था में वह छल के द्वारा ही सीता हरण में समर्थ हो सकता था । इसी कारण वह सन्यासी का वेष धारण करके आया था । उस मन्त्र सन्यासी समझ कर ही रामचंद्र उसको सेवा के लिए सीता को जानना दकर और सीता को अकेला उसके पास छोड़ कर चला गये थे ।

(थ) तथा (द) भाग चन्द्रगुप्त और सुन्दरमाता में नर अन्तः इनका उत्तर नहीं दिया गया ।

(घ) राज्यवर्धन की हत्या शक्तिभिक्षु जायया विष्णुभद्र ने की थी । जब वह पकड़ा गया और महागण दरपदार्थन से सामने पेश किया गया तब राज्यधी और नरगाद दरपदार्थन युद्ध की प्रतिमा को सम्भुग गये जबतक एक एक पद धारण कर सर्वमन्त्र दात कर रहे थे । राज्यधी उस दैत्य ने ही पकड़ा गया कि वह भिक्षु क रूप में उमर सामान्य रूप को जाना था । राज्यधी उस पुण्य के मतलब पद का गणना पद म म लेना चाहती थी, जिसमें प्रतिदिन का भाग स्वीकार था । शक्ति

शान्ति शोग क्षमा द्वारा वह शत्रु पर विजय पाना चाहती श
अतः उसने ऐसे शुभ अवसर पर उसे प्राणदान देने के लि
उपने भाइ हर्षवर्द्धन से कहा, जिसके अनुसार ही उसने क्रिय
इस प्रकार यद्यपि उस दुष्ट को लोक में प्रचलित उचित
तो नहीं दिया, पर उसे हमेशा के लिए चश में कर लि
गया ।

६ तींचे लिंये शब्दों के अर्थ सरल हिन्दी के पर्याय देकर स्पष्ट क
प्रतिपत्ति, विभूति, परिपद्, पितृव्य, सूत्रपात, कारागार, मुक्ति
जहूर, महमद दम्मामा ।

प्रतिपत्ति—ज्ञान, अनुमान । विभूति—ऐश्वर्य । परिपद्
सभा । पितृव्य—चाचा । सूत्रपात—प्रारम्भ । कारागार—उ
राना । जहूर—प्रकाशन उत्पन्न या प्रारम्भ होना । मकसद
उद्देश्य । दम्मामा—दमामा, नगाडा, उका ।

७ तींचे लिंये पात्रों का पूर्ण परिचय दो और इनमें से कौन
नाटक में आया है यह भी सावधानी से लिंयो —

वेदवती, दादाठापुर, विहारी, सूर्यदेव, सलायत, सुमन्त्र, वि
कात्यायन, शक्रदार, मिल्यूकस ।

वेदवती, कात्यायन, शक्रदार, और सित्यूकस ये च
पात्र चन्द्रगुप्त तथा कुन्दमाला नामक नाटकों से हैं, जो
पाठविधि में नहीं हैं, अतः इनका परिचय नहीं दिया गया

दादाठापुर अचलायतन नामक नगरी के प्रतिष्ठा
और यहाँ के निवासिन्हा के गुरुदेव थे । पर उनके यहाँ से
आने पर यहाँ संकीर्णता का राज्य हो गया । लोग लकीर
ककीर हो गये । नये विचारों के प्रकाश को रोकने के लिए
पट्टी यष्टी दीवारों बनाई गई । दादाठापुर उम अचलायतन

बाहर रहने वाली अचूत जातया म गहन लग गय थे। व उनमें से ही एक बन गय थे। युनक जात भी उन का गुरुदेव कहती थी। उनके विचार बहुत सतत थे। अतम अचता-यतन से बहिष्कृत कुट नि गानिया क साथ फिर अचतायता पहुँचे। उनके आते ही फिर मकीर्णता की दीवार टूट गए पाप प्रायश्चित्त का प्रपञ्च टूट गया, और नय विचारों का उजैला सव तरफ छा गया। दादाशुकर का उरलेग अचता-यतन नामक नाटक में ह।

बिहारी महाकजूस सेठ दोलतराम का विपत्नीक गणक था। सेठ दोलतराम न गुरुद खाना था न अपनी पत्नी और सतान को खिलाता था। उसकी मद की दर बहुत अधिक है। गरीब अमाभियों के पर गान विद्या लेना आदि उसके प्रति दिन के काम थे। दोलतराम को शिक्षा देने के निय बिहारी एक नाटक रचता है। एक बडा भारी पड्यत्र रग रग पर दोलतराम को विद्याम दिलाता है कि दोलतराम मर गया। उसके मरने के गान लोग सितन गुरुद हाते क रमा र रकटा हुआ उसका रूपया किस तरह उसके पेट और गुरुद विष्णेश्वर उद्यापेने, इसका नाटक पर दोलतराम का गीत की दिव्या देता है, चित्तमें दोलतराम का शिक्षा मिल जाती है। यह पात्र 'शुभ क घन धूम' नामक नाटक में जाता है।

सूर्यदेव राजार का एक छोटा-सा राजा था जिस पर एक मुसलमान अमीर ने जाममण किया था। जमीर न एक गिनत को सोते हुए हिन्दुओं पर जातपा किया, और राजा को कैद कर एक पिंजड़े में बंद कर दिया। राजा से कहा कि कि वह मुसलमान हो जाय ता पर राजा दिया जायगा।

राजा ने यह भुन पास खड़े अमीर के मुँह पर थूक दिया, और कोपवदन कहा कि परवश होने पर भी क्षत्रिय प्राण के भय का ईश्वरता नहीं स्वीकार करता। फिर पिंजड़े की लोहे की छड़ को तोड़ कर राजा ने उसी छड़ से कइयों को मारा और साथ ही लड़ते लड़ते वहाँ मारा गया।

मलावतर्वाँ चित्तौड़ के आक्रमण में अफ़्जर का सेनापति था जिम्मे जयमल के उत्तराधिकारी फतहसिंह के साथ युद्ध किया था, आर जो फतहसिंह के युद्ध-कौशल को देख कर दग रह गया था ओर बड़ी मुश्किल से फतहसिंह पर फतह पा सका था। पीछे जब युद्ध करते करते चित्तौड़ की रानी पकड़ी गई थी, तो यही पहरे पर था। रानी ने इसे बादशाह को बुलाने का आदेश दिया था, इतने में स्वयं बादशाह पहुँच गये थे। इसका उल्लेख 'उत्सर्ग' नामक नाटक में है।

सुमंत्र महाराज दशरथ का साथी और मंत्री था। वही राम, सीता और लक्ष्मण को वन में छोड़ कर आया था, वही भरत को राम के पास ले गया था। महाराज दशरथ की मृत्यु के बाद वह भरत की सेवा करता रहा। महाराज दशरथ का समकालीन होने के कारण सारे रघुवंशी उसका आदर करते थे। अतमें उसने ही भरत को सीता-हरण का समाचार लाकर तथा कैकेयी के कहने से दशरथ के शाप का वृत्तान्त सुनाया था, जिसे सुनकर भरत को विश्वास हो गया था कि उसकी माता कैकेयी का कोई दोष न था।

सुमंत्र का उल्लेख प्रतिमा नाटक में आना है।

विजया कैकेयी की परिचारिका है। कैकेयी ने राज्य के

लोभ से राम को वन भिजा गया फलत यह राजा दशरथ की मृत्यु का कारण हुई थी अन्य प्रजातनों की तरह कृत्या के इस कृत्य को वह वृत्त भी नमस्सनी है।

विजया प्रतिमा नाटक आती है।

अभिषेक नाटक की कुर्जी

(ले०—ल० रामरुण गानी, हिन्दी प्रभाकर)

इसमें अभिषेक नाटक के अन्त का कथा का सारांश, अन्तिम शब्दों और मंत्र पद्या के अर्थ, प्रधान पात्रों का चरित्र चित्रण और नाटक-सम्बन्धी परिभाषाएँ दी गई हैं। पुस्तक परत सम्बन्धी रामरुण शास्त्री हिन्दी प्रभाकर तथा हिन्दी भरण का नाम ध्यान से देना लें। मूल्य १)३

हिन्दी-भूषण-निबन्धमाला

(तीसरा सम्बरण)

ले०—श्री शत्रुघ्नस्य सख्येता, साहित्यपरतन, संविद्या कालिका विश्वविद्यालय
 इस पुस्तक में हिन्दी भूषण परिभाषा में विस्तार १०-१२ पृष्ठों में भाष्य रूप लक्षण ४५ विषयों पर विस्तृत चित्रण और लक्षण-माला इनमें ही गाये (Outline) दिये गये हैं। अन्तिम २५ पृष्ठों पर १०० से भी अधिक और मूल्य १)३ है।
 निबन्ध के पत्र में ही सबसे अधिक विवरण मिलेगा और है, इस लिए इसकी एक प्रति सक्ताय खा लिये।

प्रश्नपत्र ४

१ विदुला ने अपने परास्त पुत्र संजय को युद्ध के लिये कैसे उद्यत किया और उसका क्या फल हुआ ? यह "प्रसंग" किसने किसको क्यों सुनाया ? यह भी स्पष्ट करो ।

विदुला ने अपने परास्त पुत्र संजय को रण छोड़ कर भाग आने पर बहुत धिक्कारा और उसे पुन रण में जाने के लिए प्रेरित किया । क्रुद्ध हो विदुला ने कहा कि तूने रण से भाग कर अपने कुल को कलक लगा दिया है । युद्ध से कायरो के समान भाग आने के स्थान पर यदि तू रण क्षेत्र में ही मर जाता तो मेरे लिए अधिक प्रसन्नता की बात होती । तू पुरुष नहीं नपुंसक है । साँप के मुँह में हाथ डाल कर उसके दाँत निकालने के प्रयत्न में प्राण दे देना अच्छा है पर कायर की तरह लैटे लैटे मरना अच्छा नहीं । जिसके पराक्रम की गाथा सुनकर शत्रु काँप नहीं उठते, उसकी गणना न स्त्रियों में हो सकती है न पुरुषों में । तू रूप, गुण, विद्या, यश और प्रतिष्ठा सं युक्त नवयुवक है, औरो को अधीन होकर जीना तेरे लिए उचित नहीं । यश ही जीवन है और अपयश ही मृत्यु । इसलिए, उठ, जा, युद्ध कर । जब तू सिंधुराज का सर्वनाश कर विजय प्राप्त कर लेगा, तब मैं तेरा अभिनंदन करूँगी, तुझे आलिंगन कर मेरी छाती ठदी होगी । सेना आदि की कमी की चिंता न कर, चलशालियों का शौर्य ही उन्हें विजय दिलाता है । जब शत्रु समझ लेता है

कि मेरा विपक्षी मग्ने मार्गने का प्रस्तुत है नर वह स्वयं भय-भीत हो जाता है।

संजय क्षणिक कायरता-वश शत्रु के पराजय को दृग्गन् भयभीत हो गया था। माता के उत्साह वर्धक प्रवृत्ति को सुन कर वह लड़ने को तैयार हो गया, और अंत में शत्रु पर आक्रमण कर उसने विजय प्राप्त की।

यह प्रसंग माता कुन्ती ने कृष्ण को इमलिये सुनाया था कि युधिष्ठिर में भी युद्ध के लिए जोश पैदा हो सके। और यह संधि का विचार ठाँट युद्ध के लिए प्रेरित हो सके, और क्षत्र धर्म को पहचान कर, मोह का परित्याग कर यश के मार्ग को स्वीकार करे।

० शिक्षा किसे कहते हैं ? उसका प्रधान चार भागों में से हैं ?
उनका पुस्तक के आधार पर विस्तार से वर्णन करें। १०

शिक्षा का जिसका जैसा उद्देश्य होता है, वह उसकी परिभाषा भी वैसे ही करता है। साधारणतया शिक्षा का अर्थ आजकल अक्षर ज्ञान से लिया जा रहा है, जो जितना पढ़ा लिखा है, वह उनका ही शिक्षित कहाना है। पर वास्तव में उन नये सम्बन्धों का जिन के ज्ञान मनुष्य की सत्तावधिक प्रवृत्तियाँ और शक्तियों को पूर्ण रूप से विकसित कर मनुष्य को जीवन मंत्राम के योग्य बनाया जाता है, शिक्षा कहने में, या घरेलू ज्ञान अथवा व्यवहार जो व्यक्ति को अपने लिए अपने कुटुंब के लिए अपने समाज के लिए सहायक शक्ति के उपयोगी बना सके और समाज में उसे उपयोगी बना सके शिक्षा कहाना है।

शिक्षा का मूल में पहला उद्देश्य है (परीक्षा) है।

प्रांश लोग इसी उद्देश्य को सामने रखकर ही शिक्षा प्राप्त करते हैं, और जो शिक्षा धन कमाने में सबसे अधिक उपयोगिता दे सकती है, इस आदर्श को मानने वाले उसी शिक्षा को सर्वोत्तम समझते हैं। यह आदर्श नितान्त स्वार्थपूर्ण होता है। इस आदर्श पर चलने वालों में सामाजिक मन्त्रुणों का विकास नहीं होता।

शिक्षा का दूसरा उद्देश्य संस्कारिता है। संस्कारिता का अर्थ है हर तरह की कुलीनता। आजकल संस्कारिता का अर्थ कलिन कलाओं—संगीत, चित्र, काव्य आदि—में दिलचस्पी लेना या उनमें कुशलता प्राप्त करना समझा जाता है। जब मनुष्य खाने-पीने की चिंता से निवृत्त होता है, उसके पास पर्याप्त धन होता है, तब ही उसे यह उद्देश्य मूल्यता है। अतएव साधारण जन का यद्यपि यह उद्देश्य नहीं हो सकता पर यह उद्देश्य धनवालों को कई चार कुमार्ग में जाने में शोभता है। तथा संस्कारिता के द्वारा मध्यम श्रेणी के गुणवान लोगों और अमीर वर्ग के कला-रसिक लोगों के बीच एक सुंदर संबंध स्थापित होता है।

शिक्षा का तीसरा उद्देश्य है—सत्ता, सामर्थ्य और ऐश्वर्य। इस उद्देश्य को मानने वालों की आँखें सदा बड़प्पन और ऐश्वर्य की ओर रहती हैं। महत्त्वाकांक्षा, अविरत उद्योग, हर समय चैतन्य रहना इस आदर्श के मुख्य-लक्षण हैं। पहले और तीसरे उद्देश्य में एक समान स्वार्थ भावना रहती है। दोनों ही के लिए शिक्षा एक साधन है, संस्कारितावादी यह कहते हैं कि शिक्षा तो शिक्षा के लिए होनी चाहिए।

शिक्षा का चौथा आदर्श सेवा है। जीवन का सर्वोच्च

जानन्द सेवा में है। इस आदर्श का धनी साया जुटाता शक्ति का सग्रह करता, सत्ता का अनुभव करता तथा प्रतिष्ठा पाता है मगर उन्हें उसी हद तक दृष्ट मानना है जब तक व उसके सेवा कार्य में मदद पहुँचाते ह। वह जानता है कि साधन की अत्यधिकता सेवा कार्य में सत्र से अधिक पात्रक है, उसे यह भी विश्वास होता है कि किसी व्यक्ति में यदि सत्य संकल्प और अविरत एकाग्र प्रयत्न हो तो साधन, सत्ता, सम्कारिता ओर तमाम चीजें अपन आप उसके पास चली आयेगी। सेवा के आदर्श का पुजारी जब शिक्षा का काम तैयार करता है, तो बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से विचार करके, ऐसी कोई वस्तु नृष्टती नहीं जो आवश्यक हो, ऐसी फाट चाज ध्यान बँटाती नहीं जा अनावश्यक हो।

३ (क) श्रीराम को वन में भरत क्यों मिला ? उन्होंने भरत को क्यों मान्यता दी ? क्या राम वनवास में भरत का भी हाथ था, या नहीं ? अपनी मरल भाषा में लिखो।

(ख) वाल्मीकि को राम ने सुगन्ध क्यों मारा ? वाल्मीकि को क्या भी शोच करो।

(क) श्रीराम को वन में भरत विप्रहृष्ट में मिले थे। विप्रहृष्टता से क्रान्त तथा अपने को पिता को मृत्यु तथा बाद के वनवास का कारण समझते वाला भरत ने जब राम से शांति याचिका ली तो राम ने राज्य भाग संभालना को कहा पर रामचन्द्र ने उसे यह बात पर समझाया कि यदि मैं सुगन्ध कहने से अयोध्या को लौट पाऊँ और अपनी प्रतिष्ठा पूरी न करूँ तो मुझे मृत्यु अधर्मान्ना है। यदि मैं मर्यादा का तो मेरी शरणावृत्ति सभी मनमाती करेंगे। साथ ही शोच है।

सत्य से नरु कर कुड नहीं । जिस सत्य के पीछे पिताजी ने अपने प्राण उड्ड दिये, उसी सत्य से मैं हट जाऊँ, यह उचित नहीं, पिताजी की आज्ञा पालना हमारा धर्म है ।

अतः पर भी जब भरत न माने तो भरत की प्रार्थना पर रामचन्द्र ने उसे अपनी खडाऊँ दे दीं और वचन दिया कि नित्य दिन चोदह वर्ष व्यतीत होंगे ठीक उसी दिन मैं अयोध्या में पहुँच जाऊँगा । इस प्रकार रामचन्द्र ने भरत को सांत्वना दी ।

राम के वनवास का समाचार पाकर भरत की जो दशा हुई, उसने माता की जो भर्त्सना की, कोशल्या आदि माताओं के सामने जो शपथें खाई, स्वयं राज्य पर बैठने से जो इनकार किया, रामचन्द्र को वन से लौटाने का जो प्रयत्न किया, और उनके न मानने पर चौदह वर्ष तक जो तपस्वी जीवन व्यतीत किया, उन सबको देखते हुए यह सदेह करना भी पाप है कि राम को वन भेजने में भरत का हाथ था । अतः हम यही कहेंगे कि राम को वन भेजने में भरत का हाथ न था, वरन् उसे इसका स्वप्न में भी खयाल न था ।

(ख) वाली के बारे में प्रसिद्ध था कि जो उसके सामने लडन को जाता था उसका आधा वल उसे मिल जाता था । रामचन्द्र इस बात को जानते थे, अतः रामचन्द्र ने उसे छिप कर मारा था । जब वाली ने उन से पूछा कि रामचन्द्र जी ने उसे छिपकर क्यों मारा, तो राम ने जवाब दिया था—
“छोटे भाई की स्त्री, बहन और पुत्र की स्त्री ये सब कन्याओं के समान हैं । इन्हें जो कुदृष्टि से देखे उसे मारने में कुछ दोष नहीं होता ।”

वाली के बल के बारे में कहा जाता है कि वह उगो किसी से न हारा था। उसकी नदा का प्रहार उड़ा में उड़ा शूरवीर भी नहीं सह सकता था। गोलचक्र में खड़े सात ताल के पेड़ा को जब वह एक एक को या एक साथ सब ना हिलाता था तो उनके पत्ते झड़ जाते थे।

१२ निम्नलिखित पद्यों के आधार पर चूड़ावत और क्षाण रातो का इतिहास लिखो —

(ख) प्राण प्रिया को मांसु हँ परम प्रेम उपहार
चल्यौ हुलसि रण मत्त है चूड़ावत सरदार।

(ग) पायी प्रणय प्रमाण में निज प्यारी प्रिय सीम
चूड़ावत उर धारि सो है ही सम गिराम।

रूपनगर की अद्वितीय सुदरी राजकुमारी प्रभाषी की साधर्य-गाथा सुन औरंगजेब ने रूपनगर के राजा के पास सट्टर भेजा कि राजकुमारी को तत्क्षण दिल्ली भेज दिया जाय। छोटी सी रियासत का राजा दिल्ली के सम्राट का आज्ञा का उल्लंघन कर कर सकता था। पर एह राजपूतनी एक विधर्मी के साथ विवाह करने को कैसे राजी हो सकती थी। उग्रा मेवाड़ के राजा को पत्र द्वारा वरण किया। राजा जानते थे कि जा राजपूत कन्या उन्हें घर चुकी है उसकी रक्षा न करना अपमानों का सिंघ पर बलक लगाना है। दूसरी ओर सम्राट औरंगजेब के मुकाबले की तथा विवाह की पेशी से पहले प्रभाषी का जाने की बात थी। निश्चय हुआ कि राजा कुछ नुस्खा हर तरह के शरों को माध लेकर सीधा रूपनगर पहुँचें, और कुछ राजपूत जान पर खेलकर रूपनगर की ओर जाते हुए औरंगजेब का सामना रोक दें। परन्तु इन ज्ञान पर खोज करने योग्य का

नायक बोग हो, यह कठिन प्रश्न था। सारी सभा चुप थी। इतने में प्रास वर्प का एक सरदार खड़ा हुआ और बोला— नारायण एकलिंगदेव को माक्षी रखकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक आप विवाह कर रूपनगर से उदयपुर न पहुँच पायेंगे, तब तक औरगजेय का मार्ग रोके रहूँगा। उसे एक पक्ष भी न बढ़ने दूँगा। यह युवक चूडावत था जिसका विवाह अभी अभी हुआ था, जिसकी नवविवाहिता पत्नी नाडी रानी के कंकण भी अभी नहीं खुले थे।

राणा अपने साथियों को लेकर रूपनगर रवाना हुए और चूडावत अपने सरदारों के साथ आगरा और रूपनगर के बीच औरगजेय का रास्ता रोकने को प्रस्तुत हुए। इतने में उनकी दृष्टि उस राजप्रासाद की ओर पड़ी जहाँ उनकी नवविवाहिता पत्नी खड़ी थी। सेना को कुछ देर ठहरने का आदेश दे राणा प्रासाद की ओर चल पड़े। रानी उनकी प्रतिज्ञा की बात सुन चुकी थी, वह खुश थी, कि उसका पति एक बहन के सतीत्व की रक्षा के लिए जान पर खेलने को तैयार है। परन्तु सरदार के उदास चेहरे को देख उसने उसका कारण पूछा। चूडावत ने उत्तर दिया मुझे मृत्यु से भय नहीं है, मुझे यदि कोई चिंता है तो तुम्हारी है। तुम अभी व्याही आयी हो तुम्हारे कंकण भी अभी नहीं खुले, और मैं मरने जा रहा हूँ। बोले पर चढ़ते ही मैंने ज्यों ही तुम्हारी ओर देखा मेरे हृदय का आनन्द काफ़ूर हो गया। वीरांगना हाड़ी रानी ने चूडावत को प्रोत्साहित करते हुए कहा—ऐसे शुभ समय में चिंता को मन में धर करने देना क्षत्रिय-कुमार के लिए उचित नहीं है, तथा आश्वासन दिया कि यदि आप रख

स्थल में विजय पाकर लोटेंगे तो मेरे लिए बड़ा गारव की बात होगी, यदि आपने क्षत्रियों की तरह धीर-गति प्राप्त की तो यह दासी भी आपका अनुगमन करेगी।

चूडावन सरदार रानी को आलिंगन कर पिदा हुए। परन्तु उनके मन में सदेह बना था कि रानी उनके पीछे धर्म का पालन करेगी या नहीं। इधर रानी जानती थी कि प्राणनाथ का मन जब तक उसकी ओर लगेगा तब तक वे युद्ध में भाग न ले सकेंगे। इतने में सरदार ने एक सेवक द्वारा सदेश भेजा—चूडावत जी चिह्न चाहते हैं, दृढ़ आशा और अटल विश्वास का, मनोप हाने योग्य प्यारी वस्तु दीजिए। और कहा है कि मेरे मरने के बाद अपने कर्तव्य पथ पर उठे रहना। रानी का विश्वास दृढ़ हो गया। वह सेवक से गोली—अच्छा पैग सिग लिए जा ओर उनसे कहना मैंने अपना कर्तव्य पालन किया अब आप अपना कर्तव्य का पालन करें। मौक़ा है 'न न' करते करते रानी ने तलवार से अपना गिर काट दिया। विस्मित सेवक ने यह सिग लेकर शीघ्र दूर दार्यों ले जा कर चूडावन को दिया। प्राणप्रिया द्वारा भेजे हुए तब दृढ़ आशा और अटल विश्वास के लिए तथा प्रेम उपहार के पाकर चूडावन पागत हो उठे। सुगम से सिध हुए लायस जालों के गुच्छों को भी छिम्पों में दौड़ कर इस फार प्राणप्यारी के सीम को भाला की तरह पटन कर बद्ध पधारण कर चूडावन मदमत्त हो मुख की ओर घट गिर पनी स्वभा के साथ आत्महत्या के मार्ग में लगे पड़े। लोगों नाभों में मोहग घुल हुआ। लोग दिन तक भीगते ही ना एक पल भी आगे न बढ़ गयी। नागर दिन का इरका

रुद्र रूप तो शत्रु सेना के लिए असह्य था। चूडावन का घोडा बादशाह के हाथी पर चढ गया, तब बादशाह गिड़गिड़ा कर बाला—मेरी जान क्यों लेते हो, विवाह की घडी तो यहीं पीत ग्य। बादशाह ने जब प्रतिज्ञा की कि वह दस साल तक गेवाट पर आक्रमण न करेगा तो चूडावन ने अपना घोडा लोटाया पर इसी बीच एक मुगल सेनापति ने उनका सिर धड से अलग कर दिया। भाटों का कहना है कि सिर कट जाने के बाद भी उस रात भर चूडावन सरदार लडते रहे। पूर्णिमा की रात समाप्त होने पर सरदार का धड घोडे से नीचे गिरा।

७ हिन्दी साहित्य में कबीर—रहीम और रसखान, इन कवियों का क्या स्थान है ? इनका समय और कार्य दिखोकर कविता के उदाहरण दो।

कबीर हिन्दी साहित्य के तीन सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। जनता अपने इस विश्वास को "सत्य सत्य सूरज कही, तुलसी कहीं अनूठी, बची-खुची कविग कही चाकी कही सब झूठी" आदि उक्तियों द्वारा सैंकड़ों बरसों से प्रकाशित आई है। सूर और तुलसी के बाद हिन्दी में यदि कोई विष्णु कवि कहा जा सकता है, तो वे ही हैं। सत कवियों में तो कबीर का स्थान सर्वोच्च है। ही हिन्दी के पहले रहस्यवादी कवि हुए हैं। जनता को इनकी कविता जैसी प्रिय है, विद्वान वैसा ही रस लेते हैं यहाँ तक कि विश्व वद्य नाम टाकुर ने इनके पद्यों का अंग्रेजी में भी

अनुभवपूर्वक नार्मिक शक्तिशील के लिये कि वह कारण रहीम
 का हिन्दी साहित्य में यथा उभा प्रधान है। अन्य नीति-
 धर्मियों का तरह उनके पक्ष पक्षी भीति के मार्ग हैं, पर उनमें
 नार्मिकता है, उनके भीतर मार्ग हृदय की शक्ति मिलती है।
 उन्हें भाषा पर भी महाकवि तुलसीदास प्रेमा अधिकार प्राप्त
 है। प्रेम और अर्थ ही — पच्छिमी और पूर्वी — दोनों काव्य-
 भाषाओं में य समान वृत्तान्त है।

हिन्दी के मरम प्रेमी कवियों में रमरमान का विचित्र
 है। इनके कवित्त सयैयों में प्रेम के पैसे मुद्र उद्गा
 है उनभाधारण प्रेम या शृंगार सयैयी कवित्त सयैया

रुद्ररूप तो शत्रु-सेना के लिए अमह्य था। चूडावत का घोड़ा बादशाह के हाथी पर चढ़ गया, तब बादशाह गिड़गिड़ा कर बोला—मेरी जान क्यों लेते हो, विवाह की घड़ी तो यहीं बीत गई। बादशाह ने जब प्रतिज्ञा की कि वह दस साल तक मेवाड़ पर आक्रमण न करेगा तो चूडावत ने अपना घोड़ा लौटाया पर इसी बीच एक मुगल सेनापति ने उनका सिर धड़ से अलग कर दिया। भाटों का कहना है कि सिर कट जाने के बाद भी उस रात भर चूडावत सरदार लड़ते रहे। पूर्णिमा की रात समाप्त होने पर सरदार का धड़ घोड़े से नीचे गिरा।

५ हिन्दी साहित्य में कबीर—रहोम और रसखान, इन कवियों का कैसा स्थान है? इनका समय और कार्य दिखाकर कविता के उदाहरण दो।

कबीर हिन्दी साहित्य के तीन सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। जनता अपने इस विश्वास को "सत्य सत्य सूर कही, तुलसी कही अनूठी, बची-खुची कविरा कही बामी कही सब झूठी" आदि उक्तियों द्वारा सैकड़ों बरसों से प्रकाशित करती आई है। सूर और तुलसी के बाद हिन्दी साहित्य में यदि कोई विश्व-कवि कहा जा सकता है, तो वे कबीर हैं। सत कवियों में तो कबीर का स्थान सर्वोच्च है और कबीर ही हिन्दी के पहले रहस्यवादी कवि हुए हैं। साधारण जनता को इनकी कविता 'जैसी' प्रिय है, विद्वान भी उसमें वैसा ही रस लेते हैं यहाँ तक कि विश्व-वद्य कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इनके पद्यों का अंग्रेजी में भी अनुवाद

अधिक नहीं जितनी सुर को । = तब मटाकार तुलसीदास
की दृष्टि जीवन के सर अगा पर था है पर तुलसीदास न
भी जो वात्सल्य रस लिखा है वह अनुपम है । रात-रति
लीला का वर्णन पर लिखा तुलसीदास का यह श्रुत दर्श
नीय है—

“माता ले उद्यम गोविंद मुख जन प्रार निरर्य ।
पुलकित तनु आनंद प्रग रत छन मन हरखें
पूउन तोनगत बाल मागहि जदुराई ।
अनिशय मुख जाते ताहि मोहि कहु समझाई ।
देखत तब घदन फमता मा आनन्द होई
कहे कौन ! रसत मोन जाने होई कोइ
मुवर मुख मोहि प्रियाउ इन्डा अनि मारे
मम समान पुन्य पुज बालक नहीं तोरे
तुलसी प्रभु प्रेमचम्य मनुज रूप भारी
बाल-केलि-लीला रस प्रन जा हितकारी ।”

१ आशुपायिका किसे कहते हैं ? उमरा विषय कैसा होना चाहिये ?
वपु म मे इमहा क्या अन्त है ? इमे क्या का रूप है व प्रिया ?
इस विषय पर एक विवेचनार्थक निबंध लिखो । १०

अथवा

“काव्य” और “नाटक” इनमें क्या भेद है ? लोगों का विचार इन
काय कितना हो सकता है और इनमें क्या क्या गुण होते चाहिये ? यह
अरबी भाषा में लिखो ।

येमा गद्य कथानक जो घटे हो घटे के बीच में पढ़कर
काम किया जा सके, तथा जिनमें जीवन के किसी एक अंग
या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का

इसमें अपत्य (सतान) स्नेह स्थायीभाव हैं । बालकों की चेष्टाएँ— तोतली बोली, गिरते पडते चलना, हठ करना उनकी शूरता, विद्या आदि उद्दीपन विभाव हैं । हँसना, पुलकित होना, सिर चूमना, गोद में लेना, रोमाच आदि अनुभाव हैं । अनिष्टकी आशका, हर्ष गर्व, आदि सचारीभाव हैं ।

हिन्दी के दोनों महाकवियों—सूर और तुलसीदास—ने वात्सल्य रस की पर्याप्त और उत्कृष्ट रचना की है । वात्सल्य रस का जैसा स्रोत सूर की कविता में बहा है, वैसा शायद विश्व के किसी भी कवि की कविता में नहीं पाया जाता ।

सूर द्वारा किया गया बाललीला, बालकों की अनुकरण-शीलता, स्पृहा और महत्वाकांक्षा तथा माँ की अभिलाषा आदि का चित्रण इतना स्वाभाविक और उत्कृष्ट है जो देखते ही बनता है—

हो बलि जाऊँ छोले लाल की

धूसर धूरि घुटरुवनि रँगनि बोलन बचन रसाल की
छिटक रहीं चहुँ दिसि जु लटुरिया लटकन लटकत भाल की ।
मोतिन सहित नासिका नथुनी कठ कमल बनमाल की
कछु कै हाथ कछु मुख माखन चितबनि नैन विसाल की
सूर सुप्रभु के प्रेम मगन भई ढिग न तजनि ब्रज बाल की ।

इसी प्रकार "मैया मैं नहीं दधि खायो" में बाल चापल्य तथा "मैया कबहिं उठैगी चोटी" आदि पदों में बालस्पृहा "मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो" में बालकपन में रुठने का बड़ा ही अच्छा चित्र है ।

महाकवि तुलसीदास की कविता वात्सल्य रस की इतनी

कठिन हो जाता है। उपन्यास एक वृत्त के समान है, जिसमें नाना शाखा-प्रशाखाएँ होती हैं। आर्यही उनकी विभिन्न परिणति होती है। आर्यायिका के लिए नेत्र में ज्ञान की उतनी अधिक विवेचना हो ही नहीं सकती, जितनी उपन्यास में होती है। यही आर्यायिका और उपन्यास का मुख्य अंतर है।

आर्यायिका या कहानी का अस्तित्व बहुत प्राचीन युग में भी पाया जाता है। यहाँ तक भी कहा जा सकता है कि जब से मानव मस्तिष्क की उत्पत्ति हुई तब से कहानी का भी उद्गम हुआ था। पर पशुओं और पक्षियों की प्राचीन कहानियों में केवल मन-चहलान था, कला नहीं। धीरे-धीरे जब उसमें मानव जीवन या मनोभाव की अभिव्यक्ति अनिवार्य मानी जाने लगी तब उसमें काव्यत्व का प्रवेश होने लगा। जब उसमें उद्देश्य और परिणाम को एकता पर ध्यान दिया जाने लगा, तब से आर्यायिका लिखना भी एक कला समझे जाने लगा, और कहानी को भी एक कला का रूप मिला। कई लोगों को यह भी मानने लगे कि बड़े-बड़े उपन्यासों की अपेक्षा छोटी छोटी आर्यायिकाएँ लिखना अधिक कठिन काम है। क्योंकि कहानी लेखक को मानी कहानी में एक ही परिणाम अथवा भाव रखना होता है, और यही कहानी लेखक सिद्ध बसाधार माना जाता है जिसकी रचना में एक ही ऐसा शब्द नहीं पाया जा सकता अथवा अपर्याप्त रूप में पाठकों को असीम परिणाम अथवा प्रभाव की ओर आकर्षित न करता हो।

काव्य और नाटक दोनों की रचना मुख्य शक्ति का

एक ही में परस्पर बहुत भेद है। पर

उद्देश्य होता है, आख्यायिका कहाना है। आख्यायिका अनेक विषय हो सकते हैं। उसमें पाठकों को हँसाया भी सकता है, रुनाया भी जा सकता है चक्कर में डाला सकता है, उसमें अपना अनुभव बताया जा सकता है, अर्थ देश या समाज की अवस्था का चित्रण किया जा सकता है। इस प्रकार सैकड़ों हजारों विषयों पर आख्यायिकाएँ लिखी जा सकती हैं। पर उसका विषय ऐसा होना चाहिए, जिसमें उसकी संकुचित सीमा के अंदर भली-भाँति विकास और निर्वाह हो सके। आख्यायिका को समाप्त करने के बाद पाठकों की यह सम्मति होनी चाहिए कि यदि इस आख्यायिका और अधिक विस्तार किया जाता तो उससे कोई लाभ न होता और उसमें जो कुछ कहा गया है वह ठीक उपर्याप्त है।

आख्यायिका छोटी होती है, वह घंटे दो घंटे में समाप्त होती है। उसमें जीवन के किसी एक अंग या एक मनोभंग का ही प्रदर्शन होता है। आख्यायिका एक चरित्र उसकी शैली उसका कथा-विशाल सब उसी एक भाव की पुष्टिकरण का है। आदि से अंत तक उसी एक आधार-भूत तत्त्व की पुष्टि करना ही लेखक का उद्देश्य होता है। आख्यायिका में मुख्य विचार केवल एक ही होता है और वह बहुत ही प्रत्यक्ष या स्पष्ट होना चाहिए। पर उपन्यास निबंध होता है, उसमें न समय का, न एक भाव का, न किसी का घन्धन है। उपन्यास में इतनी अधिक बातें होती हैं, जीवन के इतने अधिक अंगों का चित्रण होता है, कि उसे कोई एक मुख्य सिद्धांत या परिणाम निकालना

छोटे छोटे मेघ खंडों जैसी होता है। उन सब की गति गुरु की ओर होती है पर एक दूसरे से अधीन रहा होती। पर नाटक में कथा-भाग का ऐक्य आत्यन्त है।

जिस विषय या आधारभूत घटना को लेकर नाटक का प्रारंभ किया जाय, उसी विषय या घटना का अन्य आकृष्ट प्रकार से विस्तार कर अंत में नया विषय या घटना की परिपक्वता पर नाटक की समाप्ति होनी चाहिए। जिस प्रकार उद्गम स्थान से निकली हुई नदी को श्रौणधारा में अन्य अनेक नदियाँ मिलकर उसे परिपुष्ट करती है इसी प्रकार— नाटक में यदि किसी अग्रतर घटना का उल्लेख होता तो उसे तो मुख्य घटना को परिपुष्ट करने के लिए। य अग्रतर घटनाएँ या तो मुख्य घटना को आगे बढ़ा देती हैं या पीछे हटा देती हैं। इस प्रकार घात प्रतिघात से नाटक की कथा का विकास होता है। नाटक का यह कठोर यथन काव्य में नहीं पाया जाता। कविता नाटक का एक अंग है। नाटक में चरित्र चित्रण कहानी की मनोहरता और कथिचय सर चाहिए, पर काव्य में चरित्रचित्रण की या कथोपकथन की आवश्यकता नहीं होती और कहानी की मनोहरता की आश भी अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।

काव्य और नाटक दोनों में मानव जीवन का चित्रण होता है। जिस काव्य और नाटक में मातृवीय सद्व्यक्तियों और सदभावनाओं का प्रदर्शन हो वह ही मान्य मान्य है।

से बड़ा भेद इनमें यह है कि काव्य का प्रयोग प्रायः श्रव्य काव्य के लिए होता ही है, जिसके पढ़ने सुनने में आनन्द होता है, और नाटक दृश्य काव्य है, वह अधिकतर अभिनय के लिए तैयार किया जाता है। इसी भेद के कारण दोनों में अन्य अनेक भेद हो गए हैं। काव्य के श्रव्य होने से उसमें कवि स्वयं वक्ता का रूप ले लेता है। वह घटनाओं को, पात्रों के हार्दिक अतर्क को, भावों और विचारों को प्रत्यक्ष खोलकर रख देता है। परन्तु नाटककार स्वयं जनता के सामने नहीं आ पाता, उसे जो कुछ कहलाना होता है, वह अपने पात्रों द्वारा ही कहलाता है। किसी अतर्क को, भले बुरे विचारों को प्रकट करने के लिए उसे पात्र का वैसा ही चरित्र चित्रण करना होता है। अतः नाटक में जहाँ चरित्र-चित्रण की ओर बहुत अधिक ध्यान देना होता है, और नाटक की सफलता कुशल चरित्रचित्रण में मानी जाती है, वहाँ काव्य में चरित्रचित्रण की इतनी महत्ता नहीं, वहाँ चरित्र तो उहाने मात्र होते हैं, कवि का लक्ष्य वर्णन की ओर ही अधिकतर होता है। वह अपने कवित्व का परिचय देने के लिए स्थान स्थान पर ऐसे अचसर ढूँढता है, जब वह कोई मनोरञ्जक वर्णन कर पाठक के मन को मोहित कर सके।

काव्य में कथा का विकास कवि स्वयं कर लेता है पर नाटक में यह नहीं हो सकता। वहाँ तो कथा का विकास भी पात्रों के वयोपकथन द्वारा अथवा घटनाओं के घात-प्रतिघात से ही हो सकता है। इस कारण काव्य में घटनाओं की एकाग्रता, या सार्थकता का कुछ प्रयोजन नहीं। कथात्मक काव्य में भी भिन्न भिन्न कथाओं की गति आकाश में दौड़ते

दिव्यार्ह जायें, अथवा कवित्व का अभाव हो तो वह साधारण वार्त्तालाप या स्वॉग हो जायगा।

काव्य में घटना का ऐक्य और घटना की सार्थकता इतनी आवश्यक नहीं। पर काव्य में भी घटनाओं के घात प्रतिघात अथवा नाटकीय भावा का समावेश हान से उसकी मनोरञ्जकता अघट्य बढ़ जाती है। काव्य में चन्द्रचित्रण की अपेक्षा घर्षण को तथा जीवन के विविध चिह्नों का प्रदर्शन को अधिक महत्ता दी जाती है। स्वाभाविकता और कवित्व नाटक तथा काव्य दोनों में आवश्यक है।

नीचे दिये पद्यों और गद्यों का सरल अर्थ बता (क) और (घ) भाग का प्रमाण भी बताओ —

(क) पुर से निकला रघुवीर बधू

धरि धीर द्ये मगमें दग डै
 झुकीं भरि भाल कमी उमठी
 पुट मृग मय मपुरावर वै
 फिर पुस्तक है शानो भव कानिक
 पिय पजंगुगी बरि है दिन वै।
 गिय को हलि भातुरता त्रिय वै।
 अतिवर्षा अति बार लही मन वै ॥

(घ) बिन्दु में सिन्धु समान का अक्षर का गी बरै
 होनहार शिरान शक्तिमत्त अरुमे भाव वै।

(ग) इन पात्रों के भाव विस्तारण के जो किछु अर्थ

उपक मन के प्रतिबिम्ब कहारि नहीं, वे मन के प्रतिबिम्ब हैं।

अतएव काव्य की अपेक्षा नाटक से अधिक उपकार हो सकता है।

नाटक में घटना का ऐक्य, घटना की सार्थकता, घटनाओं के घात प्रतिघात की गति, कवित्व, चरित्रचित्रण और सामाजिकता ये छ. गुण आवश्यक है।

हम देख चुके हैं, घटना का ऐक्य, घटनाओं की सार्थकता और घटनाओं की घात प्रतिघात गति अर्थात् भिन्न भिन्न विमुख प्रवृत्तियों का संघर्ष नाटक की रोचकता को बढ़ा देता है। कालिदास की शकुन्तला में दुष्यत के साथ शकुन्तला का विवाह कराना ही उद्देश्य है। शकुन्तला और दुष्यत एक दूसरे को देखते ही मोहित हो जाते हैं, उन में प्रेम हो जाता है। यदि उनका विवाह कराकर शकुन्तला को दुष्यत के राज भवन में वहीं भेज दिया जाता और घटना की समाप्ति कर दी जाती तो वह इतना मनोरंजक और अमर न हो सकता। पर दुष्यत को विदा, दुर्वास का शाप, दुष्यत का शकुन्तला को भूल जाना, दुष्यत द्वारा दी गई अँगूठी का गिर जाना याद दिलाने पर भी दुष्यत को शकुन्तला की याद न आना, फलतः शकुन्तला का परित्याग, अँगूठी मिलने पर दुष्यत को शकुन्तला का ध्यान, फलतः पश्चात्ताप और विरह ताप, अंत में शत्रु का दुष्यत को धुलाना, यहाँ अन्तानक दुष्यत-शकुन्तला-मिलन इस प्रकार घटनाओं का ऐक्य और सार्थकता होने पर भी उनमें घात-प्रतिघात नाटक की मनोरंजकता को बढ़ाता है। इनके साथ कवित्व चरित्र-चित्रण और स्वाभाविकता भी नाटक के आवश्यक गुण हैं। यदि नाटक में चरित्रचित्रण न हो, या अस्वाभाविक घटनाएँ

हैं। अर्थात् उपन्यास लिखन वालों का जा अपन गाथ होन है, वही वे अपने पात्रों के चित्रित करत ह।

(२) अशोक वाटिका में दुर्गा सीता को बार बार तग पर तथा राक्षसियों को उसे आर मत्तान के लिए कह पर जय रावण चला गया उस समय त्रिजटा तथा विभीषण की पत्नी सरमा राक्षसियों को वाटिका विहार के बहान अलग त गई और सीताजी अकेली रह गई। तब सीताजी पृथ्वी की ओर नाक रही थी, आँसू गूले होने पर भी चिंता के मारे उत कु उ नहीं दिखता था आर वे लगानार आसू प्रहान लगी।

भारतवर्ष के इतिहास की प्रश्नोत्तरी

(दूसरा भाग)

(ले०—ला० सामदत्त सूद, या ष, कथा महाविद्यालय ताण्डर)

इसमें यूरोपियन व्यापारियों के आगमन में प्रायः १५०० ई. का भारत का इतिहास प्रथम अध्याय के रूप में दिया गया है। इस बार की परीक्षा में पूछे गए प्रायः सब प्रश्न इसी में से आये हैं।

भारतवर्ष के इतिहास का चार्ट (वर्तमान युग)

इसमें भारत के वर्तमान युग का इतिहास दिया गया है। इसमें

का सहायता से पूर्ण विवरण में आता है।

१५०० ई. तक का है।

श्रीक पराधा के समय

१

(घ) सीताजी शून्य दृष्टि से प्रथी की ओर देखती हुई अनगरत अध्रुधारा बहाने लगीं ।

(क) वनवास के समय पहली बार ही सीताजी को फटकाकीर्ण पथ पर पैदल यात्रा करनी पड़ी, थोड़ी दूर चलते ही वे थक गईं, उन्नी का वर्णन करते हुए कवि तुलसीदास कहते हैं । सीताजी (पहले पहल इस प्रकार पैदल) नगर स बाहर निकली थीं और (रामचन्द्र जी के समान वीर पुरुष की पत्नी होने के गर्व से) दो चार कदम धैर्य धारण करके चलीं। इतने परिश्रम से उनके सारे ललाट पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं, और अति कोमल दोनों अधरपुट (होंठ) सूख गये । अत पूछने लगीं कि अब कितनी दूर और चलना है ? प्यारे, पर्णकुटी कहाँ पर बनाओगे ? सीताजी की पेसी व्याकुलता देख कर रामचन्द्रजी की अतीव सुन्दर आँखों से आँसू टपकने लगे ।

(ख) बिन्दु में, शून्य में, निराकार में समुद्र समा गया है, अर्थात् उस निराकार परमात्मा में यह चराचर जीव जगत् समा गया है, यह क्या आश्चर्य है, और इस आश्चर्य का वर्णन किससे करें, क्योंकि देखने वाला ज्ञानी ही स्वयं अपने आप लोप हो गया है, उस परमात्मा में लीन हो गया है । अर्थात् नारायण में नर विलीन होगया है । या नर में ही नारायण की उपलब्धि हो जाती है ।

(ग) उपन्यासों में पात्रों के भावों का जो विश्लेषण दिखाया जाता है, उनके मन का जो अतद्बुद्ध दिखाया जाता है, वह पात्रों के अपने मन के चित्र नहीं होते, वे तो उपन्यास लिखने वालों के मन के भावों की परछाई होती

प्रश्नपत्र ५

१. बार्नाराम पेशवा के शासन-काल का वृत्तान्त लिखो और यह बताओ कि उसके समय मराठा साम्राज्य की क्या दशा था। १२

१. बाजीराव पेशवा का शासनकाल सन् १७२० से १७४० तक था। वह सत्र पेशवाओं में योग्य और वीर था। उसके समय मराठे दूर दूर तक जावा मारने लगे। बाजीराव का सारा समय लड़ाई में बीता। उसने लगातार १५ वर्ष लड़ाई कर पुर्तगाल वालों से वसीन आदि कई वस्तियाँ छीन लीं। उसके समय मराठा सरदारों ने गुजरात पर पूर्ण अधिकार कर लिया और बुदेलखंड से पठानों को निकाल बाहर किया। इस सेवा के बदले बुदेल नरेश महाराज छत्रमाल ने जालोन, झाँसी और भोपाल के पास के कई स्थान पेशवा को दिये। पीछे पूरे मालवा पर भी होकर, सिंधिया आदि मराठा सरदारों का अधिकार हो गया। इधर गोंडवाना और उड़ीसा की ओर भी मराठे बढ़ने लगे। सन् १७३६ में मराठे दिल्ली भी पहुँच गये। दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह ने उन को रोकने के लिए निजाम को बुलाया। निजाम आया और परास्त हो गया। --- को बाजीराव को बहुत म्ना वन देकर सधि की ७४० में इस यशस्वी पेशवा की मृत्यु हुई

साम्राज्य ग़ुब बढ़ना प्रारभ हुआ।
छत्रछाया में मराठों के चार राज्य
जगत में, होकर का इदौर में, सिंधिया

ग्वालियर में, ओर रावोजी मोंपे का मध्य भाग में—
स्थापित हुए।

१. निम्नलिखित पर मन्त्रिमन्त्र नोट किया —

पिट्स इण्डिया ऐक्ट । मंगलमिच्छे । मंगलमिच्छे । मंगलमिच्छे । मंगलमिच्छे ।
कॉमेस । एलर्ट रिट । १८

२. पिट्स इण्डिया ऐक्ट—१७७३ व रेगुलटिंग ऐक्ट की
दुष्टियों को दूर करने के लिए १७८४ में पिट्स इण्डिया
ऐक्ट पास किया गया। इसके अनुसार राजनीतिक शासन
की प्रायः अप्रत्यक्ष तौर पर ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ
गई। व्यापार के काम में इस्ट इण्डिया कंपनी के मन्त्रालयों को
पूरी स्वायत्तता रही, पर राजनीतिक कार्यों का भा—दोषाती,
सेना और कर सम्बन्धी कार्य—एक प्रबंधकारिणी मन्त्रालय के
हाथ में दिया गया, जिसे गॉर्ड ऑफ़ पेट्रोल कहा था।

इसके कुल छ सदस्य थे जो ब्रिटिश सरकार द्वारा इंग्लैंड
में नियुक्त किये जाते थे। ब्रिटिश सरकार का प्रधान मन्त्र
इन छ सदस्यों में से किसी एक का उच्च मन्त्रालय कारिणी
मन्त्रालय का सभापति नियुक्त करता था। साथ ही यह नियम
हो गया कि पार्लियामेंट को आज्ञा के बिना मन्त्रालय
को किसी देशी राज्य के सधि या सहायक कार्य का अधिकार
न होगा। इंग्लैंड में तीन जारमियों की एक शुरुआत की
बनाई गई जो जल्दी व कामों को कर सम्बन्धी थी। इसके अति
रिक्त मन्त्रालय द्वारा कई और मन्त्रालय व मन्त्रालयों का
अधिकार भी बढ़ा दिया गया और मन्त्रालय द्वारा
के सदस्यों की संख्या ७ में बढ़ा कर ३ कर दी गई।

जनरल को यह भी अधिकार दे दिया गया कि वह खास मौकों पर काँसिल के फैसले का उल्लंघन भी कर सकता था।

बग-विच्छेद—लार्ड कर्जन का विश्वास था कि बंगाल बहुत बड़ा मुल्क है, जिसका शासन प्रबन्ध एक प्रांतीय सरकार के लिए कठिन है। शासन की सुविधा के लिए उसने अक्टूबर १९०५ में बंगाल के दो विभाग किये और नये बने प्रान्त का नाम आसाम और बंगाल रखा, इसमें सारा आसाम और बंगाल के १५ जिले शामिल किये गये। बंगालियों ने समझा कि यह कार्य उनके राष्ट्रीय संगठन को तोड़ने के लिये किया गया है। सारे देश में इससे अशान्ति फैल गई और इसके विरुद्ध घोर आन्दोलन हुआ, जो सशस्त्र क्रान्ति की अवस्था तक पहुँच गया। नेताओं ने ब्रिटिश माल के बहिष्कार और स्वदेशी के प्रचार का आन्दोलन शुरू किया।

महात्मागांधी—आपका पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी है। आपका जन्म सन १८६९ में पोरबन्दर में हुआ। वेंचिस्टरी पास करके आप दक्षिण अफ्रीका गये। वहाँ आपने सत्याग्रह करके भारतीयों के अनेक कष्टों और अपमानों को दूर किया। वहाँ से विजय प्राप्त कर आप भारत लौटे। भारत में उन दिनों भारतीयों के दमन के लिए रौलट ऐक्ट नामक काला कानून पास किया जा रहा था। आपने यहाँ आकर सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया। सन् १९१९ से भारत की आजादी की लड़ाई की बागडोर आप के ही हाथ में है। आपके इशारे पर हजारों भारतीय जेलों में गये। सन् १९३० में भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड अरविन को आपने समझौता करना पड़ा। उसके बाद आप कांग्रेस के एक मात्र

प्रतिनिधि हो कर विलायत गये, पर वहाँ से आत ही आपकी फिर आंदोलन प्रारंभ करना पडा। १६३७ में जब नया प्रान्तीय शासन विधान प्रारंभ हुआ, तब आपरू आदेश से आठ प्रान्तों में कांग्रेसी मन्त्रिमंडल बने। आज भी ब्रिटिश सरकार का कोई बात तय करनी होती है, तो वह आपको बुलाती है। कांग्रेस के अतिरिक्त अन्य भी दश की अनेक अग्रगामी मन्थार्य—हरिजन सेवक सघ, अखिल भारतीय चरखा सघ, ग्रामोद्योग सघ तथा राष्ट्रभाषा आंदोलन आदि आपकी ही देख रेख में चल रहे हैं। आप भारत की सभसे बड़ी विभूति हैं। देश का शायद ही कोई कोना होगा जो एक बार महात्मा गांधी के नाम से न गूँजा हो।

महात्मा फरीर—फरीर हिन्दो के तीन तर्क खेच कविया में कहे जाते हैं। इनका जन्म सन् १८५६ में तथा मृत्यु १९७१ में हुई। कई इनको त्रिवा द्राक्षणी का पुत्र मानते हैं, पर इनका पालन पोषण मुसलमान जुलाहे के हाथ से कामे हैं। फरियों के मत में ये मुसलमान जुलाहे के ही पुत्र थे।

फरीर निरक्षर थे, पर थे म्यामाचिक कवि। तीनों माथी भाषा में इन्होंने अनूठे दृश्यवाणी भाष्य भर दिए हैं। साधारण जनता को इनकी कविता जैसी प्रिय है विद्वज्जन भा उनसे पैसा ही रस लत है यहाँ तक कि विभिन्न घस करार दलेश्वरनाथ टाणूर ने इनके कवियों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है।

फरीर साहब एक ही शब्द को मानते थे। कर्मकांड का गौर विरोधी थे। जयनार, मूर्ति, मत्स्य, इत, मन्थिर मन्थिर आदि को नहीं मानते थे। अहिंसा, अनुष्णता का समर्थन तथा स्वशास की समर्थना का इतना पर-दार मानते हैं।

उपनिषदों के विचार वाले ईश्वर को मानते थे और साफ कहते थे कि वही शुद्ध ईश्वर है, चाहे उसे राम कहो चाहे अज्ञा। हिन्दू और मुसलमान दोनों पर ही इनका प्रभाव था। इनके जीवन-काल में ही इनके बहुत से शिष्य हो गये थे। अब भी भारत में ८-९ लाख कबीरपथी हैं, जिनमें हिन्दू मुसलमान दोनों हैं।

कांग्रेस—भारतीयों को राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिए सन् १८८५ में भारत में स्वतंत्रता आंदोलन के लिए इंडियन नेशनल कांग्रेस का सूत्रपात हुआ और बंबई में उसका पहला अधिवेशन हुआ। प्रारंभ में कांग्रेस की माँग केवल यह थी कि भारतीयों को सरकारी नौकरी में अधिक जगह मिले, वारा सभाओं में भारतीयों की संख्या बढ़ाई जाय। समय के साथ कांग्रेस के उद्देश्यों में परिवर्तन होता गया। सन् १९२९ में कांग्रेस ने लाहौर के अधिवेशन में प० जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व में अपना व्येयपूर्ण स्वतंत्रता बनाया। सन् १९३६ में जब नया भारतीय-शासन विधान जारी हुआ, तब आठ प्रांतों में कांग्रेस का बहुमत हुआ जहाँ कांग्रेसी मंत्री-मंडल बने। अब जब यूरोप में युद्ध प्रारंभ हुआ, और ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के इच्छा के बिना ही भारत को भी लडाकू जातियों में सम्मिलित कर लिया, तब उसके विरोध-स्वरूप कांग्रेस मंत्रीमंडलों ने त्याग-पत्र दे दिया। कांग्रेस ही एक ऐसी संस्था है, जो जाति और धर्म के भेद भाव के बिना समूचे भारत का प्रतिनिधित्व कर सकती है।

इलवर्ट ट्रिल—लार्ड रिपन के समय तक देशी जजों को अगरेज अपराधियों के अपराधों को विचार करने का अधि

नहीं था। लार्ड रिपन ने तत्कालीन कनूना सदस्य मि०
 र्ट द्वारा एक बिल पेश करवाया जिससे देशी मैजिस्ट्रेटों
 जजों को भी योरोपियन लोगों के अपराधों का फसला
 का हक मिल जाता था। इंग्लंड में और ऐंगला इंडिया
 में इस बिल की कड़ा आलोचना हुई। इस आन्दोलन से
 कर लार्ड रिपन को बिल में कुछ संशोधन कर देना पड़ा,
 के अनुसार योरोपियन लोगों का अपराध निर्णय एक
 द्वारा होने लगा, जिसमें आगे योरोपियन अपराध
 थे।

* राजा गुलाबसिंह जम्मू के राजा की जाति क्या थी और यह
 कि उनका सिक्खा के राज्य में क्या संबंध था ?

राजा गुलाबसिंह जम्मू के राजा ब्रजगनदेव के चत्वर
 जोरावरसिंह का पोता था। इसके दो और भाई थे
 नसिंह और सुचेतसिंह। इन तीनों भाइयों ने मन् १८१०
 पाषाणदेसरी रणजीतसिंह के दरबार में नौकरी कर ली।
 राजा रणजीतसिंह इन तीनों भाइयों की योग्यता और
 य-भक्ति से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मन् १८२४ में
 नसिंह को जम्मू का राजा बना दिया। रणजीतसिंह महा
 रणजीतसिंह का मंत्री नियुक्त हुआ। मन् १८४६ में जब
 रणजीतसिंह की अन्तिम युद्ध हुआ, तब गुलाबसिंह
 रणजीतसिंह की सखी के पार लार्ड लार्डिंग
 रणजीतसिंह के अन्तिम युद्ध करीब रणजीतसिंह की
 रणजीतसिंह के अन्तिम युद्ध करीब रणजीतसिंह की
 रणजीतसिंह के अन्तिम युद्ध करीब रणजीतसिंह की

कि यदि उसे अपने प्रदेश का स्वतंत्र शासक मान लिया जाय तो बाकी रकम वह अदा कर देगा। यह बात स्वीकार कर ली गई, और उस समय से गुलाबसिंह काश्मीर के स्वतन्त्र महाराजा होगये। इससे पूर्व वे सिन्धु-साम्राज्य के अधीन थे।

४ १८५७ के गदर के कारण लखो और इसका भाग्यवर्ष के इतिहास पर क्या परिणाम हुआ। १२

गदर के कारण तीन भागों में बाँटे जा सकते हैं।

१। क राजनीतिक अशान्ति—राजनीतिक अशान्ति का कारण लार्ड डलहौजी की रियासतों के प्रति लैप्स नीति थी। मुगल-सम्राट, नाना साहिब, झाँसी की रानी आदि अनेक नरेश इस नीति के शिकार हो चुके थे। फलत वे अंग्रेजों के शत्रु बने हुए थे और शेष राजाओं में सदेह फैला हुआ था कि वे भी इस नीति का शिकार न बनाए जायें। वे प्रजा को भडका रहे थे।

(ख) जो राज्य अंग्रेजों के अधिकार में आता था, उसमें उच्चपद अंग्रेजों को ही मिलते थे, फलत. रियासत के उच्च कर्मचारी भी असतुष्ट थे।

२ सामाजिक अशान्ति—पश्चिमी तरीकों का प्रयोग शुरू हो जाने से लोगों को सन्देह होगया कि अंगरेजों उनको धर्म-भ्रष्ट करना चाहते हैं। रेल, तार और पाश्चात्य शिक्षा आदि से भ्रम की पुष्टि होगई।

३ सैनिक अशान्ति—(क) जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट नामक विधान पास किया गया, जिससे प्रत्येक सैनिक को आवश्यकता पडने पर कहीं भी भेजा जा सकता था। इस

विधान को सिपाहियों ने अच्छा न समझा विशेष कर ब्राह्मणों ने जो समुद्र-यात्रा को धर्म विरुद्ध समझते थे। (र) सेना में हिन्दुस्तानी सिपाहियों की सख्या अंगरेजी सिपाहियों से पाँच-गुणा थी, जिससे उनके अपनी शक्ति पर विश्वास था। (ग) अफगान युद्धों सिफ्तों के युद्धों और कोमियन युद्धों अंगरेजों के पुराने सैनिक गोरव को उधा लगा। (घ) नये ढंग की बन्दूक का प्रयोग किया गया। इस बन्दूक के बारतूम के कागजी सिरे पर चिकनाहट (चन्नी) हाती थी, जिसे प्रयोग से पहले दाँतों से फाड़ना पड़ता था। यह धर्म ब्रष्ट करने का ढंग समझा गया।

इस गदर का यह परिणाम हुआ कि गदर के पञ्चान् भारत का शासन सूत्र ईस्टइंडिया कंपनी से सम्पात विक्टोरिया ने अपने हाथ में ले लिया। १ नवम्बर १८५८ को महारानी ने प्रसिद्ध घोषणा पत्र निकाला, जिसमें देशी नरेशों के अधिकारों की रक्षा का ध्यान दिया, मतान्त न होने की हालत में उन्हें गोद लेने का अधिकार दिया और वह घोषित किया कि भारतीय प्रजा के धार्मिक विश्वासों में विश्वास प्रसार का हन्नाशेष न किया जायगा। हत्या के अपराधियों का छान्द कर सख्तों क्षमा कर दिया। यह भी कहा गया कि प्रत्येक मनुष्य चाहे किसी वर्ण का हो अपना योग्यता के मत पर किसी भी पद का प्राप्ति कर सकता है इसमें किसी प्रकार का पक्षपात न होगा।

१८५८ के घोषणा के शासन शासक का पुनर्निर्माण

राज्य

भारत-विशेष की शासकीय व्यवस्था के शासन विचार ।

जब वेलजली भारत में आया, उस समय इंग्लैंड का फ्रान्स से युद्ध हो रहा था। नैपोलियन बोनापार्ट स्थल-मार्ग द्वारा भारत पर आक्रमण करने की योजना तैयार कर रहा था। टीपू सुलतान कई देशी शक्तियों को मिलाकर अंगरेजों के विरुद्ध लड़ाई करने की सोच रहा था। अतः वेलजली ने निश्चय किया कि फ्रांसीसियों को भारत से निकाल दिया जाय, और भारत के देशी राज्यों और नवाबों को ब्रिटिश-सरकार की संरक्षता में केवल अधीन राज्य बना दिया जाय। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने एक योजना अपनाई जो सहायता सत्रधी व्यवस्था के नाम से प्रसिद्ध है। इसका उद्देश्य यह था कि भारत में देशी-नरेश अंगरेजों की सर्व श्रेष्ठ सत्ता को स्वीकार करें और अपनी रक्षा का भार अंगरेजों को सौंप दें। अपने अपने राज्य में एक अंगरेजी सेना रखें और उसका खर्च स्वयं उठावें या सेना के खर्च के लिए अपने राज्य का कोई भाग निश्चित कर दें। देशी-नरेश एक दूसरे के साथ अंगरेजों की सम्मति के बिना कोई सन्धि न करें। प्रत्येक देशी-नरेश अपने दरबार में एक अंगरेज रेजीडेण्ट रखे।

सब से पहले हैदराबाद के निजाम को इस नीति को मानने को विवश किया गया। उसके बाद टीपू की बारी आई, परन्तु सुलतान टीपू ने साफ जवाब दे दिया। फलतः मैसूर की चौथी लड़ाई हुई जिसमें टीपू सुलतान की हार हुई और वह युद्ध में मारा गया। उसके स्थान पर प्राचीन हिन्दू राज-वंश का प्रतिनिधि मैसूर की गद्दी पर बिठाया गया, जिसने इस प्रकार की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

इसके बाद अवध के नवाब की जारी आइ। उससे भी वही शर्त मनवाई गई और सेना के खर्च के लिए गोरखपुर इलाहाबाद और रुहेलखंड के इलाके ब्रिटिश सरकार को मिले।

उसके बाद तजौर, अफाट और सूरत भी किसी न किसी वजह से ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिये गये। इस प्रकार दक्षिण और उत्तर से निश्चित हो बंगाल ने मराठों की बड़ी भारी शक्ति की ओर ध्यान दिया। महान मराठा राज नीतिज्ञ नानाफडनवीस का स्वर्गवास हो चुका था। मराठों में गृह-कलह जारी था। केन्द्रीय मराठा शक्ति क्षीण हो चुकी थी। होत्कर और सिंधिया दोनों पेशवा राजीराय को अपने पक्ष में करना चाहते थे। होत्कर ने सिंधिया और बाजीराय की सम्मिलित सेना को पूना में हरा दिया। बाजीराय ने सहायक सम्बन्धी व्यवस्था स्वीकार कर अंगरेजों से संधि कर ली। सिंधिया और भामला ने इस संधि को अपमानजनक समझा, और अंगरेजों से युद्ध प्रारंभ कर दिया। पर जतन में सिंधिया और भामला दोनों की हार हुई और उन्हें भी उसी प्रकार की शर्तों पर संधि करनी पड़ी। उसके बाद अंगरेजों का होत्कर से युद्ध हुआ। तीन महीने के युद्ध में नग आकर होत्कर ने भी संधि कर ली।

होत्कर के साथ युद्ध में कर्णाली का बहुत नुकसान हुआ, जिसमें दायरेक्टरों के मुताबिक से बनी हुई। कर्णाली में बंगाल के पेशवा की चापिस पुला सिंधिया। बंगाल के पेशवा भारत में ब्रिटिश भी एक शक्ति थी, पर बंगाल की अल्प-मय शक्तियाँ निजाम, मैसूर, अंगरेज मराठ आदि शक्तियों का बट्ट कर ही और ब्रिटिश शक्ति को भारत में प्रथम शक्ति

बना दिया। बादशाह शाहआलम भी ब्रिटिश सरकार का पेशनिया बन गया। केवल पंजाब, काश्मीर और उत्तर पश्चिमी सीमा-प्रान्त ही ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर रहे।

अफगानिस्तान की दूसरी लड़ाई के बाद अफगानिस्तान पूर्ण स्वतंत्र न था। वह ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था। पर स्वतंत्र अफगान यह सह न सकते थे। १९१९ में जब भारत में असहयोग और खिलाफत आन्दोलन प्रारंभ हुआ, भारत में चारों ओर अशांति मच गई थी, उस समय अफगानों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने का अच्छा मौका पाया। तत्कालीन अमीर हबीबुल्ला यह न चाहता था, यहाँ तक कि यूरोपीय महायुद्ध के अवसर पर जब कि ब्रिटिश सरकार आपत्ति में थी, तब जर्मनी और तुर्की वालों के समझाने पर भी उसने कोई प्रयत्न न किया था। इससे अफगान असंतुष्ट थे। इस समय भारत में अशांति देखकर वे किसी प्रकार अवसर न खोजना चाहते थे। अतः उन्होंने अमीर की हत्या कर उसके तीसरे पुत्र अमानुल्ला को गद्दी पर बिठाया, और नये शासक को अफगानों ने भारत पर हमला करने को प्रेरित किया। इधर ब्रिटिश राज्य में स्थित कुछ लोगों ने भारतीय जनता की अशांति की सूचना अमीर को दी और उसे आश्वासन दिया कि एक बार सीमाप्रान्त पर हमला कर देने से सारे भारत में विद्रोह मच जायगा। फलतः १९१९ में अमीर की सेना ने भारत पर हमला कर दिया। अफगानिस्तान की तीसरी लड़ाई का यही मुख्य कारण था।

६ बर्मा की दूसरी लड़ाई के कारण लिखो।

अथवा

मान्टेग्यू चेम्सफोर्ट सुधार द्वारा भारतवर्ष के शासन में क्या परिवर्तन हुआ ?

बर्मा की लड़ाई के बाद ब्रह्म अंगरेज व्यापारियों को नग्न में व्यापारी कोठियाँ बनवा ली थीं। पर बर्मा व्यापारियों या बर्मा के सम्राट् को वह पराजय सदा शूल की तरह चुभती थी। घृणा और बदला लेने के भाव उनमें यह रह गया। इसी कारण अंग्रेज व्यापारियों के साथ बर्मा के प्रदरगाह पर क्रूर चरताय किया जाता था। इस पर जब अंग्रेज-दूत बर्मा के राजदरबार में क्षतिपूर्ति के लिए भेजा गया तो बर्मा के राजा ने इस सत्र में कुछ करने से इनकार कर दिया। इसी आधार पर लार्ड डलहौजी ने सन १८५० में बर्मा की दूसरी लड़ाई की घोषणा की थी।

मान्टेग्यू चेम्सफोर्ट सुधार द्वारा भारतीय शासन-प्रणाली में निम्नलिखित महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए—
 १. वायसराय की कैबिनेट में एक के स्थान पर तीन भारतीय सदस्य होने लगे।
 २. भारत निवासी गवर्नर के पद पर नियुक्त होने लगे।
 ३. वेदिकाय व्यवस्थापिका सम्पूर्ण हो गयी—एक प्रतिनिधि आर्य स्टेट (राज्यपरिषद्) तथा दूसरी गैजिस्त्रोटिव असम्पूर्ण (व्यवस्थापिका सम्पूर्ण), राज्यपरिषद् में १० सदस्य होते थे जिसमें ५ सरकार द्वारा नियत और बाकी ५ जनता द्वारा निर्वाचित होते थे। इन

१४ हर पाँच वर्ष के बाद जाया

था।
 नामजत

२. सदस्य ३, जिसमें ३५
 ३. इसका प्रभाव
 ४. १०। इसका प्रभाव

चुनती थीं। इस शासन-सुधार के अनुसार सरकार को अपना सारा बजट माँग के रूप में इन सभाओं में पेश करना पड़ता था। विदेशीय, राजनीतिक और सैनिक व्यय आदि कुछ खर्चों को छोड़कर बाकी सारा आय-व्यय का लेखा (बजट) दोनों सभाओं में पेश होना आवश्यक था। प्रत्येक कानून दोनों सभाओं में पास होने के बाद ही व्यवहार में लाया जाता था। परन्तु विशेष अवस्थाओं में वायसराय उन विलों के निषेध अथवा स्वीकृति की सामर्थ्य रखता था। प्रान्तीय और स्थानीय शासन में तो इस पैकट के कारण पहले से मौलिक परिवर्तन हो गए। प्रान्तीय शासन विभाग दो विभागों में बाँटा गया। कुछ विभाग तो प्रान्तीय गवर्नर तथा उसकी कांसिल के अधिकार में रहे और कुछ विभाग (शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, कलाकौशल) प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा द्वारा निर्वाचित मन्त्रियों के हाथों में आ गए। जो विभाग कांसिलों में सुरक्षित रखे गये थे, उनमें सरकार को अधिकार था कि कांसिल के निर्णय के विरुद्ध भी कर सके, परन्तु आय व्यय के बजटों का प्रान्तीय कांसिल में पास होना आवश्यक हो गया। प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं के अधिकांश सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते थे। मिनिस्टर व्यवस्थापिका सभा के निर्वाचित सदस्यों में से गवर्नर द्वारा नियत किये जाते थे। यदि मिनिस्टरों की बात को व्यवस्थापिका सभा स्वीकार न करे तो उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ता था। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय शासन सुधारों के साथ साथ केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों की आमदनी के भी पूर्णतया विभाग कर दिये गये। इसके अतिरिक्त नगरों में तथा गाँवों के स्थानीय शासन में,

नगरों में म्युनिसिपल कमेटियों तथा गाँवों में डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के कार्यक्रम तथा अधिकारों में बहुत नये परिवर्तन हुए। सारांश यह कि इस कानून द्वारा भारत के शासन में मौलिक परिवर्तन हुए।

भारतवर्ष के इतिहास का प्रश्नात्तम (दूसरा भाग)

(ले०—ला० सोमदत्त सूद बी ए, नया मद्रास विश्वविद्यालय, ताम्रपर)

इसमें यूरोपियन व्यापारियों के भारतवर्ष में आने से लेकर आज तक का भारत का इतिहास प्रश्न और उत्तर के रूप में दिया गया है। इस बार भी परीक्षा में पूछे गये प्रश्न इस प्रश्न पुस्तक में सहाय्य हैं। मू०—(२)

७ कवि सूरदास का जन्म कहाँ हुआ। और वह क्या था। इस उमर हिंदी नाटिकों को क्या मंत्रा का ?

कवि सूरदास हिन्दी के अर्थश्रेष्ठ कवियों में एक हैं। इनका जन्म तथा मरण के काल का विदित पता नहीं। पर जन्म अनुमान से १५८० वि० तथा मृत्यु १६३० वि० में कहा जाता है। इनका जन्मस्थान कुछ लोग दिल्ली के पास सीहो ग्राम कहते हैं और कुछ लोग रेणुका ग्राम। कई लोग इनका जन्म से अथा मानते हैं, कवियों के मतानुसार ये एक बार एक मुदरी पर मोहित हो गये, पीछे जातान पर इससे रूठ गये तो वे नौका का शोध लगा, अतः इन्होंने अपने मंत्र को छुड़ लिया। पद्मदासजी चान्दभास्कराचार्य के शिष्य थे, और उनकी आज्ञा से निरन्तर प्रति जागने उपास्यवेष और मन्त्रा कृष्ण की स्मृति में नकोन भजन बनाते थे। इनके मधुर पद्यों के कारण मन्त्राचार्य विद्वत्समाज ने इन्हें अष्टावक्र के कवियों में परिगणित किया।

इस अथ कवि ने हिन्दी साहित्य में सूरसागर नामक अनूठा ग्रन्थ लिखा जिसमें लगभग सवा लाख पद कहे जाते हैं। पर आजकल केवल पाँच छ. हजार ही मिलते हैं। इनमें कृष्ण की बाल लीला से लेकर उनके गोकुल त्याग और गापियों के विरह तक ही कथा फुटकर पदों में कही गई है पर उन पदों में कथा कहने की प्रवृत्ति बिलकुल नहीं दीख पड़ती। प्रेम, विरह आदि विभिन्न भावों की वेगपूर्ण व्यंजना उनमें बड़े सुंदर रूप में की गई है।

इन्होंने एक ही प्रसंग पर अनेक पद लिखे हैं। भक्ति क आवेश में वीणा के साथ गाते हुए जो सरस पद इस अथ कवि के मुख से निकले हैं उसमें पुनरुक्ति भले ही हो पर वे इतने ममस्पर्शी तथा हृदयहारी हैं, कि अरसिक को भी एक चार रसलीन कर देते हैं विशेषत बाल लीला, गोपी-विरह, तथा कृष्ण द्वारा भेजे हुए उनके दूत ऊधो और गोपियों के सवाद के वर्णन में ये सरसता, स्वाभाविकता तथा उत्कृष्टता की चरम सीमा को लॉघ गये हैं।

इस अनूठे ग्रन्थ को लिख कर सूर ने हिन्दी साहित्य में कृष्ण-भक्ति की ऐसी प्रबल लहर चला दी कि क्या हिन्दू क्या मुसलमान हिन्दी के सब कवियों की कविता का सदियों तक कृष्ण भक्ति ही विषय रहा और ब्रज भाषा ही काव्य भाषा होगई।

८ पश्चिमी हिन्दी की कितनी शाखाएँ हैं। यह कहाँ कहाँ बोली जाती है? विस्तार पूर्वक लिखो।

पश्चिमी हिन्दी की मुख्य चार शाखाएँ हैं—

भूषण प्रश्नपत्र ६

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्य में प्रयोग करो —

(१) देखें ऊँट किस करवट बैठता है ।

(२) बोधा चना बाजे घना ।

(३) दाए में कुठ काला है ।

(४) बवरे की माँ कम तक खैर मनायेगी ।

(५) मन चगा तो कठोती में गंगा ।

१५

लोकोक्तियों और मुहावरों का ठीक-ठीक प्रयोग जानने के लिए डा० बहादुरचंद्र कृत “लोकोक्तियाँ और मुहावरे” नामक पुस्तक देखिए । इसमें लोकोक्तियों और मुहावरों के अर्थ तथा उनको अपने वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है यह सब भली-भाँति दिखाया गया है । प्रश्न संख्या १ और २ में जो भी लोकोक्तियाँ और मुहावरे पूछे गये हैं, वे सब उसी पुस्तक में से हैं और यहाँ उसी पुस्तक में से उठा कर रख दिये गये हैं । साथ ही पुस्तक की पृष्ठ संख्या भी दे दी गई है । पुस्तक लेते समय ‘हिन्दी भवन’ और डा० बहादुरचंद्र का नाम देस ले ।

देखें ऊँट किस करवट बैठता है—किसी घटना का फल जब अनिश्चित होता है ओर उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो

भूषण प्रश्नपत्र ६

१। निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्य
म प्रयोग करो —

- (१) देखें ऊँट किस करवट बैठता है ।
- (२) थोथा चना बाजे घना ।
- (३) दाल में कुछ काला है ।
- (४) बकरे की मो कन तक खेर मनायेगी ।
- (५) मन चगा तो कठौती में गंगा ।

लोकोक्तियों और मुहावरों का ठीक-ठीक प्रयोग जानने के लिए डा० बहादुरचंद्र कृत "लोकोक्तियाँ और मुहावरे" नामक पुस्तक देखिए । इसमें लोकोक्तियों और मुहावरों के अर्थ तथा उनको अपने वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है यह सब भली-भाँति दिखाया गया है । प्रश्न संख्या १ और २ में जो भी लोकोक्तियाँ और मुहावरे पूछे गये हैं, वे सब उसी पुस्तक में से हैं और यहाँ उसी पुस्तक में से उठा कर रख दिये गये हैं । साथ ही पुस्तक की पृष्ठ संख्या भी दे दी गई है । पुस्तक लेते समय 'हिन्दी भवन' और डा० बहादुरचंद्र का नाम देख लें ।

देखें ऊँट किस करवट बैठता है—किसी घटना का फल जब अनिश्चित होता है और उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो-

विमला कालिज, मेकलोड रोड तथा आदर्श महिला विद्यालय, रेलवे रोड विशेष उल्लेखनीय हैं। गतवर्ष मैंने 'रत्न' परीक्षा आदर्श महिला विद्यालय से दी थी, पर इस बार मैं 'विमला कालिज' में दाखिल हुई हूँ। इसकी सचालिका श्रीमती नारायण देवी, पी० ए०, हिन्दी प्रभाकर हैं। विद्यालय में हिन्दी भूषण आदि के अतिरिक्त सगीत, मैट्रिक तथा एफ० ए० की पढाई का भी प्रबन्ध है। मैं इस वर्ष भूषण और मैट्रिक दोनों दे रही हूँ। सवेरे १०-१२ तक हिन्दी-भूषण की पढाई होती है। और १ से ३ तक मैट्रिक की अंग्रेजी की पढाई। ३ बजे के बाद एक घंटा सगीत के लिए होता है। बहन नारायण देवी जो प्रभाकर और भूषण को कुछ घंटे पढाती हैं। उनके अतिरिक्त विद्यालय में दो और अध्यापिकाएँ और एक पंडित तथा एक अंगरेजी के प्रोफेसर हैं। सब ही अच्छे अनुभवी हैं।

विद्यार्थिनियों के लाभ के लिए परीक्षा के निकट आने पर कई बड़े बड़े साहित्यिकों के व्याख्यान भी कराये जाते हैं। मैं समझती हूँ कि तुम भी इसी विद्यालय में दाखिल हो जाओ तो अच्छा होगा।

लिखो, कब तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँ। अपने माता पिता जी को मेरा नमस्कार कहना।

तुम्हारी सखी
इन्दुशोभा

४ अपनी पाठ्य-पुस्तकों में से कोई भी ऐसे दो पद्य लिखो जो तुम्हें प्रिय हों। लगभग २० पक्तियों में उनकी समालोचना करो। १५

सीस उतारै भुईं वरे, ता पर राखै पाँव
दास कवीरा यों कहैं ऐसा होय तो आव

हिन्दी भूषण प्रश्नपत्र संग्रह
[उत्तर सहित]

१९४०

संपादक
रामप्रसाद मिश्र

प्रकाशक
हिन्दी भवन, लाहौर

मूल्य १२)

प्रकार सीधी-सादी भाषा में कवि ने इतने अनूठे हृदयग्राही भाव भरे हैं जिनकी छाप हृदय से नहीं मिटती ।

५ निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सरल और शुद्ध हिन्दी भाषा में अपने विचार प्रकट करो —

- (१) पुस्तकालय ।
- (२) प्रातःकाल का भ्रमण ।
- (३) महात्मा गान्धी ।
- (४) पराधीनता ।
- (५) अपने यहाँ का कोई मेला ।

३५

निबंधों के लिए श्री शम्भुदयाल सकसेना-लिखित 'हिन्दी-भूषण-निबन्धमाला' देखिए । इस पुस्तक में हिन्दी भूषण परीक्षा में पिछले १०—११ वर्षों में आए हुए लगभग ४५ विषयों पर विस्तृत निबन्ध और लगभग इतने ही खाके (outlines) दिए गए हैं । सकसेना जी हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक हैं । पुस्तक की भाषा शुद्ध और सरल है । पृष्ठ सर्या ३०० से भी अधिक और मूल्य केवल १।) । पुस्तक का इतनी जल्दी चौथा संस्करण होना पुस्तक की उत्तमता का प्रमाण है ।

पुस्तक लेते समय श्री शम्भुदयाल सकसेना तथा हिन्दी-भवन का नाम अवश्य देख लें ।

हिंदी भूषण प्रश्नपत्र—१९४०

प्रश्नपत्र पहला

१. (क) व्याकरण पढ़ने से तुम्हें क्या लाभ होता है ? ०
 (ख) वर्ण, शब्द, और वाक्य में क्या भेद हैं ? ३

(क) व्याकरण पढ़ने से हमें भाषा को शुद्ध रूप में प्रयोग करने के नियमों का ज्ञान हो जाता है। साधारणतया लोग बिना व्याकरण पढ़े भी शुद्ध लिख और बोल लेते हैं और अशुद्ध बोलने पर टोक भी देते हैं, परन्तु क्या अशुद्धि है और क्यों इस बात का ज्ञान व्याकरण पढ़े बिना नहीं हो सकता। अतः भाषा के पूर्ण ज्ञान के लिए व्याकरण पढ़ना आवश्यक है।

(ख) वर्ण उस मूलध्वनि को कहते हैं जिसके मतलब न हो सके, जैसे अ, इ, क, ए, आदि।

एक या अनेक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं, जैसे, लहका, जा, छोटा, में, धीरे, परन्तु वर्ण।

एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।

सारांश यह है कि वर्ण मूल ध्वनि है, वर्णों के जुड़ने से शब्द बनते हैं और शब्दों के जुड़ने से वाक्य।

नीचे लिखे शब्दों में सन्धि करो। और विद्यमान भी बताओ —

(क) हु + प्रकृति, पद + वागम, नि + ऊप, वृ + मण

(ख) नीचे लिखे शब्दों का सन्धिदिष्टेय करो —

Printed and published by
D C Narang at the H B Press, Lahore.

मात्रानन्द—मातृ + आनन्द ।

१ (क) द्वन्द्व समास कित्से कहते हैं ? उसके भेदों के नाम लिखो ।
उनके लक्षण और उदाहरण भी दो ।

(ख) निम्नलिखित पदों में जो जो समास है उनके नाम और लक्षण बताओ ।

निन्दर, चौमासा, पर्णशाळा पञ्जदह ।

जिस समास में दोनों समासार्थ अथवा उनका समाहार प्रधान रहता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं । इसके तीन भेद हैं—

१ इतरेतर द्वन्द्व—जिस द्वन्द्व समास में दोनों पद 'और' समुच्चयबोधक से जुड़े हुए हों और उन समुच्चयबोधक का लोप हो गया हो, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं, जैसे, राधाकृष्ण, (राधा और कृष्ण) रामलक्ष्मण, (राम और लक्ष्मण) भाईबहन, (भाई और बहन) ।

२ समाहार द्वन्द्व—जिस द्वन्द्व समास से एक पदों के अर्थ का अतिरिक्त उसी प्रकार का और भी अर्थ सूचित हो उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं,—जैसे सैठ-मातृकार (सठ और मातृकारों के अतिरिक्त और भी दूसरे धनी लोग) रुपया-पैसा ।

३ वैकल्पिक द्वन्द्व—जिस समास में दोनों पद विकल्पबोधक समुच्चयबोधक द्वारा मिले हों और उस समुच्चयबोधक का लोप हो गया हो, उसे वैकल्पिक द्वन्द्व कहते हैं, जैसे पाप पुण्य (पाप या पुण्य) धर्माधर्म (धर्म या अधर्म) ।

(ख) निन्दर—अव्ययीभाव समास । जिस समास में पदों का प्रधान होता है और जो समूचा शब्द त्रिधा विशेषण अव्यय राधा है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं ।

चौमासा—द्विगु । जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, उसे लक्ष्य समास कहते हैं । जिस लक्ष्य समास के निन्दर में

पुनरक्ति, पुनर्रचना, निश्चल, निषिद्ध, सन्तोष, उद्धार,
मात्रानन्द ।

(क) दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति ।

यदि विसर्ग से पहले इ या उ हो और पीछे क्, ख्, या प्, फ् में से कोई वर्ण तो विसर्ग के बदले घ् हो जाता है । इस नियम से विसर्ग को घ् हो गया ।

पय + पानम् = पयःपानम् ।

विसर्ग के बाद क्, ख्, या प्, फ् हो तो विसर्ग को कोई विकार नहीं होता । इस नियम से विसर्ग ज्यो का त्यो रहा ।

नि + ऊन = न्यून ।

ह्रस्व या दीर्घ इकार, उकार या ऋकार के बाद कोई असवर्ण (विजातीय) स्वर आये तो इ, ई के बदले य्, उ के बदले व् और ऋ के बदले र् हो जाता है । इस नियम से इ को य् होकर न्यून बना ।

षट् + मास = षणमास

किसी वर्ण के प्रथम अक्षर से परे कोई अनुनासिक वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के बदले उसी वर्ण का अनुनासिक वर्ण हो जाता है । इस नियम से ट् को ण् हुआ ।

(ख) पुनरक्ति—पुनर् + क्ति ।

पुनर्रचना—अशुद्ध रूप है । पुनर् + रचना की सधि होने पर शुद्ध रूप पुनार्रचना होगा ।

निश्चल—नि. + चल ।

निषिद्ध—नि + सिद्ध ।

सन्तोष—सम् + तोष ।

उद्धार—उत् + हार ।

(ख) कथा—कथाएँ
 रानी—रानियाँ
 दादा—दादा
 बहू—बहूएँ

(ग)—धातुओं के अन्त में प्रत्यय लगा कर जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं और धातुओं को छोड़कर शेष शब्दों में लगे प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें लटित कहते हैं।

५ (क) अन्वय, अधिकार और पदक्रम किसे कहते हैं ?

(ख) रूढ़ और वीगिक शब्दों के लक्षण और उदाहरण बताओ।

(क) अन्वय—दो शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, कारक अथवा काल की जो समानता रहती है, उसे अन्वय कहते हैं, जैसे—'छोटा लड़का रोता है' इस वाक्य में 'छोटा' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग और वचन का अन्वय है, और 'रोता है' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग वचन और पुरुष में अन्वय है।

अधिकार—अधिकार हम साथ ही कहते हैं जिसके कारण किसी एक शब्द के प्रयोग से दूसरी संज्ञा या सर्वनाम किसी विशेष कारक में आता है, जैसे, 'लड़का बंदर से डरता है' इस वाक्य में 'डरता है' किर्या के योग से 'बंदर' शब्द आपादान कारक में आया है।

पदक्रम—शब्दों को उनके अर्थ और संबंध की प्रधानता के अनुसार वाक्य में यथास्थान रखना क्रम कहलाता है। वाक्य में पदक्रम का सबसे साधारण नियम यह है कि पहले कर्ता या कर्तृवाचक कर्म या पूर्ति और अन्त में क्रिया रहती है, जैसे, 'मनुष्य का पुत्रक पड़ता है'।

(ख) रूढ़—रूढ़ उन शब्दों को कहते हैं जो दूसरे शब्दों के योग से नहीं बने होते, जैसे, नाक, दाँत, पीपल, मूँ, पर।

दोनों पदों के साथ एक ही कर्ता कारक की विभक्ति आती है उसे कर्मधारय कहते हैं । जिस कर्मधारय समास में पहला पद सख्या-वाचक होता है और जिससे समुदाय का बोध होता है उसे द्विगु कहते हैं ।

पर्याशाला—लुप्तपद कर्मधारय या मध्यमपदलोपी कर्मधारय । जिस कर्मधारय समास में पहले पद का दूसरे पद से संबध बनाने वाला शब्द समास में अध्याहृत रहता है, उस समास को मध्यमपदलोपी या लुप्तपद कर्मधारय समास कहते हैं ।

पर्या निर्मित शाला = पर्याशाला ।

वज्रदेह—उपमानपूर्वपद कर्मधारय । जिस वस्तु से उपमा दी जाती है उसका वाचक शब्द जब कर्मधारय समास के आरम्भ में आता है तब उसे उपमान पूर्वपद कर्मधारय समास कहते हैं ।
वज्रदेह—वज्र के समान कठोर देह ।

४ नीचे लिखे शब्दों का लिंग निर्णय करो —

(क) गेंद, मणि, मटर, बिनय, दुकान, बूंद ।

(ख) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन लिखो —

कथा, रानी, दादा, बहू ।

(ग) कृदन्त और तद्धित में क्या भेद है ?

४ (क) गेंद—उभयलिंग

मणि—स्त्रीलिंग

मटर—पुंलिंग

बिनय—उभयलिंग

दुकान—स्त्रीलिंग

बूंद—स्त्रीलिंग

- (ख) कथा—कथाएँ
रानी—रानियाँ
दादा—दादा
बहू—बहूएँ

(ग)—धातुओं के अन्त में प्रत्यय लगा कर जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं और धातुओं को छोड़कर शेष शब्दों के आगे प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं।

५ (क) अन्वय, अधिकार और पदक्रम किसे कहते हैं ? ३

(ख) रुद्र और योगिक शब्दों के लक्षण और उदाहरण बताओ। ४

(क) अन्वय—दो शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, कारक अथवा काल की जो समानता रहती है, उसे अन्वय कहते हैं, जैसे—'छोटा लड़का रोता है' इस वाक्य में 'छोटा' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग और वचन का अन्वय है, और 'रोता है' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग, वचन और पुरुष में अन्वय है।

अधिकार—अधिकार उस सभ्य को कहते हैं जिसके कारण किसी एक शब्द के प्रयोग से दूसरी सज्ञा या सर्वनाम किसी विशेष कारक में आता है, जैसे, 'लड़का बरत से डरता है' इस वाक्य में 'डरता है' क्रिया के योग से 'बरत' शब्द आपादान कारक में आया है।

पदक्रम—शब्दों को उनके अर्थ और सभ्य की प्रधानता के अनुसार वाक्य में यथास्थान रखना पद क्रम कहलाता है। वाक्य में पदक्रम का सबसे माधुर्य नियम यह है कि पहले कर्ता या नरेण्य फिर कर्म या पूर्ण और अन्त में क्रिया रखते हैं, जैसे, लड़का मुन्हा पढ़ता है।

(ख) रुद्र—रुद्र उन शब्दों को कहते हैं जो दृढ़ शब्दों के आगे नहीं बने होते, जैसे, नाक, कान, पीया, मूत्र, पर।

यौगिक—यौगिक उन शब्दों को कहते हैं जो दूसरे शब्दों के लक्षण से बनते हैं, जैसे, कतरनी, पीला पन, दूध वाला, मट-पट, घुड़-साल ।

६ (क) सयुक्त क्रियाएँ किसे कहते हैं ? उनमें कौन कौन सी क्रियाएँ आती हैं ?

(ख) "मैं चला हूँ" यह किस काल का उदाहरण है ?

(क) धातुओं के कुछ कृदंतों के आगे (विशेष अर्थ में) कोई कोई क्रियाएँ जोड़ने से जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें सयुक्त क्रियाएँ कहते हैं, जैसे, करने लगना, जा सकना, मार देना । इन उदाहरणों में करने, जा और मार कृदंत हैं और इनके आगे लगना, सकना और देना क्रियाएँ जोड़ी गई हैं । सयुक्त क्रियाओं में मुख्य क्रिया का कृदंत रहता है और सहायक क्रिया के भिन्न-भिन्न काल के रूप रहते हैं ।

सयुक्त क्रियाओं में नीचे लिखी क्रियाएँ आती हैं—

आना, बठना, करना, चाहना, चुकना, जाना, देना, डालना, पडना, पाना, बनना, रहना, लगना, लेना, सकना, होना । इनमें से प्रायः सकना और चुकना को छोड़ शेष क्रियाएँ स्वतंत्र भी हैं और अर्थ के अनुसार दूसरी सहायक क्रियाओं से मिलकर स्वयं सयुक्त क्रियाएँ भी हो सकती हैं ।

(ख) मैं चला हूँ—यह आसन्नभूतकाल का उदाहरण है ।

७ (क) वाक्यांश को अर्थांश से भिन्न कैसे पहचानोगे ?

(ख) छेकानुप्रास और बृह्यनुप्रास में क्या अन्तर है ?

(क) यदि वाक्य में चमत्कार लाने वाले शब्द या शब्दों को निकाल कर उस शब्द या उन शब्दों के स्थान पर उसी अर्थ वाले दूसरे शब्द रख दिए जायँ और अलंकार स्थिर रहे तो

अर्थालंकार होगा और यदि अलंकार नष्ट हो जाय तो शब्दान्तर ।

(ख) जब एक या अनेक व्यंजन वगैरे की एक बार आवृत्ति हो तो छेकानुप्रास होता है और यदि एक से अधिक बार आवृत्ति हो तो वृत्त्यनुप्रास ।

८ (क) एकधर्मा मालोपमा, समुच्चयोपमा, परम्परितरूपक, वस्तूपेक्षा, व्याजगिन्या, उक्ताप-दुक्ति, वृत्तीय-प्रतीप ।

इन अलंकारों के उदाहरण और उदाहरण बताओ । 10

(ख) नीचे लिखे पद्यों में कौन कौन अलंकार हैं उनके नाम और लक्षण लिखो :—

(क) सयै सहायक सफल के, कोइ ग निबल सहाय ।

पवन जगावत आग को, दीप दि देत सुहाय ॥ 1

(ख) जपत एक हरिनाम के, पानक कोटि विद्याप ।

लघु चिनगारी एक ते, पास उर जरि पाव ॥ 2

(ग) सोइत मानु प्रताप सौं, लसत सूर भजुषा । 2

(क) एकधर्मा मालोपमा—जब एक ही उपमेय की अनेक उपमानों से उपमा दी जाय और सब उपमानों में एक ही ममान धर्म बताया जाय तब एकधर्मा मालोपमा अलंकार होता है । जैसे

कहीं कहीं था विमलासु भी भरा ।

महजनों के उर सा पिदूप-सा ॥

इसमें एक ही उपमेय जल की महजनों व हृदय और पिदूप इन दो उपमानों से उपमा दी गई है और दोनों में समान धर्म विमल एक ही है ।

समुच्चयोपमा—जब एक उपमेय की एक ही उपमान से अनेक भावार्थों से समानता बताई जाय तब समुच्चयोपमा अलंकार होता है । जैसे—

राधा-मुख जलजात ज्यो कोमल सुरभित मंजु ।

यहाँ राधा-मुख एक उपमेय है, जलजात एक उपमान है, परन्तु कोमल, सुरभित और मंजु तीन समानधर्म हैं ।

परंपरितरूपक—परंपरित रूपक तब होता है जब प्रधान रूपक का कारण एक और रूपक हो । इसमें दो रूपक होते हैं एक प्रधान दूसरा अप्रधान । प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होता है अर्थात् यदि अप्रधान रूपक न रहे तो प्रधान रूपक भी न रहेगा । जैसे,

तुम्ह बिनु रघुकुल-कुमुद-विधु सुरपुर नरक समान ।

यहाँ दो रूपक हैं—

१ रघुकुल रूपी कुमुद—अप्रधान रूपक

२ तुम्ह (राम) रूपी चंद्रमा—प्रधान रूपक

राम को चंद्रमा इसलिये कहा गया है कि रघुकुल को कुमुद उससे पहले कहा गया है । यदि रघुकुल को कुमुद न कहा जाय तो रामचंद्र को चंद्रमा भी न कहा जा सकेगा । इस प्रकार अप्रधान रूपक प्रधान रूपक का कारण है ।

वस्तुत्प्रेक्षा—जहाँ उपमेय में उपमान की या अकार्य में कार्य की संभावना की जाय वहाँ वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार होता है । जैसे—

उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा,

मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा ।

यहाँ क्रोध से काँपते हुए शरीरवाले अर्जुन में हवा से लुब्ध सागर की संभावना की गई है ।

व्याजनिन्दा—जब स्तुति के वहाने निन्दा की जाय अर्थात् जब जान तो यह पड़े कि स्तुति की जा रही है पर वास्तव में निन्दा की गई हो, तो व्याजनिन्दा अलंकार होता है । जैसे—

राम साधु तुम साधु सुजाना, राममातु भलि में पहिचाना ।

यहाँ देखने में तो फौकियो ने राम, राममाता और दशरथ को साधु कहा है, परन्तु उसका यह फहने से अभिप्राय यह है कि तुम सब ग्यराव हो ।

छेकापहुनुति—जब पहले किसी बात को प्रकट करके फिर उसे छिपाने के लिए उसका निषेध किया जाय और चतुर्गई से दूसरी बात बना दी जाय तब छेकापहुनि अलंकार होता है । जैसे, सोभा सदा बढायनद्वारा, आग्नि त छिन करूँ न न्यारा । आठ पहर मेरा मन-रंजन, क्यों सगि सगि माजन । न मति अजन ।

यहाँ पहले प्रियतम की बात कह कर फिर उसे छिपाने के लिए उसका निषेध करके अंजन की बात कही है ।

तृतीय प्रतीप—जब उपमान को स्वमेय मान कर उपमेय द्वारा उपमान का अनादर कराया जाय तब तृतीय प्रतीप होता है । जैसे,

पाहन, मिय जनि गये कर, हौ हौ कठिन अपार ।

चित्त दुरजन के दण्डित हो सो लाम्य दगार ।

माधारगतया दुर्जन का विध उपमेय होता है और पत्थर

१ । यहाँ पत्थर उपमान को उपमेय मान कर उससे कहा

कि तुम इस बात का गर्व मत करो कि मृगही अरुपण कठोर

दुर्जन का चित्त भी होता है । इस प्रकार

पात पत्थर का अनादर कराया

२/१५

॥ १ ॥

→ राम का विशेष

राम चिया जग

में पारने कर

संचारी भाव—मोह, वि- , गदहा, उन्नाद, आधि, ग्लानि, निर्वेद,

आलस्य—प्रिय वस्तु का नाश, प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या क्लेश,
उद्दीपन—मृत शरीर, दाह-क्रिया, प्राणधन के गुणों का स्मरण, समसे सवध रखने वाली वस्तुओं का स्थान,

अनुभाव—छाती पीटना, पंजाब गाना रुदन, धिलाप, निश्वास आदि हैं ।

उदाहरण—

शैब्या—(आगे रात्र देख कर) हाय-हाय रे ! अरे मेरे लाल को साँप ने सचमुच डम लिया ? हाय लाल ! मेरी आँगा व वज्रियाले को कौन ले गया ? हाय ! मेरा मोलना हुआ मुग्गा दर्दा उड़ गया ? वेटा ! अमी नो दोल रहे वं, अमी तया होगया ? हाय, मेरा बसा घर आज दिहसन उजाड़ दिया ? हाय ! मेरी मोहर में किसन आग लगा दी ? हाय, मेरा पुरोना किस न निकाल लिया ? (चिन्ता-चिन्ता कर रोती है) हाय लाल ! कहाँ गये ? अरे ! अब मैं किसका मुँह देख कर जीऊँगी रे ? हाय ! अब मैं किस सुफ्तको कौन पुकारेगा ? अरे आज किस घरी की दाती टाटी कर रे ? अरे, तरे सुकुँआर अहों पर नी फाल का मतिह ददा न आई । अरे वेटा ! आँव ग्योली । हाय ! मैं मय विपन मुग्गाया ही मुँह देख कर सदती जो, सो जब कैस भीती भूँती ? अरे काम एक बार नो दोलो ! (रोती है) ।

१०. बसन्ततिशब्दा, उपजाति, मास्तिगा, हा अरों व अरों

किन्ही ।

“मदैया” किसे करते हैं ?

साधारण बात कही है कि सभी बलवान के सहायक होते हैं, निर्बल का कोई सहायक नहीं होता और फिर इसका यह विशेष बात कह कर, कि वायु आग को तो जलाती है परन्तु दीपक को बुझा देती है, समर्थन किया गया है, इसलिए अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

(ख) दृष्टान्त । जब पहले एक बात कह कर उसको स्पष्ट करने के लिए उससे मिलती जुलती दूसरी बात कही जाय और दोनों का साधारण धर्म एक न हो तब दृष्टान्त अलंकार होता है।

यहाँ पहले एक बात कही गई है कि एक हरिनाम को जपने से करोड़ों पाप नष्ट होते हैं फिर उसका उदाहरण ही वैसी एक बात से दिया गया है कि एक छोटी सी चिनगारी से घास का ढेर जल जाता है। दोनों का समान धर्म एक नहीं है।

(ग) प्रतिवस्तूपमा । जब दो उपमेय और उपमान वाक्यों का एकार्थवाची भिन्न भिन्न शब्दों द्वारा एक ही साधारण धर्म कहा जाय तब प्रतिस्तूपमा अलंकार होता है।

यहाँ भानु प्रताप से शोभित होता है यह उपमान वाक्य है और शूर धनुषवाण से शोभित होता है यह उपमेय वाक्य है। दोनों का समान धर्म शोभित होना एक ही है, परन्तु पहले वाक्य में उसे 'सोहत' शब्द से प्रकट किया गया है और दूसरे में 'लसत' शब्द से।

९ करुण रस का लक्षण लिखकर उदाहरण दो। और इस रस के स्थायीभाव, सञ्चारी, आलम्बन, उद्दीपन और अनुभाव बताओ। १४

करुण रस में शोक का वर्णन होता है। इस रस का स्थायीभाव—शोक;

सचारी भाव—मोड़, री, उदता, वन्नाद, व्याधि, गतानि,

निवेद,

आलस्य—प्रिय करतु का चारा, प्रिय व्यक्ति को मृत्यु या क्लेश,

सहीपन—मृत शरीर, गृह-दिया आलस्य क गुणों का स्मरण, चमसे सत्रध रखने वाली वस्तुओं का दर्शन,

अनुभाव—छाती पीटना, पछाड़ साना, रुदन, विलाप, निधाम आदि हैं।

उदाहरण—

शैव्या—(आगे राव दख कर) हाय हाय रे ! अरे मेर लाज को साँप ने सचमुच डस लिया ? हाय लाज ! मरी आँगा क उजियाले को कौन ले गया ? हाय ! मेरा बोलना तुसा सुगा कहीं चड गया ? घंटा ! अभी तो बोल रहे थे, अभी क्या होगा ? हाय, मेरा बसा घर आज किमने उजाड दिग ? हाय ! मरी कोष में किसने आग लगा दी ? हाय, मेरा कलेजा किम न निघाज लिया ? (चिह्ला-चिह्ला कर रोती है) हाय लाज ! कहीं गये ? गर ! अब मैं किसका सुँह देग कर जीऊँगी रे ? हाय ! कब भी कइके सुगको कौन पुकारेगा ? अरे आज किम येगी की आँगा टरी अरे रे ? अरे, तेरे सुँहआर अज्ञों पर भी काल को कतिद दया न आई ! अरे घंटा ! साँप गोलो ! हाय ! मैं कब कित्त सुगमा ही सुँह देग कर मदती यी, सो अब कस भीनी सुँगी ? करे माग एक बार तो घोलो ! (रोती है) ।

१० वसन्तपिण्डक, उपजाति, माजिनी, इव एन्दी के कथन

दिखो।

“सुवेता” दिने कइठे हैं ?

षसन्ततिलका—इसमें तगया, भगया, जगया, जगया और दो गुरु इस क्रम से १४ वर्ण होते हैं ।

उपजाति—इसमें इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण होता है । इन्द्रवज्रा में तगया, तगया, जगया और दो गुरु इस क्रम ११ वर्ण होते हैं और उपेन्द्रवज्रा में जगया, तगया, जगया और दो गुरु इस क्रम से ११ वर्ण । अर्थात् इन्द्रवज्रा के पहले गुरु वर्ण को लघु कर देने से उपेन्द्रवज्रा हो जाता है । उपजाति इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बनता है । यह मेल कई तरह हो सकता है । सबसे सरल मेल में पहला और तीसरा चरया इन्द्रवज्रा का और दूसरा तथा चौथा उपेन्द्रवज्रा का होता है ।

मालिनी—तगया, नगया, मगया, यगया और यगया इस क्रम से १५ वर्णों का मालिनी छन्द होता है ।

सवैया—२२ से लेकर २६ वर्णों तक के चृत्त सवैया कहलाते हैं ।

रस और अलंकार

(ले०—श्रीयुक्त रामवहोरी शुक्ल, एम ए, साहित्यरत्न, कौंस काळेज, बनारस)

इस पुस्तक में रस और अलंकार का कठिन विषय बड़ी ही सरलता-पूर्वक समझाया गया है । प्रत्येक अलंकार का लक्षण, उदाहरण तथा अलंकारों के आपस के भेद समझाने में विद्वान लेखक बहुत सफल हुए हैं । समी उदाहरण आजकल की खड़ी बोली की कविता से दिए गए हैं, जिससे विद्यार्थी बड़ी आसानी से उन्हें समझ सकते हैं । इसको पढ़ कर हिन्दी-भूषण के विद्यार्थियों को और कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती । मूल्य III=) मात्र ।

अलंकार प्रवेशिका की प्रश्नोत्तरी

(छे०—का०—दुर्गादास शुभ, साहित्य विशारद, हिन्दी प्रमाण)

इसमें अलंकार प्रवेशिका का संप्लेप प्रश्न और उत्तर के रूप में दिया गया है। मूल्य 1-)

व्याकरण-प्रदीप

[छे०—प्रा० रामदेव एम ए]

यह हिन्दी का पहला व्याकरण है जिसमें व्याकरण विषय का विवेचन पर्याप्त विस्तार और शास्त्रीय ढंग से किया गया है, जिसमें हिन्दी-भाषा-विज्ञान पर भी सत्सिद्ध विचार प्रकट किये गये हैं और राजस्थानी, अवधी तथा ब्रजभाषा के व्याकरण पर भी प्रकाश डाला गया है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषताएँ हैं, और यही विद्यार्थियों की समने बड़ी माँग है जिन्हें प्राचीन काव्य-साहित्य का भी अध्ययन करना होता है। इसकी इसी विशेषता को देखकर पंजाब यूनिवर्सिटी ने इसे हिन्दी भूखण्ड में नियत किया है। मूल्य १)

व्याकरण की प्रश्नोत्तरी

छे०—श्री भीष्मप्रताप शास्त्री, बी ए और कनिष्ठ रामदास, प्रकाश

संपादक—श्री धर्मचन्द्र विशारद

इस पुस्तक में हिन्दी का सारा व्याकरण बहुत आसान भाषा में प्रश्न और उत्तर के रूप में समझाया गया है। विशारद साहब ने इसे हर तरह से विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त बना दिया है। पुस्तक में ही समय संपादक का नाम अनुरोध देना है। मूल्य 1-)

प्रश्नपत्र दूसरा

नोट — केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर दो। प्रथम प्रश्न का उत्तर आवश्यक है। अन्य प्रश्न वैच्छिन्न हैं। अङ्क सब प्रश्नों के समान हैं।

१. शुद्ध हिन्दी में अर्थ लिखो —

- (क) ब्रह्मिय घोर निसान राज चहुआन चहाँ दिस ।
 सकल सूर सामन्त समरिवल जत्र मंत्र तस ।
 उद्वि राज पृथिराज बाग छग मनो वीर नट ।
 कदत तेग मनो बेग लगत मनो बीज क्षट घट ।
 थकि रहे सूरकौ तिग गगन रगन मगन भई शोन धर ।
 हर हरपि वीर जगो हुलस हुरव रगि नव रत्त वर ।
- (ख) 'पानी पानी पानी' सब रानी अकुलानी कहै,
 जाति हैं परानी, गति जानि गज चालि है ।
 बसन विसारै, मनिभूषा सभारत न,
 आनन सुखाने कहै "क्यों हू कोऊ पालि है ?"
 तुलसी मँदोवै मोंजि हाथ धुनि माथ कहै,
 "काहु कान कियो न मैं कछौ केतो कालि हैं ॥"
 थापुरो विभीषन पुकारि बारबार कह्यो,
 "बानर बढी बलाइ घने घर घालि है ॥"
- (ग) जीति लई वसुधा सिंगरो
 घम सान घमण्ड के बीरन हू की ।
 भूषण मोंसिका छौन लई
 जगती उमराध अमीरन हू की ॥

साहित्यनै स्रिवरान की घादनि

दृष्ट गर्द प्रति धीन्न दू की ।

मीरन के उर पीर पत्नी पों

जू भूलि गर्द सुधि पीरन दू की ॥

२०

(क) महाराज पृथ्वीराज चौहान क युद्ध के घनघोर बाज चारों ओर बजने लगे । उन के सब शूर-सामन्त भी उन्हीं की भाँति अपने जंत्र मंत्र और बल का स्मरण करके तय्यार होन लगे अर्थात् सब शूर-सामन्त अपने सब प्रकार क अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होने लगे । जिस प्रकार रस्सी पे बँध जाने पर नट अपना कौशल दिखाने के लिए तुरन्त तय्यार हो जाता है, वसी प्रकार महाराज पृथ्वीराज घोड़े पर लगाम पढते ही अपना युद्ध-कौशल दिखाने क लिए तैयार हो गये । न्यान से गीँची गर्द नलवार पेभी प्रतीत हुई, मानो बादलों की घटा में विजानी की बॉल हो । आकाश से सूर्य म्स्तब्ध हो कर देखने लगा कि पृथ्वी पर कैसी सनसनी घटना होने वाली है । इधर पृथ्वी देखन देखने शोणित से लाल हो गई । (मुटमाला पाने से) शिवजी हर्षित हुए, स्वर्ग में दूरी (सुर सुन्दरियों) को पाने की आशा से वीर गण प्रपुष्टित हुए और मदा प्रेमरत्न रहने वाली अप्सराएँ न्योन वीं की वाण करने पे आनन्द से हर्षित हुई ।

(ग) राजगामिनी रानिर्गा व्याकुल होकर पाती पाती बहती हुई भागती जा रही है । उन्हें न अपने बपुओं की राबर है, न माणियों ने जड़े गहनों की । ये सुते सुँह से बहती है कि बोरें बिष तरल हमारो रक्षा करेगा । तुलसीदास जी रहते हैं कि मंदोरती हाथ नल कर और माथा पुन पर बहती है कि है । वल दिव्या समझाया टोकित किसी ने मरे बहो पर ध्यान न दिना ।

विभीषण ने भी बार बार पुकार करके कहा कि यह वन्दर बड़ी बला है, बड़ी आफत है, यह बहुत से घरों को नष्ट कर देगा। (लेकिन उसकी भी बात किसी ने न मानी।)

(ग) घोर युद्ध करके शिवाजी भौसिला ने बड़े बड़े घमडी (अभिमानी) वीरों की भी समस्त पृथ्वी को जीत लिया। भूषण कहते हैं कि उन्होंने अमीर उमराओं की ज़मीनों को भी छीन लिया (छोडा नहीं)। शाहजी के पुत्र शिवाजी की धाक से बड़े बड़े धैर्यवानों का भी धीरज जाता रहा और मीरों के हृदयों में ऐसी पीडा बढी कि वे अपने पीर (पैगवरों) की भी सुध भूल गये।

२ सप्रसंग ब्याख्या करो —

(क) कबिरा सोया क्या करै, जागन की कर चौप।

ए दम होरालाल है, गिनि-गिनि हरि को सौप।

(ख) वदौं चरण सरोज तुम्हारे ॥

सुन्दर श्याम कमल दल लोचन,
ललित त्रिभंगी प्रानपति प्यारे।

जे पदपद्म सदा शिव के धन,
सिंधुसुता उर ते नहिं टारे।

जे पद कमल तात रिस घासत,
मन घच क्रम प्रह्लाद सँभारे ॥

(ग) होता था जब समर-भूमि में कोई सैनिक लड़कर भाहत।

(घ) किरण तुम क्यों बिलखी हो आज,
रगी हो तुम किसके अनुराग,

(ङ) "न्याय दया का दानी ? तुने गुनी कहानी।"

(क) चोप—वत्साह । मौन—सुपुंज कर ।

यह कबीरदास का दोहा है । कबीरदास कहते हैं कि माया क्यों पडा है ? जागने को वत्साहित हो । य तरे मौन नहीं ह, दे तो बहुमूल्य लाल और हीरे ह । डोहे गिन गिन कर परमात्मा को समर्पण कर दे । अर्थात् हर घड़ी उसी का भजन कर पाँच एक साँस भी व्यर्थ न जाने दे ।

(ख) चरगा सरोज—चरगा कमल । उल—पत्ते । त्रिभगी—तीन ओर से तिरछे । पदपद्म—चरगा-कमल । मिथु सुता—लक्ष्मी । चर ते—दृश्य ने । नहिं टार—नहीं हटानी । ताक रिस त्रासत—पिता के क्रोध से भयभीत ।

—यह पद सूरदासजी का है । सूरदासजी कहते हैं—सुन्दर माँ रघु, कमल-पत्र सदृश नच वाने, ललित, त्रिभगी, प्राण प्रिय भगवात के उन चरगा कमला की मैं बन्डना करता हूँ, जो चरगा कमल सदा शिव के परम धन है, लक्ष्मी जी चिन्हें वभा अस्त हृदय से दूर नहीं करती, तथा जिन चरगा कमलों की बिना व भय में भयभीत प्रह्लाद जी न मन, वान और वम स संभाला—पाद क्रिया ।

(ग) यह पं० रामनरेश त्रिपाठी व 'मार्ग' नामक पत्र में लिखे गये एक पद्य का प्रथम पंक्ति है । इसका अर्थ है मुट्ट भूमि में जय कोई सैनिक लटकर पावल होता था ।

(घ) यह जयजकर प्रसाद की छिरग नामक पंक्ति है । पदों को पंक्ति में लिखा है । छत्रि छिरग की सदा व कर व करण है तुम क्यों फँस रही हो, जिसके प्रेम में रंगी हो ?

(ङ) यह मैथिलीनरयण तुम की चरनेका नामक पद्य में दृष्टुत एक पंक्ति है । यमों का गहन की वम व वम व वम व

सुना रही है। कहानी सुनाने के बाद उसका परिणाम निकालती हुई वह कहती है न्याय दया का देने वाला है। राहुल बाल-सुलम-जिज्ञासा-भाव से इसी को दोहरा कर पूछता है—क्या न्याय दया का देने वाला है? माँ तूने अच्छी कहानी कही है।

३ तुलसीदास जी का हिन्दी कविता के क्षेत्र में क्या स्थान है? इस पर अपने विचार प्रगट करो। २०

तुलसीदास हिन्दी के सर्व श्रेष्ठ और भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। इस विषय में तो प्रायः सब साहित्यिक सहमत हैं कि सूरदास को छोड़ कर अन्य सब हिन्दी के कवियों से तुलसीदास का स्थान ऊँचा है। तुलसीदास तथा सूरदास में से किस कवि को उच्च स्थान देना चाहिए, इस विषय में अवश्य मतभेद है, अतः सूर से उनकी तुलना कर उनके स्थान का निर्णय कर सकेंगे।

महाकवि सूरदास की सारी कविता भगवान् कृष्ण पर आश्रित है, पर उन्होंने द्वारकाधीश कृष्ण के लोक-समूह-कारी रूप को नहीं लिया, आपितु गोपिकाओं से घिरे हुए गोकुल के प्रेम-मय भगवान् की ही उपासना की है। उनके वर्ण्य विषय कृष्ण की बाल लीला, रासलीला, गोपिका-विरह, कृष्ण के दूत का गोकुल-गमन, और गोपियों के उपालंभ आदि ही हैं। उनकी सारी कविता गेय है और उसमें शृंगार तथा वात्सल्य रस का अनूठा परिपाक है। भगवद्भक्ति में लीन इस अध-कवि के मुख से निःसृत पदों में पुनरुक्ति भले ही हो, पर वे इतने सरल हैं, कि एक बार अरसिक को भी रस-लीन कर देते हैं। इस सकीर्ण क्षेत्र को लेकर, उसमें अपनी प्रतिभा का पूर्ण चमत्कार दिखा देने

सूर की सफलता अद्वितीय है। सूदमदर्शिता ने भी सूर
 अपना सानी नहीं रखते। परन्तु तुलसी का क्षेत्र सूर की अपेक्षा
 बहुत विस्तृत है। उन्होंने अपने प्रभु रामचन्द्र के लोक-संपर्क-कारो
 रूप का चित्रण किया है। मानव-रूप धारण कर प्रभु ने सर्गादा
 के स्थापन के लिए जो जो कार्य किये, जो जो कष्ट बठाये, उनका
 बेशुद्ध तर्पण तुलसी ने किया है। माध हो दशरथ की आत्म-
 बलिदान करने वाली मत्स्यपरायणता, भरत के सन्यास, लक्ष्मण
 की भ्रातृभक्ति, हनुमान के सेवाधर्म, सीता के मनीष्य, मथुरा
 की कुटिलता, कैकयी के विगियाहूठ आदि के अचूके चित्र भी इनके
 ग्रंथों में मिलते हैं। जीवन के इन चित्रों द्वारा एक और लोक पत्र
 के आकर तुलसीदास ने पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों
 का मौन्दर्य दिखाया है, दूसरी ओर व्यक्तिगत मानना के मार्ग
 में उन्होंने विराग-पूर्ण शुद्ध भगवद्भक्ति का उपदेश दिया है। इस
 प्रकार उनके ग्रंथों में व्यक्तिगत साधना के साथ ही साथ लोक-
 धर्म की अत्यन्त उच्चवर्ण दृष्टि दिखाने वाली है और हिन्दू-आदर्शों,
 हिन्दू धर्मों, हिन्दू-संस्कृति तथा हिन्दू-धर्म के विभिन्न भिन्न अंगों
 को अचूक सामंजस्य स्थापित किया गया है। इसी कारण तुलसी
 का नाम आकर है। विशेषतः उनका रामचरित मानस इतना
 प्रसिद्ध है कि आजकल के एक एक के घर में रामचरित-
 मानस पढ़ा है। जो स्थान संस्कृत में है, गीता आदि का

“नानापुराणानि गणनागम-सम्भक्त” राम-

चरितम् है।

जहाँ तक है आगे बढ़

जो की ईश्वर में हो

जो दोनों पर

समान रूप से अधिकार था। दोनों में इन्होंने रचना की है और उस समय की सभी शैलियों और सभी छंदों को इन्होंने अपनाया है। प्रबन्ध काव्य, मुक्तक और गीति-काव्य सभी इन्होंने लिखे हैं। इस प्रकार वर्ण-विषय के विस्तृत होने के कारण तथा तत्कालीन प्रत्येक शैली में रचना करने के कारण सूरदास से तुलसीदास का पलड़ा अधिक भारी कहा जा सकता है और हम तुलसीदास को हिन्दी कवियों में सर्वोच्च स्थान दे सकते हैं।

४ आधुनिक कवियों में से किसकी कविता तुम्हें अच्छी लगती है और क्यों ?

आधुनिक कवियों में किसकी कविता सबसे अच्छी है यह निर्णय करना यद्यपि बहुत कठिन कार्य है तो भी सभ दृष्टियों से विचार करते हुए हम श्रीयुक्त मैथिलीशरण गुप्त को प्रथम स्थान दे सकते हैं। गुप्त जी की रचना में मर्म-स्पर्शिता, तल्लीनता आदि अनेक गुण विद्यमान रहते हैं। उनकी रचनाओं से सर्व साधारण में राष्ट्रीय भावनाएँ जाग्रत होती हैं, प्राचीन सस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है, धार्मिक प्रवृत्ति विकसित होती है और अत्यधिक शान्ति मिलती है। प्रसाद गुण का उसमें सदा एक सा प्रवाह बहा है। रस-परिष्कार उनकी काव्य-शैली का प्रधान गुण है। समय के साथ साथ उनकी रचनाओं में सरसता और मार्मिकता की मात्रा बढ़ती गई है। वे लोग भी, जो उनकी भारत-भारती को साधारण जनता की राष्ट्रीय भावना को जागरित करने वाली तुकड़ों को कहते थे, 'माफ़ेस' और 'यशोधरा' आदि उनकी नयी रचनाओं की सरसता और भव्य कवित्व को देखकर दंग रह गये हैं। गुप्त जी की कविता की भाषा सरल, व्याकरण-सम्मत और विशुद्ध होती है और शब्द-योजना सुगठित तथा परिमार्जित होती

लक्षणाधिक्य वस्तु न हो और दोष भी हों तथापि यदि उसमें रस, भाव और उनके आभासों की अभिव्यक्ति होती हो तो उसे काव्य कहा जा सकता है। भाव यह है कि काव्य में रस ही प्रधान तथा सारभूत वस्तु है, उसी को काव्य की आत्मा मानना उचित है। विश्वनाथ कृत काव्य का यह लक्षणा विद्वानों को बहुत पसंद आया और बहुत देर तक प्रायः सर्व-मान्य रहा। पीछे रस गगा-धर के प्रणेता पं० जगन्नाथ ने काव्य के लक्षणा को बदलने का फिर यत्न किया। उन्होंने कहा 'रमणीय अर्थ प्रतिपादक—अर्थात् जिससे रमणीय अर्थ का बोध हो उस—शब्द को काव्य कहते हैं। 'रमणीय' का अर्थ उन्होंने किया 'लोकोत्तर आल्हाद को देने वाला'। पर इस लक्षणा में स्पष्टता की अपेक्षा जटिलता अधिक आ गई है। साहित्य शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए साहित्य-दर्पणकार का लक्षणा—रसात्मक वाक्य को कविता कहते हैं—अधिक सरल और सुबोध है।

६ "कवि स्वभावतः होता है और बनावट से नहीं" इस लोकोक्ति की समीक्षा करो और अपने विचारों का उल्लेख करो। २०

यह लोकोक्ति बहुत कुछ ठीक है। कवि विश्व का प्रतिनिधि होता है। उसमें प्रत्येक वस्तु के आर पार देखने की अद्भुत क्षमता होती है। इसी क्षमता को दूसरे शब्दों में कल्पना शक्ति या प्रतिभा कहते हैं। यह कल्पना शक्ति या प्रतिभा जिसके पलों पर चढ़कर कवि संपूर्ण विश्व के कण कण में विचरण कर सकता है मनुष्य को प्रयत्न द्वारा प्राप्त नहीं हो सकती। यह तो किसी-किसी मनुष्य में सहज (जन्मजात) ही होती है और पूर्वजन्म के संस्कारों या पुण्यों का फल होती है। इसलिए कवि स्वभावतः होता है बनावट से नहीं यह कहना ठीक है।

पर इसका यह मतलब नहीं कि कवि को किसी प्रयत्न—अध्ययन या अभ्यास की—आवश्यकता नहीं होती । जिस तरह हीरा पैदा होता है, बनाया नहीं जाता पर ताकत कममें वह मोड़क टमक नहीं आती, जो उसकी जान है, जब तक उसे मात पर नहीं चढ़ाया जाता, इसी प्रकार कवि में स्वभाविक प्रतिभा होने पर भी उसे विविध फलाश्रों के ज्ञान, प्रकृति के अध्ययन और अभ्यास की आवश्यकता होती है । तभी उसकी प्रतिभा सफ़ज हो सकती है । पर स्वभाविक प्रतिभा के कारण इनको वह बहुत जल्दी प्रकट कर लेता है ।

७ "भूषण" की कविता को उत्कृष्ट क्यों समझते हैं ? २०

काव्य की आत्मा रस है । जिस कविता में मिलना अधिक रस परिपाक होगा वह उतनी ही उत्कृष्ट होगी । इस दृष्टि से देखने से भूषण की कविता बहुत ही उत्कृष्ट ठहरती है । भूषण ने जैसे ही किसी रस को अच्छूता नहीं छोड़ा, अगर और शान्त के दृष्टे - - - उदाहरण भी हमें भूषणमन्यायनी में मिलते हैं पर वीर, रौद्र और भगवन्त रस का जैसा प्रवाह भूषण की कविता में है वैसा हिन्दो के अन्य किसी कवि की कविता में नहीं है । और रस के लिये ही गणना में निर्विवाद रूप से पहला स्थान भूषण को है ।

पद्य रस ही नहीं कल्पकारों का प्रयोग भी भूषण की कविता में बड़ा लघित और स्वाभाविक रीति में हुआ है । कल्पना तो प्रायः संग्रह ही ही, वाक और शब्दाभ्यास का भी उदाहरण विषय है, जैसे—

एकरी पर-नीचे जैसे पर पर होने की
हरी बरग ने हर होने है गजब के ।

भूषण की कविता में शब्दालंकार केवल चमत्कार या काव्य की सौंदर्य-वृद्धि के लिए ही नहीं हैं वे अर्थ को भी प्रेरित करते हैं। "मीरन के उर पीर बढ़ी यों जु भूल गई सुधि पीरन हू की" में 'ईर' और 'अन' की आवृत्ति केवल शब्दों का खिलवाड़ ही नहीं है उस से अमीरों के हृदय की सच्ची पीड़ा का स्वरूप भी भक्तकता है।

अर्थालंकारों का प्रयोग भी कहीं अस्वाभाविक नहीं हुआ। बहुत-स्थानों पर तो अलंकारों के अस्तित्व का ज्ञान तक नहीं होता। "तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत ज़िमि थारा पर पारा पारावार यों हलत है" में क्या ही सुहावनी और मौलिक कल्पना की गई है कि समुद्र के हिलने का दृश्य तो आँखों के सामने आ जाता है परन्तु तुलना के प्रयत्न का हमको संदेह भी नहीं होता। इस प्रकार रस अलंकार आदि की दृष्टि से तो भूषण की कविता उत्कृष्ट है ही पर उसकी उत्कृष्टता का एक कारण यह भी है कि उस में मौलिकता है और वह जातीय भावना में रंगी हुई है। इसलिए वह सदा आदर से पढ़ी जाती रहेगी।

c निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो—

जन्म, उर्मि, रतिनाह, पारावार, वितुण्ड, व्याध, अनङ्ग, रविसुत, रोलव, निमिराज, रौकन, सिन्धुसुता, विरचि, कोल, शिलातरी, उत्तान-पादसुत, निमिप, चकित, सेतु, त्रिगुण और चन्द्रिका। २०

जन्म—एक राजस का नाम है

जिसे इन्द्र ने मारा था।

उर्मि—ऊर्मि, लहर।

रतिनाह—कामदेव।

पारावार—समुद्र।

वितुण्ड—हाथी।

अनङ्ग—कामदेव।

रविसुत—यमराज।

रोलव—ध्रमर, भौरा ।
 निमिराज—राजा जनक ।
 राँकन—अशुद्ध छपा है । इस
 को जगह 'राँकन' होना
 चाहिए जिसका अर्थ है
 भिखारी ।
 सियुमुना—लक्ष्मी ।
 विरचि—प्रज्ञा ।
 कोल—मूअर ।
 शिलावरी—पत्थर तर गये,
 अथवा पत्थर रूप हुई हुई

अहन्या तर गई ।
 उत्तानपादसुत—उत्तानपाद का
 लड़का अर्थात् धर ।
 निमिप—पलकों के गिरने में
 जितना समय लगता है
 उतना समय, क्षण ।
 चकित—हैरान
 सेतु—पुल
 त्रिगुण—तीनगुण अर्थात् मा,
 रज, तम ।
 चन्द्रिषा—चाँदनी ।

घोर-कविता की कुजी

(ले०—श्री रामुदरान सरसेना, महाविद्यालय)

इसमें घोर कविता के मय पत्रों के अर्थ थोड़ी सख्त भाव में लि-
 गा है । उन शब्दों के अर्थ और प्रसंगगत अर्थों वाली स-
 कहानियाँ भी दी गई हैं । इस पत्र की सहायता से विद्यार्थी स्वयं
 इस पुस्तक का पट सकते हैं । श्री रामुदरान सरसेना श्री
 हिन्दी भाषा का नाम इसी युद्ध में सर्वोत्तमता का सर्व-
 बड़ा प्रमाण है । (पृ० ११॥)

हिन्दी-काव्य-विवेचना की प्रश्नोत्तरी

(ले०—श्री रामुदरान सरसेना, हिन्दी महाविद्यालय)

इसमें हिन्दी काव्य विवेचना का सर्वोत्तम प्रमाण है । इस पुस्तक में सर्वोत्तमता का सर्व-
 बड़ा प्रमाण है । (पृ० ११॥)

बहती है—देगो मालती, मैं आज बदल गई हूँ, अब तुम यहाँ किसी दुखित, व्यथित, अपन भाग्य को कोसने वाली हसा को न देगोगी, तुम्हें अब बदली हुई हसा दिखाई देगी। इसके उत्तर में मालती कहती है—यही आपका कर्तव्य है। इसी मार्ग में सुख और शान्ति है। अर्थात् स्वामी चाहे बूढ़े हैं, उन्हीं की सेवा करना आपका धर्म है। मनुष्य को पग पग पर परिस्थितियों से मममत्ता करना पड़ता है, परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को ढालना पड़ता है। यदि अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जाय तो मनुष्य सुखी रहता है और जो मनुष्य अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बना सकता वह सदा दुखी रहता है।

(ड) यह मंदर्भ हिन्दी नाटक साहित्य में से है, जो अब पाठ्यक्रम में नहीं है। अत उत्तर नहीं दिया गया।

२ नीचे लिखे पद्यों की ऐसी व्याख्या करो जिसमें कवियों का पूरा पूरा भाव पाठकों की समझ में आ जाय —

(क) आँखों का यह कालापन,
घरसे घन आँसु के कण।
करदे जग का मन पावन,
घरसो ओ सावन के घन।

मन मयूर करता नर्तन,
घिर आए हैं जीवन-घन।
कहती चातक की चितवन,
घरसो शीघ्र स्वाति के कण।

(ख) जा के रचिर पात नहिं तोड़े सुमुखि मदोदरि रानी।
जहाँ समय मलय भारत हैं त्यागत वेग निसानी ॥

जा के बिटप लुभत नहि कोठक भनि मनेट मनजानी ।

सो असोक फुलवारि मेघ की जा कपोस ने भागी ॥ १०

(ग) तुम को मरने का गम है

मुम को जीने का खटका

तुम को जीने की धुन है

मुस को मरने का खटका

तुम मर मर पाहो जीना

ई जी जी पाहूँ मरना

तुम मुम ही लेना पाहो

ई दुम से भाँसल मरना ॥ १०

(क) कवि ने इस गीत में आँसुओं की आकाश में बरसने वाले नीर से तुलना की है। यह रूपना है—

आँसु का यह कालापन, आँसू का कण कण पर १०८
 अर्थात् जिन आकाश में काल-जाल बाराह पानी बनकर बरस
 पड़ते हैं उसी तरह आँसुओं में जो कालापन है वह भी आँसू धर पर
 पड़ते लग । आँसु का यह पानी जलन के मत को परित्र पर है
 (जिन मनुष्यों के मन से प्रकृतियों का इतना डर जाता है, उन्हीं
 तरह आँसू मनुष्य के मन को मार कर देते हैं) । जो मनुष्य के
 बावजूद तुम दरसी ।

मन की मोर नाच रहा है, क्योंकि जीवन के अन्त पर
 जाता है । आँसू की लिलान भी वह गदो है कि है । वह
 तुम स्वयं के रूप परमात्मा । (जिन मनुष्यों को जिन मनुष्यों
 पर मोर को गुला होनी है, आँसू को भी स्वातन्त्र्य पर की
 आकाश से) प्रकृतियों होनी है जिन तरह आँसुओं में जब आँसू
 का आँसू आँसू है जो मनुष्य के मन को मार देता है ।)

मदालसा अनेक दुखों को सहकर सुख के आँगन में आई है, इसलिए कवि ने उसके इस गीत में दुख के आँसू नहीं दिखाए बल्कि प्रसन्नता का जल दिखाया है।

(ख) अशोक वाटिका का माली रावण के द्वारपाल से कहता है कि महाराज से कह दो कि एक बंदर ने मेघनाद की उस अशोक वाटिका को उजाड़ दिया है जिसके सुन्दर पत्तों को रानी मंदोदरी भी नहीं तोड़ती, जहाँ पर मलय पर्वत की वायु भी डर कर अपने वेग को छोड़ देती है, अर्थात् धीरे-धीरे चलती है और जिसके वृक्षों को प्रत्यत स्नेह की वस्तु जानकर कोई छूता भी नहीं है, अर्थात् जिस अशोक-वाटिका की निरंतर रक्षा की जाती है उसे बंदर (हनुमान) ने नष्ट कर दिया।

(ग) राघव की हत्या के बाद रणमल की सेना भारमली को कैद करके चित्तौड़ लाती है। भारमली राघव की हत्या का बदला लेने के लिए रणमल की सेवा करने लगती है। चंड जब चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो भारमली एक बंद कमरे में रणमल को शराब पिला रही है। रणमल उसे गाना गाने को कहता है। तब वह गाती है—तुमको मरने का दुख है, और मुझे जीने में खटका है अर्थात् तुम्हें मौत से डर लगता है और मुझे जीने में डर लगता है। तुमको जीने की धुन लगी हुई है, तुम अनन्त काल तक जीना चाहते हो और मैं मरना चाहती हूँ। इतने में दुर्ग पर आक्रमण होने की आवाज़ आती है और भारमली गाना बंद कर देती है। रणमल फिर उसे गाने को कहता है। तब वह फिर गाती है कि तुम मर कर भी जीना चाहते हो और मैं जीती रह कर भी मरना चाहती हूँ। तुम केवल सुख लेना चाहते हो और मैं दुःख से अपना आँसू भरना चाहती हूँ।

३ नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग किन किन अर्थों में होता है शिष्टो—
नाटक, अङ्क, नान्दी, पारिपाधिक, सूत्रधार, वञ्जुकी, प्रतिहारी,
नेपथ्य, विष्कम्भक, स्यापना ।

नाटक—नाटक में अभिनेता किसी विख्यात नायक का स्वरूप धारण कर उसी के कार्यों का अनुकरण करता है। वेप भूषा, कर्म आदि भी अनुकरणीय व्यक्ति व सदृश ही बनाए जाते हैं। नाटक में मुख्य तो एक रस की ही प्रधानता होती है, चाहे वह योग हो या शृङ्गार, परन्तु उसके सहायक अन्य रस भी यथावसर जात जाते रहते हैं। इसमें ५ से १० तक अङ्क होने हैं।

अङ्क—नाटक में वर्णित वस्तु विभाग का नाग अङ्क है। इसमें सरसता पूर्वक रमणीय बातों का प्रदर्शन होता है।

नान्दी—नाटक के आरम्भ में सूत्रधार के द्वारा देव, दिग्ग, आदि की जो स्तुति की जाती है उसे नान्दी कहते हैं।

पारिपाधिक—सूत्रधार के साथ वार्तालाप करने वाला सदृश मुख्य पात्र पारिपाधिक कहलाता है। वह सूत्रधार को 'भाव' कह कर पुकारता है।

सूत्रधार—नाटक का प्रधान नट। इसी के द्वारा नाटक का प्रसङ्ग उठाया जाता है।

वञ्जुकी—एक पुर-पारी वृद्ध व क्षणिक का नाम वञ्जुकी है जो परम सुणी आर वायेंवृत्त होता है।

प्रतिहारी—एक जोरम। यही सारे मन्त्र राश के मन्त्री व पहँचाना है।

नेपथ्य—एक वा पिना गान, कई अभिनेता स्थल व करते हैं।

विष्कम्भक—अङ्क में आगे ही आगे वृत्तम का पहल ही संक्षेप से दिखाने वरा वरा को वृत्तम को विष्कम्भक कहते हैं।

मदालसा अनेक दुखों को सहकर सुख के आँगन में आई है, इसलिए कवि ने उसके इस गीत में दुख के आँसू नहीं दिखाए बल्कि प्रसन्नता का जल दिखाया है।

(रा) अशोक वाटिका का माली रावण के द्वारपाल से कहता है कि महाराज से कह दो कि एक बदर ने मेघनाद की उस अशोक वाटिका को उजाड़ दिया है जिसके सुन्दर पत्तों को रानी मंदोदरी भी नहीं तोड़ती, जहाँ पर मलय पर्वत को वायु भी डर कर अपने वेग को छोड़ देती है, अर्थात् धीरे-धीरे चलती है और जिसके वृक्षों को अत्यंत स्नेह की वस्तु जानकर कोई छूता भी नहीं है, अर्थात् जिस अशोक वाटिका की निरंतर रक्षा की जाती है उसे बदर (हनुमान) ने नष्ट कर दिया।

(ग) राघव की हत्या के बाद रणमल की सेना भारमली को कैद करके चित्तौड़ लाती है। भारमली राघव की हत्या का बदला लेने के लिए रणमल की सेवा करने लगती है। चंड जब चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो भारमली एक बंद कमरे में रणमल को शराब पिला रही है। रणमल उसे गाना गाने को कहता है। तब वह गाती है—तुमको मरने का दुख है, और मुझे जीने में खटका है अर्थात् तुम्हें मौत से डर लगता है और मुझे जीने में डर लगता है। तुमको जीने की धुन लगी हुई है, तुम अनन्त काल तक जीना चाहते हो और मैं मरना चाहती हूँ। इतने में दुर्ग पर आक्रमण होने की आवाज़ आती है और भारमली गाना बंद कर देती है। रणमल फिर उसे गाने को कहता है। तब वह फिर गाती है कि तुम मर कर भी जीना चाहते हो और मैं जीती रह कर भी मरना चाहती हूँ। तुम केवल सुख लेना चाहते हो और मैं दुख से अपना आँचल भरना चाहती हूँ।

३ नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग किन किन अर्थों में होता है क्लिप्तो—
नाटक, अङ्क, नान्दी, पारिपार्श्विक, सूत्रधार, कञ्चुकी, प्रतिहारी,
नेपथ्य, विष्कम्भक, स्थापना ।

नाटक—नाटक में अभिनेता किसी विख्यात नायक का स्वरूप धारण कर उसी के कार्यों का अनुकरण करता है । वेप भूषा, कर्म आदि भी अनुकरणीय व्यक्ति के सदृश ही बनाए जाते हैं । नाटक में मुख्य तो एक रस की ही प्रधानता होती है, चाहे वह वीर हो या शृङ्गार, परन्तु उसके सहायक अन्य रस भी यथावसर आते जाते रहते हैं । इसमें ५ से १० तक अङ्क होते हैं ।

अङ्क—नाटक में वर्णित वस्तु विभाग का नाम अङ्क है । इस में सरसता पूर्वक रमणीय बातों का प्रदर्शन होता है ।

नान्दी—नाटक के आरम्भ में सूत्रधार के द्वारा देव, द्विज, आदि की जो स्तुति की जाती है उसे नान्दी कहते हैं ।

पारिपार्श्विक—सूत्रधार के साथ वार्तालाप करने वाला सत्सदृश मुख्य नट पारिपार्श्विक कहलाता है । यह सूत्रधार को 'भाव' कह कर पुकारता है ।

सूत्रधार—नाटक का प्रधान नट । इसी के द्वारा नाटक का प्रसन्न उठाया जाता है ।

कञ्चुकी—अन्न पुर-चारी वृद्ध मातृका का नाम कञ्चुकी है जो परम गुणी और कार्यकुशल होता है ।

प्रतिहारी—प्रादोशन । यही गारे सट्टा रागा के समीप पहुँचाता है ।

नेपथ्य—पदों का पिछला स्थान, अर्थात् अभिनेता स्वल्प बनाते हैं ।

विष्कम्भक—अङ्क में आगे होने वाले वृत्तान्त का पदों की सहायता से दिग्दर्शन करा देने वाले प्रकारध को विष्कम्भक कहते हैं ।

स्थापना—वर्णनीय वस्तु से पूर्व जो थोड़ी सी भूमिका दी जाती है उसे स्थापना कहते हैं।

४ नीचे लिखे पात्रों का पूर्ण परिचय लिखो और ये किस किस नाटक में आते हैं यह भी लिखो —

नरेन्द्रगुप्त, राज्यवर्धन, पुलकेशिन, क्षोदिंग भट्ट, रावलचूडावत, हसाबाई, ऋतुध्वज, विश्वावसु, शंकुर्ण, तारा। १०

नरेन्द्रगुप्त, राज्यवर्धन और पुलकेशिन हिन्दी नाटक साहित्य में आप राज्यश्री नाटक के पात्र हैं जो अब पाठ्य क्रम में नहीं हैं।

क्षोदिंग भट्ट—यह जय पराजय नाटक का पात्र है। मेवाड का विख्यात पंडित है। यह मेवाड पर आने वाली विपत्तियों की भविष्यवाणी करता है।

रावल चूडावत—यह भी जय-पराजय का पात्र है। यह मडोवर का राजा है। रामल और हसाबाई इसी क पुत्र और कन्या हैं।

हसाबाई—यह जय-पराजय की स्त्री-पात्र है। यह मडोवर के अधिपति रावल चूडावत की कन्या है। मेवाड के राणा लक्ष्मि से इसका विवाह होता है। मोरल इसका पुत्र है।

ऋतुध्वज—यह पाताल-विजय नाटक का प्रधान पात्र है। यह अयोध्या का राजकुमार है। पाताल के राजा पातालकेतु और तालकेतु को मारकर पाताल देश को विजय करता है।

विश्वावसु—यह भी पाताल विजय नाटक का पात्र है। यह गधर्वदेश का राजा है। इसकी कन्या मदालसा को पातालकेतु हर ले जाता है। ऋतुध्वज पातालकेतु को मारकर मदालसा का उद्धार कर उससे विवाह करता है।

शंकुर्ण—यह अभिषेक नाटक का पात्र है। रावण की अशोक-नाटिका का माली है।

• तारा—इसका वर्णन भी अभिप्रेक नाटक में है। यह बाली की पत्नी है।

५ हमाबाई का विवाह युवराज चण्ड से १ हुआ और उसके बुढ़ पिता लक्ष्मिंह से क्यों हुआ स्पष्ट लिखो। ५

चण्ड के लिए मँडोवर की राजकुमारी हमाबाई का नारियल लेकर जय प्राहाण मेवाड की राजसभा में पहुँचना है तो महाराज लक्ष्मिंह हँसी में कह बैठे हैं—'युवराज के लिए लाये हो न ? मैंने पहले ही कहा था कि हमारे लिए अब नारियल कौन लायगा ?' यह कर ये युवराज के लिए नारियल स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु युवराज पिता की हँसी की बात को उनकी इच्छा समझ कर हमाबाई को अपनी माँ कह कर तिलक कराना अस्वीकृत करते हैं और प्राहाण से राणा लक्ष्मिंह का तिलक करने को बइत हैं। महाराजा लक्ष्मिंह और ममी सरकारी युवराज को समझते हैं कि यह भी हँसी की बात थी। परन्तु युवराज कहते हैं कि मैं तब हँसा नहीं समझा। इस तरह वह अपनी बात पर अट रहते हैं। मेवाड और मारवाड में बहुत दिन में पैगनस्य खना था मडा था, नारियल लौटाने में मारवाड का अपमान होता और पैगनस्य की जाग फिर भटक पटनी, मारवाड ही आप ही नारियल को लौटाना मेवाड के लिए भी अपमान की बात थी, इसलिए महाराजा लक्ष्मिंह को विवश होकर हमाबाई से विवाह करना पड़ा।

६ कृतुभञ्ज का महात्मता से क्या बाधा था और वह किस प्रकार हुआ था ?

कृतुभञ्ज मीराबाई का पुत्र था। कुमारी मारवाड का राजा पिता के उपासकों से मारवाड में हुए थे मरी मरी। मुनि के दास की रक्षा करने हुए कृतुभञ्ज की मारवाड में मरी मरी

स्थापना—वर्णनीय वस्तु से पूर्व जो थोड़ी सी भूमिका दी जाती है उसे स्थापना कहते हैं।

२ नीचे लिखे पात्रों का पूर्ण परिचय लिखो और ये किस किस नाटक में आते हैं यह भी लिखो—

नरेन्द्रगुप्त, राज्यवर्धन, पुलकेशिन, शोर्टिंग भट्ट, रावलचूडावत, हसाबाई ऋतुध्वज, विद्वावसु, शकुर्ण, तारा।

नरेन्द्रगुप्त, राज्यवर्धन और पुलकेशिन हिन्दी नाटक साहित्य में आण राज्यश्री नाटक के पात्र हैं जो अब पाठ्य-क्रम में नहीं है।

शोर्टिंग भट्ट—यह जय पराजय नाटक का पात्र है। मेवाड का विख्यात पंडित है। यह मेवाड पर आने वाली विपत्तियों की भविष्यवाणी करता है।

रावल चूडावत—यह भी जय-पराजय का पात्र है। यह मडोवर का राजा है। राममल और हसाबाई डमी के पुत्र और कन्या हैं।

हसाबाई—यह जय-पराजय की स्त्री-पात्र है। यह मडोवर के अविपति रावल चूडावत की कन्या है। मेवाड के राणा लक्ष्मि से इसका विवाह होता है। मोरल इसका पुत्र है।

ऋतुध्वज—यह पाताल-विजय नाटक का प्रधान पात्र है। यह अयोध्या का राजकुमार है। पाताल के राजा पातालकेतु और तालकेतु को मारकर पाताल देश को विजय करता है।

विश्वामसु—यह भी पाताल-विजय नाटक का पात्र है। यह गधर्वदेश का राजा है। इसकी कन्या मदालसा को पातालकेतु हर ले जाता है। ऋतुध्वज पातालकेतु को मारकर मदालसा का उद्धार कर उससे विवाह करता है।

शकुर्ण—यह अभिषेक नाटक का पात्र है। रावण की अशोक-वाटिका का माली है।

हुआ। हार कर पातालकेतु पाताल से भाग गया। उसका पीछा करते हुए ऋतुध्वज उसके महलों में पहुँचा, जहाँ मदालसा कैद थी। वहीं दोना की भेंट हुई। दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित हुए। पातालकेतु को मारकर ऋतुध्वज फिर मदालसा के पास आया। उन दोनों के परस्पर आकर्षण को देखकर मदालसा की सखी कुडला ने उनके विवाह का प्रस्ताव किया। ऋतुध्वज ने पिता की आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक बताया। इस पर नारद ने आकर कहा कि विवाह तुम अपना कर रहे हो या अपने पिता का? यह कहकर उन्होंने उन दोनों के हाथ मिला कर उनका विवाह करवा दिया।

अभिषेक नाटक की कुंजी

(ले०—ला० रामकृष्ण शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर)

इसमें अभिषेक नाटक के अको की कथा का सक्षेप, कठिन शब्दों और सब पद्यों के अर्थ, प्रधान पात्रों का चरित्र-चित्रण और नाटक-संबंधी परिभाषाएँ दी गई हैं। पुस्तक लेते समय श्री रामकृष्ण शास्त्री हिन्दी-प्रभाकर तथा हिन्दी भवन का नाम ध्यान से देख लें। मूल्य १)।

सारथी से महारथी की कुंजी

[ले०—ला० रामकृष्ण शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर]

इसमें 'सारथी से महारथी' के सब गीतों और कठिन शब्दों के अर्थ देकर नाटक के अको की कथा का सक्षेप सरल भाषा में दिया गया है। मूल्य १=)

प्रश्नपत्र चौथा

१ चारुमीकि जी ने लवकुश को कैसी गिन्ना दी, फिर कब और कैसे उन्हें श्रीरामचन्द्र जी को सौंपा, सब प्रसन्न विस्तार से लिखो । १०

२ वैदग्ध्ययन कौन थे ? वह पाशवद्वय पर क्यों मुग्ध हुए ? इस प्रकरण को यथावत दिखाकर पाशवद्वय की याग्यता का उदाहरण दो । १०

३ "चरित्र" क्या यन्त्र है ? और चरित्र पाठन के भग हीन म हैं ? चरित्र और शील का अन्तर दिखाकर दो चरित्रान् महापुरुषों का सन्निहत परिचय दो । १०

४ मन्त्रादिक के विशेष गुणों का उल्लेख कर समाधीपक और शंकर के विषय में श्रीद्विषेती जी के विचार प्रकट करो । १०

५ महारत्न तुलावली । प्रण को क्या क्या गुण दिये, इन पर प्रतिपादों की सम्मति दिखाकर उसको पादुरी का वर्णन करो । १२

६ निर्मलनिग पत्तों का अर्थ करो, और (क) भाग का आराध और (ख) भाग का प्रसङ्ग भी दिखायो—

(क) काला धिरे न रहीं बरि यह जाला शरु कोय ।

पुन्य पुताय को धरु क्यों न समझा शरु ॥ १

(ख) पर कमल धार शरु नान न कथ समारं धरु,

भीरु नाम शरु शरु शरु शरु शरु शरु शरु

शरु शरु शरु शरु शरु शरु शरु शरु

शरु शरु शरु

१०

७ मोक्षियर ने अपने नाटकों में किन किन नियमों का पालन किया है, इसे लिखकर उसके देना और योग्यता का भी ज्ञान बढ़ाओ । १०

अथवा

पुस्तकों का अध्ययन क्यों आवश्यक माना गया है, और पुस्तकें कौसी पढ़नी चाहिये, इस पर अपने विचार प्रकट करो, परन्तु वर्मा जी के लेख के अनुसार, हों ।

८ “अहित्यायाई ने स्त्री होकर भी जिस न्यायपरायणता से राज्य किया, वैसा विरले ही किसी राजा ने किया होगा” लेखक महोदय के इस वचन को इतिहास द्वारा सगत करो । १०

९ शकुनि, मुहम्मद तुगलक, शकुन्तला और भीष्मपितामह इन पर संक्षिप्त नोट लिखो । १६

ये सब प्रश्न ‘भारतीय-महिला’ और ‘गद्य-प्रसून’ नामक पुस्तकों में से हैं जो अब पाठ्य-क्रम में नहीं हैं । अत उत्तर नहीं दिया गया ।

भक्त पंचरत्न की कुजी

(दूसरा संस्करण)

(टीकाकार—श्री शम्भुदयाल सकसेना, साहित्यरत्न)

इसमें भक्त-पंचरत्न के सब पद्यों के अर्थ तथा प्रसंगवश आने वाली सब कहानियाँ भी दी गई हैं । कुजी की सहायता से विद्यार्थी स्वयं इस पुस्तक को पढ़ सकते हैं । मूल्य ॥३॥

प्रश्नपत्र पाँचवाँ

१. डूफले की जीवनी पर एक नोट लिखो। यह बताओ कि साम्राज्य स्थापित करने में उसे सफलता क्यों नहीं प्राप्त हुई? 10

डूफले भारतवर्ष में फ्रांसीसी वस्तियों का पहला गवर्नर था। वह बड़ा चतुर और दूरदशा राजनीतिज्ञ था। भारतीय राज्यों के प्रतिदिन क झगड़ों को देख कर उसने भारत में फ्रांसीसी राज्य स्थापित करने की कल्पना की। भारत में अंगरेजों और फ्रांसीसियों के संघर्ष में उसका विशेष स्थान है। यद्यपि हम में छल, मिथ्यागर्ब और रुपये पैसे के मामले में अनेक व्यापारण आदि अनेक दुर्बलताएँ कही जाती हैं, तथापि वह चोर, ग्राह्यी और सुयोग्य शासक था। दक्षिण में कुछ समय के लिये वह फ्रांसीसियों को उच्च स्थान देने में सफल हुआ, परन्तु साथ ही क अभाव में वह उस प्रभुत्व को देर तक कायम न रख सका। उसकी उराभक्ति की शक्ति प्रशंसा की जाय नहीं थोड़ी है। अपने उम्र के दिन के लिए उसने अपनी संवत्सि को भी खर्च करने में सहोष नहीं दिया। उस ने अपनी जानि को समृद्ध बनाने में अपना योग्य अपनी भवति और अपने जीवन को ऊर्ध्व कर दिया। पर उस में किसी दस भक्ति और आत्म-रक्षण की प्रशंसा नहीं हुई। प्रत्येक लोगों में उसका स्वभाव अप्रमत्त है।

भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित करने में उसके अग्रजता के निम्नलिखित कारण हैं—

(१) अंगरेज लोगों को प्रथम पत्नी को अपनी अविधवा पाए प्राप्त भी। प्रथम पत्नी के निस्संसार अपनी पत्नी को में बहुत कम दिखपत्नी लेने थे। अतएव पति पत्नी को प्रथम पत्नी को सुखों में लेती होने के कारण कर्तव्य

न कर सकी। इप्ले की योजनाओं का असफल होने का मुख्य कारण धनाभाव ही था।

(२) अंगरेज युद्ध के साथ साथ व्यापार भी करते रहे जिस से उनकी रणनीति बढ़ती गई। इप्ले ने राज्यविस्तार के उत्साह में व्यापार की ओर ध्यान न दिया जिस से फ्रांस सरकार लाभ के स्थान पर हानी को एक व्यर्थ भार समझने लगी।

(३) अंगरेजों का सामुद्रिक बेड़ा फ्रांस से कहीं बलवान था। अपूर्ण सामुद्रिक मार्ग उसका अधिकार में थे, इसलिए वह ब्रिटिश कपनी को हर जगह सहायता पहुँचा सकता था।

२ निम्नलिखित पर सक्षिप्त नोट लिखो —

चार्टर ऐक्ट १८५३, पिंडारी, अमीचद, गोखले, रौलट ऐक्ट, स्थानीय स्वराज्य।

चार्टर ऐक्ट १८५३—यह कपनी का अंतिम अधिकार पत्र था। इसके अनुसार भारत के प्रदेशों को कपनी के शासन में उस समय तक रहने की बात लिखी गई थी 'जब तक पार्लियामेंट कुछ और प्रबन्ध न करे।' इससे पहले सिविलसर्विस की नियुक्ति डाइरेक्टरों का सध करता था, इस चार्टर के अनुसार उन से यह अधिकार छीन लिया गया। इंग्लैंड में सिविलसर्विस के लिए प्रतियोगिता की परीक्षा होने लगी। गवर्नर जनरल को बंगाल के शासन-भार से मुक्त कर दिया गया। बंगाल के शासन प्रबन्ध के लिए एक लैफ्टिनेंट गवर्नर नियत किया गया। प्रत्येक प्रांत से एक सदस्य को गवर्नर जनरल की कौंसिल में नामजद किया जाने लगा।

पिंडारी—इनका काम लूट मार करना था। ये किसी खास जाति या श्रेणी के नहीं थे। इन में तुर्क, पठान, मराठे इत्यादि सब

सम्मिलित थे। वर्षा ऋतु के पश्चात् अपने घोड़ों पर चढ़ कर ये जिधर निकलते उधर बरबादी के सिवाय कुछ नज़र न आता था। लोग इनके टेर से अपने घरों को आग लगा लेते या कुत्तों में कुट्ट पड़ते थे। इनमें से कुछ मगलों की सेना में भी भरती थी। जब वे लोग ब्रिटिश राज्य में लूट-मार मचाने लगे तो हेस्टिंग्स ने १००००० मनुष्यों की एक विशाल सेना एक्ट की ओर मन् १८१७ में इनको चारों ओर से घेर लिया। एक वर्ष की मारकाट के पश्चात् विन्डारियों का अंत हो गया। उनके मुखिया करीम ने आत्म समर्पण करके शानि से एक जामोरे में रहना स्वीकार किया, वासिल ने आत्म हत्या कर ली, चीतू जंगल में भाग गया। पड़ा जाना है वहाँ एक चीते ने उसे मार डाला। टंगो के समक्ष बंद सरदार अमीरखान भी अधीनता स्वीकार कर ली। इस टाँके का नवाब बना दिया गया।

अमीरखान—यह नवाब मिराजुद्दौला का स्वपानचौथा। जब मीरजाफर और कानडन नवाब मिराजुद्दौला के विरुद्ध पदम किया तो इमन पञ्च का प्राम किया था। पारे उसने धमकी दी कि यदि हम २० लाख रुपये न दिया गया तो वह भद्रा फोड़ दगा। इस पर कानडन दो प्रतिज्ञा पत्र अंगार दिए— एक मकंदर वाग्य पर और दूसरा लाल बामन पर। मकंदर वाग्य का प्रतिज्ञा पत्र कसती थी, हमने अमीरखान को रुपये देने की बात नहीं कही गइ थी। लाल बामन काल प्रमाण था। नकली था, उसमें अमीरखान की तीस लाख रुपये देने की बात थी। प्लासी की लड़ाई में मिराजुद्दौला मारा गया। मीरजाफर मगान का नवाब बना, पर अमीरखान को कुछ न मिला।

गोखले—गोशाहृष्य राजा का उ.म. २२६ ई.पू.

१८६६ में हुआ। ये पहले फरग्युसन कालेज में प्रोफेसर थे, फिर चवई की कौंसिल के मेबर बने और अंत में वायसराय की कौंसिल के मेबर। ये बड़े विद्वान्, सदाचारी, देशभक्त और प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थे। ब्रजट पर इनकी वक्तृताएँ अद्वितीय होती थीं। १८६६ में इंग्लैंड में हिन्दुस्तान के खर्च की जाँच के लिए वेलवी कमीशन बैठा था, उसके सामने गवाही देने के लिए ये भी और नेताओं के साथ गए थे। मिटो-मारले सुधार में भी इनका बड़ा हाथ था। १९१२ के पब्लिक सर्विस कमीशन के तीन भारतीय सदस्यों में गोखले एक थे। इन्होंने सर्वेंट्स आफ इंडिया सोसाइटी की स्थापना की। कांग्रेस के सभापति-पद को भी सुशोभित किया। फरवरी १९१५ में इनकी मृत्यु हुई।

रौलट ऐक्ट—बग-विच्छेद के समय से ही बंगाल में क्रांतिकारी दल का प्रादुर्भाव हो गया था। धीरे धीरे यह दल सारे उत्तर भारत में फैल गया। ये लोग सरकारी अफसरों की हत्या करने और डकैती द्वारा धन-समृद्ध करने में बुराई न समझते थे। गत महायुद्ध के समय इन लोगों ने जर्मनी से मिलकर भारतीय सेनाओं में क्रांति कराने का उद्योग किया। मि० रौलट की अधीनता में एक कमेटी इन पद्धतियों की जाँच करने के लिए बैठाई गई। कमेटी ने जाँच के बाद एक रिपोर्ट पेश की जिसे रौलट-रिपोर्ट या सिडीशन कमेटी की रिपोर्ट कहते हैं। उस रिपोर्ट के आधार पर दो ऐसे ऐक्ट पास किये गये जिनके द्वारा सरकार को इन पद्धतियों को दबाने के लिए असीमित अधिकार मिल गये। भारतीयों को युद्ध में की हुई सेवाओं के बदले में बहुत से सुधारों की आशा थी, परन्तु मिला रौलट ऐक्ट। सारे देश में इन ऐक्टों का विरोध किया गया। महात्मा गाँधी ने अहिंसात्मक सत्याग्रह

की योजना जनता के मन्मुत्प रती और ६ अप्रैल १९१६ को सत्याग्रह दिवस मनाया गया।

स्थानीय स्वराज्य—लार्ड रिपन के समय में सन १८८३ में जिलाबोर्ड ऐक्ट और १८८४ में म्युनिसिपल ऐक्ट पास हुआ। इन ऐक्टों के द्वारा प्रत्येक जिले में जिला बोर्ड और शहरों में म्युनिसिपैलिटियाँ बनीं। इनके कुछ महत्व जनता द्वारा निर्वाचित और कुछ सरकार द्वारा नामजद होने हैं। इनका काम मद्रासों, हस्पतालों, स्कूलों आदि की स्थापना और चालान करना और सफाई रखना है। अपना स्वयं पजीन के लिए इनकी अपने अपने शहर और जिले की सीमाओं में कुछ कर लगान का अधिकार दिया गया है।

३ सिख राज्य के पतन के कारण लिखो।

१२

सिख साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण दो—

(१) योग्य उत्तराधिकारी का अभाव—महाराजा रणजीतसिंह प्रत्येक युद्ध और युद्धिमान व्यक्ति था। उसकी सेना मुनिहित और मुमत्रिणी थी। वह शासन प्रबन्ध में कस्यक नियुक्त था। समस्त अन्तर्गत को पारसी इगदर उनमें कात्तन्त भिन्नता निजों और पञ्जिण में अपने मायाज्य का विस्तार किया। अपनी मृत्यु के बाद शासन-कार्य में उमा पीठे व्यक्ति न था। अतः उसकी प्रबन्ध सेना को काटू, मर मरना, शासन की सुदृश्यता पर सारदारों में अन्त, मर मरना और देश में अन्तिक मितर मर मरना। योग्य उत्तराधिकारी का अभाव में शासकत्विकार की हस्तगत काय के लिए सारदारों में युद्ध पणः सगा मर एव दुरा क सिद्ध मद्रास्य रचना था।

(२) सिख राज की पतन-कारण—सिख राज का पतन

शक्तिशाली हो गई थी कि वह शासन की परवाह नहीं करती थी। सैनिकों ने अपने पंच नियुक्त कर रखे थे और वे उन्हीं की आज्ञा मानते थे। सैनिक जिस के विरुद्ध होते थे उसे ही मार डालते थे। तीन चार बरस में ही कई मंत्री बने और मारे गये। अन्त में यह हालत हो गई कि कोई मंत्री पद स्वीकार करने के लिए तैयार न होना था। सेना की इस बढ़ती शक्ति को कम करने का रानी जिन्दा और उसके सलाहकारों ने यही उपाय सोचा कि उसे अंग्रेजों से लड़ा दिया जाय। उद्देश्य में आकर सिक्ख सेना ने सतलुज पार कर अंग्रेजी इलाके पर हमला कर दिया। यद्यपि सिक्ख सेना बड़ी वीरता से लड़ी तो भी क्योंकि उन के नायक ही अंग्रेजों की जीत चाहते थे इस लिए प्रायः सारी सेना लड़ कर नष्ट हो गई। अन्त में सन् १८४६ में रणजीतसिंह का साम्राज्य दो भागों में विभक्त हुआ। जम्मू कश्मीर का इलाका गुलाबसिंह को दिया गया और शेख पंजाब में दिलीपसिंह को अंग्रेजी साम्राज्य के अधीन राजा माना गया। परन्तु यह शेख पंजाब भी १८४८ में मूलराज के विद्रोह के कारण साम्राज्य में मिला लिया गया।

४ लार्ड विलियम वैटिक के शासनकाल का वृत्तान्त लिखो।

अथवा

मैसूर की तीसरी लड़ाई के कारण लिखो।

लार्ड विलियम वैटिक का शासनकाल १८२८ से १८३५ तक है। इस समय की मुख्य मुख्य घटनाएँ निम्नलिखित हैं—

हिन्दुस्तानियों को ऊँची सरकारी नौकरियाँ मिलने लगीं। फौजी अफसरों के भत्तों में कमी की गई। उत्तर पश्चिमी प्रान्त (आजकल का संयुक्त प्रांत) में तीन साल का लगान का पट्टा तय हुआ। सती-प्रथा को नियम-विरुद्ध ठहराया गया। ठगों का

मूलोच्छेदन किया गया। लठकियों को गार बाजारों की दर कम करने का प्रयत्न किया गया। अंगरेजों को शिक्षा बनाया गया। शिक्षा की पुरानी व्यवस्था खत्म की गई। और मैसूर के राज्य अंगरेजी राज्य में मिलाये गये। ने महाराजा ग्याजोतसिंह से भेंट कर गारियों में किया। सिध में ब्रिटिश माल का व्यापार होने लगा। अधिकार पत्र बदला गया। कंपनी को व्यापार करने का न रहा, उसका काम शासन करना रह गया। कौंसिल में कानूनी मदस्य की वृद्धि की गई।

अथवा

मैसूर की तीसरी लड़ाई—सन् १७८२ में टीपू टायनकोर पर आक्रमण किया। टायनकोर का राजा सरसंग में था। उसने अंगरेजों से सहायता माँगी। निजाम भी जिनको उससे हमेशा डर बना रहता था उस दुष्ट प्रदर्श में हिस्सा घाटने के लिए अंगरेजों के साथ १७६० से १७६२ तक यह लड़ाई हुई। टीपू द्वारा अपना स्वयं का राज्य और तीन करोड़ रुपया देना राज्य को मराठों, निजाम और अंगरेजों ने आपस में

५ दिने मोगले गुजार द्वारा भारत पर शासन परिवर्तन हुआ ?

मिर्जे सायबे मुगलों के कानुमार भारत में किस किस जगह तथा वा.मराठय और मराठों की प्रजातियों में भारतीय मदस्यों की नियुक्ति होने लगी। बंगाल व्यवस्थापिका समानता में गैर सरकारी मजदूरी पानीय व्यवस्थापिका समानता में गैर सरकारी मजदूरी

सरकारी मेंबरों से अधिक हो गई। इन सभाओं के अधिकारों में भी वृद्धि हुई। सांप्रदायिक निर्वाचन भी इसी समय आरम्भ हुआ।

६ बाजीराव पेशवा के शासनकाल का वृत्तान्त लिखो और बताओ उस समय मुगल साम्राज्य की क्या दशा थी ? १२

मन् १७२० में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु होने पर उसका पुत्र बाजीराव पेशवा बना। इस समय दिल्ली के तख्त पर मुहम्मद शाह बैठा था। मुगल साम्राज्य इस समय बहुत कमजोर हो चुका था। मुगल बादशाह दरबारियों के हाथ के खिलौने बन गए थे। १७१६ में साहू को स्वतंत्र राजा स्वीकार कर लिया गया था और दक्षिण के ६ मुगल सुबों में चौथ और सरदेश-मुखी बसूल करने के अतिरिक्त इन सुबों के सैनिक अधिकार भी उसे मिल गए थे। आमफख्वा निजाम-उल-मुल्क मालवा का मूवेदार बना था जो १७२४ में स्वतंत्र हो गया।

बाजीराव का सारा शासन काल लडाइयों में बीता। उसके शासन काल में मुगल साम्राज्य की केन्द्रीय शक्ति बिलकुल छिन्न भिन्न हो गई। बाजीराव ने पश्चिमी समुद्रतट पर पुर्तगाल वालों को हराकर उनकी बहुत सी बस्तियाँ छीन लीं और उन्होंने उससे सधि करली। १७०६ में गुजरात-काठियावाड के मुगल सूबेदारों ने बाजीराव को चौथ और सरदेशमुखी देना स्वीकार किया। १७३५ में इस प्रांत को मराठों ने पूर्णरूप से जीत लिया। दामाजी गायकवाड ने मुगलों की राजधानी अहमदाबाद पर अधिकार करके बड़ौदा में अपनी राजधानी बनाई। १७३२ में बाजीराव ने पठानों को बुंदेलखंड से निकाल कर राजा छत्रसाल से बहुत सा इलाका प्राप्त किया। १७३६ में मालवा जीता गया और १७३८ में ग्वालियर। निजाम-उल-मुल्क से भी बाजीराव की लडाईं होती रही।

१७२८ में डार कर निज़ाम ने अपने इलाके में चौथ और सरदेश-मुखी वसूल करने का अधिकार मराठों को दे दिया। बाजीराव के समय में मराठे पूर्व में चढोसा तक जा पहुँचे। इस प्रकार बाजीराव ने मध्य भारत में पूर्ण रूप से मराठा अधिकार स्थापित कर दिया। उसका ध्यान महाराष्ट्र और उत्तर की तरफ ही रहा, दक्षिण भारत की ओर उसने ध्यान न दिया। १७३६ में नादिरशाह के आक्रमण से मुगल साम्राज्य जड़ से ढिल गया और मुगल सम्राट् का प्रभाव दिल्ली के आसपास ही रह गया। बाजीराव ने नादिरशाह का मुकाबला करने के लिए नर्मदा और खवल के बीच में सेनाएँ एकत्र कीं, परन्तु नादिरशाह मुहम्मदशाह को फिर दिल्ली के तख्त पर बैठाकर ईरान लौट गया। सन् १७४० में बाजीराव की मृत्यु हुई। उसकी मृत्यु के समय मुगल सम्राट् नाममात्र का सम्राट् रह गया था और मराठा-साम्राज्य भारत में सबसे अधिक शक्तिशाली साम्राज्य बन गया था।

भारतवर्ष के इतिहास की प्रश्नोत्तरी

(दूसरा भाग)

[क्रे०—छा० सोमदत्त सूद, अध्यापक दय्या-महाविद्यालय, जालंधर]

इस पुस्तक में प्रो० वेदव्यास और प्रो० गुलशानगय के भारत-वर्ष के इतिहास पर व्याख्यान के आधारे पर वात्सोदिगामा के भारत-प्रवेश से लेकर आज तक का भारतवर्ष का इतिहास प्रश्न और उत्तर के रूप में दिया गया है। मूल्या १०)

* पश्चिमी हिन्दी को कितनी ज्ञान्यायें हैं ? हर एक ज्ञान्या का नाम लिखो और यह ज्ञान्या इनमें क्या भेद है ?

पश्चिमी हिन्दी की चार ज्ञान्यायें हैं—

१ गढ़ी बोली हिंदी ।

३ बुन्देली ।

२, ब्रज भाषा ।

४ कन्नौजी ।

गढ़ी बोली हिंदी दिल्ली और मेरठ के आस पास बोली जाती है । यही हिंदी को आज कल की साहित्य की भाषा है और यही भारत की राष्ट्र-भाषा मानी गई है ।

ब्रजभाषा का मुख्य स्थान ब्रज है परन्तु दक्षिण में करौली राज्य तक, पश्चिम में जयपुर तक, पूर्व में बरेली, बदायूँ, एटा आदि स्थानों तक तथा उत्तर में गुडगावाँ तक इसका प्रचार है । यह शोरसनी प्राकृत तथा अपभ्रंश से विकसित हुई है । हिंदी की पुरानी कविता अधिकतर इसी से हुई है ।

बुन्देली ब्रजभाषा की ही एक शाखा है । इसकी छायी ब्रजभाषा की कविता में बराबर मिलती हैं । यह बुन्देलखंड, ग्वालियर और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में बोली जाती है । इसका साहित्यिक नमूना आल्हखंड में मिलता है ।

कन्नौजी गंगा के मध्य दोआब की बोली है । इसका और ब्रजभाषा के साहित्य में कोई विशेष अंतर नहीं है, इसलिए इसका साहित्य ब्रजभाषा का साहित्य ही माना जाता है ।

८ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की जीवनी लिखो ।

१०

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म सन् १९०७ में काशी में हुआ । इनकी माता का देहान्त पहले ही हो चुका था, पिता भी इन्हें नौ ही वर्ष का छोड़ कर चल बसे, अतः इन्हें अगरेजी और संस्कृत की सामान्य शिक्षा ही मिली । तेरह-चौदह वर्ष की अवस्था में ये सपरिवार जगन्नाथजी गए और मार्ग में इन्होंने बंगला सीखी । इनकी शिक्षा अवश्य अधूरी थी, परन्तु ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा का इन में

अभाव न था। सन् १९२५ में इन्होंने विद्या सुन्दर चन्द्र से
 वगला से अनुवाद किया और कवि-वचन-सुधा नामक पुस्तक
 निकाली। पाँच वर्ष बाद चौथमा स्कूल गीता जो
 हरिश्चन्द्र हाई स्कूल कहलाता है और हरिश्चन्द्र मैगस्ट्रोन
 सामिक पत्रिका निकाली जो पीछे हरिश्चन्द्र चन्द्रिका
 हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले पहल इसी
 प्रकट हुआ। भारतेन्दु जी ने धर्म, इतिहास, भक्ति
 विषयों पर गद्य और पद्य में स्वर्य भी पुस्तकें लिखीं
 लेखकों से भी लिखवाई। इनके द्वारा लिखित, अनुर
 संपादित पुस्तकों की संख्या २७५ तक लगभग है।
 का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा
 गण्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही
 और स्वच्छ रूप दिया, हिन्दी साहित्य को नये
 रखा किया, और हिन्दी-कविता की धारा को नये
 और मोटा। भारतेन्दु स्वयं गुगी थे और गुगी
 बने दानवीर थे। कोह भी विद्वान्, सुश्रुति, कला-कुशल
 से सम्मानित हुए बिना न जाना था। कोह कर्षो इनके
 विमुक्त न मीटता था। सन् १९४१ में ३५ वर्ष की
 में डाका छान्त हुआ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास की प्रश्नोत्तर

[श्री गणेशाय नमः]

इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य का सारा इतिहास प्रश्न
 उत्तर के रूप में सजगता गया है। परीक्षा में पूछे जाने वाले
 सभी प्रश्न इसमें समाप्त हैं। (पृ. ११)

प्रश्नपत्र छठा

१ निम्नलिखित लोकोत्थियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

- (१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि ।
- (२) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद ।
- (३) सहज पके सो मीठा होय ।
- (४) करवा छोट तमासे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय ।
- (५) सूँटे के सिर बछटा नाचे ।

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि—जहाँ सूर्य की किरणों भी नहीं पहुँच पाती वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है। वाह! कैसी कमाल की बात कही है। आखिर कवि जो हैं। तभी तो कहा है जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि। (लोकोत्थियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १०१)।

(२) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद—उस के विषय में कहते हैं जो किसी वस्तु-विशेष या व्यक्ति-विशेष की कदर न जानता हो। सुरेश ! तुम तो नारायण राव व्यास के गाने की प्रशंसा करते न थकते थे पर मैंने तो देखा वह सिवाय आ-आ के कुछ जानता ही नहीं।

सुरेश—हाँ भाई, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। तुम तो गजल को ही गाना समझते हो, तुम्हें संगीत का क्या पता ? (लोकोत्थियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १४३)।

(३) सहज पके सो मीठा होय—जो काम आहिस्ता आहिस्ता हो वह संतोष प्रद और दृढ़ होता है। भाई, जो तुम तस्वीर अच्छी बनवाना चाहते हो तो, जल्दी मत करो, मुझे अपनी मर्जी

मे धीरे धीरे बनाने दो। पर तो कुछ जबर होगी पर यह चाद रक्तो सहज पके सा मीठा होय। (लोकोक्तियाँ श्री सुहावरे पृ० १६१)

(४) करघा छोड़ तमामे जाय नाइक पोट जुलाहा ग्याय—जो मनुष्य अपना काम छोड़ ष व्यर्थ के भगाड़े में पड़ना है और उससे हानि उठता है उस को कहते हैं। मदनगोपाल को नो देना, अच्छा भला प्रोफेसर लगा था, न जान कर्टी ने शक पड़ा जेवर गरीब बैठा, अब १०-१५ हजार के नीचे आगया है। दूसरा—दाँ भाई, यह तो वही बात हुई करघा छोड़ ।

(५) गूँट प मिर बड़डा नाचे—तुमरे की शक्ति और साहस के महारे काम करना। आन रायसाहय हाथ गीच ले तो इन्को कैसी भीग मिल्ली बन जाता है। जब तक वे इमकी मदद पर हैं यह क्रिमी को कुछ ममकना ही नहीं। दूसरा—दाँ भाई, गूँट के बल बड़डा नाचे। (लोकोक्तियाँ श्री सुहावरे, पृ० १०६)

२ निम्नलिखित मुहावरों का अभिप्राय लिखकर पररिचित वाक्यों में प्रयोग करो—

धाक जमाना। नमक मिर्च लगाना। नौ दो ग्यारह होना। नौ से दिये जलाना। जाग पर गेलना। गॉठ में बाँधना। दर बरना। ३।

धाक जमाना—रोज पैटा लेना। गॉठ ही दिनों में मार नहर न वस ने अपनी धाक जमा ली है। (लोकोक्तियाँ श्री सुहावरे, पृ० ४६)

नमक मिर्च लगाना—दुखर मो बाप या बन्धुपर कर्त्तव्य करना। लो न स्याववार वागे जरा मो बाल को नमक-मिर्च लगाना। या से क्या बना देते हैं। (लोकोक्तियाँ श्री सुहावरे पृ० ५०)

नौ दो ग्यारह होना—एक दम पारब हो जाना। इन्को दर न ग जाना। मेरे चोर चोर पिन्गारे ही चोर मया मारना केन,

प्रश्नपत्र छठा

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

- (१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि ।
- (२) बदर क्या जाने अदरक का स्वाद ।
- (३) सहज पके सो मीठा होय ।
- (४) करघा छोड़ तमासे जाय नाहक चोट जुलाहा स्थाय ।
- (५) खूँट के सिर बछड़ा नाचे ।

१५

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि—जहाँ सूर्य की किरणें भी नहीं पहुँच पाती वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है। वाह! कैसी कमाल की बात कही है। आखिर कवि जो हैं। तभी तो कहा है जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १०१)।

(२) बदर क्या जाने अदरक का स्वाद—उस के विषय में कहते हैं जो किसी वस्तु-विशेष या व्यक्ति-विशेष की कदर न जानता हो। सुरेश! तुम तो नारायण राव व्यास के गाने की प्रशंसा करते न थकते थे पर मैंने तो देखा वह सिवाय आ-आ के कुछ जानता ही नहीं।

सुरेश—हाँ भाई, बदर क्या जाने अदरक का स्वाद। तुम तो गज़ल को ही गाना समझते हो, तुम्हें सगीन का क्या पता? (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १४३)।

(३) सहज पके सो मीठा होय—जो काम आहिस्ता आहिस्ता हो वह संतोष प्रद और दृढ़ होता है। भाई, जो तुम तस्वीर अच्छी बनवाना चाहते हो तो जल्दी मत करो, मुझे अपनी मर्जी

मे घीरे घीरे बनाने दो। देर तो कुछ जम्पर हागी पर यह बात रक्ती
सहज पके सो मीठा होय। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे पृ० १६१)

(४) फरघा छोड़ तमासे जाय नाहक चोट जुलाहा रग्य—जो
मनुष्य अपना काम छोड़ के व्यर्थ क भगड़े में पटना है और तमासे
हानि उठाता है उस को कहते हैं। मदनगोपाल को नो दरयो, अच्छा
भला प्रोफेसर लगा था, न जाने कहां से शोक पढा जेवर खरीन
बैठा, अब १०-१५ हजार के नीचे आगया है। दूसरा—हाँ भाई,
यह तो बही बात हुई फरघा छोड़ ।

(५) गूँटे प सिर बछड़ा नाचे—दूसरे की शक्ति और साहस
के महारे काम करना। आज रायसाहब हाथ खींच ले तो दूरो
फैसी भीग विल्ली बन जाता है। जय तक वे इमकी मदद पर हें
यह किसी को कुछ समझता ही नहीं। दूसरा—हाँ भाई, गूँटे प
बल बछड़ा नाचे। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० १०६)

२ निम्नलिखित मुहावरों का अभिप्राय लिखकर स्वस्थित वाक्यों
में प्रयोग करो—

धाक जमाना। नमक मिर्च लगाना। नौ दो ग्यारह होना। ग्री छे
दिये जलाना। जान पर खेलना। गॉठ में बाधना। डेर करना। २१

धाक जमाना—रोय बैठा लेना। थोड़े ही दिनों में मार जार
में उस ने अपनी धाक जमा ली है। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे
पृ० ५६)

नमक मिर्च लगाना—तुच्छ मी बात को बढ़ाकर बर्तन करना।
उसो न अत्यथार यागे जरा मी बात को नमक-मिर्च लगा कर
क्या मे क्या बना दो हे। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ५०)

नौ दो ग्यारह होना—एक एक खपत हो जाता अलग अलग
भाग जाना। नरे और और दिन्लान ही और नारा भागान वैग,

प्रश्नपत्र छठा

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

- (१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि ।
- (२) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद ।
- (३) सहज पके सो मीठा होय ।
- (४) करघा छोड़ तमासे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय ।
- (५) खूँटे के सिर बछटा नाचे ।

१५

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि—जहाँ सूर्य की किरणों भी नहीं पहुँच पाती वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है। वह। कैसी कमाल की बात कही है। आखिर कवि जो हैं। तभी तो कहा है जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे, कवि। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १२१)।

(२) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद—उस के विषय में कहते हैं जो किसी वस्तु-विशेष या व्यक्ति-विशेष की कदर न जानता हो। सुरेश ! तुम तो नारायण राव व्यास के गाने की प्रशंसा करते न थकते थे पर मैंने तो देखा वह सिवाय आ-आ के कुछ जानता ही नहीं।

सुरेश—हाँ भाई, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। तुम तो गजल को ही गाना समझते हो, तुम्हें संगीत का क्या पता ? (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १४३)।

(३) सहज पके सो मीठा होय—जो काम आहिस्ता आहिस्ता हो वह संतोष प्रद और दृढ़ होता है। भाई, जो तुम तस्वीर अच्छी बनवाना चाहते हो तो जल्दी मत करो, मुझे अपनी मर्जी

ही छोड़ कर नौ-दो ग्यारह हो गया । (लोकोक्तिर्याँ और मुहावरे, पृ० ५५)

घी के दिये जलाना—खुशी मनाना । समृद्ध होना या सुख-चैन से रहना । उसके मरने पर आप तो घी के दिये जलायेंगे । कहां वे दान-दाने के मुहत्ताज थे, कहां अब घी के दीये जलाते हैं । (लोकोक्तिर्याँ और मुहावरे, पृ० २४)

जान पर खेलना—खुशी से प्राण देना, प्राणों को मंकट में डालना । हल्दी घाटी के मैदान में हजारों राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जान पर खेल गये । 'चौथे दिन पंडित जी ने मानों जान पर खेल कर उस कुजी को उठा लिया ।' लोकोक्तिर्याँ और मुहावरे, पृ० ३१)

गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह याद रखना । मेरी बात बाँध लो, यह लडका अवश्य किसी दिन ऊँचे पद पर पहुँच (लोकोक्तिर्याँ और मुहावरे, पृ० २१)

ढेर करना—मार कर गिरा देना । जरा भी दूँ यहीं ढेर कर दूँगा । (लोकोक्तिर्याँ और मुहावरे, पृ० ३)

लोकोक्तिर्याँ और मुहावरे

[ले०—डा० बहादुरचंद शास्त्री ऐम ए, ऐम ओ एल इममे लोकोक्तियों और मुहावरो के अर्थ तथा वाक्यों में किम तरह प्रयोग किया जाता है, यह दिखाया गया है । हिन्दी रत्न और भूषण के अत्यावश्यक पुस्तक । मू० ॥) मात्र ।

३ किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को जिसमें उसे आपके भेजे हुए समाचार को न छापने गया हो ।

ही छोड़ कर नौ दो ग्यारह हो गया । (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ५५)

घी के दीये जलाना—खुशी मनाना । समृद्ध होना या सुख-चैन से रहना । उसके मरने पर आप तो घी के दीये जलायेंगे । कहाँ वे दाने-दाने के मुहताज थे, कहाँ अब घी के दीये जलाते हैं । (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० २४)

जान पर खेलना—खुशी से प्राण देना, प्राणों को सकट में डालना । हल्दी घाटी के मैदान में हजारों राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जान पर खेल गये । 'चौथे दिन पंडित जी ने मानो जान पर खेल कर उस कुजी को उठा लिया ।' लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ३१)

गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह याद रखना । मेरी बात गाँठ में बाँध लो, यह लडका अवश्य किसी दिन ऊँचे पद पर पहुँच जायगा । (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० २१)

ढेर करना—मार कर गिरा देना । ज़रा भी चूँ-चपड की तो यहीं ढेर कर दूँगा । (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ३९)

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

[ले०—डा० बहादुरचंद शास्त्री ऐम ए, ऐम ओ एल, डी लिट्]

इसमें लोकोक्तियों और मुहावरों के अर्थ तथा उनको अपने वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है, यह सब भली भाँति दिनाया गया है । हिन्दी रत्न और भूषण के विद्यार्थियों के लिए अत्यावश्यक पुस्तक । मू० ॥) मात्र ।

३ किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को एक पत्र लिखो जिसमें उसे आपके भेजे हुए समाचार को न छापने का उलहना दिया गया हो ।

